Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त
उपन्यास साहित्य

संस्कार

43
S
2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

168012
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aryasahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कार

(उपन्यास)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कार

081
168012

गुरुदत्त

Central Library
168012
Gurukula Kangri (Deemed to be University), Haridwar

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली-110 026

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-S

© प्रकाशकाधीन 1980

आर्य साहित्य
Complete Vedic Books S
Vedic Ayurvedic Re
Ali Veg & Organic Prod
(M) 9343317278, 0008
Web : www.

मूल्य : 30.00 रुपये

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन
18/28, पंजाबी बाग (पूर्वी)
नई दिल्ली-110 026
फोन : 5102133

संस्करण : 2000

मुद्रक : अजय प्रिंटर्स
दिल्ली-110 032

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

बुद्धिप्रकाश का यज्ञोपवीत-संस्कार हो रहा था। लाहौर नगर के प्रतिष्ठित लोग आमंत्रित थे। मुहल्ले में एक शिवालय और एक सभा स्थान था जो मुहल्ले के ही एक धनी-मानी भाई मुल्तानीराम ने बनवाया था। यह सभा स्थान मुहल्ले के लोगों के प्रयोग के लिए सार्वजनिक स्थान के रूप में था। शिवालय तो चौबीसों घंटे खुला रहता था, परन्तु बिरादरी के एकत्र के लिए बड़ा कमरा जिसमें दो-तीन सौ व्यक्ति सुगमता से बैठ किसी समारोह में भाग ले सकते थे, बन्द रहता था और उस कमरे की चाबी बुद्धिप्रकाश के बाबा मलावामल्ल के पास रहती थी।

आज तो मलावामल्ल के पोते का ही यज्ञोपवीत-संस्कार हो रहा था। भाई मुल्तानी का भवन खचाखच सम्बन्धियों और परिचितों से भरा हुआ था।

संस्कार घर का पुरोहित पण्डित बृजलाल करा रहा था। बृजलाल बेचारा कुछ अधिक पढ़ा-लिखा नहीं था। एक संस्कृत पाठशाला में सामान्य भाषा का ज्ञान प्राप्त कर 'संस्कार पद्धति' पढ़ वह यजमानों के घरों में पूजा-पाठ कराकर जीविकोपार्जन करता था।

बुद्धिप्रकाश का बड़ा भाई विश्वम्भरनाथ डी० ए० वी० स्कूल की दसवीं श्रेणी में पढ़ता था। स्कूल में अंग्रेजी, गणित, एलजेबरा, ज्योमेट्री, संस्कृत, इतिहास, भूगोल और हिन्दी ये आठ विषय पढ़ाये जाते थे। एक विद्यार्थी को इतने विषय क्यों पढ़ाये जाते थे यह तो हिन्दुस्तानी सरकार के शिक्षा विभाग के अधिकारी ही बता सकते थे। पढ़ने वालों की कठिनाई की ओर कभी किसी का ध्यान नहीं जाता था।

शिक्षा में अधिक बल अंग्रेजी पढ़ाने में ही दिया जाता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूल की छः घंटे की पढ़ाई में तीन घंटे इस एक विषय की पढ़ाई पर ही व्यय किए जाते थे। संस्कृत, जनरल-नॉलेज और हिन्दी के लिए आधे-आधे घंटे का एक पीरियड था। एक पीरियड ड्रिल इत्यादि कराने के लिए होता था।

सब शिक्षा-विशेषज्ञ इस शिक्षा को असन्तुलित मानते थे, परन्तु राजनीतिक विवशता की तथा सरकारी नौकरी की होड़ देश के बालक-बालिकाओं को स्कूल की ओर आकर्षित कर रही थी।

सेठ मलावामल्ल की बजाजे की दुकान थी। दुकान का बही-खाता लूंडी में चलता था। तीस-चालीस लाख का वर्ष में व्यापार हो जाता था, जिसमें से दुकान का खर्च निकालकर बीस-पच्चीस हजार वार्षिक की बचत होती थी।

इस पर भी मलावामल्ल का पोता स्कूल में छः घंटे में तीन घंटे अंग्रेजी पढ़ता था और एक घंटा गणित, ज्योमेट्री और एल-जेबरा सीखता था।

मलावामल्ल का बड़ा पोता विश्वम्भरनाथ जानता था कि अंग्रेजी उसके उपयोग की नहीं है। मैथेमैटिक्स में एलजेबरे का दुकान में कोई काम नहीं है। वैसे उसकी निजी रुचि के विषय थे : इतिहास, संस्कृत और हिन्दी और ये तीनों विषय स्कूल की शिक्षा में गौण थे। सप्ताह में तीन आधे आधे घंटे के 'पीरियड' इतिहास के लिए और इतना ही समय हिन्दी तथा संस्कृत की पढ़ाई के लिए नियत था।

स्कूल में एक पण्डित लक्ष्मीचन्द संस्कृत के अध्यापक थे, जो बनारस से न्यायशास्त्र की उपाधि प्राप्त कर आये थे। उन्हें विश्वम्भरनाथ की रुचि संस्कृत में विदित हुई तो उनकी भी उसके प्रति रुचि हो गई।

एक दिन पण्डितजी के मन में विचार उत्पन्न हुआ कि इस लड़के की रुचि के विषय के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलता। इस कारण उन्होंने स्कूल बन्द होने पर विश्वम्भरनाथ के साथ-साथ चलते हुए पूछ लिया, 'विश्वम्भर ! किसके लड़के हो ?'

विश्वम्भर ने कहा, 'अनारकली बाजार में मलावामल्ल सन्त-राम की हमारी दुकान है। मैं लाला सन्तरामजी का लड़का हूं।'

'कहां रहते हो ?'

'पण्डितजी ! पीपल वेहड़ा में।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तुमने नौकरी तो करनी नहीं, फिर यह अंग्रेजी-एलजेबरा पर अपना जीवन व्यर्थ गंवा रहे हो।'

'तो क्या करू ?'

'तुम नित्य मेरे घर पर एक घंटा संस्कृत पढ़ने आया करो तो मैं तुम्हें संस्कृत का विद्वान बना दूंगा।'

'पण्डितजी, आप कहां रहते हैं ?'

'जौड़े मोरी, कूचा बाल माता में।'

'वह तो बहुत बड़ा मुहल्ला है।'

'अभी चलो, तुम्हें अपना मकान दिखा देता हूं। स्कूल के उपरान्त घर पर ही आ जाया करो। मैं समझता हूं कि एक वर्ष में ही तुम एक विद्वान शास्त्री बन सकोगे।'

विश्वम्भरनाथ को यह ईश्वरीय कृपा ही प्रतीत हुई थी। उसके मन में यह विचार नहीं आया कि पण्डितजी को दान-दक्षिणा भी देनी होगी।

यह बात तो विश्वम्भरनाथ के पिता सन्तराम को समझ आयी। विश्वम्भरनाथ को पण्डित लक्ष्मीचन्द के पास जाते हुए एक मास से कुछ ही अधिक समय व्यतीत हो चुका था कि विश्वम्भरनाथ की मां सदारानी ने अपने पति से विश्वम्भरनाथ की शिकायत की कि आजकल विश्वम्भरनाथ बहुत देरी से स्कूल से लौटता है।

अगले ही दिन पिता ने पुत्र से पूछ लिया, 'स्कूल से सीधे घर क्यों नहीं आते ?'

विश्वम्भरनाथ ने अब पण्डितजी की बात बतायी तो सन्तराम समझा नहीं। उसने पूछा, 'संस्कृत पढ़कर तुमने 'पौवा' बनना है क्या ?'

'नहीं पिताजी ! शास्त्र पढ़ूंगा। रामायण, महाभारत, पुराण आदि शास्त्र पढ़ने से अक्ल आयेगी।'

'और अंग्रेजी पढ़ने से अक्ल नहीं आती ?'

'पिताजी ! वह तो पहले ही स्कूल में बहुत पढ़ता हूं। छः घंटे में तीन घंटे रोज अंग्रेजी की पढ़ाई होती है।'

'और फिर भी तुम परीक्षा में अंग्रेजी में फेल होते हो ?'

'पण्डितजी मुझे संस्कृत भाषा पढ़ायेंगे। मैं संस्कृत में श्रेणी में अव्वल था।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'मगर पण्डितजी को इस अपनी पढ़ाई की फीस क्या देते हो ?'

'क्या दूं ? मेरे पास तो देने के लिए कुछ होता ही नहीं और पण्डितजी कुछ मांगते भी नहीं।'

'पण्डितजी को दान-दक्षिणा में कुछ देना चाहिए। अच्छा, इस रविवार को दुकान पर आना। पण्डितजी के लिए कुछ दूंगा। वह उन्हें मेरी ओर से देकर मेरा नमस्कार कहना।'

उन दिनों रविवार को दुकानें बंद नहीं होती थीं। उस दिन बिक्री कुछ अधिक ही होती थी।

विश्वम्भर रविवार के दिन दुकान पर गया तो पिता ने पण्डितजी की पत्नी के लिए सूट का कपड़ा, ओढ़ने के लिए रेशमी चादर, पण्डितजी के लिए कुर्ता-पाजामा, कोट और पगड़ी का कपड़ा एक गठड़ी में बांधकर दिया और कहा, 'पण्डितजी को मेरा नमस्कार कर कहना कि कृपा बनाये रखें।'

इस प्रकार विश्वम्भर अंग्रेजी में पिछड़ता गया और संस्कृत तथा हिन्दी में उन्नति करता गया।

जिस दिन बुद्धिप्रकाश का यज्ञोपवीत-संस्कार हो रहा था, विश्वम्भर की मैट्रिक की परीक्षा हो चुकी थी, परन्तु परीक्षा फल का अभी पता नहीं चला था। विश्वम्भर दिन-भर दुकान पर बैठा करता था और सायंकाल पण्डित लक्ष्मीचन्द से संस्कृत पढ़ने जाता था।

संस्कार कराते हुए परिवार के पुरोहित पण्डित बृजलाल गणेश पूजा कराने लगे तो वह गणपति 'गुअं स्वाहा रुद्राय मरुताय स्वाहा' बोले। इस पर अनायास ही विश्वम्भर के मुख से निकल गया, 'पण्डितजी ! उच्चारण तो शुद्ध करिये।'

बृजलाल का विचार था कि स्कूल में पढ़ा लड़का उच्चारण के विषय में क्या जान सकता है। इस कारण उसने पूछ लिया, 'क्या अशुद्ध है ?'

'पण्डितजी ! अशुद्ध है, 'गुअं'। यह कोई अक्षर नहीं है।'

'अपने मास्टर को ले आओ तो समझा दूंगा। तुमको क्या पता है ?'

विश्वम्भर ने इसका उत्तर देना चाहा, पर संतराम ने विश्वम्भर को डांट दिया। उसने कहा, 'चुप रहो विश्वम्भर !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कार्य होने दो।'

'हां तो मैं चुप हूं पण्डितजी ! चलिए।' विश्वम्भर ने कह दिया।

यज्ञोपवीत में पूजा-पाठ चलता रहा। बुद्धिप्रकाश बहनों और दूसरे सम्बन्धियों से भीख मांगने गया। सम्बन्धियों ने भीख दी। सब ओर से बधाइयों का तांता बंध गया।

पीछे मिठाई बंटी और सब आये हुए अभ्यागत विदा हुए तो पण्डितजी को भोजन कराया गया। भोजन करते समय पुनः बृजलाल ने बात आरम्भ कर दी। उसने कहा, 'देखो विश्वम्भर। स्कूल की पढ़ाई और पाठशाला की पढ़ाई में अन्तर है।'

'हां पण्डितजी ! यह मैं समझता हूं, परन्तु आप तो दोनों की पढ़ाई के विपरीत उच्चारण कर रहे थे। 'गुअं' कोई उच्चारण नहीं है।'

'परन्तु पूजा पद्धति में उच्चारण तो है।'

'पण्डितजी ! वहां तो लिखा है वह 'अनुस्वर' का चिन्ह है। वह कोई पृथक् अक्षर नहीं, न ही अनुस्वर का उच्चारण 'गुअं' है। होना चाहिये गणपति स्वाहः !'

संतराम ने पुनः लड़के को डांटकर कहा, 'बड़ों और विद्वानों से झगड़ा नहीं किया जाता।'

विश्वम्भर का कहना था, 'पिताजी ! विचार तो किया जाता है। अभी तो विचार ही कर रहा हूं। अब देखिये न, ब्रह्मचारी का भिक्षा मांगकर दान-दक्षिणा गुरुजी को देना, यह सब नाटक नहीं है क्या ?'

इसका उत्तर बृजलाल ने दिया, 'और संसार में है ही क्या ? सब ही नाटक होता है। यह पुत्र, कलत्र, माता, पिता सब संसार में नाटक ही तो हो रहा है। कौन किसका क्या है, कौन जानता है ? जीवात्मा का क्या परिचय है और क्या सम्बन्ध है ?'

विश्वम्भर चुप कर गया। इस पर भी समीप बैठे छोटे भाई को सिर मुंडाये पीत वर्ण की धोती, छः सूत्र का मोटा-सा यज्ञोपवीत कंधे पर पहने देखकर विश्वम्भर पूछने लगा, 'बुद्धिप्रकाश ! क्या अब पण्डितजी के घर में रहोगे अथवा स्कूल में ही पढ़ोगे ?'

'दादा !' बुद्धिप्रकाश ने कह दिया, 'अब तुम्हारी बगल में बैठूंगा। पण्डितजी के घर में तो मेरे लिए खाट भी नहीं है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तब ठीक है। यह सब ढोंग है। मैं तुम्हें इससे मुक्त करा दूंगा।'

'ढोंग क्या होता है ?' पण्डितजी ने पूछ लिया।

'यह नाटक, यह ढकोसला जिससे आज आपकी जेब और आपका पेट गरम हो रहा है।'

पण्डित बृजलाल संस्कार के उपरांत भोजन कर रहा था। खाने में खीर थी, पूरी तथा सब्जी-भाजी, अचार, चटनी इत्यादि थे। पण्डितजी ने खीर खाते हुए कहा, 'लालाजी, यह आपका लड़का नास्तिक हो रहा है। इसे आर्यसमाजियों के स्कूल से उठा लीजिये।'

संतराम हंस पड़ा और बोला, 'पण्डितजी ! स्कूल की पढ़ाई तो खत्म हो गयी है। यह अब दुकान पर काम करता है। यह कहता है कि यह दसवीं श्रेणी की परीक्षा में अवश्य फेल होगा।'

'तब इसका विवाह कर दीजिये। इसकी बहू इसके कान पकड़-कर इसको सीधा कर देगी।'

अब विश्वम्भर हंस पड़ा और बोला, 'तो पण्डितजी ! क्या माताजी ने पिताजी के कान पकड़कर यह सब नाटक कराया है ?'

'हां,' उत्तर संतराम ने दिया, 'तुम्हारा भी तो यज्ञोपवीत हुआ था। उस समय भी और अब बुद्धिप्रकाश के यज्ञोपवीत के समय भी तुम्हारी मां ने ही प्रेरणा दी थी कि यह होना ही चाहिये, नहीं तो तुम द्विज नहीं रहोगे।'

उसकी मां ने यह क्यों कहा था और द्विज होने से क्या हो जाता है, साथ ही मां को अपने बच्चों की सबसे अधिक चिंता क्यों है, इसे विश्वम्भर समझ नहीं सका।

अगले दिन वह बुद्धिप्रकाश के संस्कार की मिठाई लेकर पण्डित लक्ष्मीचन्दजी के घर पहुंचा तो वहां यह बताते हुए कि मिठाई किस उपलक्ष्य में आई है, वह पण्डित बृजलाल से हुआ वार्तालाप सुनाने लगा। वार्तालाप सुन पण्डित लक्ष्मीचन्द हंस पड़ा। हंसकर उसने कहा, 'देखो विश्वम्भर ! इस दुनिया में सत्य क्या है, कोई विरला ही जानता है। सब बिना जाने ही यह जीवन-व्यवहार चला रहे हैं। इसी कारण वे इस संसार को मिथ्या कहते हैं। परन्तु कुछ हैं जो इस संसकार को मिथ्या जानते हुए भी इसे चलाते हैं और इसका भोग करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अब देखो, स्वामी दयानन्दजी के नाम पर धन इकट्ठा करके आर्यसमाजी स्कूल-कालेज चला रहे हैं। कितना ढोंग है।

'स्वामीजी वेद-विद्या की शिक्षा देने की बात कहते थे और स्कूल के अधिकारी वे हैं जिनको वेद का एक अक्षर भी नहीं आता। धन स्वामीजी के नाम पर एकत्रित होता है और छः घंटे की पढ़ाई में तीन घंटे अंग्रेजी पढ़ाते हैं, एक घंटा गणित पढ़ाते हैं। साइंस पढ़ने वाले विद्यार्थियों को संस्कृत तथा हिंदी के दर्शन तक भी नहीं होते, वेद की तो बात ही दूसरी है।

'इसी प्रकार संसार की बात बताता हूं। स्कूल-मास्टर शिक्षा का अर्थ अंग्रेजी की ग्रामर और कम्पोज़ीशन सिखाना समझते हैं और जो वास्तविक शिक्षा है, उसका एक शब्द भी नहीं होता और देश के धनी-मानियों से धोखा किया जा रहा है। शिक्षा के स्थान पर कुशिक्षा दी जा रही है।

'यही बेचारा बृजलाल कर रहा है। वह यजमानों से दान-दक्षिणा लेकर ढोंग रच रहा है। न बुद्धिप्रकाश वेद पढ़ने गया है, न पढ़ने के लिये उसके पास समय है। खाना, पीना, दान-दक्षिणा, मिठाइयां या खीर-पूरी यह सब ढोंग होता है और सभी इस ढोंग को चलाते हैं।

'और यह आज से नहीं हो रहा है। सदियों से यह ब्राह्मण वर्ग पूर्ण जाति को मूर्ख बना रहा है।

'द्विज तो तुम बन रहे हो। अभी अष्टाध्यायी पढ़ रहे हो। इसके उपरांत यदि तुम आते रहे तो तुम्हें निरुक्त पढ़ाऊंगा। तब तुम वेदाध्ययन कर द्विज बन जाओगे।'

'तब मैं भी पुरोहित बन जाऊंगा ?'

'नहीं, यह आवश्यक नहीं है। तुम दुकान करते हुए भी द्विज हो सकोगे। तब तुम्हारा यह यज्ञोपवीत ढोंग नहीं रहेगा। यह एक वास्तविक स्थिति होगी।'

'परन्तु पण्डितजी ! आपको तो पिताजी ने यह आधा सेर मिठाई देकर छुट्टी कर दी है।'

'यह मेरे किसी कार्य का परिश्रम नहीं है। जो कुछ तुम एक बार पहले लाये थे, उसे भी मैं अपना परिश्रम नहीं समझा था। तुम्हें पढ़ाते हुए मैं तो एक ब्राह्मण का कार्य कर रहा हूं और अपना जन्म और अपनी शिक्षा को सार्थक कर रहा हूं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वम्भर कुछ समझा और कुछ नहीं समझा, इस पर भी वह चुप रहा।

2

परन्तु बात यहां समाप्त नहीं हुई। उस दिन विश्वम्भर दुकान पर आया तो बाबा मलावामल्ल ने पूछा, 'पण्डितजी की भी कुछ भेंट-पूजा की है या नहीं ?'

'बाबा ! मां ने एक थैली में कुछ लड्डू दिए थे। वह दे आया हूं। भेंट-पूजा तो बृजलाल की हुई है। वह मिठाइयां, वस्त्र तथा सम्बन्धियों से मिले नारियल, छुआरे, फल-फूल इत्यादि गठड़ी बांध कुली से उठवाकर ले गया है। पिताजी ने उसे इक्यावन रुपए की दक्षिणा भी दी थी और बेचारे को मंत्रोंच्चारण भी नहीं आता था।'

'हां, संतराम कह रहा था कि कल वह तुम्हारी बात का उत्तर नहीं दे सका था।'

'यह पिताजी ने कहा था ? कल तो वह पण्डितजी के सामने मुझे डांट रहे थे।'

'यह इसलिए कि वह पुरोहित है। पुरोहित का मान करना ही चाहिए।'

'बाबा !' विश्वम्भर ने कह दिया, 'मेरे पण्डितजी कहते थे कि यह सब ढोंग ही है।'

'वह क्या होता है ?'

'जो वास्तव में न हो और उसे बना-सजा कर उपस्थित किया जाये। कल बुद्धिप्रकाश के यज्ञोपवीत-संस्कार पर पिताजी बता रहे थे कि दो सहस्र रुपया व्यय हो गया है। मेरे यज्ञोपवीत पर तो इससे भी अधिक खर्च हुआ था। बस यह ढोंग ही था क्योंकि मैं तो अपने-आपको अभी द्विज नहीं मानता। जो कुछ भी सीखा है वह पिताजी के दो हजार खर्च करने से नहीं सीखा। पण्डित जी के पढ़ाने से सीखा हूं। यह सार्थक है और जो यज्ञोपवीत पर हुआ था वह दिखावा और धोखाधड़ी था।'

'तो तुम अपने माता-पिता को ढोंगी समझते हो ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'माता-पिता को तो नहीं, हां यह समझता हूं कि कोई है जो यह सब ढोंग करा रहा है।'

'कौन है ?'

'बाबा ! जानने का यत्न कर रहा हूं। अभी ठीक-ठीक समझ नहीं आ रहा।'

'देखो विश्वम्भर, तुम अभी नासमझ हो। यह समाज, बिरादरी है जो इस सबको करने की प्रेरणा दे रही है। जब हमने इतना कुछ बुद्धिप्रकाश के यज्ञोपवीत-संस्कार पर खर्च किया है तो बिरादरी वाले समझने लगे हैं कि हम तुम्हारे ववाह पर दस हजार व्यय करेंगे और फिर अच्छे-अच्छे परिवारों के रिश्ते आने लगेंगे।'

'अच्छे से क्या मतलब ?' विश्वम्भर ने पूछ लिया।

'जो अपनी लड़की को एक-सवा सेर सोना दे सकें। जो लड़की और लड़के को वस्त्रों से भरे संदूक दे सक।'

'और लड़की चाहे कुरूप हो ?'

'यह लड़की का अवगुण नहीं समझा जाता।'

'बाबा ! तो किन गुणों वाली मेरी पत्नी ढूंढ़ी जा रही है ?'

'बताया तो है। कुछ दिन हुए मैं घर में तीनों बहुओं के साथ परिवार के भूषणों को तोल रहा था। बीस सेर सोना और एक मन चांदी थी। उसमें तुम्हारी ससुराल वाले कितना डालते हैं, यही देखना है।'

विश्वम्भर बाबा को घर की सम्पत्ति की गिनती-मिनती करते देख टुकुर-टुकुर मुख देखता रह गया। बाबा ने आगे कह दिया, 'मेरे मरने पर जब तीनों लड़के पृथक्-पृथक् होंगे, तब यह सब कुछ तराजू में तोल-तोलकर बांटा जायेगा।'

'और बाबा ! दुकान भी तराजू में तोलकर बांटी जायेगी ?'

'नहीं। हां, घर का बंटवारा तो मैं अपने जीवनकाल में ही कर देना चाहता हूं। पीछे कहीं किसी के दिमाग में कचहरी जाने का विचार आ गया तो सब बेकार हो जायेगा। तुम्हारी चाचियां झगड़ा कर सकती हैं। इस कारण मैं अपने सामने ही लिखत-पढ़त कर देना चाहता हूं।'

घर में सोने की मात्रा की बात सुनकर विश्वम्भर के मुख से निकल गया, 'बाबा ! बंटवारा कब करोगे ?'

'मैं चाहता हूं कि तुम्हारे विवाह के बाद करूं। मगर तुम्हारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चाचा कह रहा है कि तुम्हारे विवाह से पहले ही हो जाये तो ठीक है।'

'बाबा ! यह ठीक है। पहले ही हो जाये। मैं समझ रहा हूं कि मेरी ससुराल वाले कुछ अधिक दे नहीं सकेंगे।'

'सवा सेर सोने का प्रस्ताव तो आया है।'

'नहीं बाबा ! वहां नहीं।'

'तो कहां ? तुमने कहीं देखी है ?'

'हां बाबा !'

'कहां ?'

'एक गरीब की लड़की है। बहुत सुन्दर और सुशील है। पढ़ी-लिखी भी है।'

'तो तुम पिता और बाबा के सिर पर सौदेबाजी कर रहे हो ?'

'बाबा ! आपको लाकर दिखाऊंगा तो आप मान जायेंगे।'

'मैं नहीं मानूंगा।'

'क्यों ?'

'वह दहेज में क्या कुछ लायेगी, जब तक यह पता न चले, तब तक मैं शादी नहीं मानूंगा।'

'बाबा ! वह गीता पढ़कर सुनायेगी। रामचरितमानस की चौपाइयां गाकर घर-भर को मधुर बना देगी।'

'अच्छा, देखूंगा।'

विश्वम्भर चुप रहा। वह मन में विचार करता था कि बाबा शादी नहीं मानेंगे तो क्या शादी उनकी होनी है ? जिसकी होनी है वह वेदी पर बैठेगा ही नहीं, तो शादी किसकी करेंगे ?

विश्वम्भर बाबा से बात कर ही रहा था कि संतराम एक ग्राहक से निपटकर बाबा-पोते की बातें सुनने आ बैठा।

बात मलावामल्ल ने ही की। उसने पूछा, 'इसके पण्डितजी को बुद्धिप्रकाश के यज्ञोपवीत-संस्कार का क्या भेजा था ?'

'पता नहीं। इसकी मां ने ही कुछ दिया था।'

'यह कहता है कि आधा सेर लड्डू थे।'

संतराम ने चिन्ता व्यक्त करते हुए पूछा, 'तो पण्डितजी नाराज हैं ?'

विश्वम्भर ने कहा, 'पिताजी, उन्होंने तो टोकरी को माथे से लगा पण्डितायिन को बुलाकर बहुत ही प्रसन्नता प्रकट की थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उस समय पण्डितायिन ने दो लड्डू एक थाली में रख पण्डितजी को दिये तो वह खाते हुए बुद्धिप्रकाश को आशीर्वाद दे रहे थे।'

संतराम ने कुछ विचार कर कहा, 'अच्छा, मैं पण्डितजी से स्वयं मिलूंगा।'

बात समाप्त हो गयी। दुकान पर कुछ और ग्राहक आ गये थे। संतराम ग्राहकों से बात करने लगा।

अगले दिन चार बजे के उपरान्त विश्वम्भर पण्डित लक्ष्मीचन्द के घर पहुंचा तो पण्डितजी ने प्रसन्नवदन कहा, 'तुम्हारी माताजी से तो तुम्हारे पिताजी अधिक उदार प्रतीत होते हैं।'

'क्या हुआ पण्डितजी ?'

पण्डितजी ने अपनी धर्मपत्नी को आवाज दे दी—'गार्गी की मां ! जरा विश्वम्भर को दिखाना, उसके पिता ने जो भेजा है।'

गार्गी की मां सौदामिनी आयी तो पण्डितजी की लड़की गार्गी भी चली आयी। गार्गी को देख विश्वम्भर सदा चित्त में आह्लाद अनुभव किया करता था और आज उसके मुख पर उसके चित्त की प्रसन्नता फूट-फूटकर प्रकट होने लगी थी।

सौदामिनी कपड़ों की गठरी, उस पर एक सोने की पतली-सी चेन और एक थैली, जिसमें चांदी के सिक्कों में एक सौ एक रुपये रखे हुए थे, ले आयी।

सोने की चेन के साथ एक कागज पड़ा था, जिसपर लिखा था, यह पण्डितजी की लड़की के लिये है।

उस कागज पर लिखा हुआ पढ़कर सुनाकर पण्डितजी ने कहा, 'तुम्हारे पिता सत्य अर्थों में एक वैश्य जातीय प्रतीत होते हैं।

'तुम्हारी माताजी के भेजे लड्डू तो मीठे थे परन्तु वे एक ब्राह्मण की दक्षिणा के लिये पर्याप्त नहीं होते। मिठाई से न तो पेट भरता है न ही शरीर ढांपा जा सकता है।'

सौदामिनी ने कह दिया, 'गार्गी के लिये यह सोने की चेन है।'

पण्डितजी के मुख पर प्रसन्नता और संतोष के लक्षण प्रत्यक्ष दिखाई देते थे।

'मैं समझती हूं,' सौदामिनी ने कहा, 'दो-ढाई सौ की वस्तुएं होंगी।'

'माताजी ! यह कुछ नहीं। हमारे यहां ईश्वर की कृपा है। इतना कुछ तो दुकान पर आधे घण्टे की बिक्री से प्राप्त हो जाता है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हां,' पण्डितजी ने कह दिया, 'परन्तु विचारणीय यह है कि यह सब वे क्या समझकर दे रहे हैं। क्या यह तुम्हें देवभाषा पढ़ाने का मुझे प्रतिकार दिया है ? अथवा किसी अन्य भावना का इसमें हाथ है ?'

विश्वम्भर पण्डितजी का मुख देखता हुआ चुप रह गया। उसने पण्डितजी के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।

उस दिन का अष्टाध्यायी का पाठ आरम्भ हुआ तो गार्गी और उसकी माता कपड़ों की गठरी उठा मकान के भीतर ले गयीं। पण्डितजी ने विश्वम्भर से पूछ लिया, 'तुमने गार्गी के विषय में अपने भाव बाबा को अथवा अपने पिताजी को बताये हैं ?'

'गार्गी का नाम तो बीच में नहीं आया था परन्तु पिताजी कुछ समझते हैं, यह सोने की चेन देखकर अनुभव होता है। पण्डितजी, धुआं देखकर अग्नि का अनुमान होता है और इस चेन को देखकर मेरे मनोभावों का पता पिताजी को हो गया मालूम होता है।'

'क्या बात हुई थी और कब हुई थी ?'

'यह यज्ञोपवीत से पहले दिन की बात है। माताजी बहनों को मिठाई और विदाई का हिसाब करती हुई कह रही थीं कि जो कुछ हम बिरादरी में व्यय करते हैं, वह विवाह पर बटोर लिया जाता है। अब विश्वम्भर की शादी होगी तो इसकी ससुराल से इससे कुछ अधिक ही आशा करनी चाहिये। मैं भी वहीं बैठा था। मैंने कह दिया, पर मैं तो सुन्दर, पढ़ी-लिखी लड़की से विवाह करूंगा, चाहे गरीब घर की क्यों न हो।

'मां का कहना था, विवाह और पढ़ाई का क्या सम्बन्ध है ?

'मैंने कह दिया कि मैं शास्त्र पढ़ी पत्नी लाऊंगा।

'मां का प्रश्न था—तुमने उससे शास्त्रार्थ करना है क्या ?

'मैंने भी अपने मन की विचारित बात बता दी, मां ! चर्चा ही नहीं वरन् व्यवहार भी शास्त्रीय ही करूंगा।

'तो शास्त्रों में कुछ उससे भिन्न कहा है जो तुम्हारे पिता अपनी अनपढ़ पत्नी से करते हैं ?

'मैंने कहा, मुझे क्या पता कि वह क्या करते हैं ? मैं जो स्वयं करने का विचार रखता हूं वह ही बता सकता हूं।

'क्या करने का विचार रखते हो ? क्या तुम ·· ?

'इस पर पिताजी ने माताजी को बात करने से रोक दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
D-372

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कहा, बस, बहस को बंद करो। जब विवाह का समय आयेगा तो बात करेंगे। अब तो यज्ञोपवीत की ही बात होनी चाहिये। विश्वम्भर की बहनों और चाचियों को क्या देना चाहिये ?'

'पण्डितजी ! बस इतनी ही बात हुई थी। इसका ही परिणाम यह 'चेन' प्रतीत होती है।'

पण्डितजी ने कहा, 'मगर गार्गी की मां भी तो तुम्हारे विचार को पसन्द नहीं करती। वह कहती है कि ब्राह्मण के वीर्य से उत्पन्न सन्तान को एक वैश्य को नहीं देगी।'

'पण्डितजी ! जब माताजी कभी किसी ब्राह्मण वीर्य से उत्पन्न का निर्वाचन करेंगी तो मैं उसके ब्रह्म वर्चस् को चुनौती दूंगा। इस समय लाहौर में कदाचित् ही कोई ब्राह्मण का पुत्र मेरे समान अष्टाध्यायी का पण्डित होगा।'

'हां, तुमसे पढ़ाई में तो अधिक हो सकता है परन्तु समझने में तुम्हारी बराबरी नहीं कर सकेगा। मगर मुकाबिला तुम्हारा और तुम्हारी पढ़ाई का नहीं होगा वरन् तुम्हारे पिता के वीर्य का और गार्गी के पिता के वीर्य का होगा।'

'पण्डितजी ! गार्गी अभी बारह वर्ष की है। तीन वर्ष तक विवाह की बात नहीं होनी चाहिये। तब देखा जायेगा। मैंने अपने मन की बात कही है, आपकी और माताजी की स्वीकृति के बिना तो कुछ भी नहीं हो सकता।'

'और अपने माता-पिता की स्वीकृति ?'

'यह मैं तब देखूंगा, जब समय आयेगा।''

नियमानुसार पढ़ाई होती रही और जब विश्वम्भरनाथ चला गया तो सौदामिनी पण्डितजी की बैठक में आ गयी और बोली, 'मैं आपकी और विश्वम्भर की बातें सुनती रही हूं। यह तो ठीक है, इसने अपने पिता से यह नहीं बताया कि वह गार्गी के प्रति क्या विचार रखता है, परन्तु पिता समझ गया प्रतीत होता है और विश्वम्भर का विचार भी यही है कि उसके पिता को उसका लक्ष्य गार्गी समझ आयी है। तभी उसका नाम लिखकर यह स्वर्ण लाकेट भेजा है।'

'देखो भाग्यवान ! मैं इसका अर्थ यह नहीं समझता। मुझे यह समझ आया है कि लाला संतराम को यह पता तो है ही कि हमारी लड़की का क्या नाम है। इस कारण उन्होंने यह लाकेट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके विवाह पर इसको देने के लिये कहा है। विवाह कहां हो, इसका इससे सम्बन्ध नहीं है।

'इस पर भी मैं यह बता देना चाहता हूं कि मुझे यह विश्वम्भर पूर्ण रूप में ब्राह्मण ही प्रतीत होता है और इसके पूर्व जन्म के संस्कार जागरित होते जाते हैं।'

'यह सब कल्पना मात्र है। कल्पना के आधार पर हम बिरादरी में और लाहौर के हिन्दू समाज में अपना मुख काला नहीं करा सकते।'

'ठीक है। मैं यह मानता हूं कि लड़की पर तुम्हारा अधिकार मुझसे अधिक है और विवाह के विषय में बात तुम्हारी ही चलेगी।'

'परन्तु गार्गी ने तो वह लाकेट अभी से पहन लिया है।'

'तो फिर क्या हुआ ?'

'वह कहती है, बहुत सुन्दर है।'

'तो पहने रहने दो। उसे प्रसन्न हो लेने दो।'

'तो उसको तुम समझा दो कि हम ब्राह्मणों को लोग दान-दक्षिणा में बहुत कुछ देते रहते हैं।'

सौदामिनी पति के आश्वासन से सन्तुष्ट हो गयी और घर के भीतर चली आयी।

पण्डित लक्ष्मीचन्दजी ने आंखें मूंद दो मिनट तक विचार किया और उनके मुख से निकल गया, 'जो तुद भावे करतार! सोई होवे सब वार!'

लक्ष्मीचन्द मन में विचार कर रहा था कि कितना आडम्बर है जन्म जाति का! ब्राह्मण की सन्तान चाहे अनपढ़, उजड्ड क्यों न हो, वह श्रेष्ठ मानी जाती है।

लक्ष्मीचन्द का एक भाई था हुक्मचन्द। हुक्मचन्द बड़ा था और लक्ष्मीचन्द छोटा था। लक्ष्मीचन्द मेधावी बालक था। इस कारण उसके पिता ने उसको बनारस पढ़ने भेज दिया और हुक्मचन्द को घर की पुरोहिताई सौंप दी। लक्ष्मीचन्द के बनारस से न्यायशास्त्र पढ़कर लौटने से पहले ही उसके पिता का देहान्त हो गया था और हुक्मचन्द ने पिता का पुरोहिताई का काम समेट लिया था।

लक्ष्मीचन्द जब बनारस से लौटा तो एक निर्धन ब्राह्मण की कन्या सौदामिनी से उसका विवाह कर हुक्मचन्द ने उसे पृथक्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकान में ठहरा दिया। उन्हीं दिनों लक्ष्मी को डी० ए० वी० स्कूल में संस्कृत पढ़ाने का कार्य मिल गया। बस, फिर क्या था। वह यजमानों से पृथक् होता गया।

परिणामस्वरूप लक्ष्मीचन्द को पैंतीस रुपये मासिक वेतन पर निर्वाह करना पड़ता था। लगभग एक वर्ष से लाला संतराम के लड़के विश्वम्भर को पढ़ाने के प्रतिकार में उसे कुछ प्राप्ति हुई थी, परन्तु इससे घर-गृहस्थी भली-भांति नहीं चल सकती थी।

यज्ञोपवीत के अवसर पर एक सौ एक रुपया और एक स्वर्ण लाकेट की भेंट पति-पत्नी को सुखकारक अनुभव हुई थी। इस पर भी सौदामिनी बिरादरी में अपने श्वसुर पण्डित मोतीराम के नाम की शोभा से किसी ब्राह्मण परिवार में सम्बन्ध बना सकने की आशा लगाये हुए थी।

लक्ष्मीचन्द इसे बिरादरी का ढोंग ही समझता था। वह देख रहा था कि अनपढ़ बृजलाल की हिन्दू समाज में मान्यता है और वह तिरस्कार का पात्र बना हुआ है। वह इसे पाप मानता था जो पवित्रता के नाम पर खोटे सिक्के की भांति चल रहा था।

3

विश्वम्भरनाथ इसी कारण मैट्रिक की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुआ था कि उसके अंग्रेजी के 'ए' पर्चे में केवल दस अंक आये थे और 'बी' पर्चे में पन्द्रह। मैथेमैटिक्स में वह पास था। संस्कृत में उसे सर्वाधिक अंक प्राप्त हुए थे। इतिहास-भूगोल में भी उसके उत्तीर्ण होने के योग्य अंक थे।

परिणाम निकला तो पिता ने कहा, 'तुम अपना परीक्षा-फल देखने नहीं गये ?'

'मैंने परीक्षा देते समय ही देख लिया था।' विश्वम्भर का कहना था।

'क्या देख लिया था ?'

'यही कि मैं अनुत्तीर्ण हूं।'

'फिर भी देखना तो चाहिए।'

'तो आप बुद्धिप्रकाश को भेजकर पता करा लीजिये।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता ने यही किया। परीक्षा-फल विश्वविद्यालय कार्यालय के बाहर बोर्ड पर लगा हुआ था। बुद्धिप्रकाश गया और दस मिनट में लौट आया। आते ही उसने बताया, 'दादा का रोल नम्बर बोर्ड पर नहीं है। मैंने तीन बार देखा है।'

'तो तुम फेल हो?' सन्तराम ने लड़के से पूछा।

'पिताजी! मैंने तो पहले ही बताया था। मुझे अंग्रेजी नहीं आती।'

'तो अब क्या करोगे?'

'जो आप करते हैं। आप तो अंग्रेजी इतनी भी नहीं जानते।'

'तुम्हारी मां कह रही थी कि तुम्हें पृथक् दुकान करा देनी चाहिए।'

'परन्तु पिताजी! अकेले मैं दुकान कैसे करूंगा? प्रातः आठ बजे से रात के आठ बजे तक दुकान पर बैठना होगा।'

'तो बैठना चाहिए। तुम्हारे बाबा कहते हैं कि वह भी हमारे सज्ञान होने से पहले वैसा करते थे।'

'तब ठीक है। मैं भी कर लिया करूंगा।'

बात मलावामल्ल के दुकान पर आने पर हुई। संतराम ने कहा, 'विश्वम्भर परीक्षा में फेल हो गया है।'

बाबा का कहना था, 'तो फिर क्या हुआ? तुम तो मां के पेट से फेल होकर पैदा हुए थे। तुम पांचवीं श्रेणी भी पास नहीं कर सके थे।'

'इसकी मां कहती है कि इसके विवाह से पहले इसे पृथक् दुकान करवा देनी चाहिये।'

'तुमने तो अभी तक दुकान पृथक् नहीं की। तुम्हारे दोनों भाई पृथक्-पृथक् दुकान करते हैं। मगर तुम्हारी पत्नी ने तुमको अपने पिता से पृथक् दुकान करने की बात नहीं कही थी तो अपने लड़के के लिए क्यों कह रही है?'

संतराम इसका उत्तर नहीं दे सका। इस समय विश्वम्भर किसी ग्राहक को रेशमी सूट के लिए कपड़ा दिखा रहा था। एक सूट के लिए सात गज रेशम उसने उतारा था। वह साठ रुपये आठ आने देकर गया तो एक अन्य ग्राहक आ गया। विश्वम्भर उससे बात ही कर रहा था कि सतराम को बाबा ने कह दिया, 'तुम जाओ और विश्वम्भरनाथ को इधर भेज दो।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'क्या विश्वम्भर, पृथक् दुकान करोगे ?' बाबा ने विश्वम्भर के समीप आने पर पूछा।

'यह मां कहती है।'

'यह तो तुम्हारे पिता ने बताया है। मैं तुमसे पूछ रहा हूं।'

'बाबा ! जब मैं कहूंगा तो मुझसे पूछ लेना। मैंने मां की बात नहीं मानी।'

R 089.91 43
GUR-S

'तब ठीक है।'

'दुकान का बही-खाता देखा करो।'

'कहें तो इसे अंग्रेजी ढंग पर रखना शुरू कर दूं ?'

'तो तुम अंग्रेजी ढंग से हिसाब-किताब रखना जानते हो ?'

'सो तो नहीं जानता। उस तरीके से भी तो सीखना पड़ेगा। इससे कहता हूं कि जो कुछ दस वर्ष पीछे सीखना है, वह आज ही क्यों न सीख लूं ?'

'बहुत दूर की बात सोचते हो ?'

'हां बाबा ! हमारे शास्त्र में कहा गया है, प्रयाण काल का चिन्तन करो।'

'वह क्या होता है ?'

'वह शरीर छोड़ने का समय होता है।'

'उस वक्त की बात भला क्या विचार करनी चाहिये ?'

'यही कि उसके उपरान्त क्या होगा ? अच्छे कर्म करने वाले पुनः मनुष्य बनते हैं और बुरे कर्म करने वाले पशु बनते हैं।'

'अच्छे कर्म क्या होते हैं ?' मलावामल्ल ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

'जो सर्वहिताय हों।'

'सर्वहिताय का क्या मतलब है ?'

'जो सबके लाभ में हो।'

'परन्तु दुकान तो केवल हमारे लाभ की है।'

'नहीं, यह ग्राहकों के हित में भी है। पिताजी कह रहे थे कि हम बाजार भर से माल बढ़िया और सस्ता बेचते हैं। इसी कारण हमारी दुकान पर ग्राहकों की भीड़ लगी होती है।'

मलावामल्ल को समझ आया कि बाप से पुत्र अधिक तेज है।

अतः जब पिता ग्राहक से निपटकर आया तो बाबा ने कहा, 'देखो संतराम ! अगर पृथक् दुकान करनी हो तो कर लो। विश्वम्भर

168012
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तो मेरे साथ ही दुकान करेगा।

'मगर विवाह तो इसका होना है और इसकी होने वाली सास यही कहती है।'

विश्वम्भर बोल उठा, 'नहीं बाबा! मेरा बनने वाला ससुर कहता है कि बाबा के साथ दुकान करनी चाहिए।'

'सत्ये?' मलावामल्ल ने पूछ लिया, 'वह कौन है?'

'बाबा! उसने कहा है कि उसका नाम नहीं बताना। वह विवाह से एक महीना पहले स्वयं बतायेगा।'

संतराम हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, 'पर मैं जानता हूं।'

'क्या जानते हो?' बाबा ने पूछा।

'विश्वम्भर का ससुर बनने का उम्मीदवार कौन है।'

'कौन है?'

'पण्डित लक्ष्मीचन्द है। उसकी एक ही लड़की है और पण्डित उसके लिए ही विश्वम्भर पर डोरे डाल रहा है।'

'अच्छा, मैं उससे बात करूंगा।'

'मगर बाबा! लक्ष्मीचन्द के घर पर भांग भुजती है।' संतराम ने कहा।

'और किसके घर में सोना भुजता है?'

'सेठ शंकरदास की लड़की है। उसकी शहर में बजाजे की बहुत बड़ी दुकान है। उसकी पत्नी विश्वम्भर की मां से कह गयी है कि सवा सेर सोना लड़की को पहनाकर विदा करेगी।'

'तब तो उसकी लड़की बहुत वजनी होगी?'

'हां, यह वही कहती है कि विश्वम्भर को पृथक् दुकान करा दी जाये।'

'तब तो बात विचारणीय हो गयी है?'

इसके कई दिन पीछे की बात है। सायंकाल विश्वम्भर जब पढ़ने पण्डितजी के घर गया तो लक्ष्मीचन्द ने कहा, 'तुम आज दुकान पर नहीं थे?'

'मुझे बाबा ने घर काम पर भेज दिया था।'

'किस काम के लिए भेजा था?'

'मां के जम्फर के लिए अढ़ाई गज कपड़ा देकर कहा था, तुम्हारी मां मंगाती है। उसे दे आओ।

'मगर पण्डितजी! घर पर जब मैं पहुंचा तो मां कहती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बीमार उसके तो वह कपड़ा मांगा नहीं था।

लक्ष्मीचन्द ने मुस्कराकर कहा, 'तब मैं समझ गया हूं। आज जब मैं स्कूल जाने लगा था तो तुम्हारी दुकान का नौकर भवानी आकर कह गया था कि लाला मलावामल्ल मुझसे मिलना चाहते हैं।

'ऐसा मालूम होता है कि मुझसे तुम्हारी अनुपस्थिति में मिलने के लिए तुम्हें घर भेज दिया था।'

'तो पण्डितजी! मुझे वह बात नहीं बतानी चाहिए जो उन्होंने आपसे कही है?'

विश्वम्भर को संदेह हो रहा था कि उसके विवाह के सम्बन्ध में ही बात हुई है। इसी कारण बात उसको दूर हटाकर की गयी है। यह उसे जानने का यत्न नहीं करना चाहिए।

'परन्तु,' पण्डितजी ने कहा, 'तुम्हारे बाबा ने कहा है कि तुमको बता दूं।'

'तो फिर मुझे वहां से एक व्यर्थ काम पर क्यों भेजा था?'

'वह बात करने के पहले था। मुझसे बात करने के उपरान्त ही तुम्हें बताने की बात कही थी।'

'तो आप बता दीजिये।'

'बाबा पूछते थे कि मैं अपनी लड़की का विवाह विश्वम्भर से करना चाहता हूं?

'मेरा कहना था, विवाह, जन्म-मरण की बातें ईश्वराधीन होती हैं। यह किसी मनुष्य के करने से नहीं होतीं। मैं इसमें निष्पक्ष हूं।

'बाबा का प्रश्न था, तब यह यत्न लड़का-लड़की स्वयं कर रहे हैं क्या?

'मेरा कहना था कि लड़की तो अभी विवाह की बात समझती ही नहीं। उसकी विश्वम्भर से कभी बात हुई नहीं। और लड़की की मां इस विवाह को पसन्द नहीं करती। इसी कारण मैं इस विवाह के विषय में निष्पक्ष हूं।

'उन्होंने पूछ लिया, तो विश्वम्भर आपकी पत्नी से झगड़ा किया करता है?

'मैंने कहा, मैंने कभी झगड़ा करते देखा नहीं। मैंने एक दिन उसे बताया था कि लड़की की मां अपनी लड़की का वश्य समुदाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में नहीं विवाहना चाहता। इसपर उसका कहना था कि वह किसी बड़े की सिफारिश लगवायेगा।

'किस बड़े की ? तुम्हारे बाबा ने पूछा तो मैंने अपना अनुमान नहीं बताया। मैंने केवल यह कहा है कि कदाचित आपकी ही सिफारिश लगवाने की बात कह रहा था। इस पर भी मैं एक निर्धन ब्राह्मण इस विषय में कुछ नहीं कह सकता।

'तुम्हारे बाबा का कहना था कि उनकी राय के बिना विश्वम्भर का विवाह नहीं होगा। यदि उसने ऐसा किया तो एक पैसा दिये बिना उसे घर से निकाल दूंगा।

'मैंने भी कह दिया, ठीक है। बिना बड़ों से राय किये बिना विवाह नहीं हो सकता। इस पर तुम्हारे बाबा ने कहा है कि मैं तुम्हें यह बात बता दूं। तुम्हारा विवाह एक ब्राह्मण कन्या से घर में कोई पसन्द नहीं करता।

'जब मैं वहां से चलने लगा तो दुकान का सेवक एक गिलास में दूध तथा एक तश्तरी में मिठाई ले आया और मैं तृप्त होकर यजमान की जय-जयकार करते हुए चला आया हूं।'

विश्वम्भर ने मुस्कराते हुए कहा, 'पर पण्डितजी ! मेरे बाबा और मेरे पिता आपके यजमान नहीं हैं।'

पण्डितजी ने कहा, 'मैं तो अपने को तुम्हारा उपाध्याय मानता हूं। यह पद पुरोहित पद से बहुत ऊंचा है। आपके परिवार के पुरोहित पण्डित बृजलाल हैं। हमारी उनसे कुछ भी तुलना नहीं है।'

दोनों हंस पड़े और अष्टाध्यायी का पाठ आरम्भ हो गया।

रात मलावामल्ल ने सन्तराम की पत्नी सदारानी, सन्तराम और विश्वम्भरनाथ को अपने सोने के कमरे में बुलाकर कहा, 'देखो बहू ! घर में झगड़ा पैदा किया तो तुम और तुम्हारे पति को घर और दुकान से निकाल दूंगा।

'और विश्वम्भर ! तुम भी सुन लो। अगर तुमने मुझसे झगड़ा किया तो तुम्हें एक पैसा दिये बिना दुकान से भी छुट्टी कर दूंगा। फिर जो कुछ तुमने लेना होगा कचहरी के द्वारा ही ले सकोगे।'

'पर बाबा !' विश्वम्भर ने पूछ लिया, 'झगड़ा क्या है ? मां ने तो अभी हलवा-पूरी खिलाई है। यह झगड़े के लक्षण नहीं हैं।'

'अरे बेवकूफ ! हमारे घर में हलवा-पूरी तो भंगी-चमारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की भी मिलती है। झगड़ा है तुम्हारी होने वाली पत्नी के विषय में। वह लाला शंकरदास की लड़की होगी अथवा पण्डित लक्ष्मी-चन्द की लड़की होगी?'

'इसपर भी बाबा! झगड़ा यह नहीं है। बात यह है कि बहू आयेगी मां की पसन्द की और मेरी पत्नी आयेगी मेरी पसन्द की। जब तक दोनों एकमत नहीं होते, न बहू आयेगी न पत्नी।'

'परन्तु यदि तुम्हारी मां ने कल तुम्हारी सगाई रचा दी तो क्या करोगे?'

'बाबा! घर में बहू लाने का अधिकार मां को है, मगर पत्नी लाने का अधिकार मेरा है। तब भी बाबा! झगड़ा नहीं होगा। बहूवाला घर और पत्नीवाला घर पृथक्-पृथक् हो जायेगा।'

'और दुकान?'

'दुकान का इससे क्या सम्बन्ध है? न बहू ने दुकान पर जाना है, न ही मेरी पत्नी जो भी होगी, ने दुकान का काम करना है।'

'मतलब यह है कि तुम घर छोड़ दोगे और दुकान पर काम करोगे?'

'हां बाबा! परन्तु वह भी आपकी स्वीकृति से।'

'और मैं यदि घर छोड़ने पर तुम्हें दुकान से भी छुट्टी कर दूं तो क्या करोगे?'

'तो बाबा, पेट भरने के लिए कुछ और काम कर लूंगा।'

'अब तुम बताओ सदारानी, तुम क्या चाहती हो?'

सदारानी छोटा-सा घूंघट निकाले भूमि पर बैठी थी। सन्तराम उसके पीछे बैठा था। विश्वम्भर मां के सामने भूमि पर ही बैठा था। सदारानी ने कहा, 'घर में बहू लाने की बात औरतों के अधिकार में है। मैंने अपनी दोनों देवरानियों से बात की है। हम सबने लड़की को देखा और पसन्द किया है। अब बाबा! आपकी स्वीकृति हो तो सगाई का दिन निश्चय कर दें?'

'परन्तु विश्वम्भर की बात सुनी है?'

इस पर सन्तराम ने मुस्कराते हुए कहा, 'पिताजी! मेरे विवाह के समय तो ऐसी 'कान्फरेन्स' नहीं बुलाई गई थी।'

'यह इसलिए कि उस समय तुम नौ वर्ष की आयु के थे। तुम में विश्वम्भर की सी बुद्धि नहीं थी। विश्वम्भर शास्त्र पढ़ता है और तुमको मैं मार-पीटकर 'दरें' लगानी सिखाता था।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
[illegible] कर [illegible] ने सदारानी को कह दिया, 'बिना सन्तराम से और मुझसे राय किये शकरदास की लड़की की सगाई नहीं होगी।'

बस कान्फरेन्स बंद हुई और शंकरदास की लड़की की सगाई और शादी बिरादरी के एक अन्य लाला गिरधारीलाल के लड़के राधेलाल से हो गयी।

सदारानी उस विवाह पर शंकरदास का दिया दहेज सुन सिर धुनने लगी। वैसे शंकरदास ने मलावामल्ल के घर से किसी को भी विवाह के अवसर पर बुलाया नहीं था।

राधेलाल विश्वम्भरनाथ की श्रेणी में ही पढ़ा करता था। उसने भी मैट्रिक की परीक्षा इसी वर्ष दी थी और वह सैकेण्ड डिवीजन में उत्तीर्ण हुआ था। वैसे दोनों भिन्न-भिन्न स्कूलों में पढ़ते थे।

कभी-कभार ही राधेलाल और विश्वम्भरनाथ में मेल-जोल होता था। ऐसे ही एक दिन दोनों एक सायंकाल मिले। विश्वम्भर-नाथ पण्डितजी के घर से पढ़ाई कर लौट रहा था और राधेलाल अपनी दुकान से अपने घर को जा रहा था। विश्वम्भर पण्डितजी के घर से निकला ही था कि राधेलाल सामने से घर को जाता हुआ मिल गया। उसके हाथ में एक डूने में तले हुए पकौड़े थे।

विश्वम्भर ने ही बात की, 'राधे भैया! विवाह पर हमें बुलाया भी नहीं?'

'ओह विश्वम्भर! बताओ, किधर से आ रहे हो?'

'तो यह मेरे प्रश्न का उत्तर है?'

'भाई! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर तो यह है कि मेरी ससुराल वालों ने कहला भेजा था कि यदि मलावामल्ल के घर का कोई भी व्यक्ति बारात में आया तो शादी नहीं होगी।'

'ओह! तो यह बात है! हम सब लोग विस्मय कर रहे थे कि लाला गिरधारीलालजी ने हमें लड़के की शादी पर क्यों नहीं बुलाया।'

राधेलाल ने कहा, 'रजनी की सगाई तुम्हारे घरवालों ने अस्वीकार की थी। इस कारण लाला शंकरदास ने तुम लोगों को उसके घर बारात में साथ ले जाने से मना कर दिया था।'

इस पर विश्वम्भर ने पूछ लिया, 'और सुनाओ, बीवी अच्छी है?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'तुमको उससे क्या ?'

'हां बाबा ! हमको उससे क्या ? अच्छा नमस्ते।'

लाला गिरधारीलाल का पुरोहित पण्डित लक्ष्मीचन्द का बड़ा भाई हुक्मचन्द था और उसने अपने भाई को बताया था कि मलावामल्ल के घर से शंकरदास की लड़की के सम्बन्ध अस्वीकार होने के कारण शंकरदास बहुत नाराज है।

लक्ष्मीचन्द ने पूछा, 'तो नाराज होकर क्या करेगा ?'

हुक्मचन्द ने कहा, 'एक बात लाला शंकरदास ने की है कि मलावामल्ल को बिरादरी में बदनाम करना आरम्भ कर दिया है।'

'क्या बदनामी शुरू कर दी है ?'

'यही कि उसका लड़का आवारा है। दसवीं जमात की परीक्षा भी उत्तीर्ण नहीं कर सका।'

लक्ष्मीचन्द मुस्कराता हुआ चुप रहा। वह बताना नहीं चाहता था कि शंकरदास की नाराजगी का कारण उसका शिष्य विश्वम्भर ही है।

मगर यह बात मलावामल्ल के कान तक पहुंची तो वह खिल-खिलाकर हंस पड़ा। इन दिनों विश्वम्भर नित्य प्रातःकाल रेलवे रोड पर 'एकाउंटेंसी' सिखाने की एक कम्पनी में हिसाब-किताब रखने का ढंग सीखने जाया करता था और उसने दुकान के खाते भी अंग्रेजी ढंग से रखने आरम्भ कर दिये थे।

मलावामल्ल को इसमें सहूलियत यह ही समझ आयी थी कि आयकर के दफ्तर में हिसाब-किताब शीघ्र ही स्वीकार हो जायेगा।

जब उसे विश्वम्भर की मां ने बताया कि जहां भी विश्वम्भर की सगाई की बात की जाती है तो सब कहते हैं, लड़का आवारा है, वह दसवीं श्रेणी की परीक्षा भी पास नहीं कर सका तो मलावा-मल्ल ने पूछ लिया, 'फिर क्या हुआ ?'

सदारानी ने कहा, 'बाबा ! लड़के की शादी तो करनी ही है।'

'देखो भाग्यवान ! यह तुम्हारा लड़का तुम्हारे घरवाले से अधिक बुद्धिमान है। जब से इसने दुकान में हिसाब-किताब रखना आरम्भ किया है तब से मुझे अपनी आय का ज्ञान अधिक होने लगा है।

'इसका विवाह तो होगा। नहीं होगा तो यह किसी गरीब की लड़की को ले आयेगा। तुम इसके विषय में अब चाकरी करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मत जाया करो।

बात समाप्त हो गई। विश्वम्भर ने अष्टाध्यायी समाप्त की थी और पण्डितजी उसे वेद में प्रवेश देने के लिये निरुक्तशास्त्र का अध्ययन कराने लगे थे और इसके साथ-साथ 'न्याय' पढ़ाने लगे थे।

विश्वम्भर को दुकान पर काम करते हुए चार वर्ष होने जा रहे थे कि एक दिन वह पण्डितजी से पढ़ने आया तो पण्डितजी के मकान की बैठक में कपड़ों की एक गठरी पड़ी थी। पण्डितजी, पण्डितायिन और पण्डितजी की लड़की बैठकर गठरी में से कपड़े निकाल-निकालकर देख रहे थे। विश्वम्भर आया तो पण्डितजी ने कहा, 'देखो, यह तुमने भेजे हैं ?'

'जी नहीं।'

'यह तुम्हारी दुकान का सेवक भवानी दे गया है।'

'क्या कहकर दे गया है ?'

'यही कि बड़े लालाजी ने भेजा है और पायंलागू कही है।'

'पण्डितजी ! मुझे विदित नहीं। कब देने आया था ?'

'प्रातःकाल जब मैं स्कूल जाने लगा था। उस समय मुझे अवकाश नहीं था। इसमें एक चिट्ठी है और उसमें दो सौ पचास रुपये हैं। यह लूंडी भाषा में लिखी है। मैं पढ़ नहीं सकता।'

'तो दिखाइये, मैं पढ़कर सुनाता हूं।' चिट्ठी विश्वम्भर ने ले ली और पढ़ने लगा। उत्सुकता से पण्डितजी, सौदामिनी और गार्गी सुनने लगे।

चिट्ठी में लिखा था, 'पिछले वर्ष आपको विश्वम्भर की पढ़ाई की दक्षिणा नहीं भेज सका। उसमें कारण था। वह कारण अब नहीं है। इस कारण यह भेज रहा हूं। कृपा करके स्वीकार करिये।

'विश्वम्भर जो आपसे पढ़ता है, कभी-कभी यहां सुनाता है। बहुत मजेदार बातें बताता है। सबसे बड़ी बात यह है कि इसने अपने कमरे में दो अलमारियों में पुस्तकें भर ली हैं। मैं उसे जो कुछ भी जेब-खर्च के रूप में देता हूं, यह उसमें से पुस्तकें ही खरीद लाता है। अब यह एक पुस्तक रात के समय सुनाया करता है। इस सबका यह कुछ भी प्रतिकार नहीं। कृपा बनाए रखिए।'

पण्डितजी ने पत्र सुनकर कहा, 'देखो विश्वम्भर ! मेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आशीर्वाद बड़े लालाजी और अपने पिताजी को देना। समय मिला तो मैं स्वयं दुकान पर पहुंच इस सबका धन्यवाद कर दूंगा।'

इस पत्र में एक शब्द भी गार्गी और विश्वम्भर के विवाह के विषय में नहीं था, परन्तु पण्डितजी इस सबमें अपनी लड़की के हाथ मेहंदी से रंगे जाते अनुभव कर रहे थे।

रात के भोजन के उपरान्त विश्वम्भर बाबा को एक घंटा महाभारत की कथा सुनाया करता था। उस दिन भी वह महाभारत का ग्रन्थ बगल में दबाये हुए आया तो बाबा से बोला, 'पण्डितजी आज आपका धन्यवाद करते थे और आपको और पिताजी को आशीर्वाद देते थे।'

'तो तुम उन कपड़ों की बात कर रहे हो जो मैंने प्रातःकाल भवानी के हाथ उनके घर भेजे थे?'

'और बाबा! वह लूंडी भाषा में पत्र नहीं पढ़ सके। मैंने ही आपका पत्र पढ़कर सुनाया था।'

मलावामल्ल ने बताया, 'आज प्रातःकाल मैं दुकान पर गया तो बाजार का एक व्यक्ति यह समाचार सुनाने लगा कि गिरधारीलाल का दिवाला निकल गया है।'

'दिवाला?' विश्वम्भर ने विस्मय से पूछ लिया।

'हां। उसकी दुकान और गोदाम को सरकारी ताले लग गये हैं। एक बात और है कि तुम्हारा मित्र राधेलाल अपने श्वसुर की दुकान पर काम करने जाता है।

'मुझे तुम्हारे शंकरदास की लड़की से विवाह न मंजूर करने पर पण्डितजी की शिक्षा की श्रेष्ठता समझ आ गई है। इसी कारण मैंने पण्डितजी को यह भेंट दी है। यह तुम्हें अक्ल सिखाने के प्रतिकार में ही थी।'

'तो यह बात है?' विश्वम्भर के मुख से निकल गया।

'क्या बात है?' बाबा ने पूछ लिया।

'यही कि सवा सेर सोना राधे के विवाह पर देना ढोंग था। हकीकत यह थी कि गिरधारीलाल को 'ब्लाटिंग पेपर' की भांति चूसने की योजना थी।'

'पर बाबा! यह कैसे हुआ होगा?'

'यह तो कभी गिरधारीलाल मिला तो पता करूंगा। मैंने तुम्हारी मां को भी बात बताई है। मगर वह कुछ समझती ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं और अभी तक वह सवा सेर सोने के भूषणों से लदी बहू न ला सकने का दुःख मना रही है।'

'और मां क्या कहती है ?'

'यही कि हानि-लाभ तो भाग्याधीन होता है। इसका मतलब यह नहीं कि हमारा भी दिवाला निकल सकता है।'

'मां ठीक कहती है।' विश्वम्भरनाथ ने मुस्कराते हुए कहा, 'मगर मां यह नहीं समझती कि मैंने वहां विवाह न करने का हठ भी तो भाग्याधीन ही किया था। भाग्य ने ही मुझे यह बुद्धि दी थी कि वहां विवाह नहीं करना चाहिये।'

'तो अब पण्डितजी की लड़की से विवाह करने का विचार नहीं रहा ?' मलावामल्ल का प्रश्न था।

'बावा ! वह बहुत अच्छी है। सुन्दर भी बहुत है। अब वह चौदह वर्ष की है और पण्डितजी से धाराप्रवाह संस्कृत में बात करती है। मैं अभी वैसा नहीं कर सकता। मुझे अभ्यास नहीं।'

'तो उससे विवाह कर लो।'

'पण्डितजी तो मानते हैं, परन्तु पण्डितायिन हमें छोटी जाति में समझती है। हम अरोड़े हैं, क्षत्रियों से भी नीचे।'

'तो कितने मन सोना उसको इतना वजनी बनाने में लगेगा कि तराजू में उसका पलड़ा हमारे बराबर आ जाये ?'

'बावा ! यह मैं कैसे जान सकता हूं ? मैं तो स्वयं ऊंचा उठने का यत्न कर रहा हूं। और कल से पण्डितजी मुझे वेद, जो हमारी सबसे पवित्र पुस्तक है, पढ़ाने की तैयारी करने लगे हैं।'

'अच्छा, तो मैं पता करूंगा। क्या नाम है लड़की का ?'

'गार्गी।'

'तो गार्गी को सोने से तोलकर लाना होगा ?'

4

अनायास ही अगले दिन विश्वम्भर पण्डितजी के घर से पढ़कर निकला तो हठार बाजार में गिरधारीलाल की दुकान पर जा पहुंचा।

दुकान के बाहर सरसों के तेल का दीपक जल रहा था। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुकान के सामने खड़ा देख रहा था कि एक व्यक्ति बाजार में चलते-चलते खड़े हो पूछने लगा, 'लाला ! क्या देख रहे हो ?'

'यही कि दीपक क्यों जल रहा है ?'

'यह घोषणा करने के लिए कि लाला का दिवाला पिट गया है।'

'वह क्या होता है ?' विश्वम्भर के के मुख से निकल गया।

'लाला का दिल बेईमान हो गया है और लेनदारों को धोखा दिया जा रहा है।'

विश्वम्भर चुप हो अपने घर की ओर चल पड़ा। इस समय सामने से राधेलाल हाथ में भल्ले-पकौड़ियों का डूना उठाये आता मिल गया।

विश्वम्भर ने हाथ जोड़ नमस्ते कह पूछ लिया, 'पिताजी की दुकान पर दीपक क्यों जल रहा है ?'

'मुझे पता नहीं। मैं अब पिताजी के साथ नहीं रहता।'

'तो कहां रहते हो ?'

'आजकल तो ससुराल में ही रहता हूं। मगर शीघ्र ही पृथक् मकान में रहने का इन्तजाम कर रहा हूं।'

विश्वम्भर समझ नहीं सका कि यह सब क्यों ? वह अभी कुछ और पूछना चाहता था कि राधेलाल और अधिक बात करने से बचने के लिये चल पड़ा। विश्वम्भर भी घर को चला आया।

रात उसने बाबा को राधेलाल की बात बताई तो बाबा ने कह दिया, 'यही तो वह तुमसे चाहते थे। शंकरदास के घर की औरतें चाहती थीं कि तुम बाप और बाबा से पृथक् दुकान करोगे तो विवाह होगा।

'तुम्हारी भोली-भाली मां यह बात नहीं समझी। मैं बताता हूं क्या हुआ है। राधेलाल पिता से लड़कर सब भूषण और नकदी ले श्वसुर के पास रहने चला गया है। पता चला है कि राधेलाल एक लाख से ऊपर की जमापूंजी अपने पिता की उड़ाकर ले गया है। पिता बाजार का भुगतान नहीं कर सका। परिणामस्वरूप यह दिवाला है।'

'तो सब मूर्खता राधेलाल की है ?'

'यह सब चतुराई शंकरदास और उसकी लड़की की है। राधे के घर लड़का हुआ है और वह उसका नामकरण बहुत धूम-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घाम से कर रहा है।'

'बाबा! यह भी किसी प्रकार का धोखा है। इसका कुछ दूसरा ही मतलब मालूम होता है।'

'तुम क्या समझे हो?'

'मैं यह समझा हूं कि संसार में धूर्तों और मूर्खों में संघर्ष चल रहा है। वैसे तो संसार में हम जैसे लोग भी हैं, जो धूर्तों की चाल को समझते हैं और उनसे बचकर रहते हैं, परन्तु अल्प संख्या में और असंगठित होने के कारण हम दूसरों को इन धूर्तों की चाल से बचा नहीं सकते।

'ये धूर्त मूर्खों को छलते रहते हैं। यही शंकरदास ने गिरधारी-लाल से किया है।

'पण्डितजी ने दिवाले की बात सुनी तो कहा था कि प्रायः मूर्ख यह समझते हैं कि वे धूर्तों को सहयोग देकर अपना हित कर रहे हैं। वास्तव में वे इस विचार में भी छले जा रहे होते हैं।

'पण्डितजी का विचार है कि लाला गिरधारीलाल को सब ज्ञात है कि धन किधर चला गया है और उसने बहाना किया है कि दुकान में हानि हुई है।

'गिरधारीलाल यह समझ रहा है कि वह दिवाला स्वीकार होने के उपरान्त और लेनदारों को बदला देने के उपरान्त लड़के द्वारा चोरी किये धन का भोग कर सुख से जीवन व्यतीत करेगा। परन्तु यह होगा नहीं।

'बाबा! हमारे इतिहास में एक कथा 'एकलव्य' की कही गई है। यह एक छोटी जाति में उत्पन्न परिश्रमी और श्रेष्ठ विचारों का युवक था। इसने गुरु द्रोणाचार्य को लक्ष्य में रखकर धनुर्विद्या में अत्यन्त कुशलता प्राप्त कर ली थी। कहीं दुर्योधनादि द्रोणाचार्य के शिष्यों को उसकी कुशलता का ज्ञान हो गया। उन्होंने गुरुजी से कहा कि उसको धनुर्विद्या से लाभ उठाने से वंचित कर देना चाहिये।

'पाण्डव सात्विक बुद्धि रखते हुए भी कौरवों के साथ सम्मि-लित हो गये। इस प्रकार अपना एक मित्र बनता-बनता शत्रु बना बैठे।

'पाण्डव बार-बार यही भूल करते रहे थे। परिणाम यह हुआ कि विजय तो उनकी हुई परन्तु सर्वनाश भी हो गया। और फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar D-372

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
देश के सर्व श्रेष्ठ जन भी उजड़ गये।

'तो तुम समझते हो कि गिरधारीलाल भी इसी धोखाधड़ी में सम्मिलित है?'

'यह गुरुजी का विचार है। निश्चित बात तो पीछे पता चलेगी। परन्तु पण्डितजी का कहना है कि गिरधारीलाल और राधेलाल भी ठगे जायेंगे। धूर्त, बुद्धिमान तो स्वार्थ का बहुत ही संकुचित अर्थ रखते हैं।'

'यह सब ठीक है।' मलावामल्ल का कहना था, 'इसे चतुराई कहते हैं। जब बुद्धि दूसरों से छलना खेलने लगे तो यह चतुराई के नाम से जानी जाती है।'

'परन्तु बाबा! चतुर तो श्रेष्ठ जन भी होते हैं। जैसे कृष्ण था।'

'हां। मगर तुमने ही एक दिन बताया था कि उसके वृद्ध होने पर उसके सगे-सम्बन्धियों ने उससे भी छलना खेली थी और इस छलना से क्रुद्ध होकर कृष्ण को उनकी भी हत्या करनी पड़ी थी और तब यादवों का सूर्य अस्त हो गया था।'

'हां। यह तो होता ही है। इसी से तो संसार-चक्र चलता है। पशु-सृष्टि का बीज यही धूर्त बनते हैं। यदि ये स्वेच्छा से धूर्तता न करें तो फिर ये कच्छ-मच्छ कुत्ते-बिल्ले कहां से पैदा हों?'

'परन्तु बाबा! पण्डितजी कहते थे कि इस कलियुग काल में दुष्टता इतनी अधिक हो गई है कि पशु-योनियों में उनके लिये स्थान न रहने से पशु बनने वाले जीव मनुष्यों में उत्पन्न हो मनुष्य को पशुओं के समकक्ष ले आये हैं।'

इससे बाबा ने कह दिया, 'तो भगवान को मनुष्यों से भी श्रेष्ठ योनि पृथ्वी पर उत्पन्न करनी पड़ेगी। कोई ऐसी योनि, जो इन धूर्तों से बचने की क्षमता रखे।'

'वह तो बाबा, है। हम जो शंकरदास जैसे धूर्तों की धूर्तता से बच सके हैं, इसी योनि के तो जीव हैं।'

बाबा ने मुस्कराकर कहा, 'वह तो पण्डितजी की गार्गी का रूप-लावण्य है जिसने हमें बचा लिया है।'

इस पर विश्वम्भर भी हंस पड़ा और वह पुस्तक में से बाबा को सुनाने लगा।

एक वर्ष और व्यतीत हो गया। गिरधारीलाल का दिवाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
स्वीकार हो गया। लेनदारों को रुपये के चार आने मिल गये। छः वर्ष तक गिरधारीलाल के लिये कोई काम करना वर्जित हो गया। इस पर वह अपने लड़के राधेलाल को कहने लगा कि वह अपने श्वसुर के पास रखे अपने धन से स्वतंत्र कारोबार चलाये, जिससे वह अपनी वृद्धावस्था सुख से व्यतीत कर सके।

राधेलाल भी इसी आशा में था। इस कारण उसने अपनी पत्नी रजनी से अपने पिता की बात कही। रजनी ने अपने पिता शंकरदास से पति की इच्छा कही। शंकरदास ने अपनी लड़की को कह दिया, 'राधे से कहो कि मुझसे पृथक् में पूर्ण हिसाब-किताब समझकर ही किसी प्रकार की आशा अपने पिता को दिलाये।'

परिणामस्वरूप हिसाब-किताब किया गया और शंकरदास ने अपनी प्राइवेट हिसाब की पॉकेट बुक में से देखकर यह बता दिया कि राधेलाल ने श्वसुर के घर से वर्ष-भर जो खाया-पिया है, वह उसका देना बनता है।

जब राधेलाल ने अपने श्वसुर की बात अपने पिता को बताई तो अकस्मात् उसके मुख से निकल गया, 'बहुत बेईमान है रजनी का बाप।'

'पिताजी! मैंने उन्हें यही बात कही थी। वह कहने लगे कि आपसे कम बेईमान हैं। आपने तो भले लेनदारों को लूटा था और उन्होंने तो एक बेईमान को लूटा है।'

'तो देखो!' गिरधारीलाल ने पुत्र को कहा, 'अपनी बीवी को वहां बाप के घर में ही छोड़कर चलो मेरे साथ। हम किसी परदेश में जाकर पुनः अपना भविष्य बनाने का यत्न करेंगे।'

'परन्तु पिताजी! रजनी बेचारी का क्या दोष है? और फिर अब छुटकू भी तो है।'

'तो तुम भी यहां श्वसुर की जूती में दाल-भात खाया करो।'

उस रात मलावामल्ल ने अपने लड़के और पौत्र विश्वम्भर-नाथ को यह कहानी बताते हुए कहा, 'कल गिरधारीलाल दुकान पर आया था और यह आपबीती सुनाकर कुछ सहायता मांग रहा था।

'मैंने उसे दो सौ रुपये धर्मादा में से दिये हैं और वह कह रहा था कि उसने और राधे की मां ने वानप्रस्थ धारण कर लिया है और वे हरिद्वार में जाकर अपना शेष जीवन परमात्मा की सेवा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगायेंगे।'

सन्तराम हंस पड़ा और बोला, 'तो वह हरिद्वार में स्नान करता हुआ परमात्मा के पांव दबाया करेगा?'

बाबा हंस पड़ा और बोला, 'यह भी एक ढोंग है। इससे वह न केवल अपने लेनदारों से धोखा कर रहा है वरन् परमात्मा से भी धोखा खेलना चाहता है।'

'पर बाबा!' विश्वम्भर ने कह दिया, 'आप उसकी छलना में किसलिये सहायक हो गये हैं? आपने उसे दो सौ रुपये किसलिए दिये हैं?'

'वह धर्मादा में से दिये हैं और जब उसमें से मैं किसी को देता हूं तो अपने मन की अवस्था को देखकर देता हूं। उस समय मैं भूल जाता हूं कि मांगने वाला कौन है, क्या करता है और क्या चाहता है।'

'तो बाबा!' विश्वम्भर ने कह दिया, 'पण्डित लक्ष्मीचन्द की लड़की के विवाह पर भी कुछ सहायता करेंगे?'

'तो वह लड़की का विवाह कर रहा है?'

'हां। पण्डितायिन बहुत जोर डाल रही है। वह कह रही है लड़की पन्द्रह वर्ष पार कर गई है। अब तो वह आर्य समाजियों की सीमा भी पार कर चुकी है। वह पण्डितजी से कह रही थी कि आपसे मिलकर अपनी लड़की के विवाह के लिये कुछ सहायता मांगें।'

'ठीक तो कहती है। जहां कुआं हो, प्यासे को वहीं जाना चाहिये। परन्तु विवाह कहां कर रही है?'

'पंडितायिन कहती है कि उसके कुछ ढंग के वस्त्र-भूषण बन जायें तो वह लड़की के लिये 'चाकरी' के लिये निकलेगी।'

बाबा हंस पड़ा और बोला, 'पण्डितजी से कहना कि मुझसे आकर मिल लें तो मैं उनकी समस्या सुलझा दूंगा।'

विश्वम्भर समझा था कि पण्डितायिन को दो-तीन पोशाकें और एक-आध भूषण ले देंगे, जिससे वह अपनी बिरादरी में लड़की के लिये पति ढूंढ़ सकेगी।

इस कारण उसने अगले दिन पढ़ने के समय पण्डितजी को बाबा का सन्देश दे दिया। उसने कहा—'बाबा कहते थे कि यदि आप किसी समय उनसे मिलें तो वह आपकी सहायता कर सकेंगे।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पण्डितजी ने आश्चर्य में पूछ लिया, 'क्यों, क्या बात हुई थी हमारे विषय में ?'

विश्वम्भर ने कहा, 'उस दिन माताजी आपसे कह रही थीं कि उनके पास ढंग के वस्त्र भी नहीं हैं। इससे वह लड़की की बात करते हुए बिरादरी में संकोच अनुभव करती हैं।'

'सब कुछ, जैसा एक स्कूलमास्टर की पत्नी के पास होना चाहिये, वैसा तो है; परन्तु जैसा दामाद एक स्कूलमास्टर को मिलना चाहिये, वह उससे बढ़िया चाहती है।'

'पण्डितजी ! यह तो भाग्याधीन है कि आपको दामाद कैसा मिलता है। परन्तु यत्न तो ऊपर उठने का करना ही चाहिये।'

'हां। ऊपर-नीचे की बात में मतभेद है। जिसको वह ऊपर समझती है, उसको मैं नीचे की ओर आना समझता हूं।'

विश्वम्भर ने कह दिया, 'पण्डितजी ! बाबा आपकी कुछ सहायता करना चाहते हैं। आजकल मैं उनको महाभारत में से कथा सुनाया करता हूं। इससे वे मुझसे और मेरे गुरुजी से बहुत प्रसन्न हैं।'

'अच्छा, मिलूंगा।'

इसका परिणाम हुआ। अगले दिन पण्डित लक्ष्मीचन्द लाला मलावामल्ल के घर मिलने गये। प्रातः के समय विश्वम्भर दुकान पर जाया करता था। मलावामल्ल तो प्रातः का भोजन कर ग्यारह बजे के लगभग दुकान पर जाता था।

पण्डितजी बाबा से मिलने गये और उसी सायंकाल पण्डितजी ने विश्वम्भर को बताया, 'मैं तुम्हारे बाबा से मिल आया हूं। बहुत बातें हुई हैं। अब यह निश्चय हुआ है कि कल मैं गार्गी की माताजी की तुम्हारी माताजी से मुलाकात करा दूं।

'परन्तु गार्गी की मां जाना नहीं चाहती थी, परन्तु पीछे जब मैं स्कूल गया हुआ था तो गार्गी और उसकी मां में कुछ बात हुई है और वह तुम्हारी मां से मिलने जाने के लिये तैयार हो गयी है।'

'गार्गी ने क्या कहा है ?

'यह मुझे विदित नहीं। गार्गी की मां ने कहा है कि गार्गी चाहती है कि उसकी मां तुम्हारी मां से मिलने जाये। इस कारण वह जा रही है। मैंने पूछा नहीं कि मां-बेटी में क्या बात हुई है। मैं अभी-अभी तो स्कूल से आया हूं। गार्गी मेरे लिये दूध ला रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। मैं उससे जानने का यत्न करूंगा।'

'परन्तु पण्डितजी ! क्या यह अच्छा नहीं होगा कि आप मुझसे पृथक् में पता करें ?'

'यह भी उससे ही पता करूंगा कि तुम्हारे सामने बात करना चाहती है अथवा तुमसे पृथक् में।'

गार्गी अपने पिता के लिये दूध और घर के बने बेसन के लड्डू लेकर आई तो पण्डितजी ने देव भाषा में लड़की से ही पूछा, 'माता जी से झगड़ा किया है आज तुमने ?'

गार्गी ने देव भाषा में ही कहा, 'नहीं पिताजी ! माताजी ने झगड़ा किया है।'

'यहां बताओगी अथवा अपने कमरे में चलकर ? विश्वम्भर हमारी बात को समझ रहा है।'

'मेरी कोई बात किसी से चोरी नहीं है। आप क्या कहना चाहते हैं सो आप विचार कर लीजिये कि इनके सामने कहना चाहते हैं अथवा पृथक् में।'

'तब ठीक है। माताजी किस बात पर झगड़ा कर रही हैं ?'

'आपको इनके बाबा ने कहा है कि माताजी इनकी माताजी से मिलने जाएं। माताजी को सन्देह है कि इनकी माताजी मुझे इनके लिये विवाह में मांगेंगी और ये खत्री हैं, इस कारण हमसे छोटी जाति के हैं।

'मैंने माताजी से कहा था कि ये शास्त्र मुझसे अधिक पढ़ गये हैं। अब आप निरुक्त और वेद पढ़ रहे हैं। तब भला इनको छोटी जाति के कैसे कहती हैं ?

'माताजी का कहना था कि एक ब्राह्मण की सन्तान एक क्षत्रिय की सन्तान को विवाह में नहीं दी जा सकती। मैंने कहा है कि मैंने इनको उस दिन से वरा हुआ है जब इनके बाबा ने सोने की चेन भेजी थी। मैं उसे मंगल-सूत्र मान सदा अपने गले में पहने रखती हूं।

'इस पर वह मुझे भला-बुरा कहने लगी। मैंने कहा, यह सब मेरे लिए आशीर्वादसूचक है। मां की गालियां मन से आशीर्वाद ही होती हैं। बस, इतनी ही बात हुई है और अब वह इनकी माताजी से मिलने जाने के लिए तैयार हो गयी हैं।

'पिताजी ! मैं यह जानती हूं कि वह मां हैं। मां अपने बच्चों के लिए जो भी करती है, उनके भले के लिए ही करती है। यह उनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
समझ आया होगी कि इनकी माताजी से मिलना मेरे कल्याण में होगा।'

विश्वम्भर पिता-पुत्री में देव भाषा में बातचीत सुन और यह जान कि गार्गी ने उसे मन से वरा हुआ है, बहुत प्रसन्न हुआ।

जब गार्गी दूध का खाली गिलास और मिठाई की तश्तरी ले भीतर जाने लगी तो पहली बार विश्वम्भर ने गार्गी को हाथ जोड़-कर नमस्कार किया और गार्गी मुस्कराकर भीतर चली गयी।

पण्डितायिन किवाड़ के पीछे पिता-पुत्री की बात सुन रही थी। इस पर भी उसने विश्वम्भर को गार्गी को नमस्ते करते देखा नहीं, न ही उसने गार्गी को मुस्कराते हुए देखा। वह किवाड़ की ओट में थी।

परन्तु जब गार्गी रसोईघर में पहुंची तो मां ने पूछा, 'मेरी पिताजी के सामने निंदा कर रही थी ?'

'नहीं माताजी ! मैंने तो प्रशंसा ही की है। मैंने कहा है कि आप स्नेहमयी माताजी हैं। इसी कारण तो आप लालाजी की पत्नी से मिलने के लिये तैयार हो गई हैं।'

'और यदि मैं लाला की पत्नी को दो-चार जली-कटी सुना जाऊं तो क्या कहोगी ?'

''माताजी ! आप मन से तो मेरे हित के लिये ही कहेंगी। उससे वास्तव में मेरा हित होगा अथवा अहित, यह ईश्वराधीन है। वह पृथक् बात है। आप तो मन से मेरा हित ही करेंगी।'

'और यदि मैं बृजलाल के लड़के गौरीशंकर से तुम्हारा सम्बन्ध स्वीकार करूं तो क्या कहोगी ?'

'यह आप पिताजी से बात कर लें। मैंने अपने अपने मन की बात उनको बता दी है।'

'यही कि तुमने लाला के लड़के को वरा हुआ है ?'

'हां, शेष आप जानें और पिताजी जानें।'

'परन्तु ये जाति के खत्री हैं।'

'और बृजलाल जो अनपढ़ है, वह किस जाति का है, यह तो भगवान ही जाने।'

सौदामिनी पुनः निरुत्तर हो चुप कर गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

5

अगले दिन साढ़े आठ बजे मलावामल्ल की हवेली के बैठक-घर में विचित्र स्थिति उत्पन्न हो गयी। सन्तराम की पत्नी और पण्डित लक्ष्मीचन्द की पत्नी विवाह के विरुद्ध कहने लगीं और सन्तराम, लक्ष्मीचन्द और मलावामल्ल विवाह के पक्ष में थे।

सन्तराम ने सदारानी को समझाया, 'तुम इतनी बुद्धिमान हो कि लाला शंकरदास के घर की औरतों के कहने से मुझे और विश्वम्भर को उस ठग के पंजे में डाल रही थीं। बताओ, उस विषय में जो कुछ भी तुम समझती हो, क्या वह भूल नहीं थी ?

'बाबा और मैं उस समय भी यही कह रहे थे कि वहां विश्वम्भर का विवाह ठीक नहीं और तुम हमारा विरोध कर रही थीं।'

सदारानी तो चुप कर गई, परन्तु पण्डितायिन ने पूछ लिया, 'विश्वम्भर ब्राह्मण धर्म का पालन करेगा ?'

इस पर मलावामल्ल ने पूछ लिया, 'ब्राह्मण धर्म क्या होता है ?'

'यज्ञ, हवन, दान-दक्षिणा, धर्म-प्रचार तथा विवाह-संस्कार।'

'परन्तु विवाह-संस्कार तो आपके पति भी नहीं कराते।'

'लोग उनको आर्यसमाजी मान नहीं बुलाते।'

'तो क्या आर्य समाजियों के विवाह वे कराते हैं ?'

'वे भी उनको नहीं बुलाते क्योंकि आर्य समाजी इनको सनातन धर्मी समझते हैं।'

इस पर मलावामल्ल ने कह दिया, 'देखो देवी ! मैं विश्वम्भर को शास्त्रों का एक विद्वान बनाना चाहता हूं। मेरे लिये वह पूज्य ब्राह्मण ही होगा। दूसरा उसे कुछ भी माने, मेरा इससे मतलब नहीं है और मैं अपने मरने से पूर्व इसे इतना सब-कुछ दान-दक्षिणा दे जाऊंगा कि यदि अन्य कोई कुछ भी न दे तो भी यह भूखा नहीं मरेगा।'

इसने पण्डितायिन का मुख बंद कर दिया। यद्यपि उसके मुख पर असंतोष की भावना अभी भी बनी थी, इस पर भी वह मौन थी। इसके बाद मलावामल्ल ने पण्डितायिन को भोजन कराया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और फिर पण्डितजी को स्कूल के लिये और पण्डितायिन को उनके घर की ओर विदा किया।

गार्गी घर पर ही थी। उसे विदित था कि उसकी मां किस काम से गई हुई थी। इस पर भी जब वह आई तो उसने पूछा, 'माताजी ! जल लाऊं, पीएंगी ?'

'बहुत खा-पीकर आई हूं।'

'कहां ?'

'तुम्हारी ससुराल से।'

'तो कर आई हैं फैसला ?'

'मेरा मन तो अभी भी नहीं मानता, परन्तु वहां विश्वम्भर के बाबा की बात का उत्तर नहीं दे सकी।

'तुम्हारी होने वाली सास भी तुम्हारा विवाह वहां पसंद नहीं करती थी, परन्तु न वह और न मैं उसके बाबा की बात का उत्तर दे सकी। वह चुप हुई तो मेरी भी जुबान बंद हो गई।'

गार्गी हंस पड़ी। हंसते हुए बोली, 'माताजी ! इसमें आपका दोष नहीं है। आपको बुद्धि का प्रयोग करना नहीं सिखाया गया। कदाचित् इन बातों में उनकी माताजी को भी बुद्धि का प्रयोग करना नहीं सिखाया गया। तभी पहले तो आप दोनों ने एक मिथ्या पक्ष ले लिया और उसमें कारण आप स्वयं भी जानती नही थीं। इसी कारण आप उत्तर नहीं दे सकीं।'

'तो फिर ?'

'यह तो आप बताइये। पिताजी से बात कर जो भी निश्चय करेंगी, वह ठीक ही होगा।'

'वह तो तुम्हारी बात ही करते हैं।'

'तो माताजी ! आप भी मेरी बात ही ठीक समझ लें। आप मां जो हैं।'

सौदामिनी चुप रह गई।

परन्तु जब एक बुद्धिमान के हाथ धन का बल हो तो वह स्टीम-रोलर की भांति चलता है और सम्पूर्ण बाधाओं को ऐसे विनष्ट करता चला जाता है, जैसे स्टीम-रोलर भूमि को समतल करता चला जाता है।

अगले दिन प्रातःकाल सेठ मलावामल्ल का पुरोहित पण्डित बृजलाल पंडित लक्ष्मीचन्द से मिलने आया। पंडितजी ने समझा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कि ब्रजलाल अपने लड़के के विषय में प्रेरणा देने आया है। अतः उन्होंने प्रश्नभरी दृष्टि से बृजलाल की ओर देखा तो बृजलाल बोला, 'पंडितजी ! मुझे आज्ञा हुई है कि आपकी पुत्री गार्गी के विवाह का पूर्ण प्रबंध करूं।'

'क्या प्रबंध करेंगे ?'

'आपके घर की सफाई और सफेदी करा दूंगा। आपकी ओर से गार्गी बिटिया और विश्वम्भरनाथ के विवाह की निमंत्रण-पत्रिका छपवाकर बंटवा दूंगा और फिर दुलहन के घर वालों की ओर से बारात के स्वागत का प्रबन्ध कर दूंगा। विवाह सेठजी की ओर से मैं कराऊंगा और फिर दुलहन की यहां से विदाई पर कार्य पूर्ण समझूंगा। मेरी सहायता के लिये दो-तीन अन्य कर्मचारी भी नियुक्त हो गये हैं।'

'परन्तु पण्डित बृजलाल ! आप तो गार्गी के लिये अपने लड़के गौरीशंकर का सम्बन्ध विचार कर रहे हैं ?'

'पण्डितजी !' बृजलाल ने कहा, 'धनवान का सत-बीसिया भी सौ के बराबर होता है। कल सेठजी ने मुझे बुलाकर चुनौती दी कि विश्वम्भरनाथ और गौरीशंकर की किसी निष्पक्ष विद्वान से परीक्षा करा ली जाये। मैंने पूछा कि परीक्षा कौन लेगा ? तब सेठ मलावामल्ल ने पण्डित नरसिंहदेवजी का नाम उपस्थित किया तो मैं चुप कर गया। मैं जानता हूं कि विश्वम्भर देव-भाषा अधिक पढ़ा है। और फिर मुझे यह काम सौंपा गया है। मुझे कहा गया है कि अपनी लड़की की भांति ही मुझे गार्गी बिटिया के विवाह का प्रबन्ध करना चाहिये।

'इस पर भी पंडितजी ! एक बात का मुझे भय है। वह यह कि लाहौर के सब ब्राह्मण और उनकी स्त्रियां बारात के दिन यहां 'सियापा' करेंगी।'

पण्डित लक्ष्मीचन्द ने मुस्कराकर कहा, 'तो इसका उपाय भी सेठजी से पता करना चाहिये।'

'वह मैं करूंगा, परन्तु इस विषय में आप क्या कहते हैं ?'

'मुझसे पूछता ही कौन है ? सब कुछ तो आप और सेठजी स्वयं ही कर रहे हैं ?'

'तो पण्डितजी ! आप ही सेठजी से पता कर लीजिये कि इस झगड़े का प्रतिकार क्या होगा ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मुकेश। परन्तु आप जो मेरी ओर से सब प्रकार के प्रबन्ध करने के लिये आये हैं, यह भी आपको ही करना चाहिये।'

वास्तव में यह झगड़ा बृजलाल स्वयं ही खड़ा करने का विचार कर रहा था। वह चोर का भी और उसे पकड़ने वाले का भी साथ बनाए रखने का यत्न कर रहा था। चोर को चोरी करने और साधु को सावधान रहने के लिये कह रहा था।

परन्तु जब बृजलाल की बात पण्डित लक्ष्मीचन्द ने सन्तराम से कही तो संतराम ने कहा, 'पण्डितजी ! इस बात की चिन्ता आप न करें। इस सबका परिणाम सब ओर से बधाइयों में समाप्त होगा।'

इस अन्तर्जातीय विवाह की धूम लाहौर के पूर्ण हिन्दू समाज में हलचल मचाने वाली बात हो गई। बारात में छः-सात सौ से अधिक लोग सम्मिलित हुए थे। तमाशबीन भी भारी संख्या में थे। ब्राह्मण वर्ग के लोग विघ्न डालने के लिये आये हुए थे, परन्तु पुलिस का प्रबन्ध देख सब चुपचाप अपने-अपने घरों को लौट गये।

बारात सायंकाल साढ़े सात बजे वधू के घर पहुंची और विवाह-संस्कार तथा भोज के बाद रात में ही डोली लेकर विश्वम्भरनाथ अपने मकान पर जा पहुंचा।

जब नव-दम्पती सोने के कमरे में पहुंचे तो गार्गी ने पूछ लिया, 'अब बताइये, क्या आज्ञा है ?'

'आज्ञा नहीं, इच्छा है। पति आज्ञा नहीं किया करते। वे कामना किया करते हैं। कहो तो बताऊं ?'

गार्गी ने मुस्कराते हुए कहा, 'तो कामना ही बता दीजिए। यत्न करूंगी कि पूर्ण करूं।'

विश्वम्भर ने कमरे के द्वार पर भीतर से कुंडा चढ़ाते हुए कहा, 'ये भूषण-वस्त्र उतारकर उस अलमारी में रख दीजिये। मैं गार्गी-देवीजी को उसके वास्तविक स्वरूप में देखना चाहता हूं।'

'पर मुझे लज्जा लगेगी।'

'किससे ?'

'आपके देखने से।'

'तो मैं आंखें बन्द कर लूंगा।'

'तो फिर देखेंगे क्या और कैसे ?'

'एक अन्धे की भांति टटोलकर। स्पर्श इन्द्रिय भी तो ज्ञानेन्द्रिय है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गार्गी हंस पड़ी। हंसते हुए बोली, 'तो आप चादर में मुख छुपा, आंखें बंद कर, दीवार की ओर मुख कर लेट, जाइये तो आपकी इस जीवन की प्रथम कामना की पूर्ति कर दूंगी।'

विश्वम्भर हंस पड़ा और पलंग पर लेट, मुख चादर में लपेट और दीवार की ओर मुख कर लेटा तो गार्गी ने भूषण-वस्त्र उतार एक ओर रख दिये और फिर पलंग पर पति के पास आते हुए बोली, 'देखिये, स्वीकृति टटोलकर देखने की ही है, आंखों से देखने की नहीं।'

'देवी की आज्ञा माननीय है।'

अगले दिन जब गार्गी की नींद खुली तो विश्वम्भरनाथ पहले ही उठा हुआ पत्नी के सुन्दर शरीर को देख रहा था। पति को लालसा-भरी दृष्टि से अपनी ओर देखते पा गार्गी अपने को चादर में लपेटने लगी। विश्वम्भर हंसते हुए दोनों हाथों को अपनी आंखों के सामने रख बोला, 'तो आप जाग पड़ी हैं? मैंने भी आंखें बन्द कर ली हैं जिससे आपकी आंखों को लज्जा न लगे। अब आप उठ-कर अपने वस्त्र पहन सकती हैं।'

गार्गी ने शौचादि जाने के लिये वस्त्र पहने और कमरे का द्वार खोल बाहर निकल गयी।

उस दिन प्रातः का अल्पाहार लेते हुए मलावामल्ल ने सदारानी से पूछ लिया, 'क्यों बहू! नई पुत्रवधू कैसी लगी है?'

गार्गी रसोई के एक कोने में बैठी थी। सदारानी ने कहा, 'अभी तो इसको इसके पति ने देखा है। वही बता सकेगा कि कैसी है। जब मैं इसे देख लूंगी, तब ही मैं बता सकूंगी।'

'तुम कब देख सकोगी?'

'जब तक मेरे घर में एक पोते के दर्शन नहीं करा देती।'

'विश्वम्भर तो दुकान पर चला गया है। इस कारण उससे तो वहां जाकर पता करूंगा, परन्तु मेरी सम्मति यह है कि मध्याह्न के भोजन के उपरान्त इससे कोई धर्मशास्त्र सुना करो तो शीघ्र ही इसके दर्शन कर अपना अनुमान लगा सकोगी। संसार में सन्तान तो सब कोई पैदा कर रही हैं, परन्तु शास्त्र सुनाने वाली बहू भाग्य से मिलती है। धर्म-कर्म ही मुख्य है। वही देखने की बात है।'

उस समय तो सदारानी चुप रही, परन्तु जब बाबा बारह बजे के लगभग दुकान पर चल गये और बहू अपने कमरे में बैठी स्वर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सहित रामचरितमानस पढ़ रही थी तो सदारानी अपनी देवरानियों और लड़की रेवती को लेकर गार्गी के कमरे में आ गई।

बड़ी देवरानी थी सोहनी। उसने कमरे में प्रवेश करते ही पूछा, 'बहू ! क्या पढ़ रही हो ?'

'माताजी ! यह रामचरितमानस है। इसमें राम-महिमा का वर्णन है।'

आई स्त्रियां गार्गी के सम्मुख चारों ओर बैठ गयीं। सोहनी ने बात की। उसने कहा, 'तुम बहुत मीठा गाती हो। हम सब सुनकर विचार करने लगी थीं कि तुम्हारे कमरे में आयें अथवा न ? इस पर विश्वम्भर की मां ने कहा कि बाबा कह गये हैं कि तुमसे शास्त्र सुना करें। इस कारण हम आ गई हैं।'

गार्गी ने कहा, 'तो सुनिये ! देखिए इसमें एक पद है—

एक राम दशरथ का बेटा, वही राम घट-घट में लेटा।'

गार्गी ने चौपाई का यह पद स्वर-सहित गाकर सुनाया और फिर कहा, 'यह कैसे हो गया ? संसार तो इतना बड़ा है और वह पूर्ण जगत् में व्यापक है। वह एक पांच-छः फुट के प्राणी में कैसे समा सकता है ?

'विद्वान् लोगों का कहना है कि परमात्मा, जिसका नाम भी राम है, वह रोम-रोम में रमा हुआ है। दशरथ का बेटा राम था। अतः परमात्मा दशरथ के बेटे में भी था।

'परन्तु जब परमात्मा सब स्थानों पर है तो फिर राम की महिमा क्यों है ? और दूसरे लोगों की महिमा क्यों नहीं ? सर्वव्यापक परमात्मा तो दूसरों में भी है।

'इस विषय में कहा है कि जो परमात्मा को अपने में सर्वोपरि समझता है, वह परमात्मा के गुणों को प्राप्त होता है।

'इस प्रकार एक स्थान पर लिखा है कि जब महावीर हनुमान समुद्र पार करने लगे तो राम ! राम ! कहकर कूदे थे और उनमें सर्वव्यापक ईश्वर का बल आ गया था। इस पर वह सहज ही समुद्र पार कर गये थे। ईश्वर तो सबमें है, परन्तु जब हम निश्चयपूर्वक उसको अपने में विद्यमान समझ लेते हैं तो उसकी अपार शक्ति हममें आ जाती है और कठिन से कठिन काम भी आसान हो जाता है।'

गार्गी की बात सुनकर सोहनी हंसने लगी। हसते हुए उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पूछा, 'तो तुमने भी इन लालाजी के लड़के का प्राण बचाने के लिये रामजी का स्मरण किया था ?'

'हां चाचीजी ! परन्तु वह राम, जो घट-घट में लेटा है, उसका एक बहुत छोटा-सा अंश मात्र ही तो दशरथ के बेटे में हो सकता था। उसी का अंश हनुमानजी में था। तुलसीदास जी ने कहा है—

सगुनहि बिन डिर्गुनहि नहीं कुछ करे।
गावहि मुनि पुरान कुछ बड़े।

'इसका अर्थ है कि जो निर्गुण परमात्मा वह ही तो इस सगुण प्रकृति में उपस्थित है, तो फिर उसकी सामर्थ्य से कौन-सी बात सम्भव नहीं ?

'हम सब परमात्मा की शक्ति से ही कार्य करते हैं। जब उसके साथ एक होकर कार्य किया जाये तो उसकी ही शक्ति कार्य सिद्ध करती है। हम तो दिखावा मात्र हो जाते हैं।

'मैंने भी राम को स्मरण किया तो उसने लाकर आपके चरणों में पटक दिया है।'

'गार्गी बेटी,' सोहनी ने कहा, 'तुम्हारे ससुरजी कह रहे हैं कि तुमको पृथक् घर में रखेंगे।'

'यह क्यों ?'

'हम अनपढ़ों से तुमको पृथक् रखने के लिये।'

'परन्तु आप अनपढ़ हैं क्या ?'

'हम तुम्हारी तरह लिख-पढ़ नहीं सकतीं।'

'परन्तु पढ़ाई तो कथन से भी की जाती है।'

'कैसे ?'

'जैसे आप अभी मेरी बात को सुनकर समझ रही हैं।

'मैं तो यह समझी हूं कि आपको पढ़ाने वाला कोई नहीं मिला। इस पर भी आप कुछ तो पढ़ी हैं। देखिये, राम दशरथ के बेटे थे। आप जानती थीं। राम परमात्मा हैं। यह भी आप जानती हैं और परमात्मा सब स्थान पर व्यापक है। अब मैंने बताया है कि जो सब स्थान पर है वह आपमें भी है, मुझमें भी है। जब हम उसके साथ अपने को संयुक्त कर लेते हैं तो फिर हममें उसकी असीम शक्ति आ जाती है। इसी शक्ति के बल से मैं अपनी मां का घर छोड़ आपकी सेवा मे आ गयी हूं।'

'तुमने विश्वम्भर में क्या देखा है ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वही, जो मैंने अपने में देखा है। राम घट-घट में लेटा है और उसी का फल तो है कि मैं यहां हू।'

सदारानी समझ गयी कि सुनने से भी ज्ञान की पढ़ाई होती है। इस कारण उसने कहा, 'हां, आज एक बात का ज्ञान हुआ है। वह यह कि परमात्मा के साथ अपने को एक समझें तो उसका बल अपने में आ जाता है।'

'जी।'

इस प्रकार बात करते-करते चार बज गये। चाय का समय हो गया और विश्वम्भर दुकान से आ गया। वह नित्य प्रातः आठ बजे दुकान खोला करता था और मध्याह्न के समय दुकान पर ही कुछ अल्पाहार ले लिया करता था। सायं चार बजे वह घर पर आता था और नाश्ता लेकर पण्डितजी से पढ़ने चला जाया करता था।

आज वह पढ़ने जाने लगा तो गार्गी भी मां से मिलने जाने के लिये तैयार हो गई।

'तो मैं भी साथ चलूंगी।' सदारानी ने कह दिया।

तब तो और भी ठीक है।' गार्गी का कहना था।

इस प्रकार मां, पुत्र और पुत्रवधू पडिण्तजी के घर पर जा पहुंचे।

पण्डितजी लड़की के साथ उसकी सास और दामाद को आते देख उठकर उनका सत्कार करने लगे तो सदारानी ने कहा, 'मैं तो गार्गी की माताजी से मिलने आई हूं।'

पण्डितजी ने सौदामिनी को आवाज दे दी।

सौदामिनी आयी तो गार्गी से गले मिली और फिर गार्गी की सास को हाथ जोड़ नमस्कार कर दूर इत्यादि पूछने लगी।

सदारानी ने मुस्कराते हुए कहा, 'आप ब्राह्मण हैं। कल हमने आपके घर पेट भर खाया है, परन्तु अब आप हमारे पूज्य हैं और हम आपके घर पर कुछ नहीं खा सकते।'

'मगर बहनजी! कल भी जो खाया था वह हमारा नही था।' पण्डित लक्ष्मीचन्द ने कह दिया।

'तो किसका था?'

'यह तो पता नहीं कि कहां से आया था, परन्तु व्यय किया आपके पुरोहित बृजलाल ने। और जो कुछ बचा था, उसे आज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रातकाल उठवाकर वह ले गया है।'

'तो कुछ बचा भी था ?'

'जी।' लक्ष्मीचन्द कहा।

बात सदारानी ने बदल दी। उसने कहा, 'मैं गार्गी की मांजी से केवल यह कहने आई हूं कि आज गार्गी ने एक नई बात बताई है।'

'सत्य ?' सौदामिनी ने विस्मय में पूछ लिया, 'क्या नई बात बताई है ?'

'यही कि लिखी पुस्तकों में से पढ़ने के अतिरिक्त कानों से भी पढ़ाई होती है और इस बहू ने हमें एक पाठ भी पढ़ाया है।'

'क्या पाठ पढ़ाया है गार्गी ?'

उत्तर सदारानी ने ही दिया। उसने कहा, 'इसने आज बताया है कि रामजी घट-घट में बसे हुए हैं। वह हममें भी हैं। और यदि हम अपने को उसके अनुकूल बना लें तो हममें परमात्मा जितनी शक्ति आ जाती है।'

'तो क्या इसने यह भी बताया है कि किस प्रकार अपने को परमात्मा के अनुकूल किया जाता है ?'

'नहीं, यह अभी नहीं बताया। हां, यह बताया है कि जैसे हनुमानजी राम का नाम लेकर आकाश के मार्ग से लंका जा पहुंचे थे, इसी प्रकार इसने रामजी का चिन्तन किया तो सेठजी के घर आ पहुंची है।'

इस पर पण्डित लक्ष्मीचन्दजी ने कह दिया, 'हां, यह तो मैंने भी देखा है।'

'क्या देखा है ?'

'कि रामजी इसे सेठजी की हवेली में ले गये थे। वैसे ही जैसे रामजी को पुष्पक विमान अयोध्या ले गया था। यह सब रामजी की महिमा ही थी।' पण्डितजी ने कह दिया।

'बहू कहती है, वही राम जो घट-घट के वासी थे, दशरथ के पुत्र राम में भी थे। रामजी ने अपने को घट-घट के वासी राम के अनुकूल किया तो फिर रावण को मारकर लंका पर विजय प्राप्त की और आज पूर्ण हिन्दू समाज राम के गुण गाता है।'

'तब तो गार्गी ने एक दिन में आपको बहुत सिखा दिया है।'

आज विश्वम्भर की पढ़ाई नहीं हुई। गार्गी का सुख-समाचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लेते-लेते ही सायंकाल हुई तो सदारानी पुत्र और बहू को लेकर घर लौट गई।

6

मलावामल्ल और सन्तराम दुकान से लौटे तो भोजन के पूर्व ही बात होने लगी।

मलावामल्ल के तीन लड़के और दो लडकियां थीं। सबके अपने-अपने परिवार थे। लड़कियां दोनों लाहौर से बाहर विवाही गयी थीं। एक सौभाग्यवती का विवाह गुजरांवाला में हुआ था। उसके दो बच्चे भी थे। दूसरी काहनदेवी का विवाह अमृतसर में हुआ था। वह अपने बाल-बच्चों के साथ विश्वम्भर के विवाह पर आई थी और उसी दिन विवाह की बधाई के साथ विदा कर दी गई थी।

सन्तराम सबसे बड़ा लड़का था और उसके चार बच्चे थे। दो लड़के और दो लड़कियां। लड़कियों के विवाह लाहौर में ही हुए थे और वे दोनों पहली रात विश्वम्भर की ससुराल से ही अपने-अपने घर लौट गई थीं। उनको विवाह के दिन ही सदारानी ने बुलाया था।

रात बाबा इत्यादि दुकान से लौटे तो सदारानी ने बताया, 'आज बहू मां को मिलने गई थी।'

'तो एक ही दिन में उदास हो गई थी ?' मलावामल्ल ने पूछा।

मलावामल्ल और सन्तराम बैठकघर में आकर बैठ गये थे। सेवक भगवान उनके पीने के लिये जल लेकर आया था। मलावा-मल्ल और सन्तराम जल पी रहे थे, जब सदारानी ने उस दिन की बात बताई। बाबा के प्रश्न पर सदारानी ने कहा, 'यह तो पता नहीं। जब विश्वम्भर पढ़ने जाने लगा तो बहू भी उसके साथ जाने के लिये तैयार हो गई। मैंने बहू को अभी लड़के के साथ अकेले भेजना ठीक नहीं समझा। इस कारण मैं भी साथ ही चल पड़ी। वहां पण्डितायिन ने बहुत आदर-सत्कार किया था।'

'हां!' बाबा ने बताया, 'पण्डितजी आज दुकान पर आये थे और वह अपने बैंक के खाते की पास बुक और चैक बुक लाये थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
D-372

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'खाते में तीन हजार दो सौ से कुछ ऊपर था। वह कहने लगे, आपने लड़की का विवाह तो बहुत धूमधाम से किया है। मेरा अनुमान है कि उस पर आपका कम से कम पांच-छः हजार रुपया खर्च हुआ होगा। इतना तो मेरे पास है नहीं। मेरे जीवन की जमापूंजी बस इतनी ही है। और मैं आपके नाम तीन हजार रुपये का चैक लिखकर लाया हूं। यह आप ले लीजिये और शेष एक ब्राह्मण को दान-दक्षिणा समझ लीजिये।

'मैंने हंसते हुए कहा, 'इस विवाह के हिसाब में आपसे कुछ भी लेना नहीं बनता। आप यह बताइये कि बृजलाल क्या कुछ वहां छोड़ आया है ?

'इस पर पण्डितजी बताने लगे कि आज प्रातःकाल दो कुलियों के साथ आया था और सब कुछ, जो बचा था, उठाकर ले गया है। वह जब ले जाने लगा तो मैं मना कैसे कर सकता था ? सब कुछ वह ही तो लाया था।'

सन्तराम को बृजलाल की बात सुन क्रोध चढ़ आया। उसने कहा, 'मैंने तो उसे कहा था कि जो कुछ बचे पण्डित लक्ष्मीचन्द के हवाले कर आना। बड़ा बेईमान निकला है। मैं समझता हूं कि उसके पास लगभग एक हजार रुपये नकद भी बचे होंगे।'

मलावामल्ल ने कह दिया, 'तनिक उसको बुलाओ लो, उससे हिसाब-किताब मांगता हूं।'

सेवक को बृजलाल के घर भेजा गया। इस समय मलावामल्ल का दूसरा लड़का महन्तराम, जो हवेली के एक कमरे में ही परिवार सहित रहता था, आ गया। बाबा के पांव लागूं कर वह सामने बैठ बोला, 'पिताजी ! आज तो घर में राम कथा होती रही है।"

'सत्य ?'

'हां। सोहनी ने बताया है कि नई बहू राम की कथा में बताती रही है कि हम सब राम का ही अवतार हैं।'

'यह तो बहुत अच्छी बात है।' मलावामल्ल ने कह दिया।

'क्या अच्छी बात है ? हम सब राम का अवतार हैं तो हमारे सब काम भी राम द्वारा हो रहे हो जायेंगे।'

सदारानी गार्गी का अभिप्राय अधिक समझी थी। अतः उसने कह दिया. 'वह दशरथ के पुत्र राम की बात नहीं कर रही थी। वह कह रही थी कि वह राम, जो घट-घट में व्याप्त है, वह हममें भी है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और जो मां उस राम के अनुकूल हो जाती है तो राम की पूर्ण कृपा
उसमें आ जाती है।'

सदारानी ने आगे बताया, 'मां के घर में भी वह बता रही थी कि उस राम की सहायता से वह इस स्वर्गधाम में आ पहुंची है।'

इस पर सब हंसने लगे तो सदारानी ने एक बात पण्डित लक्ष्मीचन्दजी की भी बता दी। उसने कहा, 'और बहू के पिता कहते थे कि गार्गी को रामजी ही पुष्पक विमान में बैठा यहां ऐसे ले आये हैं जैसे दशरथ के राम को लंका-विजय के उपरान्त विभीषण विमान में बैठा अयोध्याजी ले गये थे।'

मलावामल्ल के मुख से अनायास निकल गया, 'बहुत सुन्दर।'

'विश्वम्भर भी कहता था, वह दशरथ-पुत्र नाम नहीं था प्रत्युत घट-घट का वासी राम था। मैंने भी उसे बहू की डोली लाते देखा था।'

'अच्छा,' बाबा ने कह दिया, 'विश्वम्भर कहां है? उसको बुलाओ।'

सदारानी गयी और विश्वम्भर के साथ गार्गी को भी ले आयी। गार्गी ने घूंघट नहीं निकाला हुआ था। सदारानी बाबा से घूंघट की ओट में ही बात करती थी, परन्तु गार्गी बिना घूंघट किये ही वहां आयी। कमरे में श्वसुर सन्तराम और चाचा महन्तराम को भी बैठे देख वह एक क्षण तक ठिठकी परन्तु तुरन्त ही अपने को सतर्क कर आगे बढ़ पहले बाबा, फिर सन्तराम और महन्तराम के पांव स्पर्श कर बोली, 'मैं तो पहले ही पांव स्पर्श करने आ रही थी, परन्तु आपके पौत्र तैयार होने में देर लगा रहे थे।'

मलावामल्ल ने हंसते हुए कहा, 'तो तुम कल यहां पुष्पक विमान में बैठ आयी थीं और रामजी तुम्हें यहां लाये थे?'

'बाबा! यह पिताजी ने एक अलंकार के रूप में बात कही है। वैसे मैं कुछ वैसा ही अनुभव करती रही थी। एक गरीब का डोला उतनी ही महिमा रखता है जितना पुष्पक विमान।'

इस समय सेवक भगवान बृजलाल को लेकर आ गया। बृजलाल घर की गोष्ठी बैठी देख पहले तो झिझका, फिर सबको आशीर्वाद देकर बैठ पूछने लगा, 'सेठजी! किसलिये याद किया है?'

मलावामल्ल ने कहा, 'हम समझ रहे थे कि पण्डित बृजलाल दुकान पर खर्चे का हिसाब देने आयेंगे, परन्तु पण्डितजी! आप तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आये नहीं।

बृजलाल एक क्षण तक बाबा मलावामल्ल का मुख देख बोला, 'आपकी इस दान-दक्षिणा का हिसाब-किताब तो भगवान आपको स्वर्ग लोक में ही देगा। मैंने इस दान-दक्षिणा का हिसाब भगवान के पास भेज दिया है।'

'परन्तु पण्डितजी! वह दान-दक्षिणा आपके लिये नहीं थी। वह तो पण्डित लक्ष्मीचन्दजी के लिये थी।'

'सेठजी!' बृजलाल का सतर्क उत्तर था, 'पण्डित लक्ष्मीचन्द तो आपके समधी हैं। समधी दान-दक्षिणा का पात्र नहीं हो सकते। लड़की के पिता लड़के वालों के धन से कुछ ले नहीं सकते। वह इसे पाप ही समझते हैं। इसी कारण पण्डित लक्ष्मीचन्दजी के घर से सब कुछ उठवाते हुए मैंने ध्यान रखा था कि कुछ वहां रह न जाये। लड़की के घर का एक दाना भी यदि वहां रह जाता तो महापाप हो जाता।'

'तो तुमने,' मलावामल्ल ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, 'पण्डित जी को कुछ नहीं लेने दिया?'

'जी।'

'परन्तु तुम तो सब कुछ उठाकर अपने घर ले आये हो? यह किस अधिकार से है? वह तो हमारा होना चाहिये।'

'सेठजी! मैं आपका पुरोहित हूं। यजमान की दान-दक्षिणा का अधिकारी मैं ही हूं। दान-दक्षिणा में दिया तो कोई वापिस नहीं लेता। और मैं आपका पुरोहित हूं। उसका सदुपयोग करूंगा। अपने लड़के के विवाह पर उसका प्रयोग कर यजमान की जय-जयकार करूंगा।'

'तो यह बात है?'

'हां सेठजी!'

मलावामल्ल ने बात बदल दी और पूछा, 'कब विवाह कर रहे हो गौरीशंकर का?'

'सगाई हो गयी है। विवाह की तिथि अभी गिनी नहीं गयी।'

"अच्छा देखो। विवाह का दिन निश्चय हो तो बताना। हमारे पुरोहित के लड़के की बारात बहुत धूमधाम से निकलनी चाहिये।'

बृजलाल के मुख से निकल गया, 'यजमान की जय हो। भगवान आपको सुख-सम्पदा से सम्पन्न करे।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना कह बृजलाल वहां से उठ पड़ा और खुशी-खुशी हवेली से नीचे उतर गया। उसके जाते ही सन्तराम ने कहा, 'पिताजी! यह तो कुछ न हुआ।'

'तो क्या चाहते हो?' मलावामल्ल का प्रश्न था।

'इसे जूतों से पिटवा देना चाहिये था।'

'और जूता टूट जाता तो क्या मोल लेना पड़ता। साथ ही ब्राह्मण को पिटवाते तो नगर में और बिरादरी में बदनाम हो जाते।'

'यह ब्राह्मण हमारा डेढ़ हजार फोकट में ले गया है।'

'उसके भाग्य में लिखा था।'

भोजन तो रसोईघर में बैठकर ही किया जाता था। आज बाबा और सास-श्वसुर के साथ ही बैठकर गार्गी ने भी भोजन किया। उसने किंचिन्मात्र भी घूघट नहीं निकाला हुआ था। सदा-रानी ने कुछ घूंघट किया हुआ था। सन्तराम का ध्यान दोनों में इस अन्तर की ओर गया तो उसने पूछ लिया, 'गार्गी बेटी! देखती हो न विश्वम्भर की मां बाबा से घूंघट निकालती है?'

'जी। देख रही हूं। परन्तु मैं समझी नहीं कि क्यों निकाला है और फिर इतने से घूंघट से किसको क्या लाभ हो रहा है, यह भी तो स्पष्ट नहीं। मैं तो बाबा की पोती हूं। इस कारण मैं बाबा से घूंघट निकालने में कुछ भी प्रयोजन नहीं समझती। हां, यदि बाबा को मेरी सूरत पसन्द न हो तो इसे छुपाने का यत्न कर सकती हूं।'

सन्तराम हंस पड़ा और बाबा से पूछने लगा, 'बाबा! बताओ, यह अपना मुख आपसे छुपाये अथवा न?'

मलावामल्ल ने भी हसते हुए कह दिया, 'कुछ बुरा तो है नहीं। मैं तो इसे पसन्द कर ही विश्वम्भर के लिये लाया हूं। क्यों विश्वम्भर! तुम क्या समझते हो?'

'मैं मां से पूछता हूं कि वह क्या छुपाकर रखना चाहती हैं? इतने से तो इनके मुख का कुछ भी छुपता नहीं।'

इस पर मलावामल्ल ने कह दिया, 'मैं तो बहूरानी को इतनी अच्छी तरह से पहिचानता हूं कि यदि यह एक सहस्र स्त्रियों में बैठी हो तो भी इसे ढूंढ़ निकाल सकता हूं।'

'तो माताजी!' गार्गी ने कह दिया, 'यह घूंघट ढकोसला नहीं क्या? कम से कम घर में बैठे हुए तो यह निरर्थक ही है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सन्तराम हँस पड़ा और अपनी पत्नी से बोला, 'मैं आरम्भ से ही कहा करता था कि यह तुम किसलिये करती हो ?'

सदारानी बात को समझी तो उसने बायें हाथ से साड़ी को मुख से कुछ ऊपर करते हुए कहा, 'जब आप मुझे भली भांति पहिचानते हैं तो मैं अब मुख किसलिये छुपाऊं ?'

सब हंसने लगे। बुद्धिप्रकाश भी भोजन कर रहा था। वह बोल उठा, 'पिताजी ! मैं भी ऐसी ही पत्नी लाऊंगा जो किसी से घूंघट न निकाले।'

'तुम्हारी कितनी आयु है ?' मलावामल्ल का प्रश्न था।

'मैं कैसे जान सकता हूं ?'

'स्कूल में दाखिल होते समय क्या आयु लिखाई थी ?'

'वह पिताजी ने लिखाई थी। मैं तो बुद्धुओं की भांति खड़ा था।'

सन्तराम ने बता दिया, 'आजकल यह नवीं श्रेणी में पढ़ता है। इसकी आयु चौदह वर्ष की है। यह मेरी सबसे छोटी सन्तान है। इसका विवाह तो मैं बहुत धूमधाम से करूंगा।'

'अर्थात् मेरे विवाह से भी अधिक व्यय करेंगे ?' विश्वम्भर ने पूछा।

'इसी के लिये तो बारह घंटे दुकान पर चक्की पीसते हैं।'

इस समय ऊपर की मंजिल से बेअन्तराम अपनी पत्नी और छोटी लड़की सुभद्रा को लिये हुए आ गया।

'आओ बेअन्त !' मलावामल्ल ने कहा, 'कैसे आज इस समय दर्शन हुए हैं ?'

'बाबा !' बेअन्तराम ने कहा, 'यह आपकी पोती सुभद्रा कुछ कह रही है। वही आपको बताने आया हूं।'

'हां, बताओ सुभद्रा ! क्या कहती हो ?'

सुभद्रा स्कूल की छठी श्रेणी में पढ़ती थी। जब बाबा ने उसे सम्बोधित किया तो वह अपने पिता की ओर देखने लगी। बात सुभद्रा के पिता ने ही की। उसने कहा, 'यह कहती है कि कल से यह स्कूल नहीं जायेगी।'

'क्यों ?' मलावामल्ल का प्रश्न था।

'यह कहती है, हमारी बहनजी को कुछ आता ही नहीं। वह कहती थीं कि दशरथ का बेटा राम तो मूर्ख था। पिता की अनुचित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आज्ञा को नहीं मानना चाहिये था। दशरथ ने राम की सौतेली मां कैकेयी के मोहजाल में फंसे हुए उसे वन जाने की आज्ञा दी थी। राम को ऐसी बात मानने से इनकार कर देना चाहिये था।'

'और माताजी बता रही हैं,' अब सुभद्रा ने कहा, 'कि भाभी ने समझाया है कि राम परमात्मा ही थे। मैं स्कूल की बहनजी से नहीं पढ़ूंगी।'

'और तुम किस स्कूल में पढ़ती हो?' गार्गी ने पूछ लिया।

'विक्टोरिया मैमोरियल गर्ल्स स्कूल में।'

'और तुम्हारी पढ़ाने वाली बहनजी का क्या नाम है?'

'मिस सैमुअल।' सुभद्रा ने बताया।

'तो वह ईसाई है?'

'मैं क्या जानूं?'

'देखो सुभद्रा!' गार्गी ने कहा, 'मां को कहो कि उस स्कूल से तुम्हें उठा लें और आर्य कन्या पाठशाला में बैठा दें।'

इसपर बेअन्तराम ने बताया, 'इससे पहले यह आर्य कन्या पाठशाला में ही पढ़ती थी। पिछले वर्ष इसे वहां से उठाया था। वहां बहनजी ने इसको बताया था, राम-सीता की कहानी झूठ प्रतीत होती है। उन दिनों अयोध्या से लंका तक जाने का जो मार्ग रामायण में बताया है, उसका आज कहीं पता नहीं चलता।

'इसने मां को बहनजी की बात बताई। अगले ही दिन इसकी मां इसे विक्टोरिया मैमोरियल स्कूल में भरती कराने ले गई।'

विश्वम्भरनाथ ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए कहा, 'चाचाजी! यह न तो आर्य कन्या पाठशाला का दोष है न ही विक्टोरिया मैमोरियल स्कूल वालों का।'

'तो किसका दोष?' सुभद्रा की मां का प्रश्न था।

विश्वम्भर ने कह दिया, 'यह हमारे बृजलाल जैसे पुरोहितों का दोष है, जो पढ़े-लिखे कुछ नहीं और बता नहीं सकते कि राम की महिमा किस बात में थी? राम की महिमा इस बात में नहीं थी कि उसका बाप दशरथ भी बीवी का झुड्डू था।'

सब हंसने लगे। बात मलावामल्ल ने ही की, 'वह क्या होता है?'

'बाबा! झुड्डू उस मूर्ख को कहते हैं जो पत्नी के सामने युक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की बात नहीं कर सकता। उसे कैकेई को समझाना चाहिए था। वह मूर्खों की भांति पत्नी को राज्यकार्य और व्यक्तिगत बात में अन्तर नहीं बता सका।

'परन्तु बाबा! राम की महिमा इसमें नहीं थी कि उसका पिता मूर्ख था। राम की महिमा तो इस बात में थी कि वह माता-पिता में वैमनस्य को रोकने के लिए अपने पर कष्ट लेने को तैयार हो गया था।

'राज्य को एक तुच्छ वस्तु समझ वह कैकेई को राज्य भरत को देने का अवसर दे देना चाहता था। स्वयं वह किसी मुनि के आश्रम में जाकर अपनी आत्मोन्नति करने चल पड़ा था।

'राज्य को एक तुच्छ वस्तु भी न समझना ही उसकी महानता का लक्षण था। सुभद्रा के स्कूल की बहनजी राज्य को बहुत बड़ी वस्तु समझती प्रतीत होती हैं। राम ने उसे पुराने जूते के समान उतारकर फेंक दिया था। इसका दशरथ और कैकेई की मूर्खता से कुछ भी सम्बन्ध नहीं।

'इसी प्रकार आर्य कन्या पाठशाला की बहनजी सरकारी इतिहास लिखने वाले वेतनधारी गुलामों की बात सत्य समझ बैठी प्रतीत होती हैं। सरकार हिन्दुस्तानियों पर राज्य करने के लिए उनको मूर्ख, अनपढ़ और इतिहास न जानने वाला सिद्ध करना चाहती है और उसके लिए हमारे इतिहास को झुठला रही है। और आर्य समाजी स्कूलों के मास्टर और मास्टरानियां बन हिन्दू और वेद का नाम लेकर एकत्रित करते हैं और कार्य सरकार का, राज्य को सुदृढ़ करने का, करते हैं।'

'पर मैं क्या करूं?' सुभद्रा ने पूछ लिया।

'देखो बहन! मैं अपने पण्डितजी से राय कर कल बताऊंगा।'

'क्या बताओगे?' मलावामल्ल ने पूछ लिया।

'यही कि हम हिन्दू क्या करें? एक ओर पहाड़ है तो दूसरी ओर खाई है।'

सुभद्रा ने उठते हुए कहा, 'मैं कल स्कूल नहीं जाऊंगी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

7

विश्वम्भरनाथ ने अगले दिन पण्डितजी को सुभद्रा की समस्या का वर्णन किया तो पण्डितजी ने कहा, 'सुभद्रा की समस्या तो कुछ कठिन नहीं है। वह एक धनी परिवार की लड़की है। उसे अपने भविष्य के लिए अधिक चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं।

'कभी तुम्हारे चाचा मिलेंगे तो मैं समझा दूंगा कि सुभद्रा को दहेज स्वर्ण-भूषणों के रूप में न दें। उसके नाम धन बैंक में जमा करा दें, जिससे वह कभी पति के घरवालों से पृथक् होना चाहे तो सुगमता से हो सके। यह मैं इस कारण कहता हूं कि गिरधारी लाल के लड़के की दुर्दशा मेरे सामने है। वह लड़का है। अब बीस रुपये पर एक दुकान पर मुंशीगीरी कर रहा है। लड़की के लिए ऐसी स्थिति उत्पन्न हो तो कठिनाई उत्पन्न हो जायेगी।

'जहां तक उसकी पढ़ाई का सम्बन्ध है, उसे स्कूल से उठा लेना चाहिए। हिन्दी तदनन्तर रामायण और समय हुआ तो महाभारत वह गार्गी से पढ़ लेगी तो उसका कल्याण होगा।

'स्कूलों पर सरकारी अधिकारी हो गया है। सरकार विधर्मियों की है। इस कारण सब प्रकार के स्कूल, सरकारी, सनातन-धर्मी तथा आर्यसमाजी भी, वही पढ़ाते हैं जो सरकार चाहती है।

'देखो विश्वम्भर! समस्या निर्धनों के बच्चों की है। उनको जीविकोपार्जन के लिए कहीं सेवा-कार्य करना पड़ेगा। सेवा-कार्यों का सीधे रूप में और उलटे रूप में सरकारी शिक्षा सहायक होगी। प्रश्न उनका ही है। इसका प्रतिकार मेरी बुद्धि से ऊपर की बात है।

'उचित तो यही है कि अंग्रेजी राज्य को हटाकर यहां देशी राज्य स्थापित किया जाये और हमारे बच्चों की शिक्षा हिन्दू शास्त्रानुसार हो।'

विश्वम्भर ने रात भोजन के पूर्व सुभद्रा को गार्गी के पिता का सुझाव बता दिया।

'मैं आज स्कूल नहीं गई।' सुभद्रा ने कहा

'पण्डितजी का विचार है कि तुम्हारे काम के लायक गार्गी तुम्हें पढ़ा देगी। वह तुम्हें रामचरितमानस और फिर महाभारत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पढ़ा सकती। गणित भी घर के कामकाज के लिए सिखा देंगी।

सुभद्रा इस व्यवस्था से प्रसन्न थी, परन्तु उसकी मां को इससे सन्तोष नहीं हुआ। उसने अपने पति से कहा, 'लड़के वाले पूछते हैं, लड़की ने स्कूल की कौन-सी परीक्षा पा ा की है ?'

बेअन्तराम ने अपनी पत्नी की बात को सुनकर कहा, 'भाग्यवान ! विश्वम्भर के विवाह के समय तुम कहती थीं कि लोग यह पूछ रहे हैं कि पण्डितजी की लड़की कितना दित्त-दाज ला रही है ? और आज तुम कह रही हो कि लड़की कितनी श्रेणी तक पढ़ी है ? तो क्या हम लोगों के कहने पर कार्य करेंगे ?'

'तो किसके कहने पर कार्य करेंगे ?

'अपनी बुद्धि के कहने पर।'

'उसको कौन देखता है ?'

'मैं समझता हूं कि कल तुम सात फल, नारियल और एक रेशमी साड़ी लेकर गार्गी के कमरे में सुभद्रा को ले जाकर इसे उसकी शिष्या बना देना। अभी वह ग्यारह वर्ष की है। जब उसके विवाह का अवसर आयेगा तो विचार कर लेंगे कि धन मांगने वालों को क्या उत्तर दें और पढ़ाई पूछने वालों को क्या उत्तर दें ?

बेअन्तराम की पत्नी को सन्तोष तो नहीं हुआ, परन्तु वह चुप रही। प्रातः अल्पाहार के समय जब बाबा और सन्तराम की पत्नी सदारानी तथा गार्गी आकर खाने के कमरे में बैठे तो सुभद्रा को लेकर उसकी मां वहां आ गयी। विश्वम्भर और उसके पिता सन्तराम अल्पाहार ले दुकान पर जा चुके थे।

सुभद्रा एक रेशमी साड़ी, उसपर छोटी-सी टोकरी में फल तथा नारियल लिए हुए आयी और गार्गी के सामने रख गार्गी के चरण स्पर्श कर बोली, 'भाभी ! आज से मैं तुम्हें गुरु मानती हूं। मुझे आज्ञा दो कि मैं किस समय पढ़ने आया करूं ?'

मलावामल्ल यह सुन हंस पड़ा। हंसते हुए पूछने लगा, 'यह किसकी राय से कर रही हो ?'

उत्तर सुभद्रा ने दिया, 'पिताजी की राय से और माताजी की स्वीकृति से।'

'बताओ बेटी गार्गी !' मलावामल्ल का प्रश्न था, 'है स्वीकार ?'

'बाबा !' गार्गी का कहना था, 'मैं एक ब्राह्मण की लड़की उसे विद्या-दान से न नहीं कर सकती। मैं बहन सुभद्रा को नित्य ग्यारह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बजे से एक बजे तक पढ़ाया करूंगी। जो कुछ भी जानती हूं उसे दूसरे को बताने से इनकार नहीं कर सकती।'

'सौभाग्यवती रहो बेटी! एक दुकानदार की पतोहू होते हुए भी ब्राह्मण बन रह सको तो भगवान की कृपा का फल ही मानूंगा। मैं उन्नत हो रहा अनुभव करता हूं।'

बगावत एक छूत की बीमारी है। उस घर में दो लड़कियां और भी थीं। वे महन्तराम की लड़की इन्द्रा और सत्या थीं उन्होंने जब सुभद्रा को पुस्तकें लेकर गार्गी के कमरे में जाते देखा तो अगले दिन वे भी अपने स्कूल से छुट्टी करने का यत्न करने लगीं। महन्तराम ने स्वीकृति दी तो एक के स्थान तीन छात्राओं की पाठशाला गार्गी के कमरे में खुल गयी।

इस घटना को लगभग एक मास व्यतीत हो चुका था कि एक रात सन्तराम के परिवार के सामने बाबा ने प्रस्ताव कर दिया, 'मैंने मन में निश्चय किया हुआ था कि विश्वम्भर के विवाह के उपरान्त दुकान का बंटवारा करूंगा। सन्तराम! बताओ क्या कहते हो?'

सन्तराम ने कहा, 'बाबा! यदि बंटवारे की बात करनी है तो मेरे दूसरे भाइयों को भी बुला लो और सब बात उनके सामने ही हो जाये।'

'यह ठीक है। बुद्धिप्रकाश! तुम जाओ और अपने दोनों चाचाओं को बुला लाओ।'

बुद्धिप्रकाश गया और महन्तराम और बेअन्तराम को बुला लाया।

जब तीनों भाई एकत्रित हुए तो सदारानी, बुद्धिप्रकाश और गार्गी को वहां से उठा दिया गया।

महन्तराम ने कहा, 'विश्वम्भर को भी यहां बैठने का अधिकार नहीं है।'

'क्यों?' मलावामल का प्रश्न था।

'हम तीनों ही तो आपके कारोबार के उत्तराधिकारी हैं।'

'मैं ऐसा नहीं समझता। कारोबार के अधिकारी वे होते हैं जो कारोबार में सहायक होते हैं।'

महन्तराम का कहना था, 'तब तो मेरे लड़के बनवारीलाल को भी बुला लेना चाहिए। वह भी स्कूल के उपरान्त दुकान पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आकर मेरी सहायता करता है।'

बनवारीलाल सत्या का छोटा भाई था। अभी तीसरी श्रेणी में पढ़ता था। सब महन्तराम की बात सुन हंसने लगे।

मलावामल्ल ने कहा, 'अपनी पत्नी से पूछ आओ। यदि कोई पेट में है तो उसका भी दावा कर दो। देखो महन्त! दुकान एक मेहनत-मजदूरी का संस्थान है। जो इसमें मेहनत कर रहा है वह ही इसकी आय और सम्पत्ति का स्वामी है।

'जहां तक मेरी सम्पत्ति का प्रश्न है, वह दुकान के प्रयोग और व्यवसाय को चालू रखने से अतिरिक्त है। वह हमने घर में भूषण, मकान और अन्य मूल्यवान सामानों पर लगाई हुई है।'

'मैं दुकानों का झगड़ा अपने जीवन काल में ही समाप्त कर देना चाहता हूं। शेष रहेगी मेरी सम्पत्ति। वह दुकान में लगे धन से पृथक् है।'

बेअन्तराम को यह बात समझ में नहीं आई। उसने कहा, 'बाबा! बंटवारा करना है तो सबका करो। केवल दुकानों के विषय में बंटवारे का कुछ अर्थ नहीं।'

इस पर सन्तराम का प्रश्न था, 'परंतु यह बंटवारे की बात आज क्यों उत्पन्न हो गई है?'

इसका समाधान मलावामल्ल ने कर दिया। उसने कहा, 'मैं दुकानों के बंटवारे की बात भी न करता यदि सन्तराम की बहू सदारानी विश्वम्भर के विवाह पर उसके लिए पृथक् दुकान की मांग न करती। जब उसने विवाह के साथ पृथक् कारोबार का सम्बन्ध बनाना चाहा तो मैं अपनी विचारित योजनानुसार बात स्पष्ट कर देना चाहता था, परन्तु उस समय विश्वम्भर के कारण विवाह के खर्चे को भी दुकान की सम्पत्ति से पृथक् रखना चाहता था।

'अब विश्वम्भर का विवाह हो चुका है। उसके श्वसुर ने पारिवारिक सम्पत्ति में कुछ भी योग नहीं दिया। इस कारण उसका घर की सम्पत्ति में वह भाग नहीं हो सकता जो सन्तराम का हो सकता है। सन्तराम की बहू सदारानी अपने मायके से एक सौ बीस तोले सोने के भूषण और लगभग आधा सेर चांदी के भूषण लाई थी।

'इसी प्रकार बेअन्तराम की बहू अपने विवाह पर अमृतसर का मकान दहेज में लाई थी। इस कारण दुकान और घर की बात मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पृथक् पृथक् रखना चाहता हूं। दुकान में तो विश्वम्भर की सहायता से उन्नति हो रही है।'

बाबा की युक्ति में दोष तो नहीं निकाला जा सका। इस पर भी इसको समझने के लिये महन्तराम ने कहा, 'बाबा! आपने यह कहा है कि दुकान घर से पृथक् है। इस विषय पर विचार करने के लिये मेरे कुछ विचार हैं। हम पुनः एकत्रित हो, इसमें जो बात हमको समझ नहीं आई, वह उस समय करेंगे।'

'ठीक है।' मलावामल्ल का कहना था, 'परन्तु तीनों दुकानों का लेन-देन आज इसी समय बंद कर देना आवश्यक है। इस कारण मैं कहूंगा कि अपनी-अपनी दुकानों की चावियां लाकर मुझे दे दो। और मैं कल प्रातः आठ बजे से पहले बही-खाते बंद कर नये बही-खाते आरम्भ करा दूंगा।

'यह कैसे करेंगे?' महन्तराम का प्रश्न था।

'दुकान की चावियां ले आओ तो कल आठ बजे से पहले तुम दुकान पर कार्य कर सकोगे।'

दोनों लड़के महन्तराम और बेअन्तराम ऊपर की मंजिल पर गये और दुकानों की चावियां ले आये। तीनों दुकानों की चावियां लेकर बाबा ने बेअन्तराम को कहा, 'तुम विश्वम्भर के साथ सन्तराम की दुकान पर प्रातः सात बजे जाकर हिसाब-किताब की किताबें तथा 'कैश' देखकर नीचे दोनों अपने-अपने हस्ताक्षर और तारीख तथा समय लिख आना और पौने आठ बजे चावियां वापस ले जाना।

'और सन्तराम! तुम महन्तराम की दुकान पर यही कर आओ जो बेअन्तराम की दुकान पर सन्तराम करने जा रहा है।

'मैं तुम दोनों को दुकान पर मिलूंगा तो दोनों चावियां लेकर वहां आ जाना। मैं वहां तुम सबके बही-खातों पर तुम सबके हस्ताक्षर करा दूंगा।

'उसके उपरान्त तुम लोग अपनी-अपनी दुकान पर बिक्री तथा खरीद कर सकोगे। और फिर आज से पांच दिन उपरान्त बंटवारे की विधि निश्चय कर उसके अनुसार बंटवारा कर दूंगा। मुझे एक योग्य मुनीम तीनों दुकानों की सम्पत्ति गिन डालने के लिये लाना पड़ेगा।'

'और बाबा!' विश्वम्भर का प्रश्न था, 'आपका दुकान के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बंटवारे में क्या भाग होगा ?'

'यह नीति का प्रश्न है। इस पर विचार कर लेंगे। जो समझ में न्याययुक्त और व्यावहारिक समझ आयेगा, वैसा ही करेंगे।'

अगले दिन जो-जो काम जिसके लिए नियत किया गया था, वह उसने समय पर कर दिया तो पौने आठ बजे तीनों भाई, मलावा-मल्ल और विश्वम्भर एकत्रित हुए और चाबियां प्रत्येक दुकान वाले को दे दी गईं और नियमित रूप से आठ बजे दुकानें खुल गईं।

उसी दिन सायंकाल विश्वम्भर ने अपनी पढ़ाई के उपरान्त अपनी दुकानों पर हुए कार्य की बात पण्डित लक्ष्मीचन्द को बताई तो पण्डितजी ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा, 'मैं तुम्हारे बाबा की न्यायबुद्धि की प्रशंसा करता हूं। वह केवल लुण्डी भाषा पढ़े हुए और समाचार-पत्रों तथा कानून की पुस्तकों में लिखे से अनभिज्ञ इस न्याय की तुला पर निर्णय ले रहे हैं।

'देखो विश्वम्भर !' पण्डितजी ने आगे कहा, 'उनका घर की सम्पत्ति और दुकानों की सम्पत्ति को पृथक्-पृथक् मानना उनकी बुद्धि की श्रेष्ठता का लक्षण है।

'दुकान कर्मक्षेत्र है। उस क्षेत्र में जो कार्य करता है, वही उसके फल का भागीदार हो सकता है। घर भोग स्थान है। भोग के लिए घर का प्रत्येक प्राणी उसमें भागीदार है। कर्मक्षेत्र और भोगस्थान को पृथक्-पृथक् कर देखना तुम्हारे बाबा की विशेष प्रतिभा का सूचक है।

'एक बात मुझे विशेष समझ आई है। वह यह कि घर की सम्पत्ति में तुमने कुछ योगदान नहीं दिया। इस कारण तुम्हारा भाग उसमें वह नहीं हो सकता जो महन्तराम आदि का है। उनको सुसराल वालों ने बहुत कुछ दिया है।'

'पण्डितजी ! मै यह पहले ही समझ रहा हूं।' विश्वम्भर ने अपना विचार बताया, 'यह सब जानते हुए ही मैं अपनी दृष्टि गार्गी पर रखता था।

मैंने रात गार्गी को बताया तो वह कहती थी कि हमने अपना पारिवारिक जीवन शून्य से आरम्भ किया है। इस पर भी हमारी जमापूंजी चाटी-सोने के टुकड़ों में नहीं है, वरन् हमारे ज्ञान में है।'

इस पर भी विवाद पैदा हो गया। एक दिन घर-भर के प्राणी बाबा के कमरे में इकट्ठे हो गये। इस दिन सन्तराम इत्यादि की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पास आकर बैठी तो मलावामल्ल ने गार्गी को भी बुला लिया।

गार्गी जब आई तो उसने खड़े-खड़े ही पूछ लिया, 'बाबा! क्या आज्ञा है?'

देखो बेटी! दुकानों का बंटवारा हो रहा है और उस बंटवारे के विषय में कुछ कहने के लिये तुम्हारी सासें आई हैं। इस कारण तुमको भी बुल लिया है। तुम भी अपनी राय दे सकोगी।'

यद्यपि सोहनी और रामप्यारी गार्गी को इसमें बात करने का अधिकार देना नहीं चाहती थीं, परन्तु अब बाबा ने गार्गी को वहां बिठा लिया तो उनको समझ नहीं आई कि गार्गी को न कैसे करें।

बाबा ने व्यापार की वस्तुस्थिति बता दी। उसने कहा, 'इस समय बैंक तथा तिजोरियों में मिलाकर दुकानों की सारी पूंजी दस लाख अस्सी हजार आठ सौ नब्बे रुपये है और इस सम्पत्ति को मैं परिवार के उन घटकों में बांटना चाहता हूं जिन्होंने इस सम्पति के निर्णय में योगदान दिया है।

'मैं समझता हूं कि योगदान देने वाले हैं सन्तराम, महन्त राम, देअन्तराम और विश्वम्भरनाथ। इन सबका योगदान बराबर-बराबर नहीं है। इस कारण हम योगदान के वर्षों की गणना से हिसाब लगायेंगे।'

बाबा की बात को सुनकर रामप्यारी ने कहा, 'बाबा! आपकी दुकानों की सफलता में हमारा योगदान नहीं है क्या?'

'क्या योगदान है?'

'हम अपने पुरुषों को प्रसन्न रख तथा उनको खाने-पीने से सन्तुष्ट और सुखी रख दुकान पर काम करने के योग्य बनाती रही हैं।'

'यह ठीक है।' मलावामल्ल का कहना था, 'परन्तु उस योगदान का प्रतिकार तुम्हारे पति तुमको समय-समय पर खाने-पीने, वस्त्र-भूषण और अन्य सुख-सुविधाओं में देते रहे हैं।

'हम दुकानों पर कपड़ा बेचते हैं। कपड़े के तैयार होने में उस किसान का भी योग होता है जो खेत में रुई उत्पन्न करता है अथवा उस कारीगर का भी योगदान होता है जो कारखाने में कपड़े की मशीनें चलाता है। अन्य कई का योगदान भी होता है। वे सब हमारी दुकान के लाभ में हिस्सा मांगने नहीं आते। उनको उनके योगदान का मूल्य पहले ही मिल चुका होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इसी प्रकार तुम्हारे योगदान का मूल्य तुम्हारे पति पहले ही जोड़ चुके हैं। और दुकानों के बंटवारे में तुम्हारा ऐसे ही कोई भाग नहीं है जैसे किसान का हमारी दुकान के लाभ में कोई भाग नहीं है।'

'बाबा!' बात रामप्यारी ने ही कही, 'तब तो हम बहुत घाटे में रहेंगी। हम समझती हैं कि आपके काम की सफलता में हमारा योगदान सबसे अधिक है।'

'तो यह झगड़ा,' मलावामल्ल का कहना था, 'तुम्हारा और तुम्हारे पति के बीच में है। इसका दुकान से कोई सम्बन्ध नहीं।

'जैसे किसान को कपास का उचित मूल्य नहीं मिलता तो कपास खरीदने वाले और किसान में झगड़ा है, न कि अनारकली बाजार के बजाज मलावामल्ल और किसान का।'

युक्ति से रामप्यारी उत्तर नहीं दे सकी, परन्तु नाराज हो उठकर चल दी। यह अपना असंतोष प्रकट करने के लिये था।

मलावामल्ल ने उसके पति बेअन्तराम से पूछ लिया, 'तुम क्या समझते हो कि दुकान के बंटवारे में औरतों की भी गणना होनी चाहिये?'

'बाबा! सोहनी भाभी भी तो यही कहने आई हुई हैं।'

इस पर महन्तराम की पत्नी सोहनी ने कहा, 'नहीं बाबा! मैं दुकान में काम करने वाली न कभी रही हूं और न अब हूं। मैं तो केवल यह जानने के लिये आई हूं कि आपके लड़के बंटवारे में क्या पाते हैं और फिर उसमें यदि इनको कुछ विशेष मिलता है तो यह आप यनी पत्नी और बच्चे के लिए पृथक् रखते हैं अथवा नहीं।'

मलावामल्ल और बेअन्तराम हंस पड़े। महन्तराम ने कहा, 'बाबा! यह समझती है कि मैं इसके साथ किसी प्रकार की छलना खेल रहा हूं। इसी कारण यह मुझ पर निरीक्षण के लिए आई हुई है।'

बाबा ने मतलब की बात सुनाई। उसने कहा, 'मैंने तीनों दुकानों की संपत्ति का बंटवारा करने का ढंग निश्चय किया है। उसमें व्यापार में काम करने वाले प्राणियों के नाम लिखकर उनके कार्य के वर्षों की गणना लिख दी है अर्थात् जितने वर्ष तक व्यापार में वे योगदान देते रहे हैं यह इस प्रकार है। हम पांचों कार्य करने वाले इस प्रकार कार्य करते रहे हैं—मलावामल्ल ने ४० वर्ष, सन्तराम ने २५ वर्ष,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
महन्तराम ने २२ वर्ष, बेअन्तराम ने १९ वर्ष और विश्वम्भर ने ४ वर्ष कार्य किया है। कुल कार्य-काल ११० वर्ष बनते हैं। इस प्रकार दस लाख की सम्पत्ति को एक सौ दस भागों में बांट दिया है। एक वर्ष की एक व्यक्ति की आय बनती है, नौ हजार छः सौ चवालीस रुपये। अब इस हिसाब से प्रत्येक को बांट देना चाहता हूं।

'जितने-जितने वर्ष जिसने काम किया है, उसके उतने भाग होंगे। इस प्रकार सबसे अधिक मुझे मिलेगा। यह लगभग तीन लाख पचासी हजार बनेगा।

'अब हमें यह निश्चय करना होगा कि हम घर में पांच सज्ञान पुरुष हैं और दुकानें हैं केवल तीन। इस कारण कौन-कौन मिलकर दुकान लेगा और न्यूनाधिक की अदायगी किस प्रकार होगी?'

लड़कों ने देखा कि जहां तक सम्भव है बंटवारा अयुक्तियुक्त नहीं है। इस कारण सब जोड़-तोड़ लगाने लगे कि किसको क्या-क्या मिलेगा।

अब मलावामल्ल ने गार्गी से पूछ लिया, 'क्यों गार्गी! तुमने अभी तक एक शब्द भी नहीं कहा?'

गार्गी ने मुस्कराते हुए कहा, 'बाबा! मेरी दुकान तो बंटवारे में थी नहीं। इस कारण मुझे कुछ कहने को था नहीं।'

'और तुम्हारी दुकान कहां है?'

'वह ऊपर मेरे कमरे में है। अभी उस दुकान पर केवल तीन ही ग्राहक आते हैं।'

इस पर मलावामल्ल ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, 'और दुकान पर क्या बिक्री करती हो।'

'बाबा! ज्ञान और अध्ययन कराती हूं। उसका लेखा-जोखा तब होगा जब सुभद्रा इत्यादि का विवाह होने लगेगा।'

मलावामल्ल ने गम्भीर हो कहा, 'हां, उस दुकान में हमारा कुछ भी नहीं है।'

'अच्छा सन्तराम! तुम बताओ, किसके साथ दुकान करोगे?'

'बाबा! आपके साथ।'

'मैं तो विश्वम्भर के साथ दुकान करूंगा।'

'और मैं भी।'

'तुम विचार कर बताओ। यदि मेरे साथ ही दुकान करनी है तो इसमें एक शर्त है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar D-372

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'क्या ?'

'हम तीन भागीदार होंगे। पूंजी न्यूनाधिक है, परन्तु इस नई दुकान के पत्तीदारों की पूंजी बराबर-बराबर होगी।'

'परन्तु इसमें युक्ति क्या है ?'

'यह नई दुकान है। इसमें समान भाग वाले ही भागीदार होंगे।'

'तो विश्वम्भर अपने भाग की पूंजी कहां से लायेगा ?'

'मैं इसे अपने पास से उधार दूंगा।'

सन्तराम चुप कर गया। वह विचार करता था कि यह विश्वम्भर और बाबा के विचार करने की बात है। उसे इसमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। परन्तु कठिनाई यह थी कि महन्तराम और बेअन्तराम को अपनी दुकान अपने पास रखने के लिये बाबा को कुछ देना पड़ता था। और वे समझ रहे थे कि वह देने से उनकी पूंजी कम हो जायेगी। इस कारण सबसे पहले बेअन्तराम ने पूछा, 'बाबा ! मुझे भी अपनी दुकान में सम्मिलित कर लें, अन्यथा मुझे कुछ ऋण द दें।'

'ठीक है, उसका प्रबंध भी हो जायेगा।'

परिणाम यह हुआ कि दुकानें तीन ही रहीं। तीनों का नाम भिन्न-भिन्न हो गया और तीनों की पूंजी बंटकर छोटी-छोटी हो गई। इस पर भी मनावामल, सन्तराम और विश्वम्भर की दुकान सबसे बड़ी थी।

168012
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

यह विश्वम्भर की योजना हो थी कि काम को बढ़ाया जाये। एक दुकान थोक माल की अमृतसर में खोली जाये और बम्बई तथा कोल्हापुर की कुछ मिलों की एजेन्सी ले ली जाये।

सन्तराम ने अमृतसर में एक दुकान ली और दस लाख की बैंक गारण्टी देकर सूसन मिल्स का उत्तरी भारत के लिये एजेंट बन गया।

इन दिनों गार्गी गर्भ धारण किये हुए थी। उसकी देख-रेख के लिये विश्वम्भर की मां लाहौर में ही रही। गार्गी की पारिवारिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों की पाठशाला अभी चलती थी।

एक दिन विश्वम्भर दुकान पर पहुंचा तो दुकान में वहां राधेलाल का पिता गिरधारीलाल खड़ा बाबा की प्रतीक्षा कर रहा था।

विश्वम्भर ने उसे पहिचान तो लिया, परन्तु उसने बात नहीं की। विश्वम्भर के पहुंचने से पहले भवानी दुकान खोल झाड़-फूंक देता था। अलमारियों और तिजोरी की चाबी विश्वम्भर लेकर पीछे पहुंचा करता था।

इस दिन दुकान के बाहर गिरधारीलाल को खड़े देख उसे विस्मय हुआ, परन्तु वह चुपचाप और बिना किसी प्रकार का विस्मय प्रकट किये दुकान पर चढ़ गया और अलमारियां खोलने लगा।

गिरधारीलाल भी दुकान पर आ गया और पूछने लगा, 'बाबा किस समय आते हैं?'

'वे भोजन कर ग्यारह बजे के उपरान्त आया करते हैं।'

'मैं उनसे एक अर्जी करने आया हूं।'

'तब आप तीन घंटे उपरान्त आ सकते हैं। इस समय आठ बजे हैं।'

'तुम भी सुन सकते हो।'

'परन्तु लालाजी! अर्जी तो बाबा के लिये है न। इससे मैं कुछ कर नहीं सकूंगा।'

'तुम मेरी सिफारिश कर सकते हो।'

'परन्तु बात समझ न आई तो सिफारिश भी नहीं करूंगा।'

गिरधारीलाल मुख देखता रह गया। फिर कुछ विचार कर बोला, 'आप काम को विस्तार दे रहे हैं। इस कारण न मानने का तो सवाल ही नहीं हो सकता।'

'इस पर भी लालाजी! मेरी बुद्धि में और आपकी बुद्धि में अन्तर तो हो सकता है।'

'फिर भी तुम सुन लो। कदाचित् बाबा तुमसे राय करें तो विचार कर बता सकोगे।'

'ठीक है। तब आप चाहें तो बता सकते हैं।'

'गिरधारीलाल ने कहा, 'मेरा हरिद्वार में मन नहीं लगा। मेरी पत्नी वैरागी हो गई थी और मैं वहां वैरागियों के आश्रम में रहने लगा था।

'परन्तु एक ही महीने में वहां एक झगड़ा खड़ा हो गया। मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जब आश्रम छोड़ने लगा तो मेरी पत्नी ने मेरे साथ चलने से इनकार कर दिया। मैंने महन्तजी से कहा तो वह कहने लगे, तुम वैरागी हो। वैरागियों की पत्नियां नहीं होतीं।

'तो नन्दनी मेरी पत्नी नहीं है क्या ?' मैंने पूछा।

'एक वैरागिन है। इस आश्रम की रहने वाली है। तुम्हारा उससे अथवा उसका तुमसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं।'

'परिणामस्वरूप मैं अकेला ही हरिद्वार में एक मकान लेकर रहने लगा। अब तीन-चार वर्ष वहां रहते हुए भी हो गये हैं। वहां भी चित्त नहीं लगा, तो ऋषिकेश चला गया। वहां भी दो वष तक रहकर वापस लाहौर आ मैंने पुनः गृहस्थ आश्रम में प्रवेश ले लिया है।'

'तो फिर विवाह कर लिया है ?'

'विवाह तो नहीं किया। हां, बिरादरी की ही एक विधवा रोटी-पानी का प्रबन्ध करती है और मैंने चूनामण्डी में एक मकान भाड़े पर लिया है। इस प्रकार एक सौ रुपये महीने का खर्च बंध गया है। मैं चाहता हूं कि आप यहां अथवा अपनी अमृतसर वाली दुकान पर मुझे काम दे दें तो मेरा निर्वाह हो सकेगा।'

'ठीक है। दुकान बाबा की है। वह जब आयेंगे तो उनसे बात कर लीजियेगा।'

'तुम राधेलाल के नाते मेरी सिफारिश कर देना।'

'राधेलाल का मेरा क्या नाता है ?'

'वह कहता था कि तुम उसके मित्र हो ?'

'हां, यदि वह समझता है तो मैं उसे मना नहीं कर सकता।'

'तब ठीक है न ?'

'बाबा यदि मुझसे पूछेंगे तो मैं अपनी राय बता दूंगा।'

'क्या बता दोगे ?'

'यह उनको ही बताऊंगा। मैंने आपकी बात सुन ली है। समझने का यत्न कर रहा हूं। अभी मन में कोई निर्णय नहीं हुआ।'

इस समय साढ़े आठ बज गये थे। ग्राहक आने लगे थे। विश्वम्भर भवानी की सहयता से ग्राहकों को माल दिखाकर उनका मूल्य बता रहा था। ग्राहक स्वीकार कर रहे थे और बिक्री आरम्भ हो गई थी।

गिरधारीलाल अनुमान लगा रहा था कि बाजार से अच्छा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माल वहां कम मूल्य पर बिक रहा है। उसने मन ही मन अनुमान लगाया कि लाभ की राशि कम है, परन्तु माल की बिक्री अधिक होने से लाभ भी हो ही रहा है।

उसकी आंखें खुल गईं जब उसने देखा साढ़े ग्यारह बजे मलावामल्ल के दुकान पर आने तक दुकान पर बिक्री एक सहस्र रुपये से ऊपर हो चुकी है।

मलावामल्ल ने गिरधारीलाल को बैठे देखा तो पूछ लिया, 'लाला गिरधारीलाल ! तुम तो वैरागी पंथ में हो गये थे ?'

'जी।'

'तुम्हारे कान फटे यही बता रहे हैं, परन्तु वस्त्र तो गृहस्थियों के से पहने हैं ?'

'मैं वापस गृहस्थ में आ गया हूं।'

'यह कैसे हो सकता है ?'

'इसमें कोई सरकारी कानून मना नहीं करता।'

'पर आप सरकारी कानून से वरागी बने थे क्या ?'

'बना तो स्वेच्छा से था और वैरागियों के ही नियमों से ही बना था, परन्तु वैरागियों के नियम सरकारी नहीं और वे भंग किये जा सकते हैं।'

'बताओ, अब क्या कर रहे हो ?'

'किसी दुकान पर सेवा-कार्य पाने के लिये अर्जियां कर रहा हूं।'

'मेरी शुभकामना आपके साथ है।'

'लालाजी ! केवल कामना से तो काम नहीं चलेगा। कुछ सहायता के लिये ही मैं आया हूं।'

हां तो बताओ मैं क्या सहायता कर सकता हूं ?'

'आप मुझे किसी मिल के माल के लिये किसी स्थान का सब-एजेन्ट नियुक्त कर दीजिये।'

'एजेन्ट सन्तराम नियुक्त कर रहा है। इसके लिये आपको अमृतसर जाना होगा।'

'तो एक सिफारिशी पत्र लिख दीजिये।'

सिफारिश तो तब लिखने की आवश्यकता है जब वह आपको न जानता हो। तुम उसके भी उतने ही परिचित हो, जितने मेरे हो।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आप बड़े हैं ?'

'परन्तु गिरधारीलाल ! अब दुकान और व्यवसाय में हम बराबर के भागीदार हैं, इस कारण बड़े-छोटे का प्रश्न ही नहीं होता।'

'और कौन-कौन भागीदार हैं इस व्यवसाय में ?'

'बाबा, पुत्र और पौत्र विश्वम्भर सम्मिलित है, परन्तु कारोबार का प्रबन्ध सन्तराम के हाथ में है।'

'इस पर भी यदि आप एक पत्र दे दें तो उचित ही होगा।'

बाबा ने विश्वम्भर को कह दिया, 'विश्वम्भर ! मेरी ओर से एक पत्र अपने पिताजी को लिख दो कि लाला गिरधारीलाल आ रहे हैं। इनके काम के विषय में सहानुभूतिपूर्वक विचार कर लेना चाहिये।'

विश्वम्भर अभी पत्र लिख ही रहा था कि गिरधारीलाल का लड़का राधेलाल दुकान पर आ पहुंचा।

राधेलाल अपने पिता को वहां बैठे देख विस्मित रह गया। गिरधारीलाल ने पुत्र से पूछ लिया, 'राधे ! कहां हो आजकल ?'

'पिताजी ! मैं तो यहीं हूं, परन्तु आपने वैरागियों के बाने का क्या किया है ? अब तो आप भले आदमियों के से वस्त्र पहने हैं ?'

'वह पीछे बताऊंगा। तुम बताओ, यहां किस काम से आये हो ?'

'वह काम इस पत्र में लिखा है।' राधेलाल ने अपनी जेब से एक पत्र निकाल बाबा को देते हुए कहा, 'मैं अमृतसर से लाला सन्तरामजी का पत्र लेकर आया हूं।'

पत्र उर्दू में लिखा था। वह विश्वम्भर ने पढ़कर बाबा को कहा, 'पिताजी ने लिखा है कि राधेलाल से नियमपूर्वक बात हो गई है और इसे लाहौर के लिए कोल्हापुर की तीन मिलों की एजेन्सी दे दी है। इसको मैंने अपनी फर्म की आर्डर बुक दे दी है। सफलता की भी आशा कर रहा हूं।

'इतना निश्चय हुआ है कि अपनी दुकान के अतिरिक्त यह लाहौर की किसी भी दुकान से आर्डर लेकर भेज सकेगा।'

पत्र विश्वम्भर ने ऊंचे-ऊंचे पढ़कर बाबा को सुनाया तो मलावामल्ल विस्मय में राधेलाल का मुख देखता रह गया। कुछ विचारकर मलावामल्ल ने पूछ लिया, 'जमानत जमा करा दी है ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'हां बाबा ! दस हजार का ड्रॉफ्ट लालाजी को देकर ही नियुक्ति हुई है। लाला सन्तरामजी ने आपको सूचना भेजी है कि जिससे आपको पता चल जाये कि मैं एजेन्सी का काम करने यहां आया हूं।'

'ठीक है। अब अमृतसर कब जाओगे ?'

'दिनभर यहां काम करूंगा और रात की गाड़ी से अमृतसर लौट जाऊंगा। कल माल वहां से रवाना करवा सका तो परसों फिर यहां आऊंगा। इस प्रकार सप्ताह में दो बार लाहौर आना होगा।'

'परन्तु यह एजेन्सी का काम तो मैं लेने का यत्न कर रहा हूं।' गिरधारीलाल ने कह दिया।

'तो पिताजी ! आपकी गाड़ी छूट गई है। अब तो मैं नियुक्त हो गया हूं।'

'अच्छा ! मैंने चूनामण्डी शेख फिरोजदीन के कूचे में मकान नम्बर तीन भाड़े पर लिया है।' गिरधारीलाल ने कहा, 'शाम को मिलना।'

'तो मैं आपको वहां सायंकाल पांच बजे के लगभग मिलूंगा।'

विश्वम्भर ने गिरधारीलाल से पूछा, 'तो अब पिताजी को आपको पत्र देने की आवश्यकता रही है अथवा नहीं ?'

'पत्र तो लिख ही दो। मैं वहां किसी प्रकार के काम के लिये यत्न करूंगा।'

सायंकाल चूनामण्डी वाले मकान में गिरधारीलाल और राधेलाल की भेंट हुई। राधेलाल आया तो पुत्र को देख गिरधारीलाल ने कहा, 'आओ राधेलाल ! तुम्हारी प्रतीक्षा ही कर रहा हूं।'

राधेलाल ने अपना ब्रीफकेस एक ओर रखा और पिता के सामने कुर्सी पर बैठते हुए पूछा, 'माताजी कहां है ?'

'वह अभी वैरागिन ही हैं।'

'आप उन्हें छोड़कर चले आये है ?'

'नहीं राधे ! वह मुझे छोड़ एक अन्य वैरागी की सेवा में चली गई है। उसे वह मुझसे अधिक पसन्द आया है। यही कारण है कि मैं भी वैरागी चोला छोड़ पुनः लाहौर चला आया हूं।'

राधे अभी इस नई स्थिति का अर्थ समझने का यत्न ही कर रहा था कि प्रौढ़ावस्था की एक स्त्री तीन व्यक्तियों के लिये चाय बना-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर ले आई। साथ ही एक प्लेट में दाल-भुजिया थी। राधेलाल प्रश्नभरी दृष्टि में उस स्त्री की ओर देखने लगा तो गिरधारीलाल ने उनका परिचय करा दिया। उसने बताया, यह है सुहागिन। हरिद्वार गंगा में स्नान करती मिल गई है और अब हम इकट्ठे लाहौर चले आये हैं।'

सुहागिन ने ट्रे मेज पर रखकर चाय बनाते हुए कहा, 'लालाजी ने बताया है कि आप इनके इकलौते बेटे हैं। इसी कारण आपके लिये चाय बना आपकी प्रतीक्षा कर रही थी।'

राधेलाल अभी इस स्त्री का अभिप्राय इस घर में समझ ही रहा था कि गिरधारीलाल ने पूछ लिया, 'रजनी कहां है ?'

'अपने घर में।'

'और वह तुम्हें मूर्ख बनाकर जो रुपया ले गई थी, वह तुमको मिला है क्या ?'

'पिताजी ! कुल भूषण और नकद तीन लाख रुपये के लगभग था। यह रजनी की राय से ही किया था। पीछे पता चला कि रजनी ने अपनी मां के कहने पर यह काम मुझसे कराया है।

'जब तक तो आपका दिवाला घोषित नहीं हुआ मेरा उस घर में बहुत मान रहा और दुकान पर काम और रोटी-कपड़ा तथा पचास रुपया महीना मिलता रहा। ज्यूं ही दिवाला स्वीकार हुआ और आप हरिद्वार वैरागी आश्रम पहुंचे तो मुझे रुपये मिलने के स्थान रजनी को मिलने लगे। मुझे सूखी दाल-रोटी मिलने लगी। तब तक रजनी के गर्भ स्थित हो चुका था। ज्यूं-त्यूं कर मैं उसके प्रसव तक वहां रहा। उसके लड़का हुआ।

'इसके उपरान्त रजनी ने एक दिन मुझसे कहा कि मुझे किसी सेठ की दुकान पर काम करना चाहिये। मैंने लाला पूर्णचन्दजी की दुकान पर चालीस रुपये महीना पर काम आरम्भ कर दिया, परन्तु तब तक मैं समझ गया था कि मेरे धन से मेरे श्वसुर ने लाहौर मैक्लोड रोड पर खाली भूमि ले वहां एक सिनेमा बना लिया है और उस सिनेमा को एक सहस्र रुपये महीना भाड़े पर चढ़ा दिया है।

एक दिन मैंने रजनी से पूछा कि सिनेमा हाल किसके नाम पर है ? उसने बताया कि जिसका रुपया लगा है। पूछने पर पता चला कि वह सिनेमा लालाजी ने अपने नाम ही रखा है। इसपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भी मुझे तो अपने चलाने के लिए महीना दुकान पर से वसूल करके ही निर्वाह करना पड़ता था। रजनी बहुत मजे से रहती थी।

'मैंने भी उससे मेल-जोल रखते हुए उसकी चोरी आरम्भ कर दी। ज्यों ही मेरे पास दस हजार एकत्र हुए, मैंने स्वतंत्र कार्य करने का विचार कर लिया। इन दिनों मलावामल्ल सन्तराम ने अमृतसर में थोक का कार्य आरम्भ किया तो मैं वहां जा पहुंचा और दस हजार जमानत जमा कर मैं लाहौर की एजेन्सी ले आया हूं।'

'तो आज कुछ काम किया है?'

'हां, पिताजी! लगभग पांच हजार के आर्डर लिए हैं।'

'और तुम्हें इसमें से क्या मिलेगा?'

'आज के काम पर लगभग एक सौ रुपये कमीशन होगी। वह मिलेगी तब, जब माल के मूल्य की अदायगी हो जायेगी।'

'यह तो कुछ न हुआ?'

'पिताजी! उससे अच्छा है जो रजनी और उसके पिता ने किया है। दो वर्ष तक मैं मस्जिद के चूहे की भांति भूखा मरता रहा हूं। जब से सिनेमा हाल बना है मैंने अपनी किस्मत बदली है। मैं नित्य प्रातः उठ रजनी और उसके बच्चों के कपड़े धोया करता था और घर में दिन-भर घरेलू काम करता था। रात को पत्नी की सेवा करता था। इस प्रकार रजनी को प्रसन्न कर उसकी तिजोरी में से रुपये निकाल जमानत जमा कर सका हूं।

'अब एक सप्ताह हुआ है, मैंने उसका घर छोड़कर अपना पृथक् मकान ले लिया है।'

'कहां?'

'पिताजी! यह बताऊंगा नहीं। पर अब एक बात का विचार कर रहा हूं कि आपके पास ही इस मकान में आ रहूं।'

'क्यों सुहागिन?' गिरधारीलाल ने सामने बैठी स्त्री से पूछ लिया।

सुहागिन ने कुछ विचार कर दिया, 'हां, हमारे मकान की बरसाती में रह सकते हो। पांच रुपये महीना किराया देना होगा।'

राधेलाल ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, 'और पूरे मकान का क्या भाड़ा देते हैं?'

उत्तर सुहागिन ने ही दिया, 'पन्द्रह रुपये।'

'तब तो पांच रुपये ठीक हैं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लिखा रहे थी ए।

,राधे ने कुछ बयान दिया है ?'

'विश्वम्भर उससे मिलने हवालात में गया था। पुलिस ने मिलने नहीं दिया। राधे ने अपना वकील ईश्वरदास को स्वीकार किया है। उससे विश्वम्भर मिला है। वह राधे से बात कर, हमें क्या करना चाहिए, कल बतायेगा।'

'बाबा ! हमें इस परिवार से बचकर ही रहना चाहिए।

'मैं भी कुछ ऐसा ही विचार कर रहा हूं। परन्तु ईश्वरदास से बात कर कल विचार करेंगे। अभी तो आर्डर बुक हमारे पास आ गयी है और हमें उस पर के आर्डर पूरे करने चाहिये।'

इस पर सन्तराम ने गिरधारीलाल की बात बताई, 'राधे ने अपनी पत्नी का धन चुराया है और गिरधारीलाल ने तो बाजार के साहूकारों को धोखा देकर धन छुपा कर रखा हुआ है।'

मलावामल्ल का कहना था, 'तब तो पूर्ण विवरण विचाराधीन हो गया है। परन्तु सन्तराम मैं समझता हूं कि हमें इस परिवार की निन्दा अथवा प्रशंसा बिना इनसे हुई घटना के स्रोत पर विचार किये नहीं करनी चाहिए।

'ईश्वरदास कह रहा था कि सरकारी कानून तो प्रत्यक्ष दोष और दोषी तक ही पहुंच सकता है। जो दोष का मूल कारण है, उस तक सरकारी कानून की पहुंच नहीं होती। यह हम बुद्धिशील लोगों का कार्य है कि वास्तविक दोषियों को प्रत्यक्ष में लायें।

'मैंने उसकी युक्ति सुन उसको वचन दिया है कि यदि वह कोई ऐसा ढंग बतायेगा जिससे वास्तविक अपराधियों को कटघरे में ला सके तो मैं भी इसमें सहायता करूंगा।'

सन्तराम बाबा का मुख देखता रह गया। सत्य बात यह थी कि विश्वम्भरनाथ से राधे की सहानुभूति थी और वह समझ रहा था कि इस सबमें दोष उसकी पत्नी का है और अब वह ही उस पर चोरी करने का आरोप लगा रही है। वह राधे को दुर्बलात्मा तो समझता था परन्तु दुर्बलात्मा को फुसलाने वाला दोषी है अथवा दुर्बलात्मा दोषी है, इस विषय में उसकी पण्डित लक्ष्मीचन्द से बात हुई थी। राधेलाल की पूर्ण कहानी सुनाकर विश्वम्भरनाथ ने पूछ लिया, 'गुरुजी ! इन दोनों में कौन अपराधी है ?'

लक्ष्मीचन्द का मत था, 'रजनी का व्यवहार एक वेश्या के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भी हो सकती है। बैंक में रुपया हो न हो। इस कारण उसने चैक सामने मेज पर रख उसकी ओर देखते हुए कह दिया, 'मैं अभी चैक बैंक में भेज रहा हूं। इसके कैश होने में तीन-चार दिन लगेंगे। यह लाहौर के बैंक का है।'

'ठीक है।'

'परन्तु लाला गिरधारीलाल ! आप तो साधु हो गये थे न ? आपके साधु होने के लक्षण आपके फटे कान प्रकट कर रहे हैं। तो क्या साधु होते हुए भी आप व्यापार करते रहे हैं ?'

गिरधारीलाल हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, 'यह सब एक ढकोसला था।'

'क्या ढकोसला था ?'

'देखिये सन्तरामजी ! मैं आपको अपनी सब कहानी बताता हूं। जब राधेलाल के विवाह का प्रस्ताव हुआ और उसमें सोना-चांदी की बातें होने लगीं तो मुझे सन्देह होने लगा था कि चार सौ बीसी हो रही है।

'विवाह हुआ और बहुत धूमधाम से हुआ। राधे के श्वसुर ने बरातियों को खूब खिलाया-पिलाया और राधे की मां अति प्रसन्न थी। मेरा सन्देह बना ही हुआ था। लाला शंकरदास की तीन लड़कियां हैं। क्या वह उन सबके विवाह पर वैसे ही व्यय करेगा जैसे रजनी के विवाह पर किया है ?

'विवाह के दो महीने उपरान्त ही गड़बड़ दिखाई देने लगी। हिसाब राधेलाल रखता था। इस कारण बैंक बैलेंस जो कभी शून्य नहीं हुआ था, कम दिखाई देने लगा। मैंने एक बार राधे से पूछा भी परन्तु वह पत्नी के मोहजाल में फंसा हुआ मुझसे चोरी और बहाने-बाजी करने लगा।

'एकाएक मुझे समझ आया कि शंकरदास लड़की के विवाह पर व्यय किया धन वसूल कर रहा है। मैंने हिसाब-किताब देखा तो समझ गया कि दीवाला अनिवार्य है। अब मुझे भी यही सूझा कि मैं भी हाथ चलाऊं।

'लगभग पचास हजार मैं निकाल सका और बैंक में अपने बचपन के नाम से खाता खोल मैंने उसमें रुपया जमा करा दिया।

'प्रत्यक्ष रूप में हमारा निर्धनता का जीवन इस धन के व्यय होने को बचा सका था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अब दीवाला निकले पांच वर्ष हो चुके हैं। इस काल में मैं साधु हुआ। पत्नी साधुओं के जाल में फंस गई है और मैंने नई घर-गृहस्थी बना ली है। अब मैं इस नाम से रहता हूं, जो मैंने चैक के नीचे लिखा है।'

इस पर सन्तराम ने पुनः चैक उठाकर पढ़ना चाहा। नाम था—एम० नाथ।

'तो यह भी चार सौ बीसी है ?' सन्तराम ने मुस्कराते हुए पूछा।

'लाला सन्तराम ! यह दिखावा है वस्तुस्थिति को छुपाने के लिए। मैं अपने नाम से व्यवसाय नहीं कर सकता। यह एम० नाथ मेरा साधुओं का नाम है। नाम है महिन्द्रनाथ, परन्तु अब मैं लाहौर में केवल नाथ के नाम से विख्यात हो रहा हूं।'

'तब तो यह सब धोखा ही है। हमें भी विचार करना होगा।'

'यह धोखा नहीं है। मेरी घर-गृहस्थी को चला रही है एक स्त्री। महिन्द्रनाथ उसके लड़के का भी नाम है। वास्तव में वह ही आपका एजेन्ट होगा। काम तो मैं ही करूंगा, परन्तु नाम उसका चलेगा।'

'तो उसको भी साथ लेकर आइये, जिससे उसकी जान-पहचान हो जाए।'

'वह भी हो जायेगी। किसी दिन उसे लेकर आऊंगा। इसपर भी हस्ताक्षर मैं करूंगा।'

सन्तराम गम्भीर विचार में लीन हो गया। गिरधारीलाल उठकर दुकान से निकल गया।

राधेलाल वहां नहीं आया। इस कारण सन्तराम उसको पता करने लाहौर आया तो मलावामल्ल ने उसे वहाँ का वृत्तान्त सुना दिया। उसने बताया, कल पाँच बजे की गाड़ी से अमृतसर जाता हुआ राधेलाल चोरी के अपराध में पकड़ गया है।'

'किसकी चोरी की है उसने ?'

'अपनी पत्नी रजनी की। उसने थाने में रिपोर्ट की तो उसको स्टेशन पर पकड़ लिया गया। उसके बक्स में से हमारी कम्पनी की आर्डर बुक और कपड़ों की सैम्पल बुक तथा दुकान का पता निकला है। इससे आज पुलिस यहाँ भी जाँच-पड़ताल करने आयी थी। हमने अपनी दुकान की आर्डर बुक तो ले ली है और उसकी रसीद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मैं सम्पर्क हुई। मैं तो यात्रा के लिए तैयार हूं, मैं भी अमृतसर जा रहा हूं। दो दिन उपरान्त पुनः मिलूंगा।'

'मैं भी कल सन्तराम की दुकान पर आ रहा हूं।'

'ठीक है, तो वहीं मुलाकात हो सकेगी।'

9

अगले दिन गिरधारीलाल अमृतसर मलावामल्ल सन्तराम एण्ड कम्पनी के कार्यालय में गया तो उसने विश्वम्भर द्वारा बाबा की ओर से लिखा पत्र दिखा दिया। सन्तराम ने कहा, 'तीन-चार दिन से आपका लड़का राधेलाल लाहौर के लिए एजेन्ट के कागज भरने का यत्न कर रहा था। परसों कागज पूरे हुए और जमानत जमा हुई थी। कल वह आर्डर बुक और सैम्पल बुक लेकर लाहौर गया था। उसे आज प्रातः यहां समाचार देने आना चाहिए था, परन्तु वह अभी तक नहीं आया।'

'जी, राधेलाल कल मुझे मिला था, परन्तु वह तो कह रहा था कि वह कल ही यहां आ रहा है। मुझसे छः बजे के लगभग अमृतसर के लिए विदा हुआ था।'

'वह अभी तक यहां नहीं आया।'

इसपर गिरधारीलाल को चिन्ता तो लगी, परन्तु उसने अपने काम की बात कर दी। सन्तराम ने एजेन्सी के नियम बता दिये, 'दस हजार की जमानत जमा करानी पड़ेगी। लाहौर के लिए राधेलाल एजेन्ट नियुक्त हो चुका है। इस कारण वहां के लिए तो नहीं। हां, यदि आप चाहें तो रावलपिण्डी, पेशावर अथवा ऐबटाबाद के लिए नियुक्ति हो सकती है।'

सन्तराम का विचार था कि दस हजार की जमानत गिरधारीलाल नहीं दे सकेगा। मलावामल्ल का भी यही विचार था। परन्तु गिरधारीलाल ने चैकबुक निकाल दस हजार का चैक काट दिया और कहा, 'मैं सतलुज पार लुधियाना इत्यादि जिलों को पसन्द करूंगा। राजपुरा, होशियारपुर, अम्बाला इत्यादि जिलों में कहीं काम दे दें।'

चैक देख सन्तराम के मन में विचार आया कि यह जाली चैक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुल्य है। वेश्यायों में भी ईमानदारी हो सकती है। परन्तु इस औरत ने तो वेश्याओं को भी मात कर दिया है। इसने अपने स्वार्थ के लिए पत्नी के आवरण में रहते हुए महान अपराध और पाप किया है।'

यह बात विश्वम्भर ने बाबा को बता दी। इसके साथ ही वकील ईश्वरदास खन्ना राधे में विशेष रुचि लेने लगा तो दोनों में गोष्ठियां होने लगीं।

राधेलाल लाहौर रेलवे स्टेशन पर पकड़ा गया था। वह टिकट खरीद रहा था कि पुलिस ने उसके कन्धों पर हाथ रखकर कहा, 'राधेलाल ! तुम हिरासत में हो।'

'क्यों ?

'तुमने रजनीदेवी की चोरी की है।'

'चोरी ? मैंने तो उससे स्वयं को ही चुराया है।'

'यह सब थाने चलकर बताना।'

अतएव राधेलाल अमृतसर जाता हुआ नौलखा थाने में जा पहुंचा। वहां थानेदार के सामने उपस्थित किया गया तो थानेदार ने कहा, 'राधेलाल ! तुम दिवालिया हो और तुमसे यह आशा नहीं की जा सकती कि तुम्हारे पास दस-बीस हजार रुपये हों। रजनी ने कहा है कि तुमने उसकी चोरी की है। इस कारण हमें तुम्हारी तलाशी लेनी होगी। बताओ, तुम कहां रहते हो ?'

राधेलाल ने मैक्लोड रोड पर उस मकान का का पता बता दिया जहां रजनी अपने बच्चे मोहन के साथ रहती थी। थानेदार ने कहा, 'वहां तो रजनीदेवी रहती हैं ?'

'वह मेरी पत्नी है और मैं उसके पास ही रहता हूं।'

'मगर तुम वहां पांच दिन से लापता हो ?'

'यह इस कारण कि मैं कुछ कामधंधा ढूंढ़ने अमृतसर गया हुआ था।'

'तो काम मिला है ?'

'जी, एक बहुत ही मामूली-सा कार्य मिला है। लाहौर के लिए कोल्हापुर क्लाथ मिल की एजेन्सी मिली है।'

'वहां अमृतसर में कहां रहते थे ?'

'कटरा लोहगढ़ के एक मकान में।'

'तब ठीक है। अभी तुम हवालात में रहोगे। शेष जांच-पढ़-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ताल समाप्त होने पर विचार किया जायेगा।'

'मैं अपने वकील से मिलना चाहता हूं।'

'कल मैजिस्ट्रेट के सम्मुख अर्जी करना।'

यह कार्यवाही तो उस सायंकाल की थी जिस दिन वह अपने पिता गिरधारीलाल से मिलकर अमृतसर जा रहा था।

अगले दिन ग्यारह बजे उसे मैजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित किया गया। पुलिस ने पन्द्रह दिन की रिमाण्ड मांगी तो राधेलाल ने अपने वकील से मिलने की अर्जी उपस्थित कर दी। मैजिस्ट्रेट ने दोनों की बात मान ली।

परिणामस्वरूप वहां हवालात में राधेलाल और ईश्वरदास में बातचीत हुई।

अगले दिन ईश्वरदास खन्ना मलावामल्ल से मिला और उसने राधेलाल की अपनी पत्नी से उल्लू बनाये जाने की कहानी बतायी ईश्वरदास का कहना भी कुछ वैसा ही था जैसा पण्डित लक्ष्मीचन्द का कहना था। ईश्वरदास ने बात का विश्लेषण कर बताया। उसने कहा—

'रजनी और उसके पिता ने दामाद और उसके पिता को लूटने की साजिश की थी। साजिश में रजनी की माता भी सम्मिलित प्रतीत होती है। विवाह पर बीस हजार रुपये व्यय किए गये और फिर गिरधारीलाल की पूर्ण सम्पत्ति, जो लगभग तीन लाख की थी, राधेको मूर्ख बना हथिया ली गई।

'राधेलाल का कहना है कि रजनी उसे आश्वासन देती थी कि उस तीन लाख में दो लाख के लगभग बाजार के साहूकारों का है। उसे जब्त करने का उपाय करना चाहिये। वह दुकान से निकालकर शंकरदास की तिजोरी में गया तो गिरधारीलाल की दुकान का काम ठप्प हो गया और दीवाला निकल गया।

'दोषी राधेलाल है, परन्तु एक युवती के मोहजाल में एक अनजान फंसा हुआ ही कहा जा सकता है।

'पीछे रजनी और उसके पिता में भी झगड़ा आरम्भ हुआ। शंकरदास पूरी की पूरी रकम हजम करना चाहता था, परन्तु रजनी ने घर में भूख-हड़ताल कर दी। परिणामस्वरूप तीन लाख में से दो लाख से मैक्लोड रोड पर सिनेमा हाल बनाकर रजनी को दिया गया है। उसका एक सहस्र रुपया महीना भाड़ा आता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'इस धन में से ही, रजनी का कहना है कि दस हजार चोरी हुआ है। राधे का कहना है कि उसने दस हजार मलावामल्ल सन्तराम एण्ड एजेन्सी के पास जमानत के रूप में जमा कराया है।

'यह सब ठीक है। परन्तु यह रुपया वास्तव में किसका है? मैं समझता हूं कि रजनी का तो नहीं है। इस कारण रजनी की चोरी नहीं हुई। रजनी तो स्वयं चोर है। चोर को मोर वाली बात हुई है।

'साथ ही एक प्रश्न यह है कि जो तीन लाख के लगभग लाला शंकरदास की तिजोरी में गया था, उसमें राधेलाल का कुछ भाग है अथवा नहीं?'

मलावामल्ल इस पूर्ण दुर्घटना की पृष्ठभूमि समझ बोला, 'यह दस हजार जो राधे ने जमानत के रूप में जमा कराया है छुपा दिया जायेगा और राधे के छूट जाने पर विचार किया जायेगा कि किसे दिया जाये?'

'बस,' ईश्वरदास का कहना था, 'जब राधेलाल छूट जायेगा तो पीछे इस रुपये की मलकियत पर विचार कर लेंगे।'

परिणाम यह हुआ कि राधेलाल अगली पेशी के दिन दस हजार की जमानत पर छूट गया। जमानत सन्तराम ने दी। जब मुकद्दमा आरम्भ हुआ तो रजनी के बयानों पर जिरह आरम्भ हो गई। वकील ने पूछा कि उसके पास यह रुपया कहां से आया। रजनी ने जब बताया कि उसके पिता ने उसे दहेज में दिया था तो शंकरदास के बयान हो गए और उससे पूछा जाने लगा कि उसने लड़की को दहेज में क्या और किस रूप में दिया था?

शंकरदास तीस हजार से अधिक का वि ण नहीं दे सका। इस तीस हजार में भूषण-वस्त्र और खाना-पीना भी सम्मिलित था। अब प्रश्न यह उपस्थित हुआ कि एक दिवालिये की पतोहू के पास दो लाख रुपये के लगभग सिनेमा हाल बनाने के लिए रुपया कहां से आया? जब मुकद्दमा इस स्थिति पर पहुंचा तो यत्न होने लगा कि पति-पत्नी में सुलह हो जाये।

सुलह हुई और राधेलाल तथा रजनी पुनः पति-पत्नी के रूप में रहने लगे। इस सबमें दो वर्ष लग गये।

इस सब काल में महेन्द्रनाथ मलावामल्ल सन्तराम का एजेन्ट बन अम्बाला और लुधियाना की मंडियों में काम करता रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेन्द्रनाथ तो नीम पागल था और वास्तविक काम करने वाला गिरधारीलाल था उसने भी अपना नाम नाथ रखा हुआ था।

गिरधारीलाल ने इन दो वर्षों में जालन्धर में एक पक्का मकान बनवा लिया था और सुहागिन के साथ वहां रहने लगा था। लाहौर चूनामंडीवाला मकान छोड़ा नहीं था। पति-पत्नी कभी-कभी वहां आकर रहते थे।

10

जब तक रजनी और राबेलाल का मुकद्दमा चलता रहा, मुकद्दमें की चर्चा मलावामल्ल के घर चलती रही।

यद्यपि मलावामल्ल के तीनों पुत्रों की दुकानें पृथक्-पृथक् थीं, मलावामल्ल का घर पृथक्-पृथक् नहीं हुआ था। तीनों परिवारों का खाना पीना पृथक्-पृथक् था और अपनी-अपनी दूकान से ही घर का खर्च निकालते थे। इस पर भी घर की सम्पत्ति का बंटवारा नहीं हुआ। वे रहते भी एक ही हवेली में थे।

परिणामस्वरूप प्राय: तीनों भाई और उनकी पत्नियां शंकरदास और गिरधारीलाल की चर्चा करने एकत्रित हो जाया करते थे।

विश्वम्भर के रजनी से विवाह में तीनों भाइयों की पत्नियां पक्ष लेती रही थीं और जब विश्वम्भर के एक निर्धन ब्राह्मण की लड़की से विवाह कर घर ले आने की बात विचार करते-करते अपनी भूल मान सकने पर परमात्मा का धन्यवाद किया करती थीं।

जिस दिन कचहरी में रजनी का वकील मुकद्दमा वापिस लेने की अर्जी कर आया था उस दिन रात को भोजनोपरान्त मलावामल्ल का पूर्ण परिवार एकत्रित हुआ तो गार्गी के मुख से निकल गया, 'परमात्मा का धन्यवाद है कि यह झगड़ा समाप्त हुआ।'

सन्तराम की पत्नी सदारानी के मुख से निकल गया और परमात्मा का सौ-सौ बार धन्यवाद है कि हम इस झगड़े से बच गये। हमारी तो बुद्धि मलिन हो रही थी और दहेज के लोभ में घर में सुरंग लगाने वाली को लाकर प्रतिष्ठित करने वाली थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

U-372

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबा ने कह दिया, 'धन्यवाद करो विश्वम्भर का। वह तुम सबके विरुद्ध डट गया था और तुम्हारे हठ का विरोध करते हुए घर छोड़ने पर तैयार हो गया था।'

'मैंने,' मलावामल्ल का आगे कहना था, 'इसे धमकी भी दी थी कि घर से पृथक् होने पर दुकान से भी पृथक् कर दूंगा। इसने वह भी स्वीकार कर लिया था, परन्तु शंकरदास की लड़की से विवाह स्वीकार नहीं किया था। इसकी अन्तरात्मा की आवाज ही इसके विपरीत थी।'

सदारानी ने कहा, 'मैं तो यह समझती हूं कि गार्गी का सौन्दर्य ही इसमें कारण था।'

'नहीं माताजी!' विश्वम्भर का कहना था, 'आपका अनुमान आंशिक रूप में ही सत्य है। शंकरदास की लड़की को अस्वीकार करने का मुख्य कारण यह था कि शंकरदास अपनी धन-सम्पत्ति को उछाल-उछालकर उसका प्रदर्शन कर रहा था। यह उसके घर वालों का ही व्यवहार है, जिससे मैं विचार करता था किऐसे पिता की लड़की समझदार होगी, इसमें संदेह है।

'पण्डितजी ने तो स्पष्ट कहा था कि गार्गी की माताजी इस विवाह को पसन्द नहीं करेंगी और वह समझते हैं कि लड़की का विवाह उसकी मां ही करेगी।

'कितना अन्तर था दोनों में! और सोने पर सुहागा था गार्गी का विदूषी तथा सुन्दर होना।

'और मजेदार बात यह है,' विश्वम्भर ने आगे बताया, 'कि अदालत से मुकद्दमा वापस लेने से एक मास पूर्व से ही राधेलाल पत्नी के घर में जाकर रहने लगा था।'

'सत्य?' मलावामल्ल का प्रश्न था।

'हां बाबा! यह राधेलाल ने स्वयं मुझे बताया है। उसने गर्व-पूर्वक कहा है कि उसने पत्नी को एक महीने तक ठोक-बजाकर परख लिया है और तब ही वह अदालत से अर्जी वापस लेने को तैयार हुआ है।'

'तब तो खेल अभी समाप्त नहीं हुआ। मैं समझता हूं कि दोनों में यह सुलह भी अभी दिखावा ही है।'

विश्वम्भर ने कहा, 'मैंने पिताजी को यह बात बताई है और वह इस पर चिन्तित हैं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिन्ता किस बात की है ?'

'पिताजी ने तो कुछ कहा नहीं, परन्तु उनके मुख पर चिन्ता देख मैं एक बात का अनुमान लगा रहा हूं। वह यह कि पिताजी के भी अदालत में राधे की सहायता में बयान हुए थे। पिताजी ने माना था कि राधेलाल ने दस हजार की कोई जमानत एजेन्सी के लिये जमा नहीं कराई। वह बिना जमानत एजेन्ट स्वीकार किया गया है।

'अब मियां-बीबी दोनों मिलकर कहीं पिताजी को अदालत में झूठे बयान देने में न फंसा दें।'

मलावामल्ल ने कहा, 'अच्छा देखो, प्रातः अपने पिता को एक तार देकर बुला लो। उसे कहो कि वह मुझे फौरन मिल ले।'

इस पर महन्तराम ने कह दिया, 'बाबा ! क्या अब समय नहीं आ गया कि घर का भी बंटवारा कर दिया जाये ?'

मलावामल्ल की आयु अस्सी वर्ष की हो चुकी थी। महन्तराम के इस कहने पर कि क्या अब बंटवारे का समय नहीं आ गया का यह अर्थ था कि बाबा का अब अन्तकाल समीप प्रतीत होता है।

मलावामल्ल ने बातों की दिशा इस प्रकार बदलते देख, बात को समझ पूछ लिया, 'तो तुमको मेरे मुख पर कुछ मरने के लक्षण दिखाई देते हैं ?'

'बाबा ! लक्षण तो दिखाई नहीं देते, परन्तु हमारी पत्नियां तनिक देखना चाहती हैं कि वे कितने गहरे पानी में हैं। उनकी लड़कियां विवाह योग्य हो रही हैं।'

मलावामल्ल हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, 'यदि इस पूर्ण सागर में किसी भी एक बहू को छोड़ दिया जाये तो वह उसमें डूब सकती है। और दिन-प्रतिदिन उसमें कुछ न कुछ पड़ता ही रहता है। इससे किसी एक का इस सागर में डूब जाना सहज है। इस कारण दूसरों की भी राय ली जाये तो ठीक है। तब सागर के स्थान छोटे-छोटे टोंबरे रह जायेंगे और सबको वे सुख देंगे।

'देखो महन्त ! घर के सब प्राणियों की एक सूची तैयार करो और प्रत्येक के आगे उसकी आयु लिख दो।'

'इसकी क्या आवश्यकता है ? मैं समझता हूं कि सब विवाहितों की गणना होनी चाहिए। विवाहितों के परिवार हैं और परिवार की सम्पत्ति परिवारों में बंटनी चाहिये।'

'और परिवार क्या होता है ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'जिसमें पति-पत्नी हों तथा उनके बाल-बच्चे हों।'

'अर्थात् मेरे परिवार में तीन व्यक्ति हैं—सन्तराम, महन्तराम और बेअन्तराम।'

'हां बाबा! यही कह रहा हूं।'

'और अब तक जो मैं शारदा, रामप्यारी, बुद्धिप्रकाश और गार्गी के पुत्र योगेश इत्यादि से स्नेह रखता हूं, वह कहां गया?'

"बाबा! बंटवारा तो पुत्रों में ही होता है और वे अपने-अपने बच्चों से स्वयं निपट लेंगे।'

'नहीं महन्त! वह बंटवारा तो दुकानों के समय हो चुका है। दुकानों के बंटवारे का आधार परिश्रम और व्यापार सम्बन्धी कुशलता थी। वह हो गया। परन्तु घर का न तो किसी की व्यापार-कुशलता से सम्बन्ध है, न ही किसी के परिश्रम से। घर का सम्बन्ध परिवार में उत्पन्न हो जाने से है। इस कारण किसी की सम्पत्ति में अधिकार परिवार में उत्पन्न होने से है।

'देखो, एक सूची घर के सभी घटकों की, जिसमें मेरा नाम भी होना चाहिये, बनाओ और प्रत्येक के सम्मुख उसकी आयु लिख दो। तब मैं उस सूची को देख बंटवारे का सिद्धान्त निश्चय करूंगा। तदनन्तर घर की सम्पत्ति सबके सम्मुख कर दूंगा और बांट दूंगा।'

यह सबको विदित था कि गार्गी दूसरा बच्चा पेट में लिए हुए है। यद्यपि कहा नहीं जा सकता था कि वह लड़का होगा अथवा लड़की, परन्तु वह अनायास ही घर की लाखों की सम्पत्ति में भागीदार बन जायेगा, यह बात महन्त, बेअन्त तथा उनकी पत्नियों को समझ नहीं आयी।

परन्तु बाबा के सम्मुख किसी को बोलने का साहस नहीं होता था। बाबा ने सोहनी और रामप्यारी के मुख पर असन्तोष का भाव देखा तो कहने लगा, 'तो मेरी युक्ति समझ नहीं आयी न?'

'नहीं बाबा!' सोहनी ने कहा।

'अच्छा, यह बताओ, तुम्हारे माता-पिता ने क्या दिया था तुम्हारे विवाह पर और उसमें से तुम क्या प्रयोग कर चुकी हो?'

'मुझे ध्यान नहीं। मेरा विवाह हुआ था जब मैं दस वर्ष की थी। यह मुझे स्मरण है कि कुछ भूषण थे, कुछ अन्य वस्त्र थे और कुछ नकद धन भी था।'

बाबा ने कहा, 'मैं समझता हूं कि सन्तराम ने उसकी सूची बनाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
थी। वह कल आ रही है। वह लिखी ढूंढ़कर बतायेगी और वह सब तुमको दिला दूंगा। बताओ, इससे सन्तुष्ट हो ?'

'मेरे माता-पिता बहुत ही सामान्य स्थिति के व्यक्ति थे। इस कारण वह बहुत ही कम होगा।'

'जो नकद था उसका भी ब्याज मिल सकेगा। मैंने नकद घर के खाते में जमा कराया हुआ है।'

सोहनी को समझ आया कि इस प्रकार तो वह घाटे में रहेगी। उसने कह दिया, 'बाबा ! इस प्रकार तो बहन सदारानी को सबसे अधिक मिलेगा।'

'तो फिर मेरी सम्मति मान लो कि घर का सब कुछ एक ही कोष में एकत्रित कर गिन डालो और जो-जो जब से है, तब से जितने वर्ष व्यतीत हो चुके हैं, उसकी गणना कर उसी अनुपात में वह सम्पत्ति का भागीदार हो जाये।'

सब गिनती-मिनती करने लगे थे। इस पर गार्गी ने कहा, 'बाबा ! एक सुझाव मेरा भी है'

'क्या ?'

'इस परिवार में मैं सबसे पीछे आने वाली हूं और मेरे बच्चे बाबा के यहां से कुछ भी न पाने की आशा करते हैं। इस कारण उनको बंटवारे में भागीदार न माना जाये।'

बाबा ने कह दिया, 'तब यह बटवारा मेरे मरने के उपरान्त लाठियां चलाते हुए कर लेना। मुझे मत कहो कि मैं अपने हाथ से यह अयुक्ति-संगत अन्याय कर जाऊं।'

जब मलावामल्ल ने कहा कि लाठियां चला बंटवारा कर लेना तो सब बेअन्तराम और उसके पुत्र निरंजनदेव की ओर देखने लगे। परिवार में दोनों ही पहलवानी करते थे। वे सरदार हकीम माधोसिंह के अखाड़े में प्रातःकाल डंड-बैठक लगाने जाया करते थे।

बेअन्तराम ने सबको अपनी ओर चिन्तित मन देखते हुए पाया तो कहने लगा, 'बाबा ! मैं लाठी चला तो सकता हूं। मेरे शरीर में इसकी सामर्थ्य है, परन्तु बाबा ! मुझमें इसकी बुद्धि नहीं है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि किसका सिर फोड़ूं और फिर क्यों फोड़ूं ?'

'परन्तु प्रश्न तो यह है,' मलावामल्ल ने पूछ लिया, 'तुम बंटवारा अभी चाहते हो अथवा मेरे मरने के उपरान्त ?'

'बाबा ! अभी चाहता हूं और आपके हाथ से चाहता हूं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अब बताओ महन्त की रानी सोहनी! तुम क्या चाहती हो?'

'बाबा! सबकी राय ले लो। जो अधिक जने चाहें वही कर दो।'

'अधिक तो नाबालिग हैं। देखो शारदा की मां! तुम आठ प्राणी हो। सन्तराम, सदारानी, महन्तराम, सोहनी, बेअन्तराम, रामप्यारी, विश्वम्भर और गार्गी। इसमें नौवां मैं हूं, परन्तु मैं तो निर्णय देने वाला हूं। शेष हैं गार्गी का योगेश, सन्तराम का लड़का बुद्धिप्रकाश, शारदा, शारदा की बहन और उसका भाई कर्मवीर।'

जब मलावामल्ल लड़कों के बच्चों की गणना करने लगा तो सदारानी ने कह दिया, 'बाबा! यह गिनती-मिनती छोड़िये। जो भी आप दें देंगे हम स्वीकार कर लेंगी।'

'सब बताओ। है यह ठीक?'

जब सब मान गये तो मलावामल्ल ने कहा, 'अच्छा, कल सन्तराम को आने दो। मैं यह बोझा भी उतारकर अपने को हल्का कर दूंगा।'

सन्तराम को विश्वम्भर का तार पहुंचा तो वह सायंकाल ही लाहौर जा पहुंचा।

पहली बात हुई कि राधे का दस हजार किस रूप में जमा हुआ था और उस रुपये के विषय में अदालत में क्या बताया गया था। सन्तराम ने कह दिया, 'रुपया राधेलाल के नाम से जमा नहीं किया गया। यह तो रुपया जमा कराते समय ही राधा ने बताया था कि वह पत्नी की तिजोरी में से रुपया निकालकर लाया है। इस कारण वह रुपया विश्वम्भर के नाम से जमा किया गया था।

अदालत में सन्तराम के बयान यह थे कि इस पर एतबार कर बिना जमानत के ही उसे एजेन्सी दी गयी थी।

सन्तराम ने एक बात और बताई कि जब से राधेलाल और रजनी की सुलह हुई है तब से राधेलाल मन में चंचलता अनुभव कर रहा है। उसने बताया तो नहीं कि क्या खराबी है, परन्तु जब भी उसकी पत्नी की बात उससे की जाती है, वह उस विषय पर बात करने से बचना चाहता है।

'देखो सन्तराम!' मलावामल्ल का कहना था, 'यह रुपया राधेलाल का है। जब एजेन्सी का काम छोड़े तो उसे वापस दे देना चाहिये। इस धन का ब्याज भी उसे मिलते रहना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'इस पर भी कोई ऐसी बात नहीं करनी चाहिये जिससे उसको अदालत में झूठा सिद्ध होना पड़े। यही व्यापार का ढंग है।'

इस विषय पर बात समाप्त होने पर मलावामल्ल ने बात घर की सम्पत्ति के बंटवारे पर कर दी।

मलावामल्ल ने तीनों लड़कों को पृथक् में बैठाकर समझाया, 'यह घर की सम्पत्ति घर की समृद्धि के लिये दुकान के लाभांश में से निकाला हुआ धन है। तुम सब जानते हो कि वार्षिक लाभ में से कुछ राशि कोष के लिये निकालता रहा हूं। यह हमारे परिवार की रीढ़ की हड्डी रही है।

'इसके अतिरिक्त तुम लोगों की सुसरालों से मिले भूषण और कुछ मेरे पिता के दिये भूषण हैं। मैं पिता की एकमात्र सन्तान था।

'अब परिवार की बात सुन लो। मैं परिवार में उनको समझता हूं जिनका केवल मात्र इस मलावामल्ल के परिवार से सम्बन्ध है। मेरा अभिप्राय यह है कि जिन लड़कियों का विवाह हो चुका है, उनको मैं दूसरे परिवार में समझता हूं। वे अपने-अपने परिवारों के भाग्य की भागीदार हैं। उनको मैं अपने परिवार में भागीदार नहीं समझता। इस कारण वर्तमान बंटवारे में उन लड़कियों को जो सुसराल में चली गई हैं, भागीदार नहीं समझता।'

'परन्तु पिताजी!' महन्तराम ने कहा, 'हमारा स्नेह उनसे तो है?'

'हां। स्नेह व्यक्तिगत भावना है। यह पारिवारिक भावना नहीं है। परिवार के सब अंगों का सबके साथ समान स्नेह नहीं है। इस कारण मैं यह समझता हूं कि जब तुम लोगों को अपने-अपने भाग की पारिवारिक सम्पत्ति मिल जाये तो तुम अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार जिस-जिसको जितना-जितना चाहो, अपने भाग में से दे देना।

'परिवार की सम्पत्ति स्नेह की सूचक नहीं है। यह हम परिवार के घटकों के परिश्रम और बचत करने की भावना की सूचक है। अतः मेरा यह कहना है कि पूर्ण सम्पत्ति भूषण, वस्त्र, मकान, नकद की सूची बना सबके मूल्यों को आंका जाये।

'महन्तराम ने वर्तमान परिवार के घटकों की एक सूची तैयार की है। उसमें कितने वर्षों से वह परिवार का घटक है, यह भी गिनती लिखी गई है। अतः प्रत्येक व्यक्ति का एक वर्ष में कितना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका भाग बनता है, उसमें सम्पत्ति को बांट दिया जाये। और जितने-जितने वर्ष वह परिवार में रहा है उतने भाग उसे दिये जायें।'

महन्तराम इस प्रकार के बंटवारे से विस्मय में मुख देखता रह गया, परन्तु इस ढंग से उसे भी बहुत कुछ मिलने वाला था। इस कारण वह चुप रहा। वह विचार करता था कि इस प्रकार कुल सदस्यों की ४६३ इकाइयां बनेंगी और पूर्ण सम्पत्ति का मूल्यांकन लगभग पांच लाख रुपये बनेगा।

अभिप्राय यह हुआ कि परिवार के प्रत्येक घटक को परिवार के एक वर्ष की सदस्यता का लगभग नौ सौ रुपये मिलेगा।

मलावामल्ल के युक्तियुक्त बंटवारे पर सब सहमत हो गये। परिणाम यह हुआ कि जहां मलावामल्ल का भाग बना चौहत्तर हजार चार सौ रुपये, वहां गार्गी के पेट के बच्चे का भाग बन गया पांच सौ बहत्तर रुपये।

सन्तराम और सुहागिन को भी मिला सत्तर हजार नौ सौ चौहत्तर रुपये।

कठिनाई यह हुई कि सम्पत्ति के बड़े-बड़े अंश भी थे। रहने की हवेली थी। उसका मूल्य लगाया गया था इक्कीस हजार रुपये। इस प्रकार एक अमृतसर में घर था। मूल्य आंका गया नौ हजार पांच सौ रुपये। परिवार के सदस्य दो-दो, तीन-तीन मिलकर उन बड़े-बड़े अंशों को ले गये।

जब बंटवारा सम्पन्न हुआ तो मलावामल्ल ने अपने सबसे बड़े लड़के को कहा, 'देखो सन्तराम! मैं समझता हूं कि मैंने अपना जीवन-कार्य समाप्त कर दिया है और अब मैं निश्चिन्त हो यह शरीर त्याग सकता हूं।'

समीप बैठा विश्वम्भर बोल उठा, 'पर बाबा! मैं समझता हूं कि आपका वास्तविक जीवन-कार्य तो आज से आरंभ हुआ है।'

'क्या कार्य आरम्भ हुआ है?'

'प्रभु चिन्तन का।'

'वह क्या होता है?'

'वह आप गार्गी के पिता से मिलकर पता करिए। वह तो यह कार्य तब से ही कर रहे हैं, जब से उन्होंने गार्गी का विवाह किया था। वह कहते थे कि भगवान का धन्यवाद है कि उन्होंने गार्गी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
एक श्रेष्ठ स्थान पर पहुंचा दिया है और वह अब अपना परलोक सुधारने में लग जायेंगे।'

मलावामल्ल को हिन्दू परम्परा स्मरण आने लगी कि इस शरीर में एक जीवात्मा है और वह बहुत ही पुण्य कर्म के परिणामस्वरूप मनुष्य शरीर में आता है। वह विचार करने लगा था कि क्या पुनः मानव-शरीर पाने के लिये कुछ और करना आवश्यक है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

मैक्लोड रोड पर सिनेमा हाल की बगल में एक छोटे-से मकान में रजनी रहती थी और वहां ही अब राधेलाल रहता था।

जब उसका विवाह हुआ था तो उसके माता-पिता उसे यही सम्मति देते रहे थे कि गिरधारीलाल का काम तो किसी दिन ठप्प होने ही वाला है, इस कारण जितना वहां से निकाल ले, उतना ही अच्छा है। परिणामस्वरूप रजनी अपने श्वसुर के घर में से जो कुछ भी हाथ में लगता था, अपने पिता के घर ले जाकर रख आती थी। उसकी अपने पति से बात हुई थी और वे सब युक्तियां जो उसके भाई और पिता देते थे, वह राधेलाल को देकर समझाने में सफल हो गई कि उसके पिता का दिवाला निकलने वाला है। इस कारण गिरती इमारत में से जो कुछ बच सके बचाना चाहिये।

जब गिरधारीलाल का दिवाला पिटा तो जहां राधेलाल पत्नी के साथ सुसराल में जाकर रहने लगा वहां गिरधारीलाल हरिद्वार चला गया और वहां वैरागियों के आश्रम में रहते हुए संन्यास ले बैठा। राधेलाल की माता भी वैरागिन बन गई।

आश्रम के भ्रष्ट जीवन से ऊबकर जब वह आश्रम छोड़ने लगा तो उसकी पत्नी ने उसके साथ आश्रम छोड़ने से इनकार कर दिया। इस पर गिरधारीलाल आश्रम छोड़ अपने दुकान से चुराये धन के आश्रय रहने लगा। वहां उसे दूर की एक रिश्तेदार सुहागिन मिल गई और फिर दोनों लाहौर में आ चूनामण्डी में मकान ले रहने लगे।

गिरधारीलाल का वैरागी आश्रम में नाम था महेन्द्रनाथ और सुहागिन के लड़के का नाम भी महेन्द्रनाथ था। इस कारण बैंक में खाता महेन्द्रनाथ के नाम पर चलता था। उसको चालू गिरधारी-लाल करता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधेलाल और गिरधारीलाल दोनों मलावामल्ल सन्तराम की एजेन्सी के अधीन सब-एजेन्ट के रूप में काम कर रहे थे। एक दिन राधेलाल ने रजनी को बताया कि मलावामल्ल के परिवार का बंटवारा हो गया है। उस पर रजनी ने पूछ लिया, 'आपके मित्र विश्वम्भर को क्या मिला है?'

राधेलाल ने वह सब प्रक्रिया समझाई जिससे बंटवारा हुआ था तो रजनी ने कहा, 'यह तो कुछ न हुआ। बूढ़े व्यक्ति को सबसे अधिक सम्पत्ति लेने की क्या आवश्यकता थी?'

राधेलाल ने जो कुछ विश्वम्भर से सुना था, बता दिया। उसने कहा, 'यह बंटवारा व्यक्ति के परिवार में सहयोग के आधार पर किया गया है, क्योंकि विश्वम्भर के बाबा का परिवार में सबसे अधिक सहयोग रहा है, इस कारण वह अपने को सबसे अधिक भागीदार मानता है। इसी प्रकार विश्वम्भर की पत्नी के पेट में पांच महीने का बच्चा है। उसे पांच सौ रुपया उसके भाग का पृथक् मिल गया है।'

इस सूचना पर तो रजनी हंस पड़ी। हंसते हुए बोली, 'मैं समझती हूं कि जिसको जितनी आवश्यकता हो, उसको उतना मिलना चाहिये। देखिये, मैं आपको एक रहस्य की बात बताती हूं। मेरे विवाह से पूर्व मेरे पिताजी का दिवाला पिटने वाला था। जो माल उन्होंने विलायत से मंगवाया था उसका मूल्य गिरा तो पिताजी को भारी घाटा हुआ। इसी कारण पिताजी मेरा विवाह विश्वम्भर से करना चाहते थे। उनका प्रस्ताव था कि विश्वम्भर को परिवार से पृथक् दुकान करवा दें। मेरे पिताजी का विचार था कि उसकी दुकान के आश्रय वह अपना घाटा पूरा कर अपने को बचा सकेंगे।

'परन्तु सम्बन्ध वहां नहीं बना। पीछे मेरा विवाह आपसे हो गया। मेरे पिताजी ने अपना दिवाला बचा लिया, परन्तु आपके पिता का दिवाला निकल गया।

'पिताजी का अनुमान था कि आप उनके बोझे को सहन कर सकेंगे, परन्तु ऐसा हुआ नहीं।

'जब आपके पिताजी साधु हो गये तो मैंने अपने पिताजी को दिया धन वापिस लेना चाहा। वह दे नहीं सके। एक दिन घर बहुत झगड़ा हुआ। मैंने उनसे समझौता कर लिया। इस पर तीन-चार लाख में से दो लाख के लगभग पिताजी ने मुझे दिया और उससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने सिनेमा हाल और यह मकान बनवा लिया है और अब सुख का जीवन व्यतीत कर रही हूं। परन्तु एक बात है कि यह सम्पत्ति है पिताजी के नाम पर और उसका भोग मैं करती हूं।'

'और शेष दो लाख के लगभग का क्या हुआ ?' राधेलाल का प्रश्न था।

'पिताजी कहते थे कि जरूरतमन्द के काम धन आना चाहिये। हमें अभी आवश्यकता नहीं। पिताजी अभी दे नहीं सकते। इस कारण मैं अब मांग नहीं रही।'

राधेलाल अपने मन में विचार करता था कि जरूरतमन्द को धन मिलना चाहिये, परन्तु किसी दूसरे को जरूरतमन्द बना दिया जाना चाहिये क्या ?

एक दिन राधेलाल बाजार में अपने ग्राहकों से आर्डर ले रहा था कि विश्वम्भर अपने श्वसुर पण्डित लक्ष्मीचन्द के घर से आता मिल गया।

'विश्वम्भर भैया ! किधर से आ रहे हो ?' राधेलाल ने उसका मार्ग रोककर पूछा।

'ओह, राधे भैया ! क्या हो रहा है ?'

राधेलाल हंस पड़ा और बोला, 'मित्र ! यह मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं है।'

'ओह हां ! तुमने पूछा है किधर से आ रहा हूं ? आज पत्नी कुछ सुस्त थी। इस कारण उसे मां के घर छोड़ने गया था।'

'बच्चा कब होने वाला है ?' राधेलाल ने हंसते हुए पूछ लिया।

'बस, दस-पन्द्रह दिन में।'

'यदि बंटवारे में कुछ देरी करते तो उसका भाग भी कम से कम एक सहस्र तो बन जाता।'

'हां, परन्तु उसका पांच सौ तब से कुछ अधिक ही हुआ है। पिताजी ने उसके पांच सौ से लक्ष्मी बीमा कम्पनी का एक हिस्सा खरीद लिया है।'

'यह भी तुम्हारे बाबा की योजना से है ?'

'नहीं। यह पिताजी की राय से हुआ है।'

'और बाबा अब क्या करते हैं ?'

'वह अब अपना पूर्ण समय ईश्वर-भजन में व्यतीत करते हैं।'

'यह ईश्वर-भजन भी एक प्रकार से उन्नति ही है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'बाबा इसे ढोंग नहीं समझते। बाबा का कहना है कि वह परमात्मा पर विश्वास पहले भी रखते थे, परन्तु जानते नहीं थे कि किस प्रकार अपने को उसके अर्पण किया जाए ? गार्गी के पिताजी ने उनको एक ढंग बताया है और वह उसके अनुसार ईश्वर-चिन्तन करने लगे हैं।'

दोनों शाहआलमी दरवाजे से निकल अनारकली बाजार दुकान की ओर चल पड़े थे। साथ-साथ चलते हुए राधेलाल ने पूछ लिया, 'बाबा ने अपना सब धन किसके नाम कर दिया है ?'

'कुछ करने को कह तो रहे थे परन्तु कुछ किया है अथवा नहीं, मैं नहीं जानता और अभी हमारी दुकान और एजेन्सी में भी तो उनका भाग है। उनका इन दोनों व्यवसायों में रुपया लगा हुआ है।'

'उनको कहो कि मरने से पहले जिनके पास अभाव है उनको दे जाएं।'

विश्वम्भर ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, 'तो तुम्हारे अभाव है ?'

'मेरे तो नहीं। हां, रजनी को अभाव प्रतीत होता है।'

'सत्य ?' विश्वम्भर ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

'हां। एक दिन वह कहती थी कि जरूरतमन्दों को देना ही पुण्य कर्म है।'

'जैसे उसने तुम्हारा पुण्य कर्म किया था जब तुमने एजेन्सी का रुपया जमा कराया था।'

इस पर दोनों हंसने लगे। विश्वम्भर ने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, 'पिताजी कभी मिलते हैं अथवा नहीं ?'

इस पर राधेलाल हंस पड़ा। उसने कहा, 'पिताजी की एक रखैल है, सुहागिन। वह आजकल लाहौर में ही रहती है और पिताजी तो अपने काम से जालन्धर, लुधियाना, फगवाड़ा इत्यादि जिलों में घूमते रहते हैं।

'सुना है एजेन्सी का नाम सुहागिन के लड़के महेन्द्रनाथ के नाम पर है। रजनी के पिता ने महेन्द्रनाथ से मेलजोल उत्पन्न कर लिया है। रजनी का विचार है कि किसी किस्म की खिचड़ी पक रही है।'

विश्वम्भर ने सूचना दी, 'पिताजी कहते थे कि गिरधारीलाल का काम राधेलाल से अच्छा है। वह हजार-बारह सौ रुपये महीना पैदा कर लेते हैं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वह तो होना ही चाहिए। उनके पास चार जिले हैं और मैं तो एक यहां का ही काम करता हूं। परन्तु वहां धन की गंध से रजनी के पिता के मुख में लार टपकने लगी है।'

'तो तुम उनकी कुछ सहायता क्यों नहीं कर देते?'

'क्या करूं, समझ में नहीं आता?'

'कभी बाबा के पास आओ तो कुछ विचार किया जा सकता है। अन्यथा लाला गिरधारीलाल लाहौर की सड़कों पर भीख मांगते दिखाई देंगे।'

इस समय दोनों दुकान पर पहुंच गए। राधेलाल ने मलावामल्ल के चरण स्पर्श किए तो मलावामल्ल ने पूछ लिया, 'सुनाओ राधेलाल! काम-काज कैसा है?'

'बाबा! निर्वाह योग्य है। छः-सात सौ रुपये महीना मिल जाता है।'

'उसमें से बीवी को क्या देते हो?'

'वह मुझसे अधिक पैदा करती है। इस कारण मैं उसे देने की आवश्यकता नहीं समझता।'

'बेटा! भूल करते हो। पुरुष देते ही हैं और स्त्रियां भूमि होने से लेती ही हैं। जहां इससे उल्टा व्यवहार होता है वहां कुछ-न-कुछ अनर्थ हो जाता है।'

'बाबा! वह कहा करती है कि जरूरतमन्द को देना चाहिए। और वह जरूरतमन्द है नहीं।'

'तुम भूल करते हो। वह भी मानव प्रकृति को समझती नहीं। जरूरतमन्द को दान-दक्षिणा में दिया जाता है, परन्तु पुरुष तो वर्षा की भांति बरसता है और भूमि को तृप्त करता रहता है।'

यों तो राधेलाल पहले भी मलावामल्ल से मिलता रहता था, परन्तु आज की भांति ज्ञान-ध्यान की बातें नहीं होती थीं। प्रायः व्यापार की ही बातें होती थीं। राधेलाल को आज की बातों पर विस्मय हुआ। इस कारण उसने पूछ लिया, 'बाबा! यह बात पण्डितजी ने बताई है?'

'कौन पण्डितजी?'

'विश्वम्भर के श्वसुर ने?'

'नहीं और हां भी। उन्होंने बात तो नहीं बताई परन्तु बात जानने का और फिर बताने का ढंग बता दिया है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'पण्डितजी ने जो बुद्धि के प्रयोग का ढंग बताया है, उस ढंग से मैंने विचार किया है और कह रहा हूं कि पत्नी भले ही बहुत धनवान हो, इस पर भी पुरुष देने वाला है । उसे देना ही चाहिए। इससे वह तृप्त होती है।'

एकाएक मलावामल्ल ने बात बदल दी और पूछा, 'कभी पिताजी से भी मिलते हो ?'

'जी, कभी अमृतसर में एजेन्सी के कार्यालय में भेंट हो जाया करती है।'

'वह भी शंकरदास की मूर्खता के चारों ओर मंडरा रहे हैं।'

'क्या मतलब ?'

'आजकल उनकी सुहागिन और लड़का महेन्द्रनाथ शंकरदास की दुकान और घर पर आते देखे जाते हैं।'

'यह आपको किसने बताया है ?'

'पण्डित लक्ष्मीचन्द के भाई पण्डित हुक्मचन्द शंकरदास के पुरोहित हैं और उन्होंने ही अपने भाई को बताया है।

'पण्डित हुक्मचन्द का कहना है कि गिरधारीलाल के कोष में तेल काफी दिखाई नहीं देता। जो कुछ शेष है वह भी अब पूरा कर दिया जाएगा।

'पण्डितजी को ज्ञात है कि हमारी सहानुभूति आपके परिवार से है, इस कारण उन्होंने मुझे कहा था कि गिरधारीलालजी को सावधान कर दिया जाए।

'मैं पिताजी से मिलूंगा तो उनसे कहूंगा।'

'हां, यह शंकरदास एक महान छलना है । एक दुकानदार जो प्रत्यक्ष रूप में धनी भी है, परन्तु दूसरों को छलने में लगा रहता है। यह उसकी प्रकृति में है।'

राधा अपने विषय में और पिता के विषय में चेतावनी सुन वहां से सीधा अमृतसर जाने के लिए रेलवे स्टेशन को चल पड़ा। उसका विचार था कि पिताजी उसे एजेन्सी के कार्यालय मे मिल जाएंगे।

वे मिले भी परन्तु शंकरदास का तीर चल चुका था। राधेलाल ने पिताजी से पूछा, 'पिताजी ! स्वास्थ्य कैसा है ?'

गिरधारीलाल ने बुझे मन से कहा, 'स्वास्थ्य तो ठीक है, परन्तु एजेन्सी में एक चैक भेजा था, वापस आ गया है। उस पर लिखा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कि मैनेजर से मिलें। मैं इसका अर्थ नहीं समझा।'
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तो हो गया ?'

'क्या हो गया ?' गिरधारीलाल का प्रश्न था।

'शंकरदासजी का वार ?'

'तो यह उनकी करनी से है ?'

'मैं यही बताने के लिए तो लाहौर से आया हूं। विचार था कि यदि आप यहां न मिले तो आपका पता किया जाए। सुना है, रजनी के पिता लालाजी और सुहागिन घी-शक्कर हो रहे हैं ?'

'बड़ा दुष्ट है शंकरदास।'

'वह तो है ही। पूर्वजन्म के किसी पाप के फलस्वरूप हम उनके सम्पर्क में आए हैं।'

'मैं अभी बैंक में जा रहा हूं और मैनेजर से मिलकर पता करना चाहता हूं कि क्या हुआ है ?'

'चलिए, मैं भी आपके साथ चलता हूं।'

पिता-पुत्र दोनों पंजाब नेशनल बैंक की अमृतसर हाल बाजार वाली शाखा पर जा पहुंचे।

मैनेजर ने बताया कि लाहौर के मैजिस्ट्रेट की आज्ञा से एम० नाथ का एकाउण्ट फ्रीज किया गया है। मैजिस्ट्रेट के आर्डर में लिखा है कि एक सुहागिनदेवी का कहना है कि रुपया उसका है। वह अनपढ़ स्त्री है। इस कारण उसने अपने नाबालिग लड़के एम० नाथ का खाता लाला गिरधारीलाल को ऑपरेट करने की स्वीकृति दे रखी थी। अब कुछ दिन से वह किसी प्रकार की धोखाधड़ी करता प्रतीत होता है। इस कारण उसे इस खाते को चालू रखने से रोक दिया जाए।

'यदि लाला गिरधारीलाल को कुछ आपत्ति है तो लाहौर के सब-जज की अदालत में हाजिर होकर अर्जी करे।'

पिता-पुत्र दोनों बैंक से बाहर निकले तो राधेलाल ने पूछा, 'कितना रुपया बैंक में है ?'

'इस समय पन्द्रह-बीस हजार रुपये के लगभग है।'

'तो चलिए ईश्वरदास के घर। उनसे राय करेंगे।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2

गिरधारीलाल लाहौर दो सप्ताह के उपरान्त आया था। वह सीधा चूनामण्डी वाले मकान पर पहुंचा। मकान को ताला लगा था। वह वहां से लाला शंकरदास के घर पहुंचा। सुहागिन कहीं बाहर से आती मिल गई। गिरधारीलाल ने व्यंग्य के भाव में कहा, 'देवीजी! मुझ पर दावा कर दिया है?'

'हां लालाजी! आप भी तो जब घर से जाते हैं तो पन्द्रह-पन्द्रह, बीस-बीस दिन तक दर्शन नहीं देते।'

'तो तुम्हें मेरे न आने पर अभाव प्रतीत होता है?'

'अभाव तो है ही। इसी कारण तो हरिद्वार से आपके साथ आई थी।'

'तो चलो घर। मैं आज आया हूं और अब मैं कई दिन के लिए आया हूं।'

'पर मैंने तो आप पर दावा किया हुआ है?'

'इन दोनों बातों का क्या सम्बन्ध है? औरत-मर्द का सम्बन्ध पृथक् है और रुपये-पैसे की बात पृथक् है।'

'जरा लालाजी से बात कर लूं, फिर चलूंगी।'

'तो लालाजी घर पर हैं?'

'होने चाहिए।'

'तो चलो, मैं उनको भी 'जैरामजी की' कह लूं।'

लालाजी मध्याह्न का भोजन कर बैठकघर में फर्शीदरी तथा चादर पर आराम कर रहे थे।

'आओ लाला गिरधारीलाल! कब आये हो?' शंकरदास ने पूछ लिया।

'जैरामजी की।' गिरधारीलाल उसके समीप बैठ कहने लगा, 'अभी-अभी अमृतसर से आया था। घर जाने पर पता चला कि सुहागिन यहां है। इसे लेने चला आया हूं।'

'मगर इसे तो हमने घर में नौकर रख लिया है?'

'क्यों सुहागिन! क्या वेतन पर नौकरी की है?'

'अभी महीना नहीं हुआ और कुछ मिला नहीं।' सुहागिन ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कहा।

'तो देख लो। यहां नौकरी करनी है या वहां मालकिन बन रहना है?'

'दोनों स्थान पर नहीं रह सकती?' सुहागिन का प्रश्न था।

'परन्तु सुहागिन! मालिक बनने पर भी नौकर बनकर रहने की आवश्यकता है क्या?'

सुहागिन ने गिरधारीलाल की बात का उत्तर देने के स्थान पर लाला शंकरदास को कह दिया, 'लालाजी! सोहनू कहता है कि वह आपकी सेवा छोड़ चुका है और उसे अपने शेष वेतन की आवश्यकता नहीं।'

'बहुत बदमाश है। बिना पूछे उसने सेवा-कार्य छोड़ दिया है।'

इसका उत्तर सुहागिन ने नहीं दिया। उसने अपनी बात शंकरदास से कह दी, 'अभी मैं इन लालाजी के साथ जा रही हूं। आशा करती हूं कि सायंकाल तक खबर दूंगी।'

'क्या खबर दोगी?'

'यही कि यदि लालाजी ने लाहौर से बाहर जाना हुआ तो मैं यहां आ जाऊंगी।'

इसपर गिरधारीलाल ने पूछ लिया, 'और महेन्द्रनाथ कहां है?'

'वह लालाजी के लड़के बिहारीलाल के साथ दुकान पर काम करता है। रात वहां ही सोता है।'

'तो चलो।'

शंकरदास दोनों को जाते देखता रह गया। शंकरदास का मकान बाजार में ही था। वहां से वे दोनों ही चूनामण्डी में जा पहुंचे। मार्ग में किसी प्रकार की बात नहीं हुई।

सुहागिन ने द्वार खोला और दोनों भीतर गये। मकान के बैठकघर में बैठते ही बात हुई। गिरधारीलाल ने कहा, 'देखो सुहागिन! तुमने लाला के कहने पर दावा किया है कि यह सब रुपया तुम्हारा है। यदि मैं तुम्हारे इस दावे की तस्दीक करूं तो यह मुकद्दमा पांच वर्ष तक चलेगा। मैं पूछूंगा कि यह तुम्हारे पास कहां से आया।

मेरे पास अपना तो हिसाब है। मैं पिछले तीन वर्ष से एजेन्सी का काम करता रहा हूं। इन तीन वर्षों में मेरी कमाई इतनी है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'परन्तु लालाजी ! आप कोई कारोबार कर नहीं सकते। आपने तो दिवाले की दरखास्त कर रखी है।'

'यह मैं अदालत में बता दूंगा कि मैं कारोबार करता हूं या नौकरी करता हूं। एजेन्सी कारोबार नहीं है। यह इस कारण कि इसमें राशि नहीं लगानी पड़ती। यह मेहनत की कमाई है।'

'मगर जो दस हजार रुपये एजेन्सी में जमा कराये हैं ?'

'वह महेन्द्र के हैं। उसका मैं सूद देता हूं। खैर, मेरी बात सुनो। यह मुकद्दमा कम-से-कम पांच वर्ष तक चलेगा। इन पांच वर्षों में तुम मालिक के स्थान नौकर बन लाला के पांव दबाया करोगी और पांच वर्ष के बाद यह रुपया जो बीस हजार मैंने जमा किए हैं वे मुझे मिलगे और तुम मालिक से नौकर और कहीं इस बीच में लालाजी मर गये तो लाहौर की गलियों में भीख मांगा करोगी।'

सुहागिन को बात समझ आई तो वह पूछने लगी, 'तो अब ?'

'अब यह कि मैं तुम्हारा दावा अदालत में स्वीकार कर लेता हूं। यह रुपया तुमको मिल जायेगा और अब मैं अपने धन से नौकरी करूंगा। और तुम जानो तुम्हारा काम जाने। तुम इस रुपये को इस बेईमान लाला के पास जमा करवा देना और वह रुपये पर अधिकार पाते ही तुमको अंगूठा दिखा देगा।'

'तो वह ऐसा है ?'

'इसने अपनी लड़की रजनी का रुपया हजम करने का यत्न किया ही था। उसने भूख हड़ताल कर दी तो इसने चार लाख में से दो लाख की सम्पत्ति का किराया उसे देना शुरू किया है। बाकी को तो हजम ही कर गया है।'

'तो मैं रुपया कहां रखूंगी ?'

'जिसकी बीवी बन रहती हो।'

गिरधारीलाल पहले से अधिक समझदार हो गया था। उसने सुहागिन को ढंग से समझाया और अगले दिन वे सब जज की अदालत में जा पहुंचे। गिरधारीलाल ने अर्जी कर दी कि बैंक में रुपया सुहागिन का ही है। उसने उससे उधार लिया हुआ था। वह उस रुपये पर कोई दावा नहीं रखता।

शंकरदास का वकील भी अदालत में उपस्थित था। उसने यह कहा कि यह स्त्री अनपढ़ है। इस कारण इसका सरपरस्त लाला शंकरदास मुकर्रिर होना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरधारीलाल के वकील ईश्वरदास खन्ना ने अदालत से पूछा, 'इन वकील साहब से पूछा जाये कि यह किसकी ओर से बात कर रहे हैं ?'

'सुहागिन की ओर से।'

अब ईश्वरदास ने सुहागिन से पूछा, क्यों 'माताजी ! आपका यह वकील आपकी राय से बात कर रहा है ?'

सुहागिन ने कह दिया, 'जी नहीं। मुझे नहीं मालूम कि यह बात इसने किसकी राय से की है ?'

'माताजी !' शंकरदास के वकील ने कहा, तो इस रुपये का प्रबन्ध कैसे करेंगी ?'

'यह मैं अदालत के फैसले के उपरान्त बैंक वालों से निश्चय करूंगी।'

अदालत में फैसला हो गया कि सुहागिन का दावा मुलजिम गिरधारीलाल स्वीकार करता है। इस कारण बैंक को आज्ञा दी जाती है कि इस रुपये पर सुहागिनदेवी का दावा मंजूर हो।

रात के आठ बजे गिरधारीलाल और सुहागिन भोजन कर सोने की तैयारी कर रहे थे कि बाहर से किसी ने दरवाजा खट-खटाया। गिरधारीलाल बाहर गया और महेन्द्रनाथ को एक कच्छा-बनियान में खड़े देख बांह पकड़ भीतर ले गया। मां ने पुत्र से पूछा, 'यह क्या सूरत बनाई है ?'

'मां !' महेन्द्रनाथ ने कहा, 'बिहारी भैया ने मुझे नये कपड़े बनवा दिये थे और मेरे पुराने कपड़े उतार लिये थे। आज पांच बजे के लगभग उसने मेरे मुख पर दो-तीन तमाचे लगाये और मेरे सब कपड़े उतरवा लिये। केवल कच्छा बनियान के साथ दुकान से निकाल दिया है।

कुछ देर तक मैं वहां बिहारी भैया की खुशामद करता रहा, परन्तु जब वह दुकान बंद कर जाने लगा तो मैंने कहा, भूख लगी है और सर्दी लग रही है।

उसने हंसकर कहा, अपनी रांड के पास भाग जाओ। यहां मत आना।

मां ! मैं यहां आ गया हूं।'

सुहागिन की आंखों से आंसू निकल आये। एकाएक उसके मुख से निकल गया, परमात्मा उसका सत्यानाश करे।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले दिन गिरधारीलाल अदालत की आज्ञा बैंक के नाम लेकर अमृतसर पंजाब नेशनल बैंक पर जा पहुंचा और सौ-सौ रुपयों के नोटों में उसने बीस हजार रुपये सुहागिन को दिलवा दिये।

इस प्रकार रुपया मिलता देख मन-ही-मन सुहागिन बहुत लज्जित अनुभव करने लगी। उसने गिरधारीलाल को कह दिया, 'लालाजी! अब यह रुपया अपने असली नाम पर जमा करा लीजिये। वैरागियों के नाम पर नहीं।'

'क्यों ? अब क्या हुआ है ?' गिरधारीलाल ने पूछ लिया।

'हुआ यह है कि मैं मूर्ख औरत समझ नही सकी थी कि संसार में कितनी धोखाधड़ी है। मैं इस लाला शंकरदास की टीप-टाप देख छली गयी थी।

मैं जानती हूं कि यह रुपया आपका है। आपने चार वर्ष तक भाग-दौड़ कर पैदा किया है। मैं कमअक्ल औरत हूं न। कुछ पढ़ी-लिखी भी नहीं। इस कारण मूर्ख बन रही थी।'

गिरधारीलाल हंस पड़ा और उसने जब वही रुपया पुनः बैंक में अपने नाम पर जमा कराया तो मैनेजर मुख देखता रह गया। 'क्यों लालाजी ! क्या हुआ है ?' उसने पूछ लिया।

'बाबू साहब ! यह पति-पत्नी का झगड़ा था। अब सुलह हो गई है।'

रुपया जमा करा वे दोनों एजेन्सी के कार्यालय में गए और वहां सन्तराम को अपनी सुलह की बात बता लाहौर चले गये।

उसी दिन राधेलाल भी मासिक कमीशन का हिसाब कर लाहौर जा रहा था। तीनों एक ही डिब्बे में बैठे थे। गिरधारी-लाल ने पुत्र को शंकरदास की पूर्ण करतूत का वृतान्त बताया तो राधे ने भी एक समाचार पिता को सुना दिया। उसने कहा, लाला-शंकरदास कल रात से हस्पताल में पड़े हैं।'

'क्यों, उसको क्या हुआ है ?'

'रात रजनी को लालाजी का नौकर बता गया था कि लाला जी को दिल का दौरा पड़ा है। रजनी तो उसी समय हस्पताल चली गई थी। मेरे प्रातः की गाड़ी से इधर आने तक रजनी हस्पताल से लौटी नहीं थी। अब जाकर पता करूंगा।'

सुहागिन के मुख से निकल गया, 'वह अवश्य मर गया है।'

'कैसे जानती हो ?' राधे ने पूछ लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'मेरा मन कहता है। पाप की नौका भर चुकी है। अब डूबेगी ही।'

लाहौर पहुंच राधेलाल मैक्लोड रोड को चल पड़ा और गिरधारीलाल चूनामण्डी वाले मकान को। सुहागिन उसके साथ पैदल चल रही थी।

मैक्लोड रोड पर पहुंच राधेलाल को पता चला कि लाला शंकरदास का प्रातः सात बजे देहान्त हो गया है और उनके शव को श्मशान घाट पर ले गये हैं। उसका चित्त वहां जाने को नहीं किया। वह अपने कमरे में आराम करने लेट गया।

तीन बजे मध्याह्नोत्तर रजनी आयी और पति को आराम से लेटे देख पूछने लगी, 'तो मैना ने आपको बताया नहीं?'

'बताया था कि लालाजी का निधन हो गया है। मैं मन में विचार कर सोया था कि और हो ही क्या सकता है?'

'आप किस समय अमृतसर से लौटे हैं?'

'साढ़े बारह बजे यहां पहुंच गया था। यह अनुमान लगा कि संस्कार तो हो चुका ही होगा, इस कारण तुम्हारी यहां ही प्रतीक्षा कर रहा हूं।'

'मैं पिताजी के घर पर आपकी प्रतीक्षा करती रही थी।'

'वहां सबको कह देना था कि मुझे लालाजी की बीमारी का पता नहीं था।'

'वाह! आपको पता तो था।'

'लालाजी जीवन-भर झूठ बोलते रहे हैं। इस कारण उनके सम्मान में उनके जाते समय एक मैंने भी झूठ बोलना उचित समझा है।'

रजनी को पता नहीं था कि सुहागिन और उसके श्वसुर का क्या झगड़ा था। इससे वह पति की बात को समझी नहीं और इस कारण वह चुप कर गई।

वह रात-भर हस्पताल में जागती रही थी, इस कारण अपने कमरे में जा सो रही।

रात के खाने के समय ही वह उठी। मैना ने भोजन तैयार किया हुआ था। पति-पत्नी दोनों भोजन करने बैठे तो रजनी को पति की मध्याह्नोत्तर की बात स्मरण आ गई। उसने पूछ लिया, 'व्यापार में आज कुछ घाटे का काम हुआ प्रतीत होता है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'मेरे काम में घाटे-नफे का कुछ प्रयोजन नहीं है। मैं तो एक एजेन्ट मात्र हूं। केवल कमीशन का मालिक होता हूं।'

'तो आप उस समय नाराज किसलिए हो रहे थे ?'

'किस समय ?'

'जब मैं मां के घर से आई थी।'

'न! मैं नाराज नहीं था। हां, कुछ प्रसन्नता की बात भी नहीं थी। एक बात थी कि मैं समझा था कि हमारे घर में नया युग आरम्भ हुआ है और उस नए युग को संतोषजनक बनाने का विचार कर रहा था।'

'क्या नई बात हुई है ?'

'यही कि अभी तक तुम अपने पिताजी का दिया खाती-खिलाती थीं। अब वह नहीं रहे। इस कारण अब मैं तुम्हें खाने-पीने के लिए दिया करूंगा।'

'ओह! कितनी जमापूंजी एकत्रित कर ली है ?'

'कुछ बहुत नहीं। इस पर भी अढ़ाई जीवों का काम चल जाएगा।'

'फिर भी ? पिछले मास कितना पैदा किया है ?'

राधे ने बताने के स्थान पर पूछ लिया, 'कितने से तुम्हारे घर की गाड़ी चल सकेगी ?'

रजनी ने विचार किया और बता दिया, मैना, भंगी, नल, पानी, बिजली आदि का एक सौ रुपये तक पड़ जाता है और भोजन का भी लगभग इतना ही पड़ जाता है।'

'इतना तो मैं दे ही सकता हूं।'

'पर यह आज आपको चिन्ता किसलिए लग गई है ?'

'बड़ों का साया सिर पर से उठ जाने पर ऐसी चिन्ता लगती ही है।'

'परन्तु अब तो दो वर्ष से मैंने उनसे एक पैसा भी नहीं लिया।'

'तो यह सिनेमा हाल और बैंक-बैलेंस कहां से बनाया हुआ है ?

'यह हमारा ही तो था ?'

'मगर मुझे तो पता चला था कि लालाजी ऐसा नहीं समझते थे। यह तो तुमने जब अनशन किया तो लालाजी ने तुम्हारे स्नेह-वश यह रहने के लिए दे दिया था।'

'जी नहीं। यह सब मेरा, मेरा मतलब है, हमारा ही था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लालाजी दे नहीं रहे थे। इस कारण मैंने अनशन किया था।'

'सत्य ? तो बहुत बेईमान थे वे !'

रजनी चुप रह गई।

रात दो सौ पचास रुपये राधेलाल ने रजनी के पलंग पर उस समय रख दिए जब वह सो रही थी।

प्रातः उठ उसने जब रुपये देखे तो विस्मय में देखती रह गई। फिर रात की सब बात स्मरण कर रुपये उठा वह अपनी तिजोरी में रखने चल पड़ी।

३

राधेलाल का चित तो नहीं करता था, परन्तु लोक लाज के कारण वह शोकाकुल मुख बना अपने श्वसुर के घर शोक मनाने जा बैठा। चौथे के दिन तक वह नित्य वहां जाता रहा और लालाजी के निधन के पांचवें दिन वह बाजार में काम के लिए निकला। पूर्ण बाजार में से दस थान के आर्डर लेकर वह घूमता हुआ विश्वम्भर की दुकान पर जा पहुंचा।

मलावामल्ल केवल अब बैठा करता था। काम तो दुकान पर सेवक और विश्वम्भर ही किया करते थे। विश्वम्भर अब पण्डितजी से पढ़ने नहीं जाता था। दुकान से अवकाश ही नहीं मिलता था। अब उसका स्वाध्याय प्रातः चार बजे से छः बजे तक घर पर ही चलता था।

रात को वह बाबा को कहानियां सुनाया करता था। उस समय गार्गी और गार्गी की मास तथा शारदा इत्यादि लड़कियां भी वहां आ बैठा करती थीं।

मध्याह्नोत्तर चार बजे के लगभग राधेलाल वहां आया तो उसके आते ही मलावामल्ल ने पूछा, 'अपने ससुराल की बात सुनाओ।'

'प्रत्यक्ष रूप में तो कल तक सब शान्त थे। इस पर भी मुझे कुछ ऐसा समझ आया है कि भीतर-ही-भीतर खिचड़ी पक रही है।'

'तो तुम आज वहां नहीं गए ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'बाबा ! चार दिन के उपरान्त बाजार गया था। इस कारण अभी तक फुरसत नहीं मिली।'

'तो जाओ। अपने साले की 'मिज़ाजपुरसी' कर आओ। उसकी दुकान और मकान को ताले लग गए हैं।'

मगर राधेलाल को साले और अन्य ससुराल वालों की बात जानने में रुचि नहीं थी। वह वहां से कमर्शल बिल्डिंग की ओर चल दिया। वहां भी उसने कुछ आर्डर लिए और फिर अमृतसर को चल दिया।

अगले दिन वह घर पहुंचा तो रजनी और उसकी मां स्नानादि से अवकाश पा प्रातः का अल्पहार लेने के लिए खाने के कमरे में बैठी थीं।

राधेलाल ने रजनी की माता को वहां बैठे देखा तो समझ गया कि इसका सम्बन्ध लाला शंकरदास की दुकान और मकान पर ताले लगे जाने से है। इस पर भी उसने पूछा नहीं कि वहां क्यों बैठी है। उसने हाथ जोड़ प्रणाम किया और कहा, 'मैं स्नान करने आ रहा हूं।'

इस पर भी मां बैठी अल्पाहार लेती रही और रजनी राधेलाल की प्रतीक्षा करती रही। आधा घंटा लगा राधेलाल को अवकाश पाने में। वह भोजन पर बैठा तो मैना ने उसके सम्मुख भी अल्पाहार लगा दिया।

'राधे बेटा,' रजनी की माता ने कह दिया, 'मैं अब कई दिन के लिए यहां रहने आई हूं।'

'माताजी ! मकान आपकी बेटी रजनी का है। वह भी इसमें रखने-निकालने का अधिकार रखती है।'

'वह तो मान गई है।'

'तब ठीक है। मैं तो अल्पाहार के उपरान्त बाजार जा रहा हूं।'

'मगर कुछ तुमसे भी तो सहायता लेनी है।'

'कैसी सहायता ?'

'बिहारी ने दुकान और घर को ताले लगवा दिए हैं।'

'वह तो होना ही था।'

'होना ही था ! क्यों ?'

'माताजी ! यह ईश्वरीय नियम है। जो दूसरों के ताले लगवाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हैं उनके भी ताले लगा करते हैं।

'तो फिर ?'

'समय पर खुल जाएंगे।'

'हां, इसमें यत्न कर दो।'

'सब भगवान के अधीन है।'

राधेलाल बाजार गया। उसका साला बिहारीलाल वहां एक दुकान पर बैठा मिल गया।

'भैया यहां बैठे क्या कर रहे हो ?' राधेलाल ने पूछा।

'तो तुम नहीं जानते ?'

'क्या नहीं जानता ?'

'छोटे गुलजारी से झगड़ा हो गया है।'

गुलजारीलाल बिहारीलाल का छोटा भाई था।

'क्या झगड़ा हो गया है ?' राधेलाल ने पूछा।

'वह कहता है कि उसके निर्वाह के लिए बीस हजार पृथक् रख दिया जाये तो वह दुकान खुलने देगा।

'परन्तु दुकान में तो बीस हजार का माल है नहीं ?'

हां, इसी कारण गुलजारी ने दुकान को ताले लगवाये हैं और मैंने घर पर भी ताले लगवा दिए हैं।'

'भैया, ठीक किया है।' राधे ने कहा और अपने काम पर चल पड़ा।

शंकरदास के घर की अवस्था पर मलावामल्ल के घर पर भी बात हुई थी।

महन्तराम और बेअन्तराम अब पृथक् मकान में रहते थे, परन्तु प्रायः रात के समय बाबा के चरण-स्पर्श करने चले आया करते थे। कभी महाभारत की कथा सुनने भी बैठ जाया करते थे।

आज तो राधेलाल और उसके श्वसुर की ही कथा होती रही। बाबा पलंग पर बैठा था और परिवार के शेष लोग भूमि पर बैठे थे। कथा के लिए विश्वम्भर ने पुस्तक अभी खोली ही थी कि पण्डित लक्ष्मीचन्द भी पत्नी सहित गार्गी से मिलने आ पहुंचे। इस कारण महाभारत की कथा तो नहीं हुई और शंकरदास की कथा आरम्भ हो गई।

पण्डित लक्ष्मीचन्द ने अपनी सूचना बता दी। उन्होंने कहा, 'आज सायंकाल भैया हुक्मचन्द आये थे और शंकरदास की बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वताते थे कि वह सबेरे ही सबेरे दुकान के बड़े गद्दे पर गुलजारी-लाल ने चौथ के उपरान्त दुकान खोली तो प्राय: आलमारियां खाली देख उसने छोटे भाई से पूछा कि इन अलमारियों का माल कहां गया ?

'बिहारीलाल का कहना था कि इतना ही माल था।'

'इस पर गुलजारीलाल को सन्देह हुआ और वह दुकान के पिछ-वाड़े गोदाम में देखने चला गया। वह भी लगभग खाली था। अगले दिन उसने दुकान को ताले लगवा दिये। लगभग एक दर्जन पुलिस वाले ताले लगाने आये तो बिहारीलाल ने दुकान के साथ-साथ मकान को भी ताले लगवा दिए। परिणाम यह हुआ कि बिहारीलाल की पत्नी और छोटी बहन कमला पहने कपड़ों में ही मकान के बाहर आ गई। मां अपनी बड़ी लड़की रजनी के घर चली गई है और कमला बिहारी की पत्नी के साथ बिहारी की ससुराल में।'

'और पण्डित हुक्मचन्द क्या कहते थे ?' मलावामल्ल ने पूछ लिया।

'वह मूर्ख क्या कहेगा ? उसको तो यह समझ आया है कि बहुत अच्छा हो रहा है।

मलावामल्ल हंस पड़ा। हंसते हुए कहने लगा, 'यह अभी कुछ नहीं। इससे भी गंदी स्थिति होने वाली है।'

'सेठजी !' लक्ष्मीचन्द ने कहा, 'पूर्वजन्म के पुण्य कर्मों का फल भी तो शेष हो सकता है। वैसे तो वे भी अब समाप्त होते प्रतीत हो रहे हैं।

भैया हुक्मचन्द बता रहे थे कि बिहारीलाल के विवाह के समय बारात में दूल्हा हाथी पर चढ़कर गया था और रुपयों तथा चांदी की रेजगारी न्योछावर की गई थी। और अब छोटे लड़के के विवाह के लिए धन नहीं रहा।'

'तो यह सब किधर गया है। पण्डित हुक्मचन्द बताते थे क्या ?'

'वह तो कहते थे कि राधेलाल ने हनुमान सिद्ध किया है और हनुमानजी सब कुछ शंकरदास के घर से उठाकर राधेलाल के घर ले गये हैं।'

'और आप भी ऐसा मानते हैं ?'

'हुआ तो कुछ ऐसा ही है, परन्तु यह हनुमान नहीं हो सकते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
न ही राधेलाल गिरधारी हनुमान की सृष्टि का हुआ है। यह तो रामजी स्वयं ही अपने न्याय-प्रपंच को चालू रखने के लिए अपने अदृश्य हाथों से करते समझ आ रहे हैं।

रामजी तो सर्वव्यापक हैं और अपने कार्य करने के लिए उनको न हनुमानजी की आवश्यकता है, न ही किसी अन्य साधन की। वह स्वयं ही सबके साथ न्याय करते रहते हैं।'

'परन्तु बाबा!' पण्डित लक्ष्मीचन्द जी ने आगे कहा, 'कई स्थानों पर धन जुए, वेश्यागमन, मद्य-सेवन में जाता देखा जाता है। यहां धन न तो गिरधारीलाल का और न ही शंकरदास का कहीं ऐसी ओर जाता दिखाई दिया है। इस कारण मेरा मन कहता है कि यह पाप का धन है और अभी कुछ और मूर्खों को भी लेकर डूबेगा।'

'परन्तु,' मलावामल्ल का प्रश्न था, 'गिरधारीलाल राधेलाल विवाह के पूर्व तो सर्वथा ईमानदार व्यक्ति विख्यात था। बाजार में उसकी ईमानदारी की ख्याति थी। ऐसी नेक कमाई भला इस प्रकार दूषित क्यों हो गई कि इन सबको ले डूबी?'

'यह धन में दोष दिखाई नहीं देता। यह तो लेन-देन करने वाले की नीयत में कुछ गड़बड़ प्रतीत होती है। किसी समय किसी के मन में पाप उत्पन्न हुआ है और उस पाप के चालू करने में धन सहायक हो गया और पापी की नीयत ही सबको ले डूबी है।'

'परमात्मा के इस करतब को देखने और समझने में मजा तो आता है। लाभ भी होता हैं। परन्तु न जाने ईश्वर इसे छुपाकर क्यों रखता है?' मलावामल्ल का प्रश्न था

'नहीं सेठजी! वह छुपाकर कुछ नहीं करता। उसका कोई भी कार्य लुकाव-छुपाव का नहीं होता। यह तो हममें दृष्टि-दोष है जो वस्तुस्थिति को देख नहीं सकते।

'देखिए लालाजी! एक बात तो स्पष्ट है कि गिरधारीलाल के साथ की धोखाधड़ी शंकरदास को ले डूबी है। हमें पता नहीं चल रहा कि गिरधारीलाल की डूबती नौका का कारण क्या है? यह पापकर्म कहां-कहां और किस प्रकार फैलेगा, यह भविष्य में देखने वाले को पता चल जायेगा। इस पर भी संसार में अकारण कुछ नहीं होता। सब कारण सहित होता है।'

अपने श्वसुर की इस विवेचना को सुन विश्वम्भर के मन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यह विचार उठ रहा था कि इस पूर्ण दुर्घटना को समझें। समझ सकने से ज्ञानवर्धन तो होगा ही। अतः उसने मन में एक निश्चय कर लिया और अगले ही दिन वह उस निश्चय की पूर्ति का उपाय सोचने लगा।

विश्वम्भर को समझ आया कि उसने राधेलाल की कुछ सहायता की थी, जब वह चोरी के मामले में फंसा था। वह उसके लिए भाग-दौड़ करता रहा था। अतः वह सोच रहा था कि इस पूर्ण रहस्यमयी दुर्घटना का भेद राधेलाल से पता करने का यत्न किया जाये।

राधेलाल अगले दिन दुकान पर ही आ पहुंचा। वह अमृतसर से लाला सन्तराम का पत्र लेकर आया था।

पत्र मलावामल्ल ने विश्वम्भर को दिखा कर कहा, 'इसे पढ़ डालो और देखो, तुम्हारे पिता क्या चाहते हैं।'

इसका अर्थ यह था कि पत्र पढ़कर उस पर अमल करो, उसे राधे के सम्मुख सुनाने की आवश्यकता नहीं।

विश्वम्भर ने वैसा ही किया। पत्र पढ़ा और फिर लपेटकर जेब में रखते हुए पूछ लिया, 'राधे भैया! अब आये हो अमृतसर से?'

'बस, रेल के स्टेशन से सीधा इधर ही आ रहा हूं। बाजार में कुछ काम नहीं था। अभी कल प्रातः एक लम्बा-चौड़ा आर्डर लेकर गया हूं। इससे आज काम की आशा नहीं है।'

'और घर नहीं गये?'

राधेलाल हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, 'वहां आजकल रजनी की मां विराजमान है। इस कारण वहां जाने को चित्त नहीं किया।'

'परन्तु अभी तो दोपहर ही हुई है। सारा दिन क्या करोगे?'

'कहीं इधर-उधर घूम-घामकर समय व्यतीत करूंगा। रात खाने के समय वहां जाऊंगा और खाना खाकर सो जाऊंगा।'

'अच्छा देखो। मुझे एक बात ध्यान आ रही है।' इतना कह विश्वम्भर ने भवानी की ओर देखकर कहा, 'भैया! मैं यहां शामी की दुकान पर हूं और अभी आता हूं।'

शामी का पूरा नाम शामदास था। वह कराची में हलवाई और चाय-पानी की दुकान कर बहुत रुपया कमाकर लाया था। लाहौर में भी उसने एक हलवाई की और चाय-पानी की दुकान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
खोल रखी थी।

भवानी को यह कह विश्वम्भर राधे को लेकर शामदास की दुकान पर आ गया। दुकान में आठ-दस व्यक्तियों के बैठने का स्थान बना हुआ था। वैसे लाहौर में अभी रेस्तरां का चलन नहीं था। कहा जा सकता है कि शामी की दुकान एक शानदार रेस्तरां के चलने का श्रीगणेश ही थी।

विश्वम्भर और राधेलाल शामी की दुकान पर आ वहां एक मेज पर बैठ गए। विश्वम्भर ने नौकर को कहा, "पहले एक-एक पत्ता चाट लाओ। बहुत बढिया आनी चाहिए।"

नौकर गया तो बात राधेलाल ने ही पूछी, 'विश्वम्भर! आज क्या बात है? मैंने तुम्हें पहले कभी इस प्रकार फिजूल-खर्ची करते नहीं देखा।'

'मैं इसे फिजूल नहीं समझता। हां, यह नित्य का खाना नहीं है। प्रायः मैं मिठाई लिया करता हूं। उसमें भी गुलाब जामुन।'

'तो आज चाट की याद कैसे आ गई?'

मुझे याद है कि तुम स्कूल के दिनों में खूबी चाट वाले के नित्य के ग्राहक थे।'

'हां! पर मैं तो तुम्हारी बात पूछ रहा हूं।'

"यह तो तुम्हारा साथ देने के लिए ही है। पीछे अपनी पसन्द की वस्तु भी खिलाऊंगा। तुम आज खाली थे। इस कारण यह दावत है।'

दोनों के लिए चाट आई, फिर गुलाब जामुन आए और तब चाय ली गई। इस प्रकार एक रुपया खर्च कर दोनों दुकान से निकले तो राधे ने पूछा, 'मैं समझता था कि तुम्हारे पिताजी ने कुछ मेरे विषय में लिखा है।'

विश्वम्भर ने कहा, 'बात यह है कि पत्र बाबा के नाम था और बाबा ने कहा है कि पत्र को पढ़कर उसके अनुसार कार्य करूं। इसका अभिप्राय यह है कि किसी को बताऊं नहीं कि उसमें क्या लिखा है। केवल उसमें लिखे अनुसार व्यवहार करूं।

'इस कारण उस पर व्यवहार करूंगा। बाबा को भी तब बताऊंगा जब वह पूछेंगे।'

राधे हंस पड़ा और बोला, 'तुम्हारी बात सदा रहस्यमयी होती है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हां ! इसी में हमारी सफलता की कुंजी है। हम बात पढ़ते, सुनते अथवा देखते हैं और फिर बुद्धि से विचार कर उसका अभिप्राय निकालते हैं। बार-बार बुद्धि का प्रयोग करने से हमारी बुद्धि ठीक ही परिणाम बताती है। इस कारण हमारे काम प्रायः सफल होते हैं।'

राधेलाल इस सब बात का अर्थ समझने में लीन हो गया। वह उत्सुक था कि सन्तराम की मलावामल्ल की चिट्ठी के विषय में बात हो और विश्वम्भर ने बात ऐसे ढंग से टाल दी थी कि बिना कुछ बताए बात बदल गई थी।

विश्वम्भर राधेलाल के मन में उत्सुकता उत्पन्न करना चाहता था, जिससे वह उससे पुनः मिलने आए इस कारण उसने शामदास की दुकान से अपनी दुकान को लौटते हुए कह दिया, 'कैसी है मिठाई इसकी ?'

'बहुत स्वादिष्ट है। तो तुम रोज यहां खाने आते हो ?'

'हां ! मैं प्रातः आठ बजे दुकान पर आता हूं, बारह-एक बजे कुछ भूख लगती है। इस कारण इस समय कुछ खा लेता हूं।'

'तो घर किस समय जाते हो ?'

'घर तो रात के आठ बजे ही जाता हूं। इसी कारण हम बुद्धिप्रकाश को यहां दूकान पर आकर कार्य करने को कह रहे हैं।'

'परन्तु वह तो वहां अमृतसर में कालेज में पढ़ाता है।'

'वहां क्या मिलता है उसे ?'

'डेढ़ सौ रुपए महीना मिलता है।'

'और तुम क्या पैदा करते हो ?' विश्वम्भर का प्रश्न था।

'व्यापार और नौकरी में अन्तर भी तो है।'

इस समय वे दुकान पर पहुंच गए थे। राधेलाल ने कहा, 'अच्छा, कल मिलूंगा। मेरा विचार था कि उस पत्र में मेरे विषय में कुछ कहा है।'

'कहा तो है, परन्तु पत्र बाबा के नाम है। इस कारण वह ही बताएंगे।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4

'क्या कहता था ?' बाबा ने विश्वम्भरनाथ से पूछ लिया।

'बाबा ! रात को बात करेंगे। पत्र में भी कुछ इसके विषय में ही कहा है।'

उस समय दुकान पर ग्राहक आए हुए थे।

रात को सदा के अनुसार महन्तराम और उसकी पत्नी सोहनी आई हुई थी। आज बेअन्तराम और उसकी पत्नी नहीं आए थे।

भोजनोपरान्त बात विश्वम्भर ने ही की। उसने कहा 'बाबा ! पिताजी ने लिखा है कि लाला शंकरदास की छोटी लड़की कमला का प्रस्ताव बुद्धिप्रकाश के लिए आया है।'

'परन्तु वह तो बिहारीलाल की पत्नी के साथ बिहारीलाल के सुसराल में है ?'

'हां ! बिहारीलाल ने ही प्रस्ताव भेजा है। बुद्धिप्रकाश कहता है कि उसने कमला को देखा है और पसन्द किया है। लड़की दसवीं पास है और बुद्धिशील है।'

'और तुम्हारे पिता क्या कहते हैं ?'

'उन्होंने लिखा है कि वह इन दिवालियों के घर से सम्बन्ध बनाना नहीं चाहते, परन्तु बुद्धिप्रकाश हठ कर रहा है।'

'तो बुद्धिप्रकाश को लिख दो कि वह मुझसे मिल ले। उसके विचार जानकर उससे सहानुभूतिपूर्वक विचार किया जाएगा।'

'पर बाबा !' महन्तराम ने कहा, 'सोहनी की बहन का भी तो प्रस्ताव आया हुआ है ?'

'उस पर भी बुद्धिप्रकाश को विचार करने के लिए कहेंगे।'

'और आप किसकी सिफारिश करेंगे ?'

'जो गार्गी देवी की परीक्षा में उत्तीर्ण होगी।'

'पर बाबा !' गार्गी जो अभी तक चुपचाप बात सुन रही थी, बोल उठी, 'मैंने लड़कियों की परीक्षा लेने की विद्या नहीं सीखी।'

'लड़कियों को पढ़ाने की योग्यता तो तुम में है। शारदा अब अपने सुसराल में सुखी है।'

'वह बात पढ़ाने की है। पर बाबा ! दूसरों से पढ़ाई की परीक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लेनी मुझे नहीं आती।'

'गार्गी बेटी ! यह भी सीखनी पड़ेगी। अब तो तुम दो बच्चों की मां हो। उनका भी तो विवाह करोगी।'

बाबा ! बात यह है कि जो ढकोसले करना नहीं जानते, वे दूसरों के ढकोसले जान नहीं सकते।'

'तब तो इस चतुर संसार में धोखा खा जाओगी।'

'बाबा ! यह बात मुझसे नहीं हो सकेगी।'

'देखो, तुम अपने रामजी का चिन्तन कर विचार करना और तुम्हारे कहने के अनुसार रामजी तुम्हें ठीक बात करने के लिए बता देंगे।'

सब हंसने लगे। केवल गार्गी और मलावामल्ल नहीं हंसे !

बाबा का आदेश हो गया कि बुद्धिप्रकाश बाबा से मिले और सोहनी की बहन बनिता भी गार्गी से मिले।

अगले रविवार बुद्धिप्रकाश बाबा से मिलने आया, परन्तु उससे पूर्व एक अन्य भेंट राधेलाल की विश्वम्भर से हो चुकी थी। शुक्रवार का दिन था और राधेलाल लाहौर आया तो शामी की दुकान पर जाने के लिए बारह बजे विश्वम्भर की दुकान पर आ पहुंचा।

'विश्वम्भर ! आज चाय-पानी के लिए नहीं चलना ?'

'आओ राधेलाल ! अभी चलते हैं। सुनाओ स्वास्थ्य कैसा है ?'

'तभी तो मिठाई की याद आ गई है। इसके गुलाबजामुन बहुत स्वादिष्ट थे।'

मलावामल्ल ने पूछ लिया, 'आजकल तुम्हारी सास कहां है ?'

'अपनी लड़की रजनी से खिचड़ी पकाया करती है।'

'और तुम खिचड़ी में कलुछी नहीं चलाते ?'

'नहीं बाबा ! हाथ झुलस जाने से डरता हूं।'

'और साली कमला कहां रहती है ?'

अपने भाई की सुसराल में है। कल आई थी, परन्तु मुझसे नहीं मिली।'

'और सुसराल के तालों का क्या हालचाल है ?'

'ताले लगे हैं। सुना है गुलजारी का हाथ तंग है, परन्तु बिहारी-लाल ताले खुलवाने में रुचि नहीं रखता।'

विश्वम्भर किसी ग्राहक को दस गज छींट दे रहा था। जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
D372

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कपड़ा बांध दे और मूल्य साढ़े सात रुपये वसूल कर चुका तो बाबा को कह, वह शामलाल की दुकान को चल दिया।

वहां बैठते ही राधेलाल ने पूछा, 'आपके पिताजी ने मेरे विषय में क्या लिखा है?'

'उस पत्र में तो कुछ नहीं था; परन्तु उनका मौखिक सन्देश आया है कि तुम मुझसे साझेदारी करना चाहते हो।'

'हां। चाहो तो इसी दुकान में पत्तीदार बना लो और चाहो तो तुम और मैं बाबा से पृथक् दुकान कर सकते हैं।'

'परन्तु यह दुकान चलती है और मैं अकेले यहां कठिनाई अनुभव करता हूं। हम तो पहले ही यत्न कर रहे हैं कि द्विप्रकाश मेरे साथ काम करने आ जाये।'

'वह नहीं आयेगा वह कालेज के जीवन को बहुत पसन्द करता है।'

'बाबा ने उसे कहा है कि वह इस रविवार मिलने आये।'

'वह आयेगा, परन्तु दुकान पर काम करने की बात पसन्द नहीं करेगा।'

'यह कैसे जानते हो? तुम्हारी उससे इस विषय में बात हुई है?'

'नहीं। परन्तु मैं जानता हूं कि वह दुकान नहीं करेगा। उसे दुकानदार का जीवन पसन्द नहीं।'

'बाबा बात करेंगे। पीछे तुमसे भी बात हो सकेगी। परन्तु यह साझेदारी का काम पसन्द करने की बात है। साझेदारी के लिये तुम कितना रुपया लगा रहे हो?'

'आपका दुकान पर तीन लाख है। मैं इसमें तीसरे हिस्से का मालिक बनना चाहूंगा। एक लाख नकद दूंगा।'

'पर इतना तुमने पैदा कर लिया है अथवा पत्नी का रुपया लगा रहे हो?'

राधेलाल हंस पड़ा। हंसते हुए बोला 'रजनी मुझे अपने रुपये में से एक पैसा भी देने से इनकार करती है। पहले ही दस हजार, जिसका मुकद्दमा हो चुका है, का उसे बहुत दुःख है।'

'हमारा विचार है कि तुम्हारे पास एजेन्सी की कमाई का पन्द्रह-सोलह हजार से अधिक नहीं होना चाहिये।'

'हां। तुम्हारा अनुमान ठीक है। उस दस हजार के अतिरिक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जो मैंने रजना का चोरी किया था, मेरे पास ग्यारह हजार और एकत्रित हुआ है। परन्तु मैंने एक अन्य शाह बनाया है और उसके पास बहुत रुपया है।'

'ओह ! कौन है वह ?'

'यदि किसी को न कहो तो बता सकता हूं।'

'किसी से क्या मतलब ?'

'सिवाय अपने के, अन्य किसी से नहीं।'

'केवल अपनी पत्नी को बताऊंगा। उससे मैं कुछ भी चोरी नहीं रखता।'

'पण्डितजी की लड़की की मैं चिन्ता नहीं करता। मैं तुम्हारे बाबा से डरता हूं। वह बूढ़े साफ-दिल व्यक्ति किसी के भी सामने भेद खोल सकते हैं।'

विश्वम्भर हंसकर बोला, 'उनको तुम नहीं जानते। वह कोई बात जानना चाहें तो मुख देखकर जान जाते हैं।'

'तुम अपने मुख से स्वीकार न करना। बात यह है कि मैं तुमसे साझेदारी करना चाहता हूं और रुपये का रहस्य बताये बिना काम चलेगा नहीं। तुम कह दोगे कि रुपया अपना ही है तो वे मान जायंगे।'

विश्वम्भर चुप रहा और राधेलाल बादाम का हलुआ खाते हुए बताने लगा, 'मेरे विवाह से पूर्व घर में एक विख्यात पहाड़ी सेवक था। नाम गोपू था वह माताजी से बहुत हेल-मेल रखता था। मुझे माताजी के पतिव्रत धर्म पर भी संदेह होता था, परन्तु प्रत्यक्ष में कभी कुछ संदिग्ध नहीं देखा था।

'मेरे विवाह के उपरान्त मेरी पत्नी मेरी माताजी पर सन्देह करने लगी। मैं प्रमाण मांगता था। वह कहती थी, ऐसी बात का प्रमाण नहीं दिया जा सकता।

'एक दिन एक घटना घटी। गोपू कपड़े में लपेटा हुआ कुछ घर से बाहर ले जा रहा था कि रजनीने उसका मार्ग रोक लिया। कुछ तकरार हुआ। रजनी ने कपड़ा छीन लिया गोपू उसे फेंक भाग गया। रजनी ने देखा कि कपड़े में एक संदूकची थी। संदूकची में सौ-सौ रुपये के पांच सौ नोट थे। गोपू तो भाग गया। बात पिताजी के पास गई, नोट मेरे पास जमा हो गये। माताजी से पूछा गया। उन्होंने कह दिया कि अपने किसी मतलब से रुपया कहीं भेज रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
थीं। वह केवल मेरे पिताजी को बता सकेंगी।

'पिताजी ने बात गुप्त रूप में सुनी और मुझे बताई। रुपया मेरे पास था। वह मैंने दिया नहीं। मैं चाहता था कि मुझे भी बता दें। उन्होंने बताया नहीं, रुपया मेरे पास रहा।

'परन्तु इसके कुछ दिन उपरान्त रजनी घर के सब भूषण उठा मां के घर चली गई। इस पर पिताजी ने मकान का सब रुपया कहीं लापता कर दिवाले की अर्जी कर दी।

'वह पचास हजार मेरे पास रह गया। वह अब एक लाख हो गया है। कुछ उसका ब्याज है और कुछ उसमें मेरी एजेन्सी की कमाई है। मैं उस रुपये को सार्थक करना चाहता हूं।'

चाय-पानी हो चुका था। इस पर विश्वम्भर ने कह दिया, 'मैं यह बात बाबा से नहीं कहूंगा। इसका दुकान की साझेदारी से सम्बन्ध नहीं होगा।'

विश्वम्भर ने राधेलाल की बात गार्गी से बताई तो उसने राय दे दी कि सब कुछ बाबा को बता देना चाहिये।

'परन्तु मेरा वचन ?'

'शठे शाठ्यम् समाचरेत्।'

'और उससे साझेदारी ? मैं अकेला दुकान पर काम नहीं चला सकता और बाबा किसी भी समय बैकुण्ठवास कर जायेंगे।'

'कुछ भी हो, राधेलाल से साझेदारी नहीं होनी चाहिये। वह दूषित धन यदि यहां के पवित्र धन से मिल गया तो दूध में विष मिलने के समान हो जायेगा।'

विश्वम्भर बात को समझ गया।

यही बात तो गार्गी के पिता पण्डित लक्ष्मीचन्दजी ने कही थी कि गिरधारीलाल के घर में कहीं से दूषित धन आया था और उसी से सब दोष उत्पन्न हुआ है। गिरधारीलाल के दूषित धन से शंकर-दास का दिवाला पिटा है

यह गापू इतना रुपया कहां से लाया था, पता करने की बात है। ऐसा विचार कर विश्वम्भर ने बाबा को सब कुछ बता दिया।

बुद्धिप्रकाश रविवार के दिन लाहौर आया और आते ही बाबा से भेंट करने उनके कमरे में चला गया। बाबा के पूछने पर उसने बताया, 'बाबा ! वह बहुत सुन्दर है।'

'तुम्हारी भाभी गार्गी का कहना है कि वनिता उससे भी अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सुन्दर ।'

'वह कमला को कैसे जानती है ? कमला तो कहती है कि वह हमारे घर के किसी व्यक्ति को नहीं जानती।'

'परन्तु गार्गी उसे जानती प्रतीत होती है।'

बुद्धिप्रकाश विस्मय में बाबा का मुख देखता रह गया। आखिर उसने बातों का सूत्र पकड़कर कहा, 'बाबा ! भाभी से पूछना चाहिए कि उसने कमला को कहां देखा है जो वनिता से उसकी तुलना कर रही है ?'

'ठीक है। मैं उसे बुलाता हूं।'

बाबा ने पलंग के पास रखी घंटी बजाई तो सेविका मोहनी आ गई। बाबा ने कहा, 'गार्गी को और बुद्धिप्रकाश की मां को बुला लाओ।'

दोनों आईं तो मलावामल्ल ने गार्गी से पूछ लिया, 'तुम उस दिन कमला के विषय में कुछ कह रही थीं ?'

गार्गी ने कहा, 'बाबा ! मैंने कमला को जाना है और मुझे वह भैया के लिए उपयुक्त पत्नी समझ नहीं आई।'

बुद्धिप्रकाश ने पूछ लिया, 'भाभी ! कहां देखा है तुमने उसे ?'

'देखो भैया ! ज्ञानेन्द्रियां कितनी हैं ?'

'मैं क्या जानूं ?'

'तुम तो विज्ञान पढ़े हो। सन्सेज़ कितनी हैं ?'

बुद्धिप्रकाश ने कह दिया, 'सैन्सेज़ से ज्ञान प्राप्त होता है, परन्तु कितनी हैं यह मैं क्या जानूं ? हाथों से छूकर भी कुछ जाना जाता है। नाक से सूंघकर भी कुछ जाना जाता है। परन्तु जो कुछ आंखों और कानों से सुनकर जाना जा सकता है वह और किसी प्रकार से नहीं जाना जा सकता। मैंने कमला को गाते सुना है। बहुत मीठा गाती है।'

'हीराबाई बड़ौदकर से भी अधिक मीठा ? उसके गाने के सब रिकार्ड तीस-चालीस रुपये में मिल सकते हैं और एक सौ बीस रुपये का एच० एम० वी० का ग्रामोफोन मिल जाता है। इस प्रकार डेढ़ सौ रुपये में जब चाहो सबसे मीठा गाने वाली हीराबाई का गाना सुन सकोगे। इसके लिए पत्नी बनाने की आवश्यकता नहीं।'

'परन्तु भाभी ! वह बहुत सुन्दर भी है।'

'मेरे कमरे में वीणावादिनी सरस्वती का एक चित्र है। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मैं तुमको दे दूंगी। दिन-रात उसे देखा करना।

'भैया! यह सुन्दर पत्नी के लक्षण नहीं हैं।'

'तो दादा ने तुमसे क्यों विवाह किया है? वह भी कहा करते थे कि तुम बहुत सुन्दर हो।'

'हां। उन्होंने मुझे भी एक बार कहा था कि मैं बहुत सुन्दर हूं, परन्तु उन्होंने मेरे सौन्दर्य के कुछ अन्य लक्षण बताये थे।'

'क्या?'

'यह तुम उनसे ही पता कर लो तो ठीक रहेगा। मैं अपने मुख मियां मिट्ठू नहीं बनना चाहती।'

'पूछूंगा, परन्तु तुम कभी कमला से मिली भी हो?'

'हां। तभी तो कह रही हूं कि वह भैया बुद्धिप्रकाश के योग्य नहीं है।'

'कहां मिली हो?'

'कभी दूर किसी मकान से धुआं निकलते देखा है?'

'हां, कई बार देखा है।'

'वह धुआं कहां से निकलता है?'

'निःसन्देह वहां पर अग्नि जल रही होती है।'

'परन्तु आपने तो केवल धुआं देखा है। अग्नि तो आपको दिखाई दी नहीं। आप कहते हैं कि धुआं देखकर अग्नि के दर्शन हो जाते हैं।'

'भाभी! मैं कुछ नहीं समझ रहा कि तुम क्या कह रही हो?'

'देखो, मैं बताती हूं। मैंने लाला बिहारीलाल की बहन कमला को ऐसे ही देखा है, जैसे धुआं देखकर अग्नि का ज्ञान होता है।

'मैंने कमला का धुआं उठता देखा है। इससे कमला के दर्शन हो गए हैं। उसका धुआं अति कड़वा है। इस कारण कहती हूं कि वह अति कुरूप भी है।'

'कहां से उठता धुआं कमला का धुआं समझ आ गया है?' बुद्धिप्रकाश ने उद्विग्न हो पूछ लिया।

'भैया! नाराज होने की आवश्यकता नहीं। तुम उससे कब मिले हो?'

'अभी यहां आने से पूर्व माताजी के साथ उससे मिलने गया था।'

'वह कहां है आजकल?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'बिहारीलाल की पत्नी के साथ उसके भाई के घर पर है।'

'और अपनी मां के साथ क्यों नहीं रहती ?'

'उसकी मां के साथ बनती नहीं।'

'पूछा था, क्या दोष है उसकी मां में ?'

'इस प्रकार की बातें पूछने की नहीं होतीं।'

'अर्थात् धुआं देख कह देना कि धुआं देखने की वस्तु नहीं, इस कारण धुएं वाले मकान में आग है ही नहीं।

'देखो भैया ! यह बाजार में विख्यात है कि बिहारीलाल ने अपने भाई गुलजारीलाल को भिखारी बनाने के लिए दुकान और गोदाम का माल निकलवा दिया है। इस कार्य में बिहारीलाल का साला सहायक हुआ है। यह है धुआं जिससे सिद्ध होता है कि लाला बिहारीलाल का साला महाबेईमान है। कमला ने वहां जाना पसन्द किया है और यह उसकी बुद्धि की कुरूपता है।

'रूप-लावण्य तथा मधुर वाणी आज के युग में मामूली दाम देकर खरीदे जा सकते हैं; परन्तु भैया ! श्रेष्ठ सुलझी हुई बुद्धि तो एक अनमोल बुद्धि है। इसी का कमला में अभाव प्रतीत होता है।'

'पर भाभी ! यह तुमको किसने बताया है कि बिहारीलाल ने गुलजारी की चोरी की है ?'

'यह तुम अपने पिताजी तथा बाबा से पता कर सकते हो। एक बात मैं तुमसे पूछती हूं। बिहारीलाल ने बहन के विवाह पर कुछ दहेज देने की बात भी कही है क्या ?'

बुद्धिप्रकाश इसका उत्तर देना नहीं चाहता था। इस कारण इस प्रश्न पर चुप कर गया। मलावामल्ल ने पूछा, 'बुद्धिप्रकाश, बताओ ! बिहारीलाल से क्या बात हुई है ?'

'बाबा !' आखिर बुद्धिप्रकाश ने बताया, 'लाला शंकरदास के चौथे के दिन मैं गुलजारीलाल की मित्रता के नाते वहां गया था।

'चौथे के उपरान्त बिहारीलाल ने मुझे मकान में बुला कमला से भेंट कराकर कहा कि उसके भाई ने झगड़ा करने की घोषणा कर दी है। इस कारण मैं कमला को इस झगड़े से बाहर रखने के लिए इसका विवाह शीघ्र कर देना चाहता हूं। यह सुन्दर तो है ही, इसे बहुत अभ्यास है संगीत का और मट्रिक तक पढ़ी है। तुम मानो, तो विवाह एक सप्ताह में हो जाएगा और दस हजार नकद तथा भूषण-वस्त्र इत्यादि मिल जाएंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'बाबा ! मुझे कमला पसन्द आयी और मैंने कह दिया, पसन्द है। इस पर भी मुझे पिताजी से स्वीकृति लेनी होगी।'

मलावामल्ल हंस पड़ा, 'और तुमने पूछा नहीं कि दुकान में माल एक हजार का भी नहीं तो दस हजार कहां से देंगे ?'

'मुझमें इतनी व्यावसायिक बुद्धि नहीं है।'

'अर्थात् तुम धुआं भी देख नहीं सके। केवल किसी के कहने पर कि धुआं उठ रहा है, मानने चल पड़े हो।'

'बाबा !' बुद्धिप्रकाश ने बाबा से कहा, 'मैं दादा विश्वम्भर से मिलने दुकान पर जा रहा हूं और बाजार का वृत्तान्त जानना चाहता हूं।'

'हां देखो, एक बात करो। कमला से मिलो और उससे कहो कि वह आज सायं को आए और हमारे परिवार से मिले। और कदाचित् यहां एक अन्य लड़की भी आने वाली है। उस लड़की से उसके गुणों-अवगुणों की तुलना भी हो जाएगी।'

'पर वह आएगी क्या ?'

'मैं समझता हूं कि वह इतनी बुद्धि तो रखती है कि वह चाय के निमन्त्रण को स्वीकार करे।'

'क्यों मां ?' बुद्धिप्रकाश ने अपनी मां से पूछ लिया।

'बेटा ! यह उचित नहीं कि मैं उसके दर्शन विवाह से पूर्व करना चाहूं ?'

बुद्धिप्रकाश चुप रहा। वह अपने कमरे में गया और बढ़िया सूट पहन विहारीलाल की सुसराल को चल पड़ा।

5

मलावामल्ल ने उस दिन सायंकाल दुकान बन्द करवा दी और विश्वम्भर को भी चाय पर घर आने के लिए कह दिया। पण्डित लक्ष्मीचन्द और गार्गी की मां सौदामिनी भी आमंत्रित थे। लक्ष्मीचन्द को बता दिया गया था कि उसे बुद्धिप्रकाश के लिए पत्नी के विषय में जानने के लिए आमंत्रित किया गया है। दो लड़कियां हैं और दोनों में तुलना होनी है।

लक्ष्मीचन्द और सौदामिनी दोनों आए। घर के बैठकघर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बीस प्राणियों के लिए चाय का प्रबन्ध कर दिया गया।

बुद्धिप्रकाश बिहारीलाल की सुसराल गया तो वहां से तीन बजे लौटा। आने से पूर्व चाय-पानी का प्रबन्ध पूर्ण हो चुका था। बुद्धिप्रकाश ने प्रबन्ध देख बाबा से पूछा, 'बाबा! यदि वहां के लोग आने से इनकार कर देते तो इस चाय के प्रबन्ध का क्या होता?'

'तो तुम इसकी भी आशा करते थे?' मलावामल्ल ने पूछ लिया।

'मैं वहां से कोरा जवाब लेकर आने की आशा करता था। वहां इस विषय पर निर्णय करने में तीन-चार घंटे लगे हैं। मैं ग्यारह बजे वहां पहुंचा था और पौने तीन बजे अवकाश पा यह सन्देश लाया हूं कि कमला अपनी भाभी माया के साथ आयेगी। उसकी मां तो रजनी भाभी के घर पर थी। उसके भाई बिहारी-लाल ने आने से इनकार कर दिया है। बिहारीलाल के साले रामनाथ ने भी कमला का यहां आना पसन्द नहीं किया और आ नहीं रहा। सब आने से इनकार कर रहे थे और कमला को भी निमंत्रण स्वीकार करने से मना करते थे; परन्तु कमला ने हठ कर यहां आना चाहा तो रामनाथ की पत्नी माया उसके मान के लिए साथ आने पर तैयार हो गई है।

'वे यहां पौने पांच बजे पहुंचेंगे। परन्तु बाबा! यह प्रबन्ध तो व्यर्थ जाता यदि उधर से इनकार हो जाता।'

'नहीं, संसार में व्यर्थ कुछ नहीं जाता। हमारा जो खर्च हो रहा है, यदि उससे तुम्हारी बुद्धि में प्रकाश हो जाता तो यह बहुत बड़ा लाभ होता।

'परन्तु प्रतीत होता है कि कमला की बुद्धि उसके भाई से विलक्षण है। इस पर भी यह अभी नहीं कहा जा सकता कि विल-क्षणता दुष्टता में है अथवा श्रेष्ठता में। यह हम अपनी बुद्धि से जानने का यत्न करेंगे। मैंने आज शाम को दुकान बन्द करने को कह दिया है, जिससे विश्वम्भर भी यहां उपस्थित हो सके और अपनी राय दे सके।'

चाय लेने के समय यह प्रबन्ध था कि कमला, बुद्धिप्रकाश और महन्तराम की साली वनिता एक ओर बैठे। वनिता के साथ गार्गी थी और गार्गी के साथ सदारानी, उसके उपरान्त सौदामिनी। इस प्रकार बैठने का प्रबन्ध था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इनके सामने मलावामल्ल, लक्ष्मीचन्द और महन्तराम, बेअन्त-राम तथा सन्तराम के बैठने का प्रबन्ध था और दोनों ओर घर का स्त्री-वर्ग था।

लक्ष्मीचन्द और मलावामल्ल साथ-साथ बैठे थे। लक्ष्मीचन्द ने लड़कियों को ध्यान से देखा तो बाबा से कह दिया, 'शंकरदास की लड़की कमला महन्तराम की साली से देखने में श्रेष्ठ मालूम होती है। रूप-राशि से इसकी संज्ञा 'पद्मिनी' मानी जाती है। परन्तु ऐसी ही रावण की बहन शूर्पणखा थी। इस कारण बाहरी निरीक्षण से किसी अन्तिम परिणाम पर नहीं पहुचा जा सकता।'

मलावामल्ल ने कह दिया, 'इसके लिए मैंने गार्गी को समझा दिया है। उसकी राय से ही यह सम्बन्ध हो सकेगा। देखने में मुझे भी लड़की भोली-भाली प्रतीत हुई है।'

इस प्रकार चाय होती रही और गार्गी और कमला में बातें गम्भीर और गम्भीर होती गईं। यह उनके मुखों को देख मलावा-मल्ल समझ रहा था।

सब खा-पीकर सन्तुष्ट हो इधर-उधर की बातें करने लगे थे। गार्गी और कमला में बातचीत चल रही थी और बुद्धिप्रकाश दोनों की बातें मौन हो सुन रहा था। कभी-कभी कमला गार्गी के प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकती थी तो वह मु करा देती थी।

एकाएक गार्गी कमला की बांह में बांह डालकर उसे बैठक से बाहर ले गई। दोनों बगल वाले कमरे में चली गईं। वहां केवल दो मिनट तक बैठकर गार्गी बाहर आई और कमला की भाभी माया को कमला के पास भेजकर बाबा के पास आकर बोली, 'बाबा! एक निर्णयात्मक प्रश्न का उत्तर आपसे लेकर लड़की और उसकी भाभी को बता देने के लिए आई हूं।'

सतवंती, सोहनी, रामप्यारी तथा उनके पति भी बाबा और गार्गी की बात सुनने लगे थे। बाबा ने प्रश्नभरी दृष्टि में गार्गी को देखा तो गार्गी ने पूछा, 'बाबा! यदि मैं कमला की सिफारिश करूं तो आप कैसा समझेंगे?'

'देखो बहू! क्यों और किस कारण सिफारिश कर रही हो, यह बताओगी तो उत्तर दूंगा।'

'मैंने कमला की बुद्धि की परीक्षा की है और इस परिणाम पर पहुंची हूं कि उसकी बुद्धि वनिता की अपेक्षा अति श्रेष्ठ है। मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसके सम्मुख एक प्रस्ताव रखा है। वह यह कि इसी क्षण वह अपने भाई से सम्बन्ध-विच्छेद कर ले। जो भूषण वह पहनकर आई है वह माया भाभी के हाथ लौटा दे। उसका विवाह इसी समय बुद्धिप्रकाश से किया जा सकता है। वह उन्नीस वर्ष की है। उसकी मां को बुलाया जा सकता है। वह अपने पिता तथा भाई से एक कौड़ी भी नहीं लेगी। यदि वह यहां विवाह चाहती है तो जीवन-भर उसका अपने माता-पिता के परिवार से सम्बन्ध-विच्छेद होगा। वह माया भाभी से बात कर रही है। भैया बुद्धिप्रकाश इस वस्त्र-भूषणों से रहित और बिना दित्त-दाज के कमला से विवाह के लिए तैयार हैं।'

मलावामल्ल इस समाधान पर सर्वथा आश्वस्त नहीं था। इस पर भी उसने समीप खड़े बुद्धिप्रकाश से पूछ लिया, 'और प्रोफेसर! तुम क्या कहते हो?'

'बाबा! यदि वह मेरे लिए भाई इत्यादि का त्याग करने के लिए तैयार है तो मैं उसे और भी अधिक पसन्द करता हूं।'

इस समय सोहनी और उसकी बहन वनिता वहां से उठकर घर से निकल गईं। वहां सब बैठे सोहनी की लड़की सुभद्रा की ओर देखने लगे। वे सब आशा कर रहे थे कि वह भी अपनी मां के पीछे-पीछे वहां से चल देगी। सुभद्रा सबके मनोभावों को समझ-कर खिलखिलाकर हंस पड़ी।

'क्यों सुभद्रा! किसलिए हंसी हो?' मलावामल्ल ने पूछ लिया।

'बाबा! मां गार्गी भाभी से पढ़ी नहीं हैं। इस कारण वह जीवन में बाजी हार जाना नहीं जानतीं। मैं तो जीवन की ऊंच-नीच को समझ रही हूं।'

मलावामल्ल के मुख से अकस्मात् निकल गया, 'सौभाग्यवती रहो बेटी! जो जीवन में हारना जानते हैं वे वास्तव में सफलता की ओर जा रहे होते हैं।'

सुभद्रा का पति एक बैरिस्टर का बेटा स्वयं बैरिस्टर था और वह घर से सब प्रकार से सम्पन्न थी।

इस पर मलावामल्ल ने कहा, 'गार्गी बेटी! तनिक देखो, दोनों ने निश्चय किया है?'

गार्गी पुनः उस कमरे में चली गई जहां कमला भाभी से राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर रही थी। उसे लौटने में दो मिनट ही लगे। वह बुद्धिप्रकाश से बोली, 'वह भी तुमसे एक शर्त कराना चाहती है।'

'क्या ?' बुद्धिप्रकाश ने पूछ लिया।

'भीतर जा सुन आओ और उससे निश्चय कर लो। मैंने उसे बताया है कि जो कुछ मैंने उससे शर्त की है वह परिवार की ओर से है। परन्तु वह अपने पति से कुछ आश्वासन चाहती है। यह तुम दोनों के परस्पर निश्चय करने की बात है। तुम दोनों समझ-समझा लो।'

बुद्धिप्रकाश कमरे में गया और सिर झुकाये चार-पांच मिनट उपरान्त बाहर निकल आया। उसने बाबा से कहा, 'बाबा ! मैं उसकी शर्त मान आया हूं।'

'क्या मान आये हो ?'

'यही कि मैं कालेज छोड़ बाबा के और भाई के साथ दुकान करूंगा।'

घर के सब प्राणी यह चाहते तो थे परन्तु सब विस्मय करते थे कि कमला ने किस प्रयोजन से यह प्रस्ताव किया है। इस पर गार्गी ने कहा, 'वह कहती है कि जब वह अपने मायके वालों का धन छोड़ रही है तो इस पढ़े-लिखे निखट्टू को कुछ कमाने का यत्न करना चाहिये। मास्टर तथा प्रोफेसर तो मस्जिद के चूहे की भांति दुबले-पतले, भीतर धंसी आंखों वाले ही होते हैं।'

'और तुम मान आये हो ?' मलावामल्ल ने पूछ लिया।

'न मानता तो क्या करता ? इतनी सुन्दर, समझदार और भाभी की परीक्षा में उत्तीर्ण पत्नी मिले तो न कैसे कर सकता था?'

सब हंसने लगे। बाबा ने गार्गी को कहा, 'अब जाओ, उनको भी यहीं ले आओ।'

गार्गी गई और कमला को बाहर लाने में उसे दस मिनट लगे। कमला तो सौदामिनी के पीछे बैठ गई, परन्तु माया खड़ी रही और बोली, 'मैं लड़की को आपके हवाले कर रही हूं। यह अपने भूषण-वस्त्र उतार अपने भाई को वापस भेज रही है। इसी कारण हमें देरी लगी। अब मैं इसके यहां रह जाने की सूचना इसके भाई और मां को देने जा रही हूं।'

'इसकी मां को तो हम बुला रहे हैं।' सन्तराम ने कहा।

'ठीक है। बुलाइये। इस पर भी सूचना मुझे ही भेजनी चाहिये।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इतना कह माया हवेली से निकल गई।

मलावामल्ल ने विश्वम्भर को कहा, 'बाईसिकल लेकर मैक्लोड रोड पर से इसकी मां को बुला लाओ। देखो, सब बात सत्य-सत्य बता देना।'

विश्वम्भर भी माया के पीछे-पीछे बाईसिकल ले भागा।

वहां रजनी, राधेलाल और रजनी की मां भगवती में किसी बात पर विवाद हो रहा था। तीनों विश्वम्भर को आया हुआ देख चुप कर गये और उसको प्रश्नभरी दृष्टि से देखने लगे।

विश्वम्भर ने भगवती को कहा, 'कमला ने अपनी माताजी को बुलाया है।'

'वह कहां है ?' राधेलाल का प्रश्न था।

'इस समय हमारे घर पर है।'

'और क्या कहती है ?'

'कह रही है कि अपना विवाह कर रही है और मां को आशीर्वाद देने के लिए वहां जाना चाहिये।'

भगवती के मस्तिष्क में वह दिन स्मरण हो आया जब विश्वम्भर की सगाई की बात रजनी से हो रही थी। वह समझ गई कि कमला भाइयों से अधिक समझदार प्रतीत होती है। वह तुरन्त बोली, 'मैं वस्त्र बदल आती हूं।'

'और विश्वम्भर ! मैं भी चलूं ?' राधेलाल ने पूछ लिया।

'हां। मैं तुम्हें अपने भाई के विवाह पर आमंत्रित करता हूं।'

'तो ठहरो। मैं भी तैयार हो जाता हूं। कुछ शकुन-सौगात भी तो ले चलनी चाहिये।' इतना कह वह अपने कमरे को भागा।

इस पर रजनी बोली, 'और मैं न चलूं ?'

'भाभी ! तुम अपनी मां से पूछ लो। वह तुमको ले चलती है तो तुम जानो और वह जाने।'

वह मां के कमरे में चली गई।

रजनी का लड़का मोहन घर पर नहीं था। वह सिनेमा देखने गया हुआ था। किसी को उसे बुलाने की याद ही नहीं आयी। अब विश्वम्भर ने सड़क पर से तांगा पकड़ा और राधेलाल तथा औरतों को तांगे में बैठा स्वयं अपनी बाईसिकल पर चल पड़ा।

तांगा घर के बाहर पहुंचा तो भाड़ा राधेलाल ने दिया और चारों वहां बैठक में जा पहुंचे, जहां परिवार के कुछ लोग बैठे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वम्भर की प्रतीक्षा कर रहे थे। वे समझ रहे थे कि भगवती इन्कार करेगी और इस प्रकार के प्रबन्ध में नही आयेगी।

[illegible] तक मलावामल्ल न अपन पुरोहित ब्रजलाल को बुलाकर यज्ञ वेदी तैयार करवा रखी थी। सात बज गये थे।

भगवती ने कमला को घर की स्त्रियों में बैठ देखा तो उसके पास जा मुस्कराते हुए पूछने लगी, 'भाई को बुलाया है अथवा नहीं ?'

'मां ! मैंने तुम्हें भी नहीं बुलाया। यह तो यहा के पुरखा की आज्ञा हुई है कि तुमको बुला लिया जाये।

'जीजाजी और जीजी किसके बुलाने पर आये हैं ?' कमला ने उनको देख पूछा।

'मुझे तो मां अपने साथ लायी है।' रजनी ने उत्तर दिया।

और राधे ने कहा, 'मुझे मेरे मित्र दूल्हे के भाई ने निमंत्रण दे बुलाया है। तुमने बिहारी भैया को बुलाया है क्या ?'

'मन नहीं किया।'

'ओह ! क्या हुआ है ?' मां ने पूछा।

'मां ! कुछ हुआ है। वह विवाह के बाद बताऊंगी। वह देखो, घर के पुरखा और पुरोहित नवग्रह पूजा आरम्भ कर रहे हैं।'

सब वेदी के चारों ओर बैठ गये। घर से चन्दन की लकड़ी की चौकियां निकाली गईं और वर-वधू को उन पर बैठाया गया। पुरोहित ने गुनगुनाते हुए मंत्र बोलने आरम्भ कर दिये। वह नगर के दो प्रकाण्ड विद्वानों लक्ष्मीचन्द और विश्वम्भर को सामने बैठा देख रहा था। इस कारण होंठों में ही मत्रों का उच्चारण कर रहा था।

पौने घण्टे मे विवाह समाप्त हुआ तो घर के लोगों ने और कुछ महल्ले के लोग, जो समाचार पर आ सके थे, लड्डू खाते हुए बधाइयां देकर विदा होने लगे।

जब महन्तराम तथा बेअन्तराम भी अपने बच्चों के साथ चले गये तो कमला की मां ने पूछा, अब ?'

मां ! अब तुम जाओ और देखो, फिर यहां मत आना। मुझे भय है कि यहां तम्हारा अनादर हो जायेगा।

और दीदी !' उसने रजनी को कहा, 'तुम समझो कि मैं अब इस संसार में नहीं रही। अब तुम तीनों जाओ।'

हवेली से बाहर निकल भगवती ने पूछा, 'रजनी ! यह तुम्हारी बहन को क्या हो गया है ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजनी ने कहा, 'मां ! इसके सिर पर काम का भूत सवार है।'

तीनों मैक्लोड रोड जाने के स्थान बिहारीलाल के साले के घर जा पहुंचे। बिहारीलाल, उसका साला और सालिहार बैठे भोजन कर रहे थे।

बिहारीलाल ने व्यंग्य के भाव में मां से पूछा, 'कर आई हो लड़की को सुसराल के लिये विदा ?'

'हां, वहां छोड़ आयी हूं। मैं तुम्हारे वहां आने की आशा कर रही थी।'

'किस काम के लिए ?'

'बहन को आशीर्वाद देने के लिये।'

'मैं यहां बैठा तुम्हारी पतोहू से विचार कर रहा था।'

'क्या विचार कर रहे थे ?'

'कि बकरे की मां कब तक खैर मनायेगी ?'

'क्या मतलब ?'

'मतलब यह कि शंकरदास की संतान अपनी आदत से नहीं बदलेगी। कमला स्वभाववश वही करेगी जो रजनी ने किया है। जैसे रजनी और उसका लड़का निश्चिन्त हो जीवन व्यतीत कर रहे हैं, वैसे ही वह भी करेगी।

'मां ! हिम्मत वाले जीते हैं। राबे की भांति झुड्डू मुख देखा करते हैं।'

राधेलाल हंस रहा था। उसके भी परिवार की एक परम्परा थी और वह निभा रहा था।

'मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। मैं भी कुछ इसी दिशा में विचार कर रही थी।' भगवनी ने कहा।

'और तुम्हारा विचार ठीक होगा। मां ! यह मानव प्रकृति है। जो अपने जीवन के लिये यत्न करता है वही सफल होता है।'

अगले दिन गुलजारीलाल भी बहन के विवाह की सूचना पा विश्वम्भर की दुकान पर आया और अभिवादन कर पूछने लगा, 'विश्वम्भर भैया ! हमारी बहन को चुरा लाये हो ?'

विश्वम्भर समीप बैठे बुद्धिप्रकाश की ओर देखने लगा। इसका अभिप्राय यह था कि वह उत्तर दे। बुद्धिप्रकाश ने उत्तर दिया, 'हां भैया ! जैसे कृष्ण रुक्मिणी को चुराकर लाये थे।'

'तो रुक्मिणी की भांति उसने आपको निमंत्रण दिया था ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हां, उसका लिखित निमंत्रण मेरे पास है।'

'मैं उससे मिलने की इच्छा कर रहा हूं।'

'परन्तु जब तक वह अपने मामा के यहां थी तब तक यह इच्छा क्यों नहीं उठी ?'

'इसमें कारण है। अब वह आपके घर में है तो इससे मिलने की इच्छा हो रही है।'

'हां, यदि रुक्मिणी के भाई का-सा व्यवहार नहीं करना। यह स्मरण रखना कि कृष्ण के पास सुदर्शन चक्र है।'

'तो घर कब जा रहे हो ?'

'एक टेलीग्राम अपने कालेज के प्रिंसिपल को भेज रहा हूं। वह सेवक के हाथ भेज चलूंगा।'

बुद्धिप्रकाश ने तार लिख पांच रुपये का नोट भगवान् को दिया और उसे 'माल' पा बड़े डाकखाने भेज दिया। साथ ही कह दिया, 'रसीद दादा को दे देना।' और फिर गुलजारीलाल से बोला, 'चलो। तुम्हें अपनी पत्नी के दर्शन करवा दूं।'

गुलजारीलाल और बुद्धिप्रकाश घर पर पहुंचे तो बैठकघर में गार्गी, सदारानी, कमला, सुभद्रा और कुछ छोटे बच्चे बैठे बातें कर रहे थे।

कमला गुलजारी को देख विस्मय में उसका मुख देखती रह गई। गुलजारीलाल ने पूछा, 'सुनाओ कमला ! प्रसन्न हो ?'

'हां भैया ! मैं अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुंच गई हूं।'

'मेरी शुभ कामना तुम्हारे लिये हैं।'

'सच भैया ?'

'हां। अपनी सौगन्ध खाकर कहता हूं।'

'वह तो पिताजी भी बार-बार खाया करते थे ?'

'मैं पिताजी का पुत्र नहीं हूं। उनका तो प्रत्येक कार्य दिखावा होता था।'

इस पर गार्गी ने हंसते हुए पूछ लिया, 'तो भैया ! आपके पिताजी का क्या नाम है ?'

'मां को पता होगा भाभी ! मैं अपने को ईश्वर का पुत्र मानता हूं। तुम आज सायंकाल तक इस ईश्वर के पुत्र की बात सुनना।

'अच्छा ! यदि बुद्धिप्रकाशजी की कृपा रही तो फिर मिलूंगा। मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूं कि बहन सुखी रहे।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कमला की आंखों में आंसू भर आए।

6

रात विश्वम्भर घर आया तो उसने सुनाया कि बिहारीलाल के साले रामनाथ ने कपड़े का गोदाम और घर के सब कमरे एक कमरा छोड़कर कोर्ट से सील करा दिए हैं।

'और ?' मलावामल्ल का प्रश्न था, 'रामनाथ की दुकान ?'

'वहां रामनाथ का बहीखाता और माल का वृत्तान्त लिखने के लिए सरकारी लेखाकार नियुक्त हो गए हैं और कल से उसका स्टाक तथा खाते देखे जाने आरम्भ होंगे।'

'यह किसने किया है ?'

'ईश्वरदास खन्ना की अर्जी पर यह हुक्म जारी हो गया है। ताले अभी लग गए हैं। गुलजारीलाल और पुलिस के सिपाही पहरा दे रहे हैं।'

कमला भी यह समाचार सुनने चली आई थी। वह बोल उठी, 'यह भांडा फूट जाएगा। मुझे पता है कि मामाजी का गोदाम और घर के नीचे का कमरा चोरी के माल से भरा पड़ा है।'

'तो तुम्हें दुःख हो रहा है ?' बाबा ने पूछ लिया।

'जी नहीं। न दुःख है न सुख है। मैं उनसे अब अलिप्त हूं। बहन गार्गी ने समझाया है कि पाप का फल कभी सुख नहीं देता।'

अगले दिन सायंकाल विश्वम्भर समाचार लाया, 'रामनाथ और बिहारीलाल चोरी के अपराध में पकड़ गए हैं। पुलिस तो कुछ ले-देकर लीपा-पोती करने वाली थी, परन्तु कचहरी से नियुक्त लेखाकार नहीं माने। एक लाख रुपये तक का प्रस्ताव किया गया था।'

'तुमको यह किसने बताया है ?'

'आजकल राधेलाल नित्य मध्याह्न के समय चाय लेने शामी की दुकान पर आता है। वह सब बता जाया करता है।'

दो दिन तक राधेलाल अमृतसर रहा और तीसरे दिन आया तो उसने मध्याह्नोपरान्त चाय-पानी लेते हुए शामी की दुकान पर विश्वम्भर को बताया, 'बिहारीलाल और रामनाथ की पचास-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
D372

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पचास हजार की जमानत उपस्थित की गई थी, परन्तु मैजिस्ट्रेट ने जमानत मंजूर नहीं की।'

'अच्छा ?' विश्वम्भर ने उत्सुकता से पूछा।

राधेलाल ने आगे कहा, 'मैं दोनों से जेल में मिलने उसके वकील उष्णाकराय को साथ लेकर गया था। वहीं बिहारीलाल ने मुझ कहा है कि ईश्वरदास से मिलकर सुलह का कोई ढंग निकालूं। मैं सायंकाल उससे मिलने जा रहा हूं।'

'और रामनाथ की पत्नी कहां है ?'

'वह हमारे घर पर रजनी की मां के पास अपने दो बच्चों के साथ रहने आ गई है।'

विश्वम्भर ने कह दिया, 'रामनाथ की बहू को हमारे घर कमला के पास आना चाहिए था।'

'वह रजनी के घर इस कारण गई है कि उससे किसी प्रकार की आर्थिक सहायता पा सकेगी।'

विश्वम्भर ने कह दिया, 'वहां से वह निराश ही होगी। जो स्त्री अपने पति को उसके ही रुपये लेने पर चोर कह सकती है, वह उसकी क्या सहायता कर सकेगी ?'

हुआ भी ऐसा ही। एक दिन माया कमला से मिलने आई तो वहां ही रह गई।

कमला के सम्बन्धियों में केवल माया ही मलावामल्ल की चाय-पार्टी पर आई थी। इस कारण कमला समझती थी कि भाभी के मन में उससे लगाव है। अतः जब वह मिलने आई तो उसने गार्गी से राय ली। गार्गी ने उसे कहा कि रजनी से कमला उसकी अधिक सेवा करेगी। इस कारण वह कमला के पास ही रह गई।

बच्चे मां के साथ नहीं आए थे। इस विषय में विश्वम्भर ने यत्न किया और अगले दिन माया की लड़की और लड़का भी मलावामल्ल की हवेली पर चले आए। राधेलाल दोनों को वहां छोड़ गया।

बुद्धिप्रकाश ने विवाह के अगले दिन ही लाहौर से अपने कालेज के प्रिंसिपल को टेलीग्राम कर दिया था कि कुछ पारिवारिक अनिवार्यताओं के कारण वह अब कालेज की सेवा करने में अपने को असमर्थ पाता है। इस कारण वह कालेज की सेवा से त्यागपत्र भेज रहा है। उसके त्यागपत्र को किसी भी शर्त पर स्वीकार कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लिया जाये।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सप्ताह में ही उसके त्यागपत्र की स्वीकृति की उसे सूचना मिल गई और उसी दिन से वह विश्वम्भर के साथ दुकान पर जाने लगा। बाबा ने उसके लिए प्रबंध कर दिया।

विश्वम्भर का अनारकली वाली दुकान पर पचास हजार लगा था। इतना ही सन्तराम का था और इतना ही मलावामल्ल का था।

अनारकली बाजार वाली दुकान अमृतसर की एजेन्सी से पृथक् कर दी गई थी। वह केवल सन्तराम की मलकीयत हो गई और लाहौर अनारकली वाली दुकान दोनों भाई और बाबा की बराबर-बराबर की साझेदारी में चलने लगी।

बुद्धिप्रकाश के पास कुछ अधिक रुपया नहीं था। उसे घर के बंटवारे में अट्ठारह हजार से कुछ ऊपर मिला था। उसमें से भी वह चार हजार के लगभग व्यय कर चुका था।

मलावामल्ल ने अपने पास से उसे पचास सहस्र देकर उसे विश्वम्भर के बराबर का भागीदार बना दिया।

बुद्धिप्रकाश विस्मय करता था कि व्यापार में किस प्रकार रुपये की वर्षा होती है। इस पर एक दिन रात भोजनोपरान्त बुद्धिप्रकाश ने विश्वम्भर से ही पूछा, 'मैं समझता था कि मैं समाज की बहुत बड़ी सेवा कर रहा हूं और समाज मुझे केवल डेढ़ सौ रुपये महीना देता था, परन्तु यहां दुकान पर तो दादा मुझे साढ़े तीन सौ रुपये देते हैं उतने ही, जितने वह स्वयं लेते हैं। परन्तु यह कहते हैं, यदि इतने से निर्वाह नहीं चलेगा तो विचार कर लेंगे।'

उत्तर गार्गी ने दिया। उसने कहा, 'मेरे पिता पूर्ण जीवन-भर पैंतीस रुपये महीना पर काम करते रहे हैं और मैंने उनको कभी भविष्य की चिन्ता करते नहीं देखा।

'जिस दिन माताजी इस घर के बाबा के सामने मेरे विवाह की बात मानकर गई थीं रात-भर वह सो नहीं सकी थीं। वह चिन्ता करती रही थीं कि विवाह कैसे हो सकेगा ?

'परन्तु पिताजी निश्चिन्त हो समय पर सोए थे और प्रातः चार बजे उठकर अपने स्वाध्याय कक्ष में जा बैठे थे। प्रातः माताजी उनींदी आंखों को मलती हुई उनके पठन कक्ष में आईं और पूछने लगीं, आपको गार्गी के विवाह की चिन्ता नहीं। खूब गहरी छान-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर सोए प्रतीत होते हैं।

'उस समय पिताजी मुझे पढ़ाया करते थे। इस कारण मेरे सामने ही उन्होंने माताजी से कहा, तुम तो व्यर्थ में चिन्ता कर रही हो। जो गार्गी के भाग्य में होगा वह हो जाएगा।

'उसी दिन यहां के पुरोहितजी आए और ग्यारह-बारह हजार व्यय कर मेरा विवाह बाबा के पौत्र से शोभासहित सम्पन्न कर गए।

'भैया! परमात्मा सत्य हृदय वालों का सहायक होता है।'

बुद्धिप्रकाश ने कहा, यह सब मुझे मालूम है। उसी रात यहां भी चर्चा हुई थी और बाबा ने पण्डित बृजलाल द्वारा प्रबन्ध करने की आज्ञा दे दी थी।

'परन्तु मैं समझता हूं कि समाज, विशेष रूप में हिन्दू समाज, महापतित है। बाबा समान विरले ही इस संसार में हैं। उन्होंने मुझे भी तो पचास हजार गिफ्ट में दे दिए हैं।'

'भैया! यह आपका कमला के गुण पहचानने से प्रभावित हो बाबा ने किया है, अन्यथा ये दान-दक्षिणा सौ-दो सौ से अधिक नहीं देते।'

मलावामल्ल हंस पड़ा, 'गार्गी! यह चाटुकारों का कार्य कब से करने लगी हो?' उसने हंसते हुए पूछ लिया।

'बाबा! जब से इस घर में आई हूं। यहां भी तो चाटुकारी होती है। वह भगवान् की होती है।'

सब गार्गी के मतर्क उत्तर पर हंसने लगे।

रामनाथ और बिहारीलाल को दो वर्ष के मुकद्दमे के उपरान्त सात-सात वर्ष का कठोर दण्ड मिला। उष्णाकराय ने सेशन कोर्ट और फिर हाईकोर्ट में अपील की, परन्तु ईश्वरदास ने मुकद्दमा इतना सुदृढ़ आधारों पर खड़ा किया था कि हाईकोर्ट भी दण्ड कम करने के लिए नहीं माना।

इस मुकद्दमे में दो वर्ष लग गए और तब तक माया तथा उसके बच्चे मलावामल्ल के घर पर रहते रहे।

मुकद्दमा समाप्त हो चुका था। माया का पति दण्ड भोग रहा था कि एक दिन कमला ने उससे पूछ लिया, 'कभी भैया का सुख-समाचार लेने नहीं जाती?'

माया का कहना था, 'जिस राह नहीं जाना उसके विषय में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पूछना व्यर्थ है।'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन दिनों उस परिवार में से केवल राधेलाल कभी-कभी माया से मिलने आता था और बच्चों को कुछ नकद, कभी मिठाई दे जाया करता था। ऐसे ही एक दिन जब वह आया तो माया ने पूछ लिया, भैया ! यह बच्चों को तुम मिठाई खिला-खिलाकर बिगाड़ रहे हो।'

'भाभी !' राधेलाल का कहना था, 'तुम्हारी बात मन को कहूंगा। यदि वह मान गया तो फिर यहां नहीं आऊंगा।'

परन्तु वह आने से रुका नहीं। कभी-कभी विश्वम्भर के साथ शामदास की दुकान पर चाय पीने जाता तो एक सेर मिठाई डिब्बे में बन्द करा माया के बच्चों को दे जाता था।

जब इस बात की खबर कि राधेलाल माया के बच्चों से मिलने जाया करता है, रजनी को मिली तो उसने पूछ लिया, 'आप माया से मिलने गए थे ?'

'हां।'

'क्यों ?'

'वह तुमसे विलक्षण प्रतीत हुई है।'

'क्या विलक्षणता देखी है उसमें ?'

'यह बताऊंगा नहीं। तुम फिर लड़ना आरम्भ कर दोगी। तुम हो तीन—मां, बेटी और पुत्र। मैं हूं अकेला। इस कारण तुमसे डरता हूं।'

'तो हम आपका कुछ बिगाड़ सकते है क्या ?'

'कुछ भी कर सकती हो। तुमको कौन रोक सकता है ?'

'मैं हत्यारी नहीं हू।'

'देखो रजनी ! हत्या करना तो साधारण बात है। तुम उससे भी अधिक कर सकती हो। मेरी आत्मा को, जिसे मैं बहुत कठिनाई से सीधे मार्ग पर लाया हूं, तुम फिर उलट सकती हो यह हत्या से भी घोर कर्म है। जीवात्मा इन अच्छे-बुरे सस्कारों से ही जन्म-जन्मान्तर तक सुख-दुःख भोगता है। हत्या तो एक जन्म की करोगी, परन्तु संस्कार बिगड़े तो फिर कई जन्म तक नरक में भटकना पड़ेगा।'

'बहुत दुष्ट हैं आप ! मेरा आपसे न जाने किस पापकर्म के फलस्वरूप विवाह हो गया है। मुझे एक ज्योतिषी ने बताया है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके परिवार के दूषित धन ने ही हमारे परिवार का सर्वनाश किया है।'

'ओह !' राधेलाल के मुख से निकल गया, 'परन्तु श्रीमतीजी ! क्या मैंने ही तुम्हारे पिताजी से कहा था कि तुम्हारे द्वारा मुझे प्रेरणा दें कि मैं पिताजी की दुकान से चोरी कर उनकी तिजोरी भरूं ?'

'कोई किसी के कहने पर कुछ नहीं करता। सब अपनी इच्छा से करते हैं। भला आजकल आप मुझे अढ़ाई सौ रुपये मासिक किस बात का देते हैं ?'

राधेलाल मलावामल्ल के कहने पर अपनी पत्नी को अढ़ाई सौ प्रति मास दे रहा था। जब रजनी ने उसे मासिक खर्चा देने की बात कही तो अकस्मात उसके मुख से निकल गया, 'वह तो तुम्हारी रात के समय सेवाओं का प्रतिकार देता हूं।'

'तो मैं वेश्या हूं ?' इतना कह रजनी क्रोध में पागल हो रसोई-घर को भागी और वहां से साग-भाजी काटने की छुरी उठा लाई।

राधेलाल उसे छुरी ताने अपनी ओर लपकते देख दो पग पीछे हट उसके छुरी वाले हाथ को पकड़ने में सफल हो गया। उसने छुरी छीन ली और फिर घर से बाहर निकल गया।

सड़क के किनारे फुटपाथ पर खड़ा हो वह विचारने लगा कि यह क्या हो गया है और क्यों ?

उसे समझ आया कि रजनी के मन में ईर्ष्या भड़की है और यह रात को सोये-सोये उसकी हत्या भी कर सकती है। इस कारण मन में कुछ निर्णय कर वह अनारकली बाजार में विश्वम्भर से मिलने चल पड़ा।

विश्वम्भर कुछ ग्राहकों से बात कर रहा था। उसने राधेलाल को उस समय आते देखा तो विस्मित रह गया। राधेलाल ने कह दिया, 'भैया ! खाली हो जाओ, तब बात करूंगा।'

विश्वम्भर खाली उस समय ही हुआ जब बुद्धिप्रकाश दुकान पर आ पहुंचा। वह भी राधेलाल को दुकान पर बैठ देख विस्मय में पूछने लगा, 'राधे भैया ! क्या हो रहा है यहां ?'

'विश्वम्भर से काम था।'

'मुझसे कुछ काम है ?' विश्वम्भर ने पूछ लिया।

'हां,'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तो बताओ । अब मैं खाली हूं ।'

'शामी की दुकान पर चलकर ।'

'पर वहां का तो अभी समय नहीं हुआ ?'

'आज रजनी ने नाश्ता खाने को नहीं दिया ।'

'ओह ! तब तो सहानुभूतिस्वरूप चलना चाहिए ।'

दोनों दुकान से निकल शामदास की दुकान पर जा पहुंचे।

वहां लस्सी और पूरी की आज्ञा दे विश्वम्भर प्रश्नभरी दृष्टि में मित्र की ओर देखने लगा। राधे ने पूर्ण वार्तालाप, जो रजनी से हुआ था, बताकर कहा, 'मैं समझता हूं कि उसके लिए कुछ भी सम्भव है। वह पति पर चोरी का मुकद्दमा कर सकती है तो उसकी हत्या भी कर सकती है।'

विश्वम्भर ने कुछ विचारकर पूछा, 'तो क्या विचार किया है ?'

'मैं चाहता हूं कि पृथक् मकान लेकर रहने लगूं। अब तो आपके पिताजी की कृपा से हजार-बारह सौ रुपये महीने की आय हो जाती है।'

'और मकान में अकेले रहोगे ?'

'हरिद्वार से मां का पत्र आया है। वह लाहौर आकर रहना चाहती है।'

'परन्तु उसके विषय में भी तो कुछ कल्पना करते थे ?'

'हां। गोपू मर चुका है। वह एक चतुर चोर था। सुना है, अपने पीछे एक धनी विधवा छोड़ गया है।'

'ओह !' विश्वम्भरनाथ मित्र का मुख देखता रह गया। इस पर राधे ने कहा, 'मां के आने पर पिताजी भी लाहौर में रहने चले आएंगे। हम दोनों के पास कुछ पूंजी भी हो गई है। यदि वह चाहेंगे तो कुछ स्वतन्त्र व्यापार भी कर सकते हैं।'

'देख लो। गार्गी के पिताजी का कहना है कि गोपू के धन ने ही आपका दिवाला निकलवाया था।'

राधेलाल हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, 'ब्राह्मण देवताओं की सब बातें मानने वाली नहीं होतीं। मुझे शंकरदास की मनोवृत्ति और गोपू के धन में कोई सम्बन्ध प्रतीत नहीं होता।'

'तब ठीक है। हमारा एक मकान रेलवे रोड पर राम गली में है। वह आजकल खाली है। बाबा ने उसको माया के बच्चों के नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया हुआ है। कहो तो उससे कहकर उस मकान की चाबी ले दूं ?'

'क्या भाड़ा है उस मकान का ?'

'तीस रुपये महीना।'

'तो भैया ! पूछ दो। मैं रात अपने घर नहीं जाना चाहता।'

'तो अभी घर जाकर पूछना पड़ेगा ?'

'यह एक मित्र के लिए कर दो। मैं तब तक बाजार में कुछ काम करने का यत्न करूंगा। फिर एक बजे यहीं मिलूंगा।'

'मकान की चाबी माया के पास है और वह देगी अथवा नहीं, कह नहीं सकता। मुझे भय है कि तुम्हारी माता और पिता की बात सुन वह मकान देने से इनकार न कर दे।'

'भैया ! मध्याह्न तक बता सकोगे तो ठीक है, अन्यथा कुछ अन्य प्रबन्ध करना पड़ेगा।'

विश्वम्भर वहां से ही घर चला गया और फिर बारह बजे लौटा। राधेलाल एक बजे उसकी दुकान पर आया तो विश्वम्भर ने बताया, 'मैं अभी घर से आया हूं। एक घण्टा लगा है माया भाभी को मनाने में।'

'वह क्या कहती है ?'

'आपके माता-पिता का मुख देखना नहीं चाहती थी।'

'तो न देखे। उसे वहां आने की आवश्यकता ही क्या है ? मैं मकान का भाड़ा स्वयं उसको पहुंचा आया करूंगा।'

'यही कहकर बाबा ने उसे समझाया है। उनके समझाने में ही एक घण्टा लगा है।'

'और बुद्धिप्रकाश भोजन घर से करके आता है क्या ?'

'हां, वह घर में बाबू के नाम से प्रसिद्ध हो रहा है। वह कालेज की भांति दुकान पर दस बजे आता है। डेढ़ बजे लंच लेने शामी की दुकान पर आएगा और फिर पांच बजे दुकान से छुट्टी कर बीवी को ले 'लौरैन्स गार्डन' में घूमने चला जाएगा।'

'तो तुम चार बजे तक छुट्टी मना सकते हो ?'

'नहीं राधेलाल ! घर पर उस समय गार्गी घुसने नहीं देती। वह उसके प्राइवेट स्कूल का समय होता है। आजकल कुछ मुहल्ले की लड़कियां भी पढ़ने आने लगी हैं। उसको पढ़ाते देख बाबा को भी प्रसन्नता होती है। गार्गी भी अपनी दिनचर्या से प्रसन्न रहती है। यह दिनचर्या केवल तब बदलती है जब गार्गी के प्रसन्न होना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है। अब वह चौथा बच्चा पैदा करने वाली है। दो लड़के और एक लड़की पहले हो चुके हैं।

'भैया ! तुम भाग्यशाली हो।'

'हां। मैं भी ऐसा ही समझता हूं।'

विश्वम्भर राधलाल को साथ लेकर राम गली मकान बताने चला गया।

7

इस मकान के लेने का परिणाम यह हुआ कि माया के बच्चे इस मकान में आने-जाने लगे। कभी-कभी माया भी बच्चों को छोड़ने अथवा लेने यहां आ जाती थी।

राधेलाल के पिता ने अपना जालन्धर वाला मकान छोड़ा नहीं। उसकी सुहागिन को राधेलाल की संगत पसन्द नहीं थी। वैसे जब कभी वह लाहौर आता तो रात वह राधे के मकान में ही सोता था।

एक दिन वह आया तो उसने देखा, राधे घर पर नहीं है। घर पर माया ही थी। उसके बच्चे गार्गी से पढ़ने विश्वम्भर की हवेली में गये हुए थे।

गिरधारीलाल ने दरवाजा खटखटाया तो माया ने खिड़की में से देखा और नीचे आ बोली, 'राधेलाल घर पर नहीं है।'

'और बीबी रानी ! तुम जो हो। मैं सायं चार बजे तक आराम करना चाहता हूं। राधे कब तक आयेगा ?'

'आज वे अमृतसर में ही रहेंगे।'

'मैं भी पांच बजे की गाड़ी से वहां जाने वाला हूं।'

'तब ठीक है। आइये, मैं आपको एक कमरा खोल देती हूं।'

सीढ़ियां चढ़ते हुए गिरधारीलाल ने पूछा, 'तुम यहां कब से हो ?'

'पन्द्रह-सोलह दिन हो गये हैं।'

'तब ठीक है।' गिरधारीलाल ने व्यंग्यात्मक हंसी हंसते हुए कहा, 'ईश्वर करे तुम सुखी रहो।' उसने कहा और कमरा खुल जाने पर भीतर जाकर आराम करने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधेलाल उसी दिन तीन बजे आ गया। लड़के के कमरे में आने पर गिरधारीलाल ने कह दिया, 'देखो, सावधान रहना चाहिये।'

'किससे पिताजी ?'

'इस रामनाथ की बीवी से। व्यर्थ में बदनामी होगी।'

'पिताजी ! झूठा दिवाला निकालने से भी अधिक ?'

'हां। वह व्यापार था और यह दुराचार है।'

'पर पिताजी ! यहां यह बात नहीं है। भाभी मां के समान है। मैं उसका मां के समान ही आदर करता हूं।'

'यह तुम जानो। मैंने—।'

इस समय माया पिता-पुत्र के लिये चाय बनाकर ले आई। चाय के साथ लड्डू थे।

उसे देखते ही गिरधारीलाल ने बात का विषय बदल दिया, 'तो क्या बच्चे भी आ गये हैं ?'

'हां मौसाजी ! वह रसोईघर में नाश्ता ले रहे हैं।'

माया गई तो गिरधारीलाल ने कह दिया, 'अच्छी-खासी सुन्दर निकल आई है। बचपन में तो बलूंगड़ी-सी प्रतीत होती थी।'

राधे ने पिता की बात का उत्तर नहीं दिया और कह दिया, 'अब आपने कभी यहां ठहरना अथवा रहना हो तो अपनी सुहागिन को साथ लेकर आया करिए।'

गिरधारीलाल हंस पड़ा और बोला, 'तुम्हारी खेती में मुख नहीं डालूंगा।'

'कुछ भी हो। मैं आपको सचेत कर रहा हूं अन्यथा मकान का द्वार नहीं खुलेगा।'

गिरधारीलाल मुस्कराता हुआ चुप रहा।

रात माया ने कह दिया, 'यदि आपके पिता ने इस घर में आना है तो मैं कल बाबा के मकान में चली जाऊंगी।'

'क्यों ? उन्होंने कुछ कहा है ?'

'मैंने आप दोनों की सब बातें सुन ली हैं। गुल्लू के पिता चोर अवश्य हैं, परन्तु वे औरत बेचने वाले नहीं हैं।'

'परन्तु भाभी ! यहां कौन है तुमको खरीदने वाला ?'

'मैं तुम्हें नहीं कह रही। तुम पर तो विश्वास करती हूं, परन्तु तुम्हारे पिता की नियत को मैं समझ गई हूं। हमारे पवित्र सम्बन्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में वह विष घोल देंगे।

'गार्गी ने एक दिन लाला शंकरदास की बात बताई थी। जब शंकरदास विश्वम्भर दादा को अपना दामाद नहीं बना सका तो फिर बिरादरी में उसकी निन्दा करने लगा था। यही कि वह आवारा हो गया है, वह दसवीं श्रेणी भी पास नहीं कर सका।'

'हां। मुझे सब ज्ञात है।' राधेलाल का कहना था।

माया ने आगे कहा, 'मुझे भय है कि यही बात आपके पिता करने लगेंगे। वह अपने विचारों में सफल न होने पर मुझे और आपको भी आवारा कहने लगेंगे।'

इस सम्भावना पर राधेलाल ने ध्यान ही नहीं दिया था। माया को परेशान देख वह बोला, 'मुझे विश्वम्भर ने शंकरदास की बात बताई थी, परन्तु उसके बाबा ने इस बीमारी का इलाज दूसरा बताया था और विश्वम्भर कहता है कि बाबा का इलाज सफल हुआ था।

'बाबा कहते थे, कुत्ते भौंका करते हैं, परन्तु काफिले चलने से रुकते नहीं। और भाभी! विश्वम्भर का काफिला शान से चलता जा रहा है। इस समय वह लखपति है, तीन सुन्दर बच्चों का पिता है और एक सुन्दर विदूषी पत्नी का पति है।'

माया बात को समझ गई और बोली, 'ठीक है। यह तरकीब तो निन्दा की अवेहलना करने की है, परन्तु मैं तो उनके इस मकान में द्वार बंद करने के विषय में कह रही हूं। मैं यहां तब रह सकती हूं जब तुम्हारे पिता यहां रहने से वर्जित कर दिये जायेंगे।'

'भाभी! कर दिये जायेंगे और कभी मेरी अनुपस्थिति में आयें तो द्वार मत खोलना।'

माया इस रामगली वाले मकान में आई इसी शर्त पर थी कि वह भाभी बनकर ही रहेगी। राधेलाल का स्पष्ट कहना था कि बड़ी भाभी मां तुल्य होती है।

माया ने भी बच्चों का सिर पर कोई संरक्षक पाने के लोभ में इस मकान में आना स्वीकार किया था और राधे ने घर में बच्चों के चहल-पहल की आकांक्षा करते हुए माया को इस खुले हवादार और प्रकाशयुक्त मकान में आने का निमंत्रण दे दिया था।

इस घटना की चर्चा भी बाबा के मकान पर हुई। विश्वम्भर को राधे ने घटना का वृत्तान्त बताया तो विश्वम्भर ने एक रात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सबके सम्मुख यह बात बता दी।

मलावामल्ल हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, 'विस्मय है कि गिर-धारीलाल जैसे बूढ़े व्यक्ति को भी यह काम-वासना कष्ट देती है। मैं समझता हूं कि इस समय वह अवश्य पचपन-छप्पन वर्ष का होगा।'

विश्वम्भर ने बताया, 'मैंने राधेलाल से उसके पिता की आयु पूछी थी। उसने बताया था कि उनका जन्म सन् १८५८ का है। वह स्वयं बताया करता था कि जब अभी लाहौर में अंग्रेजी सेना के पूर्वियों को, सन् सत्तावन के गदर करने वालों को, तोपों के आगे भूना जा रहा था, तब उसका जन्म हुआ था। यह उसकी मां ने उसे प्रसव से कई वर्ष उपरान्त बताया था। उसकी मां का कहना था कि तोपों के धमाके ने उसका प्रसव सहज ही कर दिया था।'

गार्गी ने कहा, 'बाबा! वासना मन का गुण है, शरीर का गुण नहीं। शरीर आयु के साथ बूढ़ा और जीर्ण होता है, परन्तु मन तो आयु की वृद्धि के साथ-साथ तीक्ष्ण होता जाता है।

'मन के दो गुण हैं। एक स्मृति और दूसरे मनन करना अर्थात् कल्पना करना।

'वासना कल्पना के अन्तर्गत है और इससे मन आयु के साथ-साथ तीक्ष्ण होता जाता है। स्मृति तो आयु की वृद्धि पर शिथिल होती है परन्तु कल्पना तेज होती है। मन की इस कल्पनाशक्ति के साथ-साथ जब बुद्धि का सहयोग होता है तो कल्पना दिशा पकड़ लेती है।

'राधे भैया के पिता का दोष यह है कि उनकी बुद्धि किसी पूर्व-जन्म के पाप के कारण विकृत हुई है और वह ही उनके मन को विकृत कल्पना करने की प्रेरणा देती है। पूर्ण दोष बुद्धि का है। इसी कारण भगवान् कृष्ण ने भगवद्गीता में कहा है, बुद्धि को सात्विक बनाने अर्थात् परमात्मा की ओर लगाने से मनुष्य का कल्याण होता है।'

इस पर मलावामल्ल को एक बात याद आ गई। उसने कहा, 'एक दिन विश्वम्भर सुना रहा था कि मोक्ष तीनों गुण सात्विक, राजसी और तामसी के अतीत होने पर प्राप्त होता है।'

'परन्तु बाबा! अतीत का अभिप्राय है इन पर अधिकार (नियंत्रण) प्राप्त करना। इनका त्याग नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सात्विक व्यक्ति तो परमात्मा में लीन हो सब प्रकार के ज्ञान का स्वामी हो जाता है परन्तु वह कर्म लोक-कल्याण के करने लगता है। लोक-कल्याण केवल भले कामों से ही सम्पन्न नहीं होता। इसके लिये कभी-कभी घोर युद्ध जैसे कर्म भी करने पड़ते हैं।'

'युद्ध भी न्याय और सर्वहिताय हो सकते हैं। इसी कारण लोक-हित में कर्म करने से मोक्ष की प्राप्ति सहज बताई है।'

सब सुनने वाले गार्गी के ज्ञान और सुलझी हुई बुद्धि पर विस्मय करते थे।

मलावामल्ल से रहा नहीं गया। उसने पूछ लिया, 'गार्गी बेटी! मैं कभी विस्मय किया करता हूं कि तुम्हारी इस छोटी-सी खोपड़ी में इतनी बड़ी बात समा कैसे जाती है?'

गार्गी ने मुस्कराते हुए कहा, 'बुद्धि तो अणु मात्र होती है। इस मेरी छोटी-सीखोपड़ी से भी सहस्रों गुणा छोटी है, परन्तु प्रकृति के अति सजीव अंश का भाग होने से यह अनेक चमत्कार करने की सामर्थ्य रखती है। परमात्मा की मनुष्य को यह एक अद्वितीय देन है।'

बुद्धिप्रकाश भी समीप बैठा गार्गी की विवेचना सुन रहा था। उसने हंसी उड़ाने के लिये पूछ लिया, 'और यह आधुनिक ज्ञान-विज्ञान किस बुद्धि की उपज है?'

गार्गी का सतर्क उत्तर था, 'राजसी बुद्धि की उपज है। राजसी बुद्धि वह होती है जो बिना परिणामों का विचार किये कर्म करने की प्रेरणा देती है।

'देखो भैया! मैं बताती हूं। इस समय यूरोप में भयंकर युद्ध हो रहा है। साठ और सत्तर-सत्तर मील के अन्तर पर से छोड़े गोले पेरिस को विनष्ट कर रहे हैं। यह वैज्ञानिकों का ही काम है। उन्होंने इतनी भयकर तोपें और गोले बनाये हैं परन्तु विचार नहीं किया था कि इनको बनाकर वे किनके हाथों में दे रहे हैं। उन्होंने ये और इसी प्रकार के अन्य आविष्कार बनाकर एक महा-दैत्य विल्हैल्म कैसर के हाथ में दे दिये है और वह सत्तर मील की दूरी से बिना जांच-पड़ताल के सबकी हत्या करा रहा है।'

'तो वैज्ञानिक, जो इन सब शस्त्रास्त्रों का आविष्कार कर रहे हैं, मूर्ख हैं?'

'मूर्ख तो नहीं कहे जा सकते,' गार्गी का कहना था, 'निर्बुद्धि अथवा दिशाविहीन बुद्धि रखने वाले कहे जा सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

'भगवद्गीता में कहा है, जो कर्म की दिशा जाने बिना कर्म की प्रेरणा दे वह राजसी बुद्धि है और मैं समझती हूं कि आधुनिक वैज्ञानिक राजसी बुद्धि रखते हैं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वे आविष्कार तो चमत्कारपूर्ण कर रहे हैं, परन्तु नहीं जानते कि उनका प्रयोग कौन और किस अर्थ कर रहा है ?'

'परन्तु वे बेचारे क्या करें ? उनके आविष्कारों का जो खर्च देता है, उसी को तो वे दिये जा सकते हैं।'

'भैया !' गार्गी ने कहा, 'यह वैज्ञानिकों का दोष नहीं है। करते वे अवश्य हैं, परन्तु समाज उनसे कराता है। किसी विद्वान ज्ञानवान को यदि समाज खाने-पहनने और उसकी बुद्धि के प्रयोग के साधन नहीं देता तो दुष्ट लोग वैज्ञानिकों को धन देकर उनका ज्ञान खरीद लेते हैं और फिर उनके आविष्कारों को अपनी इच्छा से प्रयोग करते हैं।

'इसी कारण हमारे शास्त्रों में कहा है कि विद्वानों का मान और उनको धनधान्य से सन्तुष्ट रखना चाहिए।

'वैज्ञानिक देवता कहे जाते थे और देवता इन्द्र अर्थात परमात्मा के अधीन रहते थे। इन्द्र उनके आविष्कारों का प्रयोग श्रेष्ठ कामों में ही करता था

'आजकल के वैज्ञानिक राजा-महाराजाओं और धनियों से धन पाते हैं और वे राजा-महाराजा आज के काल में दैत्य बन रहे हैं।'

इस लम्बी विवेचना पर उस रात की गोष्ठी समाप्त हुई तो रात सोने से पूर्व विश्वम्भर ने गार्गी से पूछ लिया 'तुम ग्रन्थ तो मुझसे कम पढी हो, परन्तु तुम्हारा ज्ञान मुझसे अधिक है।'

'यह जो कुछ भी है कदाचित् इस जन्म का संग्रह नहीं है। इसमें बहुत कुछ पूर्वजन्म का संचित प्रतीत होता है।'

'तभी ?' विश्वम्भर के मुख से निकल गया।

'तभी क्या ?' गार्गी ने पूछा तो विश्वम्भर ने कह दिया, 'गार्गी जी का जन्म नगर के महान पण्डित लक्ष्मीचन्द जी के घर में हुआ है।'

'मुझे भी कुछ ऐसा समझ आ रहा है। पूर्वजन्म के संस्कार इस जन्म में पथ-प्रदर्शन करते है। लोग पूर्वजन्म की कल्पना को ढकोसला कहते हैं, परन्तु यह वास्तविकता है। जीवात्मा पर संस्कारों का बहुत गहरा प्रभाव होता है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

8

मलावामल्ल नब्बे वर्ष की वयस प्राप्त कर चुका था, जब रामनाथ और बिहारीलाल जेल से छूटे। दोनों एक ही दिन पकड़े गये थे और एक ही दिन छूटे थे।

लाहौर की सेण्ट्रल जेल से दोनों को एक ही दिन और समय पर मुक्त किया गया। जेल से बाहर निकल रामनाथ बिहारीलाल का मुख देखने लगा। रामनाथ ने ही बात की, 'बिहारीलाल ! क्या सोच रहे हो ?'

'यही कि भविष्य में हमारा मार्ग क्या होगा ?'

'किस मार्ग पर चलने का विचार कर रहे हो ?'

'वही जो अपने बड़ों का मार्ग है। हां, छः वर्ष तक जेल में रहकर अपनी असफलता का कारण मैं जान आया हूं।'

'किनसे ?'

'जेल के साथियों से।'

'जो स्वयं पकड़े जाकर जेल भोग रहे हैं ?' रामनाथ हंस पड़ा और बिहारीलाल को वहीं जेल के द्वार पर खड़ा छोड़ अपने घर को पैदल ही चल पड़ा।

जब तक रामनाथ जेल में रहा था, न तो कभी उसकी पत्नी, न ही अन्य कोई भाई-बन्धु मिलने आया था। इससे वह विस्मय कर रहा था कि उसकी पत्नी और बच्चे जीवित भी हैं अथवा नहीं ? यदि जीवित हैं तो कहां हैं ? उसे इतना ज्ञात हो चुका था कि बिहारीलाल का भाई गुलजारीलाल एक सम्पन्न व्यक्ति है। उसने विवाह कर लिया है और इस समय तक दो बच्चों का बाप है। यह सूचना उसे जेल में आये एक नये पंछी से मिली थी।

इस कारण गुलजारीलाल से ही पता करने वह चल पड़ा। वह जेल से बाहर किया गया था प्रातः सात बजे और वह वहां से पैदल चलता हुआ दो घंटे में लाहौर बजाजे में गुलजारीलाल की दुकान के बाहर जा पहुंचा। गुलजारीलाल पिता वाली दुकान खोल अभी गद्दी पर बैठा ही था कि रामनाथ अपने फटे-पुराने कपड़ों में दुकान के बाहर आ खड़ा हुआ। उसे देख गुलजारीलाल विस्मित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रह गया।

रामनाथ समझा कि गुलजारीलाल ने पहिचाना नहीं। बोला, 'भैया! मैं रामनाथ हूं।'

'वह तो देख रहा हूं, परन्तु तुम्हारा साथी कहां है?'

'वह जेल के बाहर मिला था और कह रहा था कि उसको ज्ञान हो रहा है और वह ज्ञान के मार्ग पर जा रहा है।

'मैं उसका मार्ग ठीक न समझ तुमसे सहायता मांगने आया हूं।'

'हां बताओ, क्या सहायता चाहते हो?'

'अभी तो यह बताओ कि माया और उसके बच्चे जीवित हैं अथवा नहीं?'

'जीवित हैं। उनसे मिलना चाहते हो तो वह इस समय राम गली नम्बर दस में तीस नम्बर के मकान में मुख काला कर रही है।'

'क्या मतलब?'

'यह वहां जाकर पता चल जायेगा।'

इस प्रकार मकान ढूंढ़ता हुआ रामनाथ माया के द्वार पर जा खड़ा हुआ। राधेलाल अमृतसर गया हुआ था। मकान का द्वार खुला हुआ था। दिन के ग्यारह बज रहे थे। कामिनी और संतोष, उसकी लड़की और लड़का किताब बगल में दबाये हुए गार्गी की पाठशाला में पढ़ने निकले तो ऊपर खिड़की में से बच्चों को जाते हुए माया देखने लगी। माया की दृष्टि एक फटे-पुराने कपड़ों में, घनी मूंछ दाढ़ी वाले व्यक्ति पर जा पड़ी जो बच्चों को जाते हुए लालसा-भरी दृष्टि से देख रहा था। वह पहचान गई और स्तब्ध रह गई। वह विचार कर रही थी कि अपने विवाहित के प्रति उसका व्यवहार कैसा होना चाहिये वह निर्णय नहीं कर सकी और वहां खिड़की में ही खड़ी रह गई।

एक बार रामनाथ ने ऊपर देखा और खिड़की में पत्नी को खड़े देख खुले द्वार से मकान में ऊपर की मंजिल पर चढ़ गया।

माया उसे मकान में प्रवेश करते और सीढ़ियों पर चढ़ते समझ सीढ़ियों के ऊपर खड़ी प्रतीक्षा करने लगी।

रामनाथ जेल के जीवन से कुछ दुर्बल ही हुआ था और उस फुर्ती से सीढ़ियां नहीं चढ़ सका था जैसे वह पहले चढ़ा-उतरा करता था।

वह पत्नी के सामने आ खड़ा हुआ तो माया ने पूछ लिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

'यहां किसलिये आये हैं ?'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अपनी पत्नी को मुख काला कर रही देखने के लिये।'

'ओह !' माया को क्रोध चढ़ने लगा। उसने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा, 'ठहरिये ! दर्पण दिखाती हूं और देखें किसका मुख काला और गोरा है।'

वह उसे वहीं छोड़ भीतर गयी और राधेलाल के हजामत बनाने का दर्पण ला पति के मुख के सामने कर बोली, 'बताइये ! किसका काला है ? एक चोर का अथवा एक सतीन्साध्वी का ?'

'मेरे मुख पर तो दाढ़ी-मूंछ से रंग काला हो रहा है, परन्तु इस मकान की शान-शौकत देख तो तुम्हारा रंग मटियाला पड़ रहा प्रतीत होता है।'

माया को समझ आयी कि वहां तकरार करने से भीतर ले जाकर बैठकर बात करनी ठीक रहेगी। इस कारण बोली, 'आपमें दृष्टिदोष भी उत्पन्न हो गया प्रतीत होता है। आइये, आराम से बैठकर बात की जा सकती है।'

यही तो रामनाथ चाहता था। वह चुपचाप पत्नी के पीछे मकान के बैठकघर में जा पहुंचा। वहां उसे कुर्सी पर बैठा माया ने बात ढंग से करने के लिये पूछ लिया, 'यहां का पता किसने बताया है ?'

'गुलजारीलाल ने। वह कहता था कि तुम यहां बैठी मुख काला कर रही हो।'

'यह आप स्वयं समझ सकते हैं। मुझे यह बताइये कि मुझे ढूंढ़ते हुए आप किसलिये आये हैं ? चोरी कर पकड़े जाते समय तो आपको मेरी सुध नहीं थी। बच्चों का ध्यान भी नहीं था कि उनका भविष्य कैसा चलेगा।'

रामनाथ जानता था कि जब उसके मकान को ताले लगे थे तो बच्चों का न उसने कुछ प्रबन्ध किया था न अदालत ने। यह समझा गया था कि एक धनी दुकानदार के बच्चे पर्याप्त रखते हैं। रामनाथ तो जानता था कि उसके पास कुछ नहीं था। इस कारण वह आंख झुकाये बैठा रहा।

इस पर माया ने आगे कहा, 'मैं यहां लाला गिरधारीलाल के लड़के राधेलाल के पास उसकी भाभी बन रहती हूं।'

'यह सब ढोंग है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

'हो सकता है, परन्तु प्रश्न तो यह है कि आपको इससे क्या ? आपका मुझसे क्या सम्बन्ध है ?'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'बच्चों के बाप होने का।'

'तो जाइये, अपने रहने का स्थान बनाइये। यदि बच्चे जाते हैं तो उनको साथ ले जाइयेगा। परन्तु अभी तो आपके अपने रहने का साधन नहीं है।'

'वह राधेलाल कहां है ?'

'अमृतसर काम से गया है।'

'तो अभी वह सन्तराम की एजेंसी में काम करता है ?'

'हां, मिलों वाले उनकी एजेंसी के काम से सन्तुष्ट हैं और सन्तराम राधे भैया के काम से सन्तुष्ट हैं।

'कितना जमा' कर लिया है उसने अब तक ?'

'मैंने कभी पूछा नहीं। उसने भी बताने की आवश्यकता नहीं समझी।'

'तो घर का खर्चा कैसे चलता है ?'

'वह अढ़ाई सौ रुपये महीना देता है। उसमें से भी काफी कुछ बच जाता है।'

'तो ऐसा करो। मुझे राधे की यहां पर प्रतीक्षा करने दो।'

'हां ! यदि शरारत नहीं करनी तो !'

'नहीं करूंगा। कान को हाथ लगाकर कहता हूं।'

माया मुस्कराई और बोली, 'तो इधर आइये।' उसने गुसलखाने का मार्ग दिखा दिया।

गुसलखाने में हजामत इत्यादि का सामान रखा था। इस कारण आधे घंटे उपरान्त रामनाथ अद्दे की भांति साफ मुख कर गुसलखाने से बाहर निकला। उसने राधेलाल के कपड़े पहने हुए थे। राधेलाल ऊंचाई में रामनाथ से अधिक, परन्तु शरीर में दुर्बल था। इससे कुर्ते और पाजामे में विचित्र सूरत बन रही थी। उसकी ओर देख एक बार तो माया की भी मुस्कराहट निकल आयी।

उसने भोजन तैयार किया तो रामनाथ ने खाया। माया स्वयं तो बच्चों के साथ खा चुकी थी।

रामनाथ खाना खा आराम करने लगा तो उसे नींद आ गयी।

सायंकाल राधेलाल आया तो माया ने अपना उससे हुआ वार्तालाप बता दिया। माया का विचार था कि राधेलाल उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रामनाथ को तिरस्कार करने को कहेगी, परन्तु राधेलाल ने कहा, 'भाभी ! रामनाथ भैया को अभी इसी मकान में रखो और यह जानने का यत्न करो कि भविष्य में वह क्या करना चाहता है। यदि कुछ ईमानदारी का काम-धंधा करना चाहे तो मैं उसकी दूर तक सहायता कर सकूंगा।'

'परन्तु तुम क्यों करना चाहोगे ?'

'आप दोनों को सुखी देखने के लिये।'

राधेलाल को इस प्रकार उसके लिये और उसके चोर पति के लिये भी यत्न करने की बात सुन उसकी आंखों में आंसू छलक उठे। उसने गालों पर ढलक रहे आंसू पोंछते हुए कहा, 'पर भैया ! तुम क्यों करोगे ? उनके साथी के पिता ने तो तुम्हारा घोर अहित किया था ?'

'भाभी ! कोई किसी का हित-अहित नहीं करता। सब अपने-अपने कर्मफल का ही भोग करते हैं। उस घटना में मेरा भी तो दोष था और मैं उस पर पश्चात्ताप किया करता हूं।

'देखो भाभी ! एक ऐसे स्थान से जिसे मैं अब दूषित समझता हूं, मुझे अनायास ही पचास हजार मिल गया। मैं उसको व्यापार में लगाना चाहता था। बाबा ने बताया कि उस दूषित धन का अच्छा फल नहीं रहेगा। इस कारण उसका प्रयोग भले लोगों के हित के किसी कार्य में कर दूं। मैंने एक यतीमखाने में वह धन दे दिया है। इससे मन का बोझा हल्का प्रतीत होता है। वैसे मेरी नेक कमाई में भी उन्नति हो रही है।'

'तो फिर ?'

'भैया को अवसर दो कि वह समाज में किसी प्रकार का उपयोगी कार्य करने में लग सकें। यदि यह हो सके तो ईश्वर का धन्यवाद करो और शेष जीवन तथा बच्चों के भविष्य में सुधार कर सकोगी।'

इस पर माया साथ के कमरे में गई और रामनाथ को लेकर बाहर बैठक में आ गई। राधेलाल ने बिहारीलाल के विषय में पूछा तो रामनाथ ने बताया कि वह उसे जेल के फाटक पर छोड़ आया है। वह कह रहा था कि उसके ढंग में दोष था और वह अब अपने जेल के साथियों से चोरी करने का ढंग सीख आया है। इस कारण मैं उसे वहीं छोड़ गुलजारीलाल से मिलने चल पड़ा था। उसने ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां क्या बनता है।

'तब ठीक है। आप अभी कुछ दिन तक यहीं रहिए। मैं तब करूंगा कि आपको किसी काम पर लगवा दूं।'

रामनाथ अभी भी पत्नी के चरित्र से सर्वथा आश्वस्त नहीं हुआ था। इस पर भी वह राधे के घर रहने में हित समझ वहां टिक गया।

जब राधे के व्यवहार का उल्लेख विश्वम्भर ने रात परिवार-गोष्ठी में किया तो मलावामल्ल ने उसकी प्रशंसा की। वैसे वह भी उस समय यही समझा था कि राधेलाल की नीयत ठीक नहीं है, जब वह माया को अपने साथ अपने मकान में ले गया था, परन्तु पीछे के व्यवहार से और अब माया के पति को अपने घर में ही रख लेने से उसके मन में जो कुछ किंचित्मात्र उसके प्रति मैल थी, वह भी धुल गई।

कमला माया से मिलने राधा के घर पर आई। वह अपने पति के साथ सायंकाल माल और क्वीन्स गार्डन पर घूमने जाया करती थी। उस दिन सैर करने के स्थान पर वह राधेलाल के घर जा पहुंची।

रामनाथ कमला को देख बहुत प्रसन्न हुआ। बातों ही बातों में बिहारीलाल की बात आई तो कमला ने बताया, 'पता चला है कि वह मां के पास जाकर रहने लगा है।'

'और वह कहां रहती है?'

'वह रजनी के घर पर रहती है।'

रामनाथ मुस्कराकर बोला, 'रजनी को सचेत कर देना चाहिए कि वह भला व्यक्ति नहीं है।'

कमला ने पूछा, परन्तु रजनी दीदी भली औरत है क्या? बताइए राधेलालजी! क्या जानते हैं उसके बारे में?'

राधेलाल ने कहा, 'मुझे उसे छोड़े हुए लगभग पांच वर्ष हो चुके हैं। मैंने तब से उसके दर्शन नहीं किए।'

रामनाथ को राधेलाल के मकान में रहते हुए तीन मास ही हुए थे कि राधेलाल ने चालीस हजार की पूंजी से अमृतसर में दरबार साहब के चौक में फुटकर बिक्री की एक दुकान करवा दी। उस दुकान में काम रामनाथ करता था और दो-तिहाई का भागीदार था। धन राधे का था और वह एक-तिहाई का भागीदार बन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गया। हिंसा-प्रतिहिंसा के विभीषण में रजनी मारी गई।

रामनाथ माया को ले अमृतसर चला गया। बच्चे राधेलाल के पास लाहौर में ही रह गए।

सप्ताह में एक-आध बार राधेलाल मलावामल्ल से मिलने जाया करता था। एक दिन वह आया तो बाबा उसे देख खिल-खिलाकर हंस पड़ा। राधेलाल ने पूछा, 'बाबा! हंसे किसलिए हैं?'

मलावामल्ल ने बताया, 'रजनी की हत्या हो गई है। उसकी मां को भी सख्त चोटें आई हैं। यह रात के अन्धेरे में किसी ने किया और वह पकड़ा नहीं गया।'

'ओह!'

'परिणाम यह हुआ है कि मोहन चौदह-पन्द्रह वर्ष का नाबालिग अकिंचन हो गया है।' बाबा ने बताया और फिर हंसने लगा।

राधे ने कहा, 'रामनाथ कहता था कि जेल से निकलते ही बिहारीलाल ने कहा था कि वह जेल से अपराध करने में कुशल हो निकला है। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने पहला ही वार बहन पर किया है।'

'तो मोहन इस अपराध में सम्मिलित नहीं?'

'बिना उसको सम्मिलित किए तो उद्देश्य की पूर्ति हो नहीं सकती थी। सुना है लड़का नित्य सिनेमा देखता है और शराब भी पीता है।'

बाबा ने कहा पुलिस जांच कर रही है और सुना है, पांच हजार पर पुलिस से सौदा हो गया है।'

अगले दिन राधेलाल अमृतसर गया तो रामनाथ को लाहौर में घटी घटना बता बोला, मैं शीघ्र ही मोहन के भी निधन की बात सुनने की आशा करने लगा हूं।'

'और वह है ही किस योग्य?' माया का प्रश्न था।

माया पुनः गर्भ धारण कर रही थी। राधे ने बताया, 'भाभी! मुझे मोहन से उतनी ही घृणा है जितनी उसकी मां से थी।'

'भया! ठीक करोगे यदि मैक्लोड रोड की ओर जाना ही बन्द कर दोगे।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

9

पुलिस की रजनी की हत्या और उसकी मां भगवती के घायल होने की रिपोर्ट यह थी कि यह किसी चोर का काम है। वह रात के अन्धेरे में आया था और मकान का माल निकाल जब वह भाग रहा तो रजनी को पता चला। इसपर चोर ने गंडासे से उसका सिर धड़ से पृथक् कर दिया।

कुछ भूषण ही चोरी हो सके थे कि रजनी की मां की नींद खुल गई। किसी ने उसके सिर पर डंडे से वार किया और वह अचेत हो गिर पड़ी। मकान में अन्धेरा था, परन्तु चोर अपना काम टार्चों से कर रहे थे।

मामला दाखिल दफ्तर कर दिया गया। कहा गया कि मुलजिम का कोई सुराग नहीं मिला।

मुकद्दमा फाइल हुए दो मास ही हुए थे कि रामनाथ को मोहन दरबार साहब से निकलता दिखाई दिया। रामनाथ ने उसका मार्ग रोक पूछ लिया, 'यहां क्या करने आये थे ?'

मोहन ने कह दिया, 'मां की हत्या पर सुखना सुखी थी कि मुकद्दमे के उपरान्त यहां अरदास कराऊंगा। इस कारण सवा सेर कड़ाह प्रसाद और एक सौ एक रुपये की अरदास की है।'

'परन्तु मोहन ! मुकद्दमे में दोषी का तो पता चला नहीं। तो अरदास किस कारण की थी ?'

'पुलिस मुझे फंसाना चाहती थी और नहीं फंसा सकी।'

'मगर इसके लिए तो तुमने पुलिस को पांच हजार दिया था।'

'कौन कहता है ?'

'बिहारीलाल ही बाजार में कुछ कहता फिर रहा था।'

'बड़ा बेईमान है। वह रुपया तो मैंने उसका नाम जांच-पड़ताल से निकलवाने के लिए दिया था। यह सब झूठी बात कही जा रही है।

'पुलिस का सन्देह उसपर होना स्वाभाविक था। उसको बचाने के लिए पुलिस उसकी पिटाई करती। मैंने उसको बचाने के लिए यह रुपया पुलिस को दिया था।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'यदि मुझपर विश्वास नहीं करते तो अपने मामा गुलजारी-लाल से पूछ लेना।' बिहारीलाल उससे कुछ रुपये की सहायता मांगता हुआ इस खर्चे की बात बता रहा था।

'पता करूंगा।'

'हां, और मायादेवी को जानते हो? वह तुम्हें बहुत याद किया करती है। तुम्हें दीदी की निशानी समझती है।'

मोहन बातों में आ गया। मद्य सेवन से बुद्धि तो उसकी मोटी हो चुकी थी, इस कारण उसे इस कथन में कुछ छल-कपट समझ नहीं आया। उसने पूछा, 'कहां रहते हो?'

'यहीं कटरे में दुकान है और ऊपर मकान है।'

अब मोहन को माया के बच्चे भी स्मरण हो आए। उसने पूछा 'कामिनी सन्तोष भी यहां है?'

'नहीं। वे लाहौर कमला के पास रहते हैं।'

'मगर मामाजी! उसके अपने भी तो बच्चे हैं?'

'हां! परन्तु कहती थी, ये जीवन के फूल हैं और इनको देखने से चित्त प्रसन्न होता है।'

इस समय तक वे मकान पर जा पहुंचे थे। रामनाथ ने माया को आवाज दी और कहा, 'देखो, कौन आया है?'

माया कमरे से निकली। वह सातवें मास के गर्भ से भारी हो रही थी। उसने मोहन को देखा तो मुस्कराकर पूछ लिया, 'यह चांद आज किधर से निकल आया है?'

चांद से आपनी तुलना की जाती सुन मोहन बहुत प्रसन्न हुआ। बैठकघर में बैठ रामनाथ ने पुलिस से जांच और अरदास की बात बता दी।

माया ने मुस्कराते हुए पूछा, 'मोहन! सवा सेर कड़ाह प्रसाद से मां की हत्या के पाप से बच जाओगे क्या?'

'पर मामी! यह कौन कहता है कि हत्या मैंने की है?'

'तो अपनी सौगन्ध खाकर कहो कि तुमको पहले पता नहीं था कि मां की हत्या होने वाली है। कहो, यदि मैं झूठ बोलूं तो मेरी भी वही दुर्दशा हो जो मां की हुई है।

मोहन कांप उठा। उसे कांपते हुए रामनाथ ने देखा तो पूछ लिया, 'तो यह सत्य है?'

'मामी जाने। मुझे। मुझे तो पता नहीं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'परन्तु तुम्हारे माथे पर पसीने की बूंद दिखाई देने लगी हैं।' रामनाथ ने कहा।

'हां, दोपहर की गर्मी से निकल आई हैं।'

माया हंस पड़ी और बोली, 'दिसम्बर के महीने में गर्मी ?'

'मामी ! तुमने डरा दिया है।'

'अथवा तुम्हारे पापकर्मों ने तुम्हें डरा दिया है ? मैं बताती हूं। एक जानकार व्यक्ति कहता है कि मैंने स्विच बंद कर दिया गया। तुम टार्च लेकर खड़े थे। जब तुमने 'लाइट' की तो किरपान से बिहारी ने बहन का गला काट दिया। वह सोई हुई ही मार डाली गई थी।

'लड़की के कमरे में आवाज सुनकर भगवती आई तो तुमने पुनः लाइट की तो इस पर बिहारी ने मां के सिर पर जोर से डण्डा मारा। उसकी हत्या उसे पसन्द नहीं थी। वह उसकी मां थी। परन्तु तुम्हारे मन में इतनी भी अपनी मां के प्रति ममता नहीं आई। तुम चुपचाप जाकर अपने वस्त्र बदल आराम से सो रहे। बिहारी तो मां को सचेत कराने का यत्न करता रहा। जब वह सचेत हुई तो उसने मां के सिर पर टकोर की। जब रक्त बन्द हुआ तो उसे सोने का बहाना करने को कह स्वयं पुलिस में रिपोर्ट करने जा पहुचा। तुमने पुलिस को पांच हजार दिया है। बताओ ! यह वृत्तान्त गलत है ?'

'किसने बताया है आपको ?' मोहन का रंग विवर्ण होने लगा था। फिर उसने पूछा, 'मामी ! यह सब झूठ किसने बताया है ?'

'जिसने यह सब नाटक देखा है। मेरा मतलब है, परमात्मा ने।'

मोहन हंस पड़ा। इस पर भी उसकी हंसी में रस नहीं था। उसकी हंसी की ध्वनि मिट्टी के लोटे में पत्थर के रिड़कने के समान थी। हंसकर मोहन ने कहा, 'यह बयान पुलिस में दे दो। मुझे बताने में क्या अर्थ है ?'

इतना कह वह उठा और मकान के नीचे उतर गया। जाते समय रामनाथ ने देखा कि उसके मुख का रंग राख की भांति काला पड़ गया था।

वह चला गया तो रामनाथ ने माया से कहा, 'तुमने व्यर्थ में उसे चिढ़ा दिया है। असल बात तो उसे बताई ही नहीं।'

'तो असल बात क्या थी ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वह यह थी कि वह मद्य-सेवन छोड़ दे। ऐसा करेगा तो उसकी बुद्धि निर्मल हो ठीक दिशा में विचार करने लगेगी।'

'मैंने भी तो इसी का यत्न किया है। परन्तु मेरा ढंग दूसरा था। मैं इसे सदमा पहुंचा शिक्षा देना चाहती हूं। गार्गी इसे 'शॉक ट्रीटमैण्ट' कहा करती है।'

रामनाथ स्वयं आठवीं श्रेणी तक पढ़ा था और वह 'शॉक ट्रीटमैण्ट' का अर्थ विचार करते हुए पूछने लगा, 'तो विश्वम्भर की बहू अंग्रेजी जानती है ? सुना था कि वह संस्कृत पढ़ी है।'

'एक दिन मैंने पूछा था, कितनी भाषायें जानती हो ? वह कहने लगी, भाषाओं की मां वेद भाषा जान लो तो किंचित्मात्र यत्न से संसार की कोई भी भाषा जानी जा सकती है। वह उर्दू, अंग्रेजी और मराठी पुस्तकें पढ़ा करती थी।'

इस वार्तालाप का विषय बदलने से हत्या की बात बन्द हुई और रामनाथ नीचे दुकान पर जा पहुंचा।

वास्तव में यह कहानी गार्गी ने ही अनुमान से कल्पित की थी। इस पर भी कहानी काफी सीमा तक सत्य थी। अन्तर केवल इस बात का था कि बिहारीलाल टेलीफोन करने नीचे सिनेमा के मैनेजर के पास आया था। वहां टेलीफोन लगा था। दूसरा अन्तर यह था कि मोहन सो नहीं रहा था परन्तु सोने का बहाना कर रहा था।

इस पर भी शेष बातें प्रत्यक्ष देखने की भांति सत्य थीं।

मोहन भयभीत वहां से तांगे पर बैठ रेलवे स्टेशन जा पहुंचा और लाहौर की गाड़ी की प्रतीक्षा करने लगा। उसकी टांगें लड़-खड़ा रही थीं। वह एक बेंच खाली देख उस पर बैठ विचार करने लगा कि यह सब रहस्य रामनाथ और उसकी पत्नी को कैसे विदित हुआ है।

गाड़ी आई और उसमें बैठ वह लाहौर जा पहुंचा। स्टेशन से तांगे में घर पहुंचा और अपने कमरे में जा बिस्तर पर लेट गया।

इस समय बिहारीलाल और भगवती बैठकघर में बैठे किसी प्रकार की गुप्त गोष्ठी कर रहे थे।

अपने कमरे में मोहन अभी भी भयभीत इस सब झूठे जीवन से बच निकलने का उपाय विचार कर रहा था। बहुत यत्न करने पर वह सो सका और रात के दस बजे जागा। उसे भूख लग रही थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसने रामी सेविका को आवाज दी और भोजन लाने के लिए कहा।

भोजन कर वह बैठकघर में पहुंचा तो मां-पुत्र नीचे सिनेमा देख ऊपर आए थे। आते ही बिहारीलाल ने पूछा, 'खूब सोए हो?'

'मामाजी! नींद बड़ी देर से आई। पहले चिन्तन करता रहा हूं।'

'क्या चिन्तन करते रहे हो?'

'भोजन के उपरान्त बताऊंगा।' मोहन घर की सेविका के सामने बताना नहीं चाहता था।

भोजन के उपरान्त वह अपने कमरे में गया तो बिहारी उसके पीछे-पीछे जा पहुंचा। वह उसकी विचार दिशा जानना चाहता था।

मोहन ने बताया, 'मैंने यह विचार किया है कि अब हमको पृथक्-पृथक् मकानों में रहना आरम्भ करना चाहिए और मुझे कुछ काम-धंधा सीखना चाहिए।'

'क्यों, यह किसलिए?'

'यह दरबार साहब के मुख्य ग्रन्थी की राय है।'

'वह क्या जानता है हमारे विषय में?'

'कुछ नहीं। इसी कारण विस्मय कर रहा हूं कि उसने यह सम्मति क्यों दी है?'

'तो ठीक है, तुम पृथक् मकान ले लो और वहां जो काम करना चाहो वह करो। हम, मेरा मतलब है मां ने और मैंने यह फैसला किया है कि हम दोनों इकट्ठे रहेंगे।'

'तो नानी मेरे साथ नहीं रहेंगी?

'मां कह रही थी कि हम दोनों को तुमसे पृथक् हो जाना चाहिए।'

'तो मामा! कहीं अपने लिए मकान देखा है?'

'मकान तो तुम्हें देखना होगा। हम तो यहां इसी मकान में ही रहेंगे।'

'कहां?' मोहन समझा नहीं था और मामा का मुख देखता रहा था।

'यह मकान और सिनेमा तो पिता के नाम है ही। पिताजी का मैं उत्तराधिकारी हूं। मां मेरे साथ रहेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तुमको दूसरे स्थान पर चला जाना चाहिए। इस मकान में मैं मां तथा अपनी पत्नी के साथ रहूंगा।'

'पर मामा! यह मकान तो मेरा है। मां की सम्पत्ति का मैं ही उत्तराधिकारी हूं।'

'नहीं। यह मकान तथा सिनेमा पिताजी का था और उनका उत्तराधिकारी मैं हूं।'

'ओह!' मोहन टुकुर-टुकुर मुख देखता रह गया। उसके लिए यह नवीन समाचार था। वह लपककर पलंग से उठा और नानी को आवाज देने लगा—'नानी मां! नानी मां!'

भगवती आई तो मोहन ने बिहारी की बात बताई। भगवती ने कहा, 'यह मकान और सिनेमा तुम्हारे नाना ने अपने लिए बनाया था। तुम्हारी मां ने झगड़ा किया और फिर भूख-हड़ताल कर दी। इस पर तुम्हारे नाना उसके गुजारे के लिए इसका किराया उसे देने लगे थे, परन्तु मकान था उनका ही।'

'पर नानी! तुमने पहले कभी बताया नहीं। आज यह सब क्यों याद आ गया है?'

'तुमने स्वयं ही पृथक् रहने का प्रबन्ध करना चाहा है। मेरे लिए तो तुम और बिहारी में अन्तर नहीं।'

मोहन नानी का मुख देखता रह गया। वह इस सब गोरख-धंधे का अर्थ नहीं समझा। उसे रजनी ने उस जायदाद की कहानी कभी बताई नहीं थी।

वह पलंग पर लेटा तो मां-पुत्र कहते हुए दूसरे कमरे में चले गए कि अब सो जाओ, कल शेष बात करेंगे।

अगले दिन बिहारी मोहन के कमरे में आया। वह समझ रहा था कि वह अभी भी सो रहा है, परन्तु वहां आकर उसे पता चला कि उसका बिस्तर खाली पड़ा है और मकान का द्वार देखने पर पता चला कि वह भी खुला है। इसका अभिप्राय: समझने का यत्न करता हुआ वह मां के कमरे में आया। उसने मोहन के लापता होने की बात बताई तो वह हंस पड़ी और कहने लगी, 'सदमे से उसका दिल हिल गया प्रतीत होता है। अब लाहौर की सड़कों पर पागल हुआ घूमता होगा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

उस रात मोहन सो नहीं सका। करवटें लेते-लेते वह तंग आ गया तो बिस्तर से उठा और रात के वस्त्रों में ही स्लीपर पहने हुए दिमाग ठण्डा करने के लिए वह मकान से निकल सड़क पर घूमने लगा। ज्यूं-ज्यूं दिसम्बर की रात की ठण्डी हवा दिमाग को लगने लगी उसे मार्ग सूझने लगा। इस पर भी वह केवल यह विचार कर सका कि किसी से राय करनी चाहिए। उसे रामनाथ और माया ही सूझे। इस कारण वह चलता हुआ पैदल ही रेल के स्टेशन पर जा पहुंचा। वहां घड़ी में प्रातः के चार बजे थे। उसने जेब में हाथ डाला तो स्लीपिंग सूट में जेब ही नहीं थी। इसपर भी उसने बिना टिकट यात्रा करने का निश्चय किया। वह स्टेशन के अन्दर चला गया। प्लेटफार्म नम्बर तीन पर अमृतसर की गाड़ी खड़ी थी। उसके एक थर्ड क्लास के डिब्बे में वह जाकर लेट रहा।

उसे नींद आ गई। अमृतसर स्टेशन पर गाड़ी झटके से खड़ी हुई तो उसकी नींद खुली। उसने प्लेटफार्म को पहचाना और गाड़ी से निकल स्टेशन के बाहर को चल पड़ा। गेट पर बाबू भी उसे कोई पागल समझ चुप कर रहा।

सात बजे वह रामनाथ के मकान का दरवाजा खटखटाने लगा। रामनाथ ने किसी को द्वार खटखटाते देखा तो नीचे आ द्वार खोल दिया। वह मोहन को नाइट गाउन में खड़ा देख विस्मित रह गया।

मोहन के मुख से अकस्मात् निकल गया, मामाजी ! 'जान के भय से घर से भाग आया हूं।'

'भय था तो थाने में जाना था। इतनी दूर आने से तो वहां जाना ठीक रहता।'

'परन्तु मामाजी ! ऊपर चलिए, सब सुनाता हूं।'

इस समय माया रसोई में चाय बनाने गई हुई थी। बैठकघर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में बैठ मोहन ने बिहारीलाल और उसकी मां ने जो कुछ कहा था, बता दिया।

जब तक चाय आई मोहन पहले दिन की पूर्ण बात बता चुका था।

रामनाथ कह रहा था, 'तब तो किसी वकील से बात करनी चाहिये। मैं एक वकील को जानता हूं। वह है ईश्वरदास खन्ना। परन्तु वह फीस जबरदस्त लेता है।'

'परन्तु मेरे पास तो देने को कुछ नहीं।'

'तो ऐसा करो। अपने पिता से मिल लो। कदाचित् वह कोई उपाय बता दें।'

'तो फिर लाहौर लौट जाऊं?'

'पहले संतराम की एजेन्सी में पता करो। कदाचित् वह आज ां आने वाला हो?'

चाय लेते हुए पति-पत्नी विस्मय में मोहन को देख रहे थे।

'मामीजी! क्या देख रही हैं?' मोहन ने पूछा।

'यही कि तुम्हें जीवन में शीघ्र ही समझ आ रही प्रतीत होती है। तुम्हारे मामा को तो घर में दो बच्चों के होने पर चोरी करने की ही सूझी थी।'

'तो अब?'

उत्तर रामनाथ ने दिया और कहा, 'अभी आराम करो। फिर मेरा धोती-कुर्ता पहन एजेन्सी खुलने पर वहां से पता करना। मैं समझता हूं कि उसे यहीं ही मिल लो। उसकी राय से ही काम करना चाहिये। ईश्वरदास खन्ना से उसकी मित्रता भी है।'

मोहन स्नानादि में लग गया। स्नान के पश्चात् अल्पाहार लेकर वह सन्तराम की एजेन्सी पर जा पहुंचा। सन्तराम ने मोहन को पहचाना तो पूछने लगा, 'मोहन हो?'

'जी!'

'किसी काम से आये हो?'

'पिताजी का पता करने आया हूं कि वह आज आने वाले हैं अथवा नहीं।'

'मेरा विचार है ग्यारह बजे की गाड़ी से आयेंगे। क्या काम है उनसे?'

'कुछ काम है। उनको ही बताने का है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहन वहां रखी बेंच पर बैठ गया। सन्तराम उसको खाली कुर्सी छोड़, चपरासी के बैठने की बेंच पर बैठते देख मुस्कराया, परन्तु उसने कुछ कहा नहीं।

राधेलाल आया तो मोहन को वहां बैठा देख विस्मय में पूछने लगा, 'मोहन, यहां बैठे क्या कर रहे हो ?'

'आपकी प्रतीक्षा कर रहा हूं।'

'किसलिये ?'

'कुछ राय करनी है।'

'और बिहारीलाल तथा उसकी मां से राय नहीं करनी ?'

'उनके विषय में ही तो राय करनी है। मैं उनका घर छोड़ आया हूं।'

'उनका घर ? कहां है उनका घर ?'

'लाहौर मैक्लोड रोड पर।'

'और वह तुम्हारी मरहूम माताजी का नहीं है ?'

'नानी कहती है कि मां को केवल रहने के लिये दिया हुआ था।'

'ओह ! तो अब क्या करोगे ?'

'यही तो आपसे पूछने आया हूं।'

'कितनी आयु है इस समय तुम्हारी ?'

'चौदहवां वर्ष जा रहा है।

'परन्तु राय करने आने में बहुत देर कर दी है। वैसे तो हम जानते थे कि एक दिन तुम आओगे।'

'हम का क्या मतलब ?'

'मैं और बाबा मलावामल्ल के घर वाले। विशेष रूप में विश्वम्भर की पत्नी गार्गी। वह तो अपनी कल्पना से तुम्हारी मां की हत्या का चित्र खेंचा करती है।'

'हां, मामा रामनाथ ने बताया है।'

'उसने तुम्हारी मां की हत्या के उपरान्त तुम्हारा चित्र भी खेंचा है।'

'क्या ?'

'यही कि तुम भिखारी बन भटकते हुए मेरे पास आओगे।'

'तो पिताजी ! मैं आ गया हूं। मुझे बताइये कि मैं क्या करूं ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'मेरे साथ लाहौर चलना होगा।'

'रात रहूंगा कहां ?'

'मेरे घर राम गली में।'

'तो चलूंगा।'

'भोजन किया है अथवा नहीं ?'

'प्रातः नाश्ता तो मामी ने कराया है। कह रही थी कि एक बजे आऊंगा तो खाना मिलेगा।'

'अभी बैठो। साढ़े ग्यारह बजे हैं। मैं लालाजी से काम की बात कर लूं। फिर बाजार चलेंगे और भोजन करेंगे।'

राधेलाल ने आर्डर बुक दिखाई और रजिस्टर पा आर्डर दर्ज किये। इसमें आधा घंटा लगा। तब पिछले मास की कमीशन का हिसाब होता रहा। वह तेरह सौ रुपये बने थे। उसका चेंक लेकर वह मोहन के साथ एक भोजनालय में चला गया। वहां पेट भर दोनों, पिता-पुत्र, लाहौर आ पहुंचे।

राधेलाल मोहन को अपने घर राम गली में ले गया। वहां पहुंचते ही मोहन की दृष्टि माया की लड़की कामिनी पर पड़ी। वह उस समय नौ वर्ष की थी। वह उसको अपना नाम बता उससे मन बहलावा करने लगा।

राधे ने रजनी की मृत्यु के उपरान्त पुनः विवाह नहीं किया था और रामनाथ के बच्चों में ही मस्त रहता था। रामनाथ का लड़का अभी भी गार्गी से पढ़ने जाता था। कामिनी राम गली में एक स्कूल में पढ़ने लगी थी।

सायंकाल राधेलाल मोहन को लेकर ईश्वरदास खन्ना की कोठी पर जा पहुंचा। वहां उसने मोहन की कहानी सुनायी तो खन्ना ने पूछ लिया, 'और यह क्या चाहता है ?'

'बताओ मोहन ! तुम क्या चाहते हो ?'

'मैं तो केवल मां की सम्पत्ति वापस चाहता हूं।'

'देखो मोहन !' वकील साहब ने कहा, 'तुम चाहो तो हत्या का मुकद्दमा भी हरा-भरा किया जा सकता है। परन्तु मुझे भय है कि तुम भी उसमें अछूते नहीं बचोगे। अधिक सम्भव है कि जन्म-भर की कैद तुम भी पा जाओ। इस कारण मेरा विचार है वह जो कुछ हो गया उसे छोड़ो। शेष रहा जायदाद का झगड़ा। वह किया जा सकता है, परन्तु मेरी राय मानो तो पहले विश्वम्भर के बाबा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लाला मलावामल से मिल लो। उन्हें इस मामले के विषय में विशेष जानकारी है।

'उनसे सम्मति करने के बाद भी चाहोगे तो मैं यत्न कर दूंगा। पूर्ण निर्णय उन हस्ताक्षरों पर होगा जो तुम्हारी मां ने अथवा उसके स्थान किसी ने रजिस्ट्रार के सामने, सम्पत्ति के 'ट्रांस्फरडीड' पर किये हैं। हस्ताक्षर पहचानने की विद्या अभी इतनी पूर्ण नहीं कि उसमें भूल न हो। प्राय: तीन विशेषज्ञों को हस्ताक्षर पहचानने के लिये दिये जाते हैं और तभी ही तीनों की एक राय होती है। इस कारण मुकद्दमा तो हो सकता है। मैं पूरा यत्न भी कर दूंगा, परन्तु सफलता निश्चित नहीं और हाईकोर्ट तक जाते-जाते मुकद्दमे पर पन्द्रह-बीस सहस्र खर्च होगा ही।

'मेरी राय है कि लाला मलावामल से मिलकर कल आना और फिर पेशगी एक हजार एक सौ रुपये लेते आना।'

खन्ना ने अपने पेशे में बहुत उन्नति की थी। यह उसकी विशेष प्रतिभा का कारण था। वह प्राय: मुकद्दमे जीतता था। किंचित् मात्र संदिग्ध मामले में वह हाथ नहीं डालता था।

राधे को भी यही उचित प्रतीत हुआ कि मोहन को पहले अपने सर्वोत्कृष्ट हितैषी बाबा से मिलाना चाहिये। अत: वहां से वह मोहन को लेकर पीपल वाली हवेली में जा पहुंचा। रात हो गई थी और द्वार पर ही विश्वम्भर दुकान से आता मिल गया।

'आओ राधे भैया ! आज इस समय इधर आने का कारण क्या है ? बच्चे अकेले होंगे।'

'तनिक इस लड़के से बाबा की भेंट कराना चाहता हूं।'

इस पर विश्वम्भर ने ध्यान से मोहन की ओर देखा तो उसे पहचान लिया और उसके मुख से निकल गया, 'यह तो मोहन है। इसे कहां से पकड़ लाये हो ?'

'यह आज अमृतसर में मिला था और कुछ अपनी समस्या लेकर मेरे पास आया था। मैं इसे लेकर ईश्वरदास के पास पहुंचा तो उसने राय दी है कि पहले बाबा से बातचीत कर ले और फिर कहेंगे तो मुकद्दमा करेंगे और उसके लिये वह बीस हजार रुपया चाहता है।'

दोनों ऊपर बाबा के कमरे को चल पड़े थे। सीढ़ियां चढ़ते हुए विश्वम्भर ने कहा, 'गार्गी ने इसके विषय में एक भविष्यवाणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की है।'

'यही कि या तो इसे इसकी नानी एक दिन चूतड़ों पर लात मारकर से निकाल देगी अन्यथा बिहारीलाल इसकी भी हत्या कर देगा।'

'पहली बात तो हो गई है।' मोहन ने कहा और सीढ़ियां चढ़ने लगा। दूसरी मंजिल पर बाबा के कमरे में पहुंचा तो बाबा ने मोहन को प्रश्नभरी दृष्टि से देखा। बात विश्वम्भर ने की, 'बाबा! राधेलाल अपने लड़के मोहन के साथ आपसे मिलने आया है।'

'तो यह मोहन के विषय में कुछ राय करने आया है?'

'हां बाबा!'

'तो बैठो! पहले बता लो। खाना पीछे खाऊंगा।'

तीनों भूमि पर बिछी दरी पर बैठे तो राधे ने पूर्ण वृत्तान्त बता दिया।

'और यह क्या चाहता है?' बाबा ने पूछा।

'मैं इसे लेकर ईश्वरदास खन्ना के पास गया था। उसने कहा है कि पहले आपसे राय कर लूं। अतः इसे लेकर यहां चला आया हूं।'

'हां, क्या राय चाहता है यह?'

'यही कि यह बिहारीलाल पर मुकद्दमा करे अथवा न?'

'किस बात का मुकद्दमा करना चाहता है? एक अपराध में तो यह स्वयं सम्मिलित है और दूसरा कोई अपराध ही नहीं है।

'देखो, मैं समझाता हूं। बिहारी के पिता शंकरदास ने भूमि अपने नाम ली थी। उस पर इमारत स्वयं बनवाई थी और अवश्य उसका खर्चा वही पर लिखा होगा। इस प्रकार सिनेमा उसके पिता का था। रजनी को सम्पत्ति गुजारे के लिये अस्थाई रूप में दे रखी थी। रजनी की मृत्यु के उपरान्त सम्पत्ति या तो शंकरदास के पुत्रों को मिलनी चाहिये अन्यथा उसकी पत्नी को मिलनी चाहिये। बिहारीलाल उसका पुत्र है और भगवती उसकी पत्नी। यह मोहन बीच में कहां से आ गया?'

इस विवेचना को सुन राधेलाल और मोहन मुख देखते रह गये। कुछ विचार कर राधेलाल ने कहा, 'परन्तु ईश्वरदास खन्ना ने तो कहा है, मुकद्दमा चल सकता है?'

'उसे पूर्ण बात का ज्ञान नहीं है, न ही आपने दिया प्रतीत होता है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'और आपको यह सब कैसे विदित है ?'

'एक दिन गुलजारीलाल यहां कमला से मिलने आया था और वह यह कहानी सुना गया था।'

'तो उससे ही सारी बात मालूम करनी चाहिये।' मोहन का कहना था।

'हां बरखुरदार ! उस सिनेमाघर में न तुम्हारे बाप का पैसा लगा है न तुम्हारी मां का।

'गुलजारीलाल के पास दुकान का बहीखाता है। उससे पता करो और पीछे इस दिशा में विचार करो।'

अगले दिन राधेलाल बाजार आर्डर लेने गया तो मोहन को साथ ले गया। गुलजारीलाल भी राधे के द्वारा सन्तराम की एजेन्सी का माल लेता था। इससे वहां पहुंचने पर गुलजारीलाल ने एक लम्बा-चौड़ा आर्डर लिखवा दिया। आर्डर लिख राधेलाल ने गुलजारीलाल के हस्ताक्षर करवाये और पूछने लगा, 'गुलजारी लाल ! इसे जानते हो ?'

'नहीं।'

'यह रजनी का लड़का मोहन है।'

'अर्थात् तुम्हारा लड़का ?'

'हां, यह तुमसे एक बात पूछने आया है।'

'हां भाई ! पूछो।' गुलजारीलाल ने कहा।

बात राधे ने ही की। उसने कहा, 'यह जानने के लिये यह मेरी सिफारिश लाया है कि सिनेमा पर रुपया किस खाते में से लगा लिखा है ?'

'हां, वह मैंने देखा है। जब दीदी का देहान्त हो गया तो मां मेरे पास आई थी और खर्चा मांगने लगी थी। मैंने बही देख उसे बताया था कि यह सिनेमा घर की मालिक है। इस कारण उसका कुछ लेना-देना नहीं बनता।'

राधेलाल मोहन को साथ लेकर उठा तो मोहन ने पूछा, 'तो पिताजी ! मैं क्या करूं ?'

'देखो मोहन ! क्या पढ़े हो ?'

'कुछ भी नहीं।'

'हिसाब किताब लिखना जानते हो ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

'बिल्कुल नहीं।'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अंग्रेजी, उर्दू, हिन्दी क्या पढ़े हो ?'

मोहन पिता का मुख देखता हुआ साथ चलता गया। बात राघ ने ही की, 'मूर्ख मां के लाड़ले पुत्र ! तुम चपरासी का काम ही कर सकते हो। कहो तो विश्वम्भर की दुकान पर दस रुपये महीने पर नौकर करा देता हूं।'

'पर मैं तो एक सौ रुपये महीने की शराब पीता था।'

'तो अब भूखे मर सकते हो। शराब तो हमारे घर में मिलेगी नहीं।'

'तो आप एक रुपया मुझे दे दें।'

'किस बात के लिये ?'

'अफीम खाकर मर जाने के लिये।'

'हां, घर पर चलो। उस काम के लिये मैं सहायता कर सकता हूं। मगर मरने के लिये रेलवे की पटरी पर अफीम खाकर लेटना होगा। एक रुपया देकर घर से निकाल दूंगा।'

'और घर में ही चपरासी रख लो। कामिनी कहती थी कि मुझे हिन्दी पढ़ा देगी।'

'उससे नहीं। तुम्हें तो स्कूल में मास्टर बेंत लगा-लगाकर शराब का नशा छुड़ायेगा तो ठीक होगा।'

मोहन विचार करता था कि रात इसके घर से कुछ लेकर जाये और फिर अगले दिन शराब की बोतल खरीदकर अपने दिमाग को ठीक करे। इस कारण वह साथ-साथ चलता गया और फिर घर पहुंचने तक बातचीत नहीं हुई।

राधेलाल उसे ठीक मार्ग पर लाने की योजना बना रहा था।

अगले दिन वह मोहन को लेकर पुनः बाबा मलावामल्ल के घर आ पहुंचा। इस समय गार्गी बाबा को अल्पाहार करा रही थी। राधेलाल और मोहन आये तो मलावामल्ल ने प्रश्नभरी दृष्टि में उनकी ओर देखा। राधेलाल ने इस दृष्टि का उत्तर देते हुए कहा, बाबा ! इसकी समस्या का कुछ सुझाव नहीं मिला। वहां घर पर कामिनी है। उसकी इसके प्रति सहानुभूति होनी स्वाभाविक है। मैं यह सम्बन्ध भाई-बहन का समझता हूं।'

एकाएक मलावामल्ल को एक बात सूझी। उसने पूछ लिया 'एक गुरुकुल में पढ़ सकोगे ?'

'गुरुकुल में ?' मोहन ने विस्मय में पूछ लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'कौन गुरुकुल इस पन्द्रह-सोलह वर्ष के लड़के को दाखिला देगा ?' राधेलाल का प्रश्न था।

'एक है। मैं समझता हूं कि वहां का आचार्य मान जायेगा। परन्तु इसकी पढ़ाई पर क्या खर्च कर सकोगे ?'

बाबा ! जो कहो दे दूंगा।'

'एक सौ रुपये महीना।'

राधेलाल विस्मय में बाबा का मुख देखता रह गया। वह समझा कि यह वृद्ध व्यक्ति की कल्पना है। इस कारण कहने लगा, 'बाबा ! इतना तो दे ही सकता हूं।'

तब ठीक है। छः मास का खर्चा यहां जमा करा जाओ और इसे यहां छोड जाओ। पांच-छः साल में आशा है कि पढ़-लिखकर अपने पांव पर खड़ा हो सकेगा।'

राधेलाल को समझ आया कि अपनी पतोहू गार्गी का वेतन लगवाना चाहता है। उसने कहा, 'बाबा ! मैं इसे यहां छोड़ जाता हू और बैंक से रुपया निकलवा चार बजे से पूर्व दे जाऊंगा।'

मोहन ! गुरुकुल में पढ़ोगे ?'

'बाबा !' मोहन ने कहा मामा कहते हैं कि दस रुपये महीने के चपरासी का काम करने के लायक हूं। फिर क्या बन जाऊंगा और क्या कर सकूंगा ?'

जो विश्वम्भर कर रहा है। कम से कम अपने लिये एक दुकान लाहौर मे चालू कर सकोगे।'

'तो बाबा ! कर दो। पिताजी खर्चा देने को तैयार हैं।'

'तो राधेलाल ! इसे छोड़ जाओ। सायकाल तक प्रबन्ध कर सकूंगा।'

मोहन बैठ गया तो बाबा ने मोहन से कहा, 'देखो बेटा। तुम्हारे गुरुजी को मैं बुला रहा हूं। वे आयें तो उनके चरण-स्पर्श करना। तब वह मान जायेंगे। और फिर दिन-रात उनके घर पर रहना होगा। उनकी सेवा उनका पुत्र बन करना और मैं तथा विश्वम्भर वहां कभी-कभी तुमसे मिलने आया करेंगे।'

'बाबा ! कहां जाना होगा ?'

'कुछ दूर नहीं। यहीं इसी नगर में कूचा बाल माता में।'

गार्गी समीप खड़ी बाबा की बात सुन रही थी। वह बोल उठी, 'बाबा ! पिताजी नौकरी नहीं करेंगे ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'जानता हूं गार्गी बेटी ! मैंने नौकरी के लिये नहीं कहा। यह सौ रुपया महीना तो दक्षिणा होगी।'

'परन्तु यह नियमित होने से वेतन प्रतीत होगा।'

'यह नियमित नहीं होगा। ये रुपये मैं विश्वम्भर को दे दूंगा और वह उनसे घर का अन्न-दाना, कपड़ा इत्यादि पहुंचा दिया करेगा।'

राधेलाल सब समझ गया और आश्वस्त हो अपने काम पर चला गया।

गार्गी बाबा की सूझ-बूझ पर चुप कर गई। पण्डित लक्ष्मीचन्द स्कूल से सेवामुक्त हो चुके थे। उनको स्कूल से गैच्युटी के रूप में एक सहस्र एक सौ रुपये मिले थे और सौदामिनी चिन्ता किया करती थी कि निर्वाह कैसे होगा ?

गार्गी गई तो मलावामल्ल ने घर के सेवक के हाथ पण्डितजी को बुला भेजा।

मध्याह्न के समय पण्डितजी आये तो मलावामल्ल ने कहा, 'पण्डितजी ! यह एक बैल-बुद्धि बालक आपका शिष्य बना आपको दे रहा हूं। इसके घर से पर्याप्त दान-दक्षिणा की आशा करता हूं। इसे अपने घर पर रखना होगा। इसकी शून्य से ही पढ़ाई आरम्भ करनी होगी।'

'ओह ! क्यों बालक ! पढ़ोगे ?'

'पिताजी मुझे बाबा के पास इसी मतलब से छोड़ गये हैं।'

'और क्या नाम है पिताजी का ?'

'उन्हें लोग राधेलाल कहते हैं।'

'ओह !' लक्ष्मीचन्द सब समझ गया और बोला, 'तुम तो अपने यजमान ही हो। यदि कहा मानोगे तो पांच वर्ष में विद्वान बना दूंगा।'

मोहन को बाबा की बात स्मरण आ गई। उसने झुककर पण्डितजी के चरण-स्पर्श किये और हाथ जोड़ सामने खड़ा हो गया।

पण्डितजी ने कहा, 'अभी पांच मिनट यहां बैठो। मैं तनिक लड़की से मिलकर आता हूं। फिर तुम्हें मेरे साथ ही चलना होगा।'

मोहन बैठा तो पण्डितजी ऊपर की मंजिल पर गार्गी के पास जा पहुंचे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2

गार्गी से मुहल्ले की तीन लड़कियां और रामनाथ का लड़का ही पढ़ने आते थे। पण्डित लक्ष्मीचन्द वहां पहुंचा तो गार्गी कमरे से निकल आई और पूछने लगी, 'बाबा से मिल आये हैं ?'

'हां। उन्होंने मोहन को पढ़ाने के लिये कहा है। देखो बेटी ! कोई पढ़ता है तो अपने भाग्य से है। हम तो बीच में साधन बन जाते हैं।'

'तो कुछ दान-दक्षिणा की बात हुई है ?'

'नहीं। वह जानते हैं कि मैं मांगूंगा नहीं। यह देने वाले की इच्छा पर है कि वह क्या और किस प्रकार देता है ? ब्राह्मण के मान-मर्यादा के अनुसार होगा तो स्वीकार करूंगा। परन्तु बेटी ! कोई पढ़ने आये तो उसे इनकार नहीं कर सकता।'

'परन्तु यह तो आपके घर में रहने जा रहा है ?'

'अभी तक तो घर में खाने-पीने को है और नहीं रहेगा तो देख लूंगा।'

गार्गी जानती थी कि पिताजी पर मोहन बोझा नहीं बनेगा। इसपर भी उसने वह सब कुछ नहीं बताया जो वह जानती थी। वह पिताजी की मान-मर्यादा के लिये सतर्क थी।

बस इतनी बात ही हुई और पण्डितजी नीचे बाबा के कमरे में आये। मोहन को साथ ले वह अपने घर को चल पड़े। मार्ग में वह मोहन का पूर्ण परिचय प्राप्त करते रहे। मोहन ने अपनी मां, अपनी नानी की तथा रामनाथ की सब कथा बता दी।

घर पहुंचने तक मोहन की कथा सुन पण्डितजी ने कह दिया, 'तुम अपनी नानी और मामा को बताओगे नहीं कि तुम कहां रहते हो। उनसे मिलने भी नहीं जाओगे।'

'जैसी आज्ञा करेंगे।'

'तब ठीक है।'

ज्योंही मोहन पण्डित लक्ष्मीचन्द के साथ हवेली से निकला कि बाबा ने सेवक के हाथ एक रुक्का लूंडी भाषा में लिखकर दुकान पर विश्वम्भर को भेज दिया। उसमें लिखा था, गार्गी के पिता के घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छः साड़ियां, छः सलूकों का कपड़ा, छः कच्छे, छः मर्दाने कुर्तों का कपड़ा, तीन पगड़ी और कच्छे का कपड़ा बंडल में बांध साथ में एक सौ रुपये भेज दो। सेवक को कहना कि पण्डितजी से कहे कि कोई दुकान पर आपके घर पहुंचाने के लिये दे गया है।

इस पर भी जब यह सामान पहुंचा तो पण्डितजी समझ गये कि यह दक्षिणा मोहन के गुरु के घर आने पर मिली है।

सायंकाल राधेलाल आया और छः सौ रुपया बाबा के पलंग पर रख बोला, 'गार्गी भाभी के कहने से समझ गया हूं कि उसके पिता को आप मोहन का गुरु नियत करने वाले हैं।'

'परन्तु राधेलाल! तुम वहां नहीं जाओगे। मैं ही समय-समय पर उसकी सुध लेता रहूंगा।'

'परन्तु बाबा! मैंने पुरोहितजी के घर आज दो मन चावल, एक मन गेहूं, चीनी और नमक-मिर्च भेज दिया है।'

'ठीक किया है। मैंने भी तुम्हारे रुपये को वहां गौण मार्ग से पहुंचाने का प्रबन्ध कर दिया है। लगभग चार सौ रुपये का माल उनके घर भेजा है। साथ ही टोह लेता रहूंगा कि वहां किसी वस्तु का अभाव न रहे। न गुरु-गुरुआइन के लिये, न शिष्य के लिये।'

राधेलाल ने सन्तोष प्रकट करते हुए कहा, 'अभी-अभी बाजार में लाला ईश्वरदास खन्ना मिले थे और लड़के के विषय में पूछते थे। अब मैंने आपका प्रबन्ध बताया तो प्रसन्न हो कहने लगे कि आपकी सूझ-बूझ पर वह विश्वास रखते हैं और इस कारण ही उन्होंने मुझे आपके पास भेजा था।'

'देखो राधेलाल! मेरा सिद्धान्त है कि परमात्मा ने ये हाथ-पांव, शरीर, मन और बुद्धि कार्य करने के लिए दिये हैं। इनसे पैदा किया ही भोग करना धर्म है। दूसरे से पैदा किया भोग पाप है।

'यही कारण है कि जब मुझे इतना ज्ञान हुआ तो मैं अपने पिता के साथ दुकान पर जाने लगा था। तब तक मैं मां के लाड़-प्यार में ही रहता था। यह ज्ञान ईश्वरप्रदत्त ही मानो। एक दिन मैं एक च्यूंटी को कुछ मुख में उठाये हुए एक ओर जाते हुए देखने लगा तो पता चला कि वह एक सुरक्षित स्थान में उसे रख पुनः कुछ ढूंढ़ने चल पड़ी है। मैंने अपनी इस खोज की बात मां को कही तो वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कहने लगी, सब प्राणी ऐसा करते हैं। ऐसा करने के लिये परमात्मा ने तुमको भी हाथ-पांव दिये हैं।

'तो मैं कहां से क्या उठाकर कहां ले जाया करूं ? मैंने पूछा।

'वह बोली, पिताजी की दुकान पर जाया करो। वह नित्य वहां से उठाकर घर लाते हैं और हम घर के प्राणी उसका भोग करते हैं। तुम भी पिताजी के साथ दुकान पर जाया करो और रात को वहां से उठाकर लाया करो।

'बस, अगले दिन से मैं पिताजी के साथ दुकान को चल पड़ा। पिता मेरी ओर मुस्कराते हुए देखने लगा तो मां ने ही बात की, यह एक च्यूंटी की भांति भोग-सामग्री दुकान से उठाकर लेने चला है।

'पिता समझे तो बोले, परन्तु हमारी दुकान तो कपड़े की है।

'तो इसे कपड़े से धन बनाने का ढंग सिखा दो।

'पिताजी हंस पड़े और मेरी उंगली पकड़ दुकान को चल पड़े। उन दिनों दुकान शाहआलमी दरवाजा के भीतर छोटी-सी थी। ग्राहक विरले ही आते थे। इस खाली समय पिताजी ने मुझे लूंडी पढ़नी, लिखनी और फिर बही-खाता रखना सिखाया। नित्य रात के समय वह मुझे दो पैसे देते थे और कहते थे, यह मां के पास जमा करना। जब मेरे दिये से उसका और तुम्हारा पेट नहीं भरेगा तो वह निकाल लेना और फिर इसका भोग करना।

'मैं दो पैसे नित्य लाने लगा। दुकान का काम सीखते-समझते पांच वर्ष लगे। मैं नौ वर्ष की आयु का हो गया था।

'एक दिन मैंने मां से पूछा, मैं जो नित्य लाता हूं वह कितना हो गया है ?

'मां कोठरी में गई और एक संदूकची उठा लाई। बोली, तुम्हारे पिता नित्य इतना लाते हैं कि इसमें से निकालने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

'मां ने पैसे गिन डाले। सब सत्तावन रुपये और दो पैसे थे। मां ने वे पिताजी को दिये और उसके बदले में चांदी के रुपये ले लिये।

'मैंने मां से पूछा, अब इनसे क्या करोगी ?

'मां ने मुझसे पूछा, यह तुमने इकट्ठे किये हैं। तुम ही बताओ, इन रुपयों का क्या करोगे ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

'मैंने कहा, मां ! जी करता है कि राधु हलवाई की दुकान पर बैठ पेट भर मिठाई खाऊं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'पर इससे तो पेट भरने से बहुत अधिक मिठाई मिलेगी।

'तो फिर क्या करूं ?

'मां ने कहा, अभी बहुत कम है। थोड़े और जमा कर लो तो तुम्हारी बहू ले आऊंगी।

'उससे क्या होगा ?

'वह तुम्हारे जैसे प्यारे बच्चे बनायेगी, जैसे मैंने तुम्हें बनाया है।

'मैं मां का मुख देखता रह गया और दुकान पर जाता रहा। जब पिताजी ने ग्राहकों से बातचीत करने का ढंग बताया। वस्तुओं के दाम लगाने का ढंग तो मैं जान चुका था। मुझे अब एक आना नित्य मिलने लगा। मैं चौदह वर्ष का हुआ तो मेरा विवाह कर दिया गया। मेरे जमा रुपये निकाले गये। सब एक सौ पच्चीस रुपये के लगभग थे। मैंने कहा, इससे तो पत्नी आयेगी नहीं।

'वह तो मैं लाऊंगी। हां, इससे तुम उसके लिये एक सोने की चेन बनवा लाओ।

'उससे क्या होगा ?

'उस चेन से बंधी हुई बीबी तुम्हारे द्वार पर बैठी रहेगी। वह मंगलसूत्र होगा।

'देखो राधेलाल ! इस प्रकार मेरा जीवन आरम्भ हुआ। यह मेरा ही सुझाव था कि दुकान अनारकली बाजार में ले जानी चाहिये।

'सिक्खों के काल में अनारकली बाजार सैनिक छावनी होती थी। अंग्रेजी राज्य में वह वेश्याओं का अड्डा बन गया और तब, जब मेरा विवाह हुआ था, सरकारी दफ्तर उधर होने के कारण दुकानदारों का बाजार बनने लगा था। पिता ने मेरी राय मानी और हमने विश्वम्भर की दुकान पांच रुपये भाड़े पर ले ली और काम करने लगे।

'अकस्मात् पिताजी का देहान्त हो गया तो मुझे घर का बोझा वहन करना पड़ा।

'जब सन्तराम पैदा हुआ तो मैंने दुकान और उसके ऊपर बना मकान सात सौ रुपये में खरीद लिया। तब मैं प्रातः आठ बजे से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रात आठ बजे तक दुकान पर काम करता था।

'उन दिनों ही मुझे समझ आया कि अधिक से अधिक ग्राहकों को आकर्षित करने के लिये माल बढ़िया और कुछ दूसरों से सस्ता करना चाहिये। इससे मेरी दुकान चलने लगी। पड़ोस के एक बंसीलाल एक दिन आ कहने लगे, तुमने बाजार का भाव बिगाड़ दिया है। हमें शाहआलमी दरवाजा के भीतर की दुकानों से दाम कुछ अधिक रखना चाहिये।

'क्यों? मेरा प्रश्न था।

'यहां खर्चा अधिक बैठता है।

'तो खर्चा कम करो।

'उसका कहना था, पड़ता नहीं पड़ता। दुकानों का किराया अधिक है। नौकर महंगे मिलते हैं।

'मैंने कहा, मैंने नौकर नहीं रखा हुआ।

'बंसीलाल उत्तर नहीं दे सका।

'यह है पली-पली का जमा कर कुप्पा भरने का रहस्य। यही सब करते हैं। जो दूसरों का जमा किया छीनते हैं उनका अन्त वही होता है जो लाला शंकरदास और उनके परिवार का हुआ है।

'गुलजारीलाल कुछ ठीक मार्ग पर चल रहा प्रतीत होता है।'

'बाबा! यह कैसे कहते हैं?' राधेलाल ने पूछ लिया है, 'वह सब दिखावा भी कर सकता है। सुना है, उसने लड़के को पांधे पर पढ़ने बैठाया तो पांच सौ रुपये खर्च कर दिये। एक दिन सन्तरामजी बता रहे थे कि एजेन्सी का देन सरलता से नहीं आ रहा।'

'हां, यह तो मैं भी अनुभव कर रहा हूं। देखो, व्यापार के भी नियम हैं—दुकान भाड़े पर और दाम ब्याजी, उस मूर्ख की पूरी बाजी। कुछ लोग अपनी कामनाओं को आय करने से पहले बनाते हैं। यह चयूंटियों का चलन नहीं। वे एकत्रित पहले करती हैं और भोग पीछे करती हैं। यह ही व्यापार का नियम है कि पहले कमाओ, पीछे खर्च करो।

'फिर एक अन्य नियम है। व्यापार में आय सदा व्यय से अधिक होनी चाहिए। आय तो ईश्वराधीन है। व्यय हमारे अधीन है। न्यूनातिन्यून व्यय से अधिक से अधिक आय करना ही व्यापार में कुशलता है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'परन्तु अधिक आय के लोभ में निर्माण को अथवा बिक्री के माल को घटिया करना मूर्खता है।

'एक और नियम भी है। व्यापार में लाभ का एक भाग सदा सुरक्षित कोष के रूप में रखना चाहिए। यह व्यापार-वृद्धि के अतिरिक्त है।

'एक अन्तिम नियम है कि अपने परिश्रम का एक भाग ही ऊपर के कामों में लगाये और उसका एक भाग लोक कल्याण के कार्य में खर्च करे।

'राधेलाल ! इन विषयों के पालन से मैंने लाखों पैदा किये हैं और अब इस संसार से जाने के समय अपने विचार से किसी का देनदार हो नहीं जा रहा।

'व्यापार भी एक सेवा-कार्य है और यह इन नियमों से ही हो सकता है।'

राधेलाल ने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, 'बाबा ! कब तक जाने की आशा कर रहे हो ?'

मलावामल्ल हंस पड़ा। उसने हंसकर रहा 'यह बात नटवर परमात्मा किसी को बताता नहीं। इससे जीव को सदा अपना बिस्तर गोल रखना चाहिये, जिससे जब वह चाहे, हम जाने के लिये तैयार हों। मैं अपने को ऐसा ही समझता हूं।'

जाने से पहले राधेलाल ने मोहन की शिक्षा-दीक्षा के विषय में चिन्ता व्यक्त की तो मलावामल्ल ने कह दिया, 'हमने शुद्ध हृदय से उसके कल्याण का प्रबन्ध किया है। शेष परमात्मा के अधीन है। मैं उसकी टोह लेता रहूंगा, जिससे वह उदास न हो।'

एक दिन राधेलाल अमृतसर की दुकान पर किसी काम से आया कि बिहारीलाल उसे ढूंढ़ता हुआ वहां आ पहुंचा। उसने राधे को देख प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा, 'भैया ! तुम्हें ही ढूंढ़ने के लिए अमृतसर की यात्रा करनी पड़ी है।'

'अच्छा ! पर क्यों ? मुझसे तुम्हारा क्या काम है ?' राधेलाल ने सतर्क हो पूछा।

'कई दिन से मोहन लापता है। उसकी नानी का विचार था कि कहीं वह तुम्हारे पास न चला गया हो। इस कारण तुम्हें ढूंढ़ने के लिये मां ने मुझे भेजा है।'

'परन्तु बिहारी भैया ! तुम और रजनी की मां तो मेरा पता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जानते नहीं थे। फिर मोहन कैसे मेरा पता जान गया होगा ? वह तुम जैसा होशियार तो है नहीं।'

'पर मैंने तो ढूंढ़ लिया है। रात ही मां ने कहा कि मोहन का पता तुमसे लग जायेगा।'

'मुझे तो उसका पता ज्ञात नहीं है। न ही मैं उसका पता जानने में रुचि रखता हूं।'

'वह तुम्हारा लड़का है।'

'ऊसर में बबूल का पेड़ लग गया था। इसी से छोड़ आया था।'

'तो फिर तुम नहीं जानते ?'

'भैया, नहीं।'

बिहारीलाल लाहौर लौट गया। जिस रात मोहन सो न सकने के कारण घर से निकला था, बिहारी और भगवती मोहन के लौटने की प्रतीक्षा करते रहे। वह समझते थे कि वह भूख लगने पर अथवा शराब की लालसा बढ़ने पर लौट आयेगा।

बिहारी जानता था, वह इतना मूर्ख जीव है कि उसे भीख मांगनी भी नहीं आयेगी। परन्तु जब तीन-चार दिन तक भी उसका पता नहीं चला तो उसका पता करने के लिये बिहारी इधर-उधर परिचितों से पूछने लगा। सिनेमाघर में एक 'बाक्स' मालिक के लिए 'रिजर्व' रहता था। बिहारीलाल नित्य सायंकाल के शो के समय वहां जाता रहा, परन्तु मोहन वहां भी नहीं मिला। जब उसका कहीं समाचार नहीं मिला तो भगवती ने उसके पिता राधेलाल का पता करने के लिये कहा। बिहारीलाल लाहौर वाली दुकान से पता पूछ अमृतसर वाली दुकान पर जा पहुंचा। अकस्मात् राधेलाल उस समय वहां उपस्थित था।

राधेलाल से भी कुछ न जान बिहारीलाल ने लाहौर पहुंच मां को बता दिया कि राधेलाल तो मिला है, परन्तु वह कहता है कि वह मोहन के विषय में कुछ नहीं जानता। न ही उसके जानने में वह रुचि रखता है।

'तब ठीक है। अब तुम्हारा यह कांटा भी निकल गया है।'

एकाएक बिहारीलाल को मोहन के बाबा गिरधारीलाल की याद आ गई। अगले दिन वह उसका पता पूछ जालन्धर जा पहुंचा। गिरधारीलाल तो वहां नहीं मिला, परन्तु गिरधारीलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

की नई पत्नी मकान में मिली। उसका नीम पागल लड़का महेन्द्र-नाथ बिहारीलाल को देखा। [illegible] उसका सिर फोड़ने को लपका तो बिहारी वहां से भागा।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार मोहन की खोज समाप्त हो गई।

बिहारी को जुआ खेलने की आदत पड़ गई थी। वह सदा मां से लड़-झगड़कर कुछ न कुछ ले जाया करता था और जुए-खाने में आ पहुंचता था। जिस दिन तो जीतकर आता था वह किसी आवारा लड़की को लेकर घर लौटता था और रात-भर रखता था अन्यथा बिना खाये-पिये आकर खाट पर सो रहता था।

भगवती समझ जाती थी कि उसकी जेब खाली हो रही है। इससे अगले दिन वह उसकी जेब में फिर दस-बीस रुपये रख देती थी।

मोहन को लापता हुए दो वर्ष के ऊपर हो चुके थे कि बिहारी-लाल ने एक दिन मलावामल्ल के निधन का समाचार 'ट्रिब्यून' पत्र में पढ़ा। वह चौथे के दिन शोक प्रकट करने उनके मकान पीपल वेहड़ा में जा पहुंचा।

यह समाचार विश्वम्भर ने 'ट्रिब्यून' समाचार-पत्रों में छपवा दिया था, जिससे व्यक्तिगत सूचना भेजने से बचा जाये।

उस दिन छः सौ से ऊपर व्यक्ति वहां आये हुए थे। चौथे की रस्म के पश्चात् जब बिहारीलाल उठा तो उसे यह देखकर विस्मय हुआ कि मोहन भी घर के लोगों में खड़ा है।

मोहन को देख वह एक ओर हटकर खड़ा हो गया, जिससे वह मोहन के इस परिवार में पहुंच जाने के रहस्य को जाने। उसे स्वप्न में भी आशा नहीं थी कि मोहन यहां मिलेगा।

मोहन पण्डित लक्ष्मीचन्दजी के साथ खड़ा था।

सबसे निपटकर पण्डित लक्ष्मीचन्द और मोहन भीतर गार्गी को मिलने चले गये। यह पण्डितजी का नियम था कि वे जब भी विश्वम्भर से मिलने आते थे तो गार्गी और उसके बच्चों को मिल-कर जाते थे। मोहन के शिष्य बनने के उपरान्त तो उनकी आर्थिक स्थिति सुधर रही थी और वह नातियों को कुछ न कुछ देकर जाया करते थे।

जब मोहन और लक्ष्मीचन्द हवेली में गये तो बिहारीलाल विस्मय में हवेली के बाहर गली के द्वार पर खड़ा रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3

पण्डितजी को हवेली से बाहर निकलने में बहुत देर नहीं लगी। वह और मोहन निकले तो विश्वम्भर उनको गली के द्वार तक छोड़ने आया। उसने बिहारीलाल को वहां खड़ा देख पूछ लिया, 'बिहारी भैया! क्या बात है? यहां खड़े हैं?'

बिहारीलाल ने उत्तर नहीं दिया और मोहन और पण्डितजी के पीछे चल पड़ा। विश्वम्भर उसके इस प्रकार चल देने पर विस्मय ही कर रहा था कि वहां लोगों से बातचीत करता हुआ राधेलाल भी सबको छोड़, बिहारीलाल के पीछे-पीछे चल पड़ा।

बिहारीलाल को गली के द्वार पर खड़े मोहन ने भी देखा था। इससे विस्मय करते हुए कुछ दूर तक वह पण्डितजी के साथ गया, परन्तु वह पीछे देखने से अपने को रोक नहीं सका। उसने देखा कि बिहारीलाल उनका पीछा कर रहा है और उसका पिता राधेलाल बिहारीलाल का पीछा कर रहा है।

इस कारण वह पण्डितजी को बताये बिना नहीं रह सका। उसने कहा, 'गुरुजी! मेरा मामा बिहारीलाल हमारे पीछे-पीछे आ रहा है।'

'तो फिर क्या हुआ?'

'और मेरे पिताजी उसके पीछे-पीछे आ रहे हैं।'

'पर तुम तो मेरे साथ चल रहे हो न? अब मामा और पिता की याद आने लगी है क्या?'

'मैं तो आपके साथ ही चल रहा हूं।'

'तो निश्चिन्त रहो। दोनों विरोधी परस्पर निपट लेंगे। मैं समझता हूं कि तुम्हारे पिता तुम्हारे मामा को पीट देंगे।'

'तब तो मजा रहेगा।'

'भला किसी को किसी दूसरे से पीटे जाते देख क्या मजा है? मजा तो स्वयं पीटने से है।'

'और जो स्वयं न पीट सके?' मोहन का प्रश्न था।

'तो उसे लड़ाई-झगड़े में रस नहीं लेना चाहिये। जैसे मैं किया करता हूं। प्रथम तो मैं किसी से झगड़ा नहीं करता, जब करता हूं तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विरोधी का बलाबल देखकर ही झगड़ता हूं, नहीं तो नीति से काम लेने का यत्न करता हूं। नीति से विरोधी को पराजित करने में भी मजा आता है। उस युद्ध में बुद्धि के बल का पता चलता है।'

'परन्तु पण्डितजी ! मैं तो मामा को पीट भी सकता हूं। एक-दो बार पीट भी चुका हूं।

'ठीक ! परन्तु देखो,' यह मुसलमानी बाजार है। यहां लड़ना ठीक नहीं। अपने मुहल्ले जौड़े-मोरी में चलकर इससे झगड़ा कर इसकी हल्की-सी पिटाई कर देना।'

मोहन चुपचाप पण्डितजी के साथ चलता गया। रंगमहल से मच्छी-हट्टा, हठार बाजार पार कर जौड़े-मोरी मुहल्ले में पहुंच अपनी गली के बाहर मोहन खड़ा हो गया। साथ ही पण्डितजी भी खड़े हो गये।

पूर्व इसके कि बिहारीलाल इन गुरु-शिष्य के पास पहुंचे, राधेलाल ने पीछे से बिहारी का गला पकड़ लिया। बिहारी घूमकर देखने लगा कि किसने पकड़ा है कि राधेलाल का एक मुक्का बिहारी की कनपटी पर लगा। इस समय पीछे से मोहन ने एक लात बिहारी की कमर में जमाई और वह लोटपोट हो भूमि को चाटने लगा।

चलते-फिरते लोग एकत्रित होने लगे थे। अब राधेलाल ने उसको बांह से पकडकर उठाया और दूसरे हाथ का मुक्का दूसरी कनपटी पर लगाने के लिए उठाया ही था कि बिहारी झटका दे अपने को छुड़ा वहा से भाग खड़ा हुआ और सब एकत्रित लोग हसने लगे।

राधेलाल ने कहा, 'आप लोग अपना काम करिए। यह घरेलू मामला था।'

पण्डित लक्ष्मीचन्द ने कहा, 'मोहन ! समझ गया हूं कि तुममे बल है। अब मैं निश्चिन्त हूं। एक बलवान युवक के संरक्षण में हूं।'

'पर मैं किसी और को भी पीट सकता हूं।'

'ठीक, परन्तु कोई पीटा जाने योग्य यहां है क्या ?'

राधेलाल ने कहा, पण्डितजी ! आप अपने शिष्य को एक घन्टे की छुट्टी देवें तो मैं इसको इसकी सतर्कता का पुरस्कार देने ले जाना चाहता हूं।'

'तो इसे स्वयं मेरे मकान पर छोड़ जाना। आज का पाठ इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सुननी है।

राधलाल पहले भी कभी-कभी मोहन को पण्डितजी के घर से अपने साथ सैर कराने ले जाया करता था।

पण्डितजी अपने घर को चले गये तो एकत्रित भीड़ के देखते-देखते पिता-पुत्र भी शाह आलमी दरवाजे के बाहर को चल पड़े।

पण्डित लक्ष्मीचन्द का विचार था कि बिहारीलाल कोतवाली में रिपोर्ट लिखवाने जायेगा और कुछ ही देर में पुलिस पूछगीछ करने आयेगी। इसपर भी उसका विचार था कि मामला पुलिस की पूछगीछ तक ही समाप्त हो जायेगा।

परन्तु बिहारीलाल थाने में नहीं गया और कोई भी पूछने नहीं आया।

रात के नौ बजे जब पण्डित और पण्डितायिन भोजन कर चुके थे तो पिता-पुत्र वहां पहुंचे और राधे ने पण्डितजी का धन्यवाद करते हुए कहा, 'पण्डितजी ! मैं इस बात से प्रसन्न हूं कि आपने इसे अपना लडका बना इसमें बुद्धि और शौर्य ही निर्माण नहीं किया, परन्तु इसमे ज्ञान का भी समावेश कर रहे हैं।'

'राधलाल ! इसका पारिवारिक स्वभाव प्रकट हो रहा है। मैं यह यत्न कर रहा हूं कि इसका स्वभाव विवेक, मेरा अभिप्राय है, ज्ञानयुक्त हो। तब यह संसार में वैसा ही सफल हो जायेगा जैसा विश्वम्भर हो गया है।

'मैं' पण्डितजी ने आगे कहा, 'विश्वम्भर के व्यवहार से अति प्रसन्न हूं। वह एक कुशल वैश्य द्विज बन गया है। उसका अपने अंग्रेजी पढ़े-लिखे भाई से व्यवहार देख मुझे अपनी शिक्षा की श्रेष्ठता का विश्वास है।'

राधेलाल ने कहा, 'मोहन खा-पीकर आया है।,

बिहारीलाल मैक्लोड रोड पर घर पहुंचा तो भगवती उसकी सूजी कनपटी देख पूछने लगी, 'कहीं फौजदारी करते हुए आये हो ?'

'नहीं मां ! फौजदारी का शिकार बन आया हूं।' बिहारी ने कहा, 'थोडा गर्म पानी लाओ। मैं कनपटी पर सेंक करूगा। यह पिता-पुत्र ने किया है।'

'पर किस पिता-पुत्र ने तुम्हें पीटा है ?'

'मां ! तुम्हारे दामाद राधे और उसके पुत्र मोहन ने।'

'ओह ! वे कहां मिल गये थे और राधलाल तो कहता था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे पुत्र में रुचि नहीं है।'

'मैं समझता हूं कि अभी भी नहीं है। उसे भी कदाचित् यह विदित नहीं था कि वह हमारे पुराहित हुक्मचन्द के भिखमंगे भाई लक्ष्मीचन्द के घर रहता है।'

'वहां क्यों रहता है?' भगवती का प्रश्न था।

'ऐसा प्रतीत होता है कि मलावामल्ल के बच्चों ने उसे पण्डितजी के हवाले किया हुआ था। पण्डितजी की लड़की मलावामल्ल के पोते से ब्याही हुई है। ये सब हिन्दू धर्म को भ्रष्ट करने में लगे हुए हैं। ब्राह्मण की लड़कियां वैश्यों के घर में ब्याही जाने लगी हैं।'

मां गर्म जल ला उसमें कपड़ा भिगो पुत्र की कनपटी पर सेंक करने लगी। सेंक करते हुए वह बोली, 'पण्डित हुक्मचन्द को यह घटना बतानी चाहिए।'

'वह क्या करेंगे?'

'कुछ नहीं। वह अपने भाई को अपनी बिरादरी में बदनाम करेंगे।'

इस प्रकार मूर्ख मां का चोर पुत्र अपनी कल्पना के घोड़े दौड़ाते हुए हुक्मचन्द के घर जा पहुंचा।

हुक्मचन्द छोटे भाई से कभी-कभी ही मिलने आया करता था। अब तो कभी-कभी लक्ष्मीचन्द हुक्मचन्द को उसके बच्चों के लिए मिठाई इत्यादि दे दिया करता था।

हुक्मचन्द जानता था कि राधेलाल का लड़का पण्डितजी से पढ़ने आता है और राधेलाल पण्डितजी की वस्त्र-अन्न इत्यादि से सहायता करता रहता है।

इस कारण अब लक्ष्मीचन्द ने हुक्मचन्द के आने पर उससे आने का कारण पूछा तो हुक्मचन्द ने हंसते हुए कहा, 'उस ठग शंकरदास के चोर लड़के बिहारीलाल की सिफारिश करने आया हूं।'

लक्ष्मीचन्द ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, 'क्या सिफारिश करने आये हो?'

'यही कि उस बेचारे पर दया करो। कहीं राधे और उसके पुत्र ने बहुत पीटा तो वह कुछ अपराध कर जेल जाना सुरक्षित समझेगा। मेरा एक यजमान कम हो जायेगा। अब तो उसकी मां भगवतीदेवी महीने में एक दिन सत्यनारायण की कथा कराया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करती और पांच रुपये दक्षिणा भी दिया करती है।'

'अच्छी बात है भैया! मोहन को समझा दूंगा कि आपकी खातिर वह मामा पर दृष्टि न रखे।'

हुक्मचन्द गया तो मोहन अपने कमरे से निकल वहां आ गया। पण्डितजी ने हुक्मचन्द की बात कहनी चाही तो मोहन ने बताया कि उसने बड़े पण्डितजी की सब बात सुन ली है।

इस पर गुरु-शिष्य दोनों हंसने लगे।

4

मलावामल्ल परिवार में सीमेंट का काम कर रहा था। यद्यपि सन्तराम के भाई महन्तराम और बेअन्तराम बड़े भाई से पृथक् हो चुके थे, इस पर भी बाबा के जीवन में तीनों भाई परस्पर मिलते-जुलते रहते थे।

मलावामल्ल यह भी देख रहा था कि उसका एम० एस-सी० उत्तीर्ण पोता संस्कृत पढ़े भाई को तुच्छ समझता है। इस पर भी दोनों भाई झगड़ा नहीं करते थे। वे दोनों बाबा को दुःखी करना नहीं चाहते थे। एक दिन बाबा ने दोनों से बात की थी। उसने पूछा था, 'प्रकाश! तुम दोनों भाई घर में ऐसे रहते हो जैसे दो सर्वथा था अपरिचित व्यक्ति होटल में रहते हैं।'

'और बाबा! दोनों की पत्नियां परस्पर मिलकर पतियों की त्रुटियां पूर्ण करती रहती हैं।' विश्वम्भर ने बुद्धिप्रकाश के उत्तर देने से पूर्व ही मुस्कराते हुए कह दिया।

'पर आपस में भाई-भाई बन रहने में भी एक मजा है।'

'वह तो बाबा! माता-पिता की कृपा से हम हैं ही।' बुद्धि-प्रकाश ने कहा, 'मैं कुछ ऐसा अनुभव करता हूं कि मैं यहां जेलखाने में बंद हूं और विवश इस जेलखाने के दूसरे कैदियों से मिलना होता है।'

'ओह!'

''बाबा! मैं दुनिया की सैर करना चाहता हूं।'

'तो कर सकते हो। तुमको कौन मना करता है?''

'पर इससे दादा को दुकान पर अकेले रह जाने से कष्ट होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मैं इसके बड़े लड़के योगेश के सज्ञान होने तक यहां बंधा हूं। पीछे मैं दुकान छोड़ दूंगा।'

बाबा मलावामल्ल ने पृथक् में विश्वम्भर को कहा, 'तनिक छोटे भाई की रुचि अनुसार उसे दुकान से अवकाश देते रहा करो।'

विश्वम्भर का कहना था, 'बाबा ! यह बात नहीं है। वास्तविक बात यह है कि इसका स्वभाव अपनी पत्नी कमला से नहीं मिलता। कमला एक घरेलू जीव है और घर का सुख-स्वाद छोड़ इधर-उधर स्नेहहीन पृथ्वी के देशों में जाने में लाभ नहीं समझती।

'एक दिन गार्गी के पूछने पर उसने बताया था कि भिन्न-भिन्न देशों की प्राकृतिक भिन्नता तो है, परन्तु जहां मानव परस्पर सहानुभूति-विहीन हों, उनको देखने से लाभ क्या है।

'वह कहती थी, अमरीका ने इंग्लैण्ड की युद्धकाल में बहुत सहायता की है, परन्तु एक सामान्य अंग्रेज एक सामान्य अमरीकी को मूर्ख समझ उससे घृणा करता है।

'अमरीका ने फ्रांस की भी सहायता की थी और फ्रांस के लोग अमरीका का कहा मानने को तैयार नहीं। इस प्रकार के कृतघ्न ससार में घूमने से क्या लाभ ?

'बाबा ! यह कमला है जो उसे इस घर से बांधे हुए है अन्यथा वह तो बहुत पहले भाग गया होता।'

बाबा की हंसी निकल गई। हंसकर उसने कहा, 'सुन्दर बीवियों का एक तो गुण है ही। पशु पतियों को लगाम लगा उनसे काम लेती हैं।'

परन्तु यह बाबा की मृत्यु के उपरान्त नहीं हो सका। मलावामल्ल की मृत्यु को अभी पांच दिन ही हुए थे कि बुद्धिप्रकाश ने दुकान पर बैठते हुए पूछा, 'बाबा की दुकान में जो पूंजी है उसका क्या कर रहे हो ?'

विश्वम्भर ने कहा, 'बुद्धिप्रकाश ! पिताजी चाचाओं से यह निश्चय कर गये हैं कि तेरहवां के उपरान्त बाबा के कमरे की तलाशी लेंगे और उनके कागज-पत्रों में देखेंगे कि उन्होंने किसी प्रकार का इच्छा-पत्र लिखा रखा है अथवा नहीं।'

'तो इसमें हम कुछ नहीं कर सकते ?'

'क्या कर सकते हैं ? बाबा के उत्तराधिकारी पिताजी और चाचे हैं। जो कुछ वे चाहेंगे वही होगा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'परन्तु हमारी दुकान का लेखा-जोखा तो होना चाहिये। यह तो हम करेंगे।'

'ठीक है। वैसे तो हिसाब सदैव तैयार रहता है। 'लैजर-खाते' का यही तो अभिप्राय है। पिछले इक्कीस दिसम्बर तक का हिसाब बना है। बाबा के पुत्र जब निश्चय करेंगे तो उनको वह दे दिया जायेगा।'

'और हमारा उसमें क्या कुछ है?'

'यह भी खाता बही में लिखा है।

बुद्धिप्रकाश उस दिन 'खाता' देखता रहा। नियमपूर्वक वह चार बजे दुकान से निकल गया।

रात को जब पति-पत्नी भ्रमण से लौटे तो पहले गार्गी ने ही कमला की आंख कुछ लाल हो रही देखीं। रात भोजन करते हुए उसने सबके सामने ही पूछ लिया, 'कमला बहन! पति से झगड़ा करती रही हो?'

कमला गार्गी की सूझ बूझ की बात जानती थी। इस कारण मुस्कराते हुए बोली, 'गार्गी दीदी से कुछ छुपा रहता नहीं। इस कारण स्वयं ही बता दूंगी, परन्तु सब बच्चों के सामने नहीं। कल किसी समय।'

उस समय कुछ विशेष बात नहीं हुई, परन्तु अगले दिन कमला नियमपूर्वक स्नान करने के समय नीचे नहीं आई।

गार्गी समझ गई कि पति-पत्नी में कुछ झगड़ा हुआ है। पहले साय की सैर करते समय, फिर रात के भोजन के समय, परन्तु उसने पति-पत्नी के झगड़े में हस्तक्षेप करने का यत्न नहीं किया। वह मौन रही। विश्वम्भर तो अल्पाहार ले साढ़े सात बजे ही दुकान पर चला गया और बुद्धिप्रकाश भी साढ़े नौ बजे घर से दुकान को चला गया।

इस पर गार्गी ने कमला से कुछ नहीं पूछा। वह स्वयं ही आयी और समीप बैठ बोली, 'बहनजी! एक बात आपसे पूछती हूं।'

'हां, पूछो।'

'क्या पिता के देहान्त के उपरान्त बच्चों को बंटवारा कर ही लेना चाहिए?'

'परन्तु कमला! किसका पिता मरा है? जिनका मरा है वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तो पहले ही पृथक्-पृथक् है। अब तो बाबा ने जो कुछ जगा अपने पास रखी थी उसके विषय में बाबा की रुचि जानकर निश्चय किया जायेगा।

'योगेश के बाबा और उनके भाई तो अभी जीवित हैं। यद्यपि उनका व्यापार पृथक्-पृथक् है, परन्तु ऐसा तो बाबा के समय भी था। सम्पति सांझी होते हुए भी भाई पृथक्-पृथक् दुकान करते थे और पृथक्-पृथक् रसोई में खाते-पकाते थे।'

'यही तो आपके देवर को मैंने कहा है, परन्तु वह झगड़ा करने पर तुले हुए हैं।'

'कमला बहन!' गार्गी ने कह दिया, 'मुझे योगेश के पिता पर पूर्ण विश्वास है कि वे किसी भी सूरत में भाई से झगड़ा नहीं करेंगे। जैसा वह चाहेगा वैसा ही कर देंगे। भाई-बहन के सम्बन्ध से धन-दौलत का सम्बन्ध तो बहुत ही हीन है।'

कमला मुख देखती रह गयी। गार्गी ने झगड़े के विषय में कुछ नहीं पूछा तो वह भी चुप कर गयी।

परन्तु बात दो दिन उपरान्त स्पष्ट हो गई। सन्तराम अमृतसर से आया और विश्वम्भर से बुद्धिप्रकाश की अनुपस्थिति में बात करता रहा। रात को पिता-पुत्र दोनों घर पहुंचे तो गार्गी पिता-पुत्र को आते देख समझ गयी कि छोटे भैया ने पिताजी को बुलाया है और कुछ निर्णयात्मक बात होने वाली है।

बात भोजनोपरान्त हुई। विश्वम्भर ने पिता के पास जाने से पूर्व गार्गी को यह कहा, 'पिताजी भैया बुद्धिप्रकाश के विषय में कुछ बात करने आये हैं, इस कारण तुम बिना बुलाये वहां मत आना, मैं उनके कमरे में जा रहा हूं।'

गार्गी समझ रही थी। उसने मौन रह बात स्वीकार की तो विश्वम्भर नीचे उतर गया।

बच्चे सो चुके थे। गार्गी पति की प्रतीक्षा अपने कमरे में कर रही थी। पिता-पुत्र अभी भी नीचे बैठे विचार-विमर्श कर रहे थे।

रात के दो बजे विश्वम्भर ऊपर आया तो गार्गी को बैठे प्रतीक्षा करते देख पूछने लगा, 'सोई नहीं?'

'आज आपकी संगत की इच्छा हो रही थी।'

'ओह!' विश्वम्भर मुस्कराते हुए वस्त्र बदलने लगा। सोने की पोशाक पहन उसने पत्नी को अपने पलंग पर आने का निमंत्रण दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दिया। गार्गी हंस पड़ी और बो[illegible] क्या इसके अ[illegible] रिक्त अन्य किसी प्रकार से संगत नहीं होती ?'

विश्वम्भर लज्जित हो पलंग पर बैठ बोला, 'भूल हो गई। मैं संगत का विशेषण पता किए बिना उसका अर्थ लगाने लग[illegible] था।'

'ठीक है। बताइये, क्या निर्णय कर आये हैं ?'

'बुद्धिप्रकाश अपना लेखा-जोखा दुकान से पृथक् करना चाहता हूं। पिताजी की राय है, मुझे मान जाना चाहिए।'

'यह तो ठीक ही है। एक दिन यह होना ही था। पिताजी के सम्मुख हो तो अधिक ठीक है।'

'पिताजी का यह निर्णय है कि मैं अमृतसर एजेन्सी में सम्मिलित हो जाऊं और अनारकली वाली दुकान बुद्धिप्रकाश को दे दूं।'

'और भैया मान गये हैं ?'

'वह कह रहा था कि वह दुकान में अपने हिस्से का सब नकद एकत्रित कर बैंक में रख आराम से बैठ अपने पढ़ने-लिखने का काम करेगा।'

'यह भी ठीक है।'

'तो तुम इससे प्रसन्न हो ?"

'प्रसन्न तो नहीं हूं, इस बात पर चिन्ता भी नहीं कर रही।'

'तो सो जाओ। दोनों पलंगों पर स्थान है। मेरे पर और तुम्हारे पर भी।'

गार्गी बोली, 'आपकी सद्बुद्धि से प्रसन्न तो आपके पलंग पर ही सोऊंगी।'

विश्वम्भर हस पड़ा।

परन्तु प्रातः अल्पाहार के समय कमला नीचे नहीं आयी। विश्वम्भर तो साढ़े सात बजे ही चला जाया करता था। बुद्धिप्रकाश अल्पाहार के लिए आया। गार्गी सेविका से अल्पाहार लगवाते हुए पूछने लगी, 'कमला बहन नहीं आयी ?'

'आज उनकी तबीयत ठीक नहीं।'

गार्गी को समझ आया कि फिर पति-पत्नी में झगड़ा हुआ है। परन्तु पूछना अनुचित समझ वह बोली, 'तो अभी उसका पता करती हूं।'

'हां, उसको अपनी विवेकयुक्त बातों से तृप्त कर दो।'

बुद्धिप्रकाश गया तो गार्गी कमला के कमरे में गयी। कमला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के तीनों बच्चे अंग्रेजी स्कूल, जो निस्वत रोड पर था, जा चुके थे। वह स्कूल एक ईसाई ने खोला हुआ था। कमला पलंग पर लेटी हुई थी और अंगड़ाइयां ले रही थी।

'कमला बहन ! क्या हो रहा है ?' गार्गी ने पूछा।

'रात-भर सो नहीं सकी। इस कारण प्रातः नींद देरी से खुली है।'

'तो पति ने कड़ी मेहनत कराई है ?'

'नहीं। मैंने उनको बहुत कष्ट दिया है।'

'परन्तु वह तो प्रसन्न अल्पाहार ले दुकान पर चला गया है ?'

'यह इसलिए कि वह शव की भांति जीवित पत्नी का प्यार ग्रहण करते रहे हैं।

'क्या मतलब ?'

'मैं यह समझी हूं कि मैं आज से विधवा हूं, पतिविहीन हूं। मुझे अपने निर्वाचन पर पश्चात्ताप लगने लगा है।'

'परन्तु वह तो तुमको बहुत सुन्दर समझ तुमसे बहुत प्यार करते थे।'

'हां ! सुन्दर शरीर को, परन्तु मेरे सुन्दर विचारों को वे पसन्द करते प्रतीत नहीं हुए। इसी कारण निराश हूं।'

'तो यह बात है ? किस विषय पर मतभेद है ?'

'तो दादा ने आपको नहीं बताया ?'

'बताया है कि योगेश को अब दुकान का काम सिखाना पड़ेगा।'

'यह इसीलिए कि उनका कालेज-पढ़ा भाई दुकान छोड़ रहा है।'

'तो इसमें बुरा क्या है ? वह वैश्य पद से उठकर ब्राह्मण पद पर पहुंचने का यत्न करना चाहता है।'

'यह तो दुकान पर रहते हुए अधिक सुविधा से कर सकते थे। अभी-अभी विश्वविद्यालय का नया पुस्तकालय तैयार हुआ है। मैंने कई बार उनसे कहा है, सायंकाल सड़कें नापने से अधिक अच्छा होगा कि वह वहां जाकर अपना ज्ञान-वर्धन किया करें।'

'मैं समझती हूं,' गार्गी ने कमला के पलंग पर बैठते हुए कहा, 'वे किसी प्रयोगशाला में शोध कार्य करना चाहते हैं।

'नहीं दीदी ! वह रुपया ले योरुप और अमरीका की सैर करना चाहते हैं और यदि हो सका तो अमरीका में ही रहना चाहेंगे। पिताजी ने आश्वासन दिया है कि उनकी वसीयत में जो

CC-0. In Public Domain.Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कुछ उनके नाम होगा वह सब तुरन्त दे दिया जायेगा, परन्तु बाबा का कमरा वे क्रियाकर्म के उपरान्त ही खोलेंगे।

'मैं रात-भर उनसे आग्रह करती रही हूं कि इन भले लोगों के परिवार को छोड़कर भूतल पर अन्य कहीं सुख प्राप्त नहीं कर सकेंगे, परन्तु वे अपने हठ पर दृढ़ हैं।'

'तो कमला बहन ! अमरीकन महिला बनने जा रही हो ?' गार्गी ने हंसते हुए कहा।

'मैंने भी मन में एक निश्चय कर लिया है और उसके उपरान्त ही प्रातःकाल सो सकी थी और अब दीदी के आने पर जागी हूं।'

'क्या निश्चय किया है ?'

'दीदी ! अभी नहीं बताऊंगी। उनके निर्णय के उपरान्त ही घोषणा कर सकूंगी।'

गार्गी चुप रही। कुछ विचार कर बोली, 'परन्तु अब तो दस बज रहे हैं। शौचादि भी जाना है अथवा नहीं ?'

'ओह !' इतना कह वह लपककर उठी और शौचालय को भागी।

5

तेरहवें के दिन तक किसी प्रकार की हलचल नहीं हुई। सब कुछ सरलता से चलता प्रतीत हुआ। क्रियाकर्म के पश्चात् जब आचार्य पलंग-पीड़ा और दान-दक्षिणा ले चल दिया तो घर के स्त्री वर्ग और बच्चों को ऊपर की मंजिल पर भेज दिया गया। तीनों भाई सन्तराम, महन्तराम, बेअन्तराम बाबा के कमरे को खोल उसमें हवन सामग्री का धुआं कर उसमें जा बैठे। भीतर से द्वार बंद कर लिया गया। विश्वम्भर और बुद्धिप्रकाश तथा बेअन्तराम के लड़के भी बाहर कर दिये गये।

भाइयों को कमरे की तलाशी लेते हुए और उसमें कागज-पत्र देखने तथा पढ़ने में लगभग तीन घंटे लगे। आखिर द्वार खोला गया और तीनों भाई प्रसन्नवदन बाहर निकले।

गार्गी, कमला तथा परिवार के अन्य लोग चुपचाप अपने-अपने विचारों में लीन बैठे थे। जब तीनों भाई बाबा के कमरे से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
निकले तो सब बच्चों सहित उनको घेरकर खड़े हो गये। सन्तराम ने हाथ में दो पृष्ट का लूंडी भाषा में लिखा एक पर्चा पकड़ा था। उसने बैठकघर में सबके बीच बैठते हुए कहा, 'हमने कमरे का कोना-कोना देखा है। सिवाय इस कागज के और कुछ मतलब की वस्तु नहीं निकली। यह इच्छा-पत्र है। हमने पढ़ा है और आपको सुना देते हैं। हम भाइयों ने इसमें लिखे को स्वीकार कर लिया है। आशा करते हैं कि घर के सब सज्ञान प्राणी इसे स्वीकार करेंगे।'

सब उत्सुकता से वह हाथ से लिखा पर्चा पढ़े जाने की प्रतीक्षा में सन्तराम का मुख देख रहे थे। सन्तराम ने पढ़कर सुना दिया। लिखा था—

'मैं सबसे प्रथम परमात्मा को स्मरण कर यह घोषणा करता हूं कि मैंने व्यापार के ज्ञात नियमों के अनुसार व्यवहार करते हुए ही यह सब आय की है।

'मैंने अपनी कमाई के व्यापार-सम्बन्धी विभाग का बंटवारा कर दिया है। मैंने घर-सम्बन्धी सम्पत्ति का बंटवारा भी अपनी मति अनुसार किया था।

'अब परिवार में रहते हुए जो कुछ मेरे पास बचा है, उसके विषय में लिख रहा हूं।

'मेरे नाम नगर में तीन मकान हैं। नगर के बाहर एक कोठी की सम्पत्ति है। मकान और कोठी की सम्पत्ति पर जो मैंने व्यय किया है वही इसका मूल्य समझता हूं। बजाज हट्टे वाली दुकान और मकान का मूल्य पैंतालीस सहस्र रुपये है। कूचा बाल माता वाले दो मकान इक्कीस सहस्र रुपये, चर्च रोड वाली कोठी एक लाख बीस सहस्र रुपये, पंजाब नेशनल बैंक पक्के खाते में बीस सहस्र रुपये, सेण्ट्रल बैंक में तीस सहस्र रुपये और बंगाल बैंक में चालीस सहस्र रुपये। पंजाब नेशनल बैंक के चालू खाते में नौ हजार एक सौ बीस रुपये हैं।

'इसमें से बैंक के चालू खाते का धन घर के सेवकों, भंगी-चमार इत्यादि में बराबर-बराबर बांट दिया जाये।

'शेष पक्के खाते और मकानों का मूल्य बनता है दो लाख छिहत्तर हजार रुपये। इसमें अनारकली वाली दुकान में मेरा पचास हजार का भाग जमा कर बन गया है तीन लाख छब्बीस हजार रुपये। घर के प्राणी, जो मेरी संतान और उनकी बहुएं हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सब चौबीस हैं। इस प्रकार सम्पत्ति का भाग प्रत्येक को मिलना चाहिये तेरह हजार पांच सौ तिरासी रुपये। मकान एक-एक दो-दो मिलकर बांट लें और नकद का बंटवारा कर लें।'

इतना सुनकर बुद्धिप्रकाश उठ खड़ा हुआ और पिता से कहने लगा, 'पिताजी! मेरा सब नकद कर मुझे मिलने का प्रबन्ध हो जाना चाहिये।' इतना कह वह अपने कमरे को चला गया। कमला और उसके बच्चे भी उठे और उसके पीछे-पीछे चल दिये। गार्गी को यह शुभ प्रतीत नहीं हुआ, परन्तु वह चुप थी।

नकद रुपये और मकान के मूल्य का लेखा-जोखा किया गया। सबने उन पर व्यय किये धन पर ही बोली दी, अर्थात् बाबा द्वारा निश्चय किया-स्वीकार कर लिया।

शेष बंटवारे का धन गिन डाला गया और सबके नाम पर जो कुछ बनता था, लिख दिया गया।

बुद्धिप्रकाश का, उसकी पत्नी और उसके बच्चों का सब एकत्रित हिसाब गार्गी को बता दिया गया। वह था लगभग सड़सठ हजार नौ सौ सोलह रुपये।

विश्वम्भर ने अपने सोने के कमरे में जाकर बताया कि बाबा का पचास हजार दुकान में से निकालकर देना होगा और पचास हजार बुद्धिप्रकाश का अपना भाग, अर्थात् दुकान में से एक लाख रुपया तुरन्त निकालना होगा।

गार्गी का कहना था, 'तो ऐसा करिये, जो मुझे और बच्चोंको मिलने वाला है, वह सब दुकान में डाल लीजियेगा।'

'तब तो भैया का भुगतान कर सकूंगा।

'तो सो जाइये। एक-दो दिन में सब कुछ भैया को दे दीजियेगा और उसको स्वेच्छा से विचरने दीजिये।'

विश्वम्भर सो गया। वह पत्नी से यही आशा करता था। उसकी आशा पूर्ण हुई तो वह सुख की नींद सोया रहा।

अगले दिन सब प्राणी देरी से उठे। सन्तराम ने सबको बाबा के कहे अनुसार धन बांट दिया। सबके चैक बना-बनाकर सबके जागने से पूर्व उसने तैयार कर रखे थे। चैक उनके हाथ में दे दिये गये। जिनको मकान मिले थे उनको मकानों के दस्तावेज दे दिये। ऐसा करते-करते दस बजे तो उसे बुद्धिप्रकाश की याद आयी। उसने गार्गी से पूछा, 'कमला कहां है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'वे अभी अपने सोने के कमरे से नहीं आये।'

'क्यों ?'

'ऐसा प्रतीत होता है कि पति-पत्नी में मतभेद हो गया है और वे रात-भर झगड़ते रहे हैं। अब सो रहे होंगे।'

सन्तराम हंस पड़ा और बोला, 'तनिक ऊपर जा द्वार के बाहर से आवाज दे पति-पत्नी दोनों को बुला लाओ। कहना, मैं अमृतसर जा रहा हूं और अपने-अपने चैक ले जायें।'

गार्गी श्वसुर की आज्ञा पा कमला के कमरे का द्वार खटखटाने लगी। कुछ देर में द्वार बुद्धिप्रकाश ने खोला। बच्चे मां की खाट पर बैठे थे और कमला घुटने में सिर दिये उनके पास बैठी आंसू बहा रही थी।

गार्गी ने एक दृष्टि में सब देख-समझ कह दिया, 'पिताजी भैया और भाभी को नीचे बुला रहे हैं। वह शीघ्र ही अमृतसर लौट जाना चाहते हैं।

इस पर कमला पलंग से उतरी। अपने सोने वाले वस्त्रों पर चादर लपेट वह चल पड़ी। जाते हुए उसने बच्चों को कहा, 'आज स्कूल नहीं जाना। मैं अभी आती हूं।'

पति-पत्नी को लेकर गार्गी नीचे पहुंची तो कमला की आंखें रोने से अभी भी लाल और फूली हुई थीं। सन्तराम ने देखा तो पूछ लिया, 'तो रात-भर रोती रही हो ?'

'नहीं पिताजी ! यह तो अभी आधे घण्टे से कुछ बहने लगे हैं। और हम एक निर्णय पर पहुंच गये हैं।'

'क्या निणय कर लिया है ?'

'यही कि अब मेरे विवाहित जीवन का अन्त आ गया है। इसी से इतने व्यतीत जीवन और बच्चे बनाने का पश्चात्ताप लग रहा है।'

'कमला बेटी ! साफ-साफ बात कहो। बुझारतें बूझने का मुझे अभ्यास नहीं।'

'पिताजी ! अपने सुपुत्र से पूछिए। वह मेरा निर्णय आपको बता देंगे।'

सन्तराम प्रश्नभरी दृष्टि से बुद्धिप्रकाश का मुख देखने लगा।

बुद्धिप्रकाश ने बताया, 'मुझमें और कमला में भविष्य के विषय में मतभेद उत्पन्न हो गया है। रात-भर हम यत्न करते रहे कि मतभेद मिट जाए। अन्त में प्रातःकाल इसने यह कहा है कि मैं अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तथा उसका भाग लेकर जहां चाहूं जा सकता हूं। वह अपना भाग इसलिए दे रही है क्योंकि वह मुझसे सम्बन्ध-विच्छेद कर रही है। उसका जो कुछ मिल रहा है विवाह के कारण ही है और जब विवाह ही नहीं तो बाबा की सम्पत्ति में वह हिस्सा भी नहीं लेगी।

'बाबा से मिला तथा दुकान पर मेरा भाग लगभग सवा-डेढ़ लाख रुपया लेकर हम अमरीका जाकर रहेंगे। वहां एक प्रोफेसर का वेतन दो हजार डालर है। इससे हम बहुत आनन्द से जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

'वह मान नहीं रही और मैं उसके बिना अपनी योजना बना रहा हूं।'

'देखो बुद्धिप्रकाश ! यह तुम्हारे घर की बात है। इसमें हम हस्तक्षेप नहीं करगे। न किसी प्रकार की राय देंगे।

'मैंने तुम्हारे और कमला तथा बच्चों के चैक बना रखे हैं। ये तुम ले लो और यदि घर और दुकान से जाना हो तो गार्गी और विश्वम्भर को बताकर जाना।'

इतना कह सन्तराम ने बुद्धिप्रकाश इत्यादि को चैक दे दिए। बुद्धिप्रकाश का बुद्धिप्रकाश को, कमला का कमला को और बच्चों के चैक भी उसने कमला के सामने रख दिए। सन्तराम उठ खड़ा हुआ। बोला, 'मैं भोजन कर अमृतसर जा रहा हूं। किसी प्रकार की कठिनाई हुई तो वहां आ जाना। जो कुछ समझ में आयेगा कर दूंगा।'

सन्तराम उठा तो कमला ने अपने चैक के पीछे हस्ताक्षर कर पति को दे दिया और बच्चों के चैक लेकर ऊपर जाते हुए बोली, 'ये उनसे मांग लेना।'

बुद्धिप्रकाश मुस्कराया और पत्नी के पीछे सीढ़ियां चढ़ने लगा।

कमला ने कमरे में पहुंच सबसे बड़े लड़के महेश को कहा, 'बाबा ये चैक तुमको दे गए हैं। इनको या तो अपने पिता के द्वारा प्राप्त कर सकोगे अथवा मेरे द्वारा। तुम किसके साथ रहना चाहते हो, यह तुम बताओ। उसी के द्वारा ही ये रुपये प्राप्त होंगे।'

'और मां ! तुम कहां रहोगी ? पापा तो अमरीका जा रहे हैं।'

'मैं यहां लाहौर में ही रहूंगी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'कहां ?'

'अभी निश्चय नहीं किया। तुम्हारी ताई से बात कर बताऊंगी।'

महेश ने कहा, 'मां ! मैं तुम्हारे साथ रहूंगा।'

'और हम भी।' दूसरे बच्चे बोल उठे।

,तो यह हाथ में पकड़कर नीचे आ जाना। मैं योगेश की माताजी से मिलने जा रही हूं।' इतना कह कमला कमरे से निकल सीढ़ियां उतर गई।

बच्चे भी उठ नीचे जाने लगे तो पिताजी ने उन्हें रोकते हुए कहा, 'ठहरो ! कहां जा रहे हो ?'

'नीचे मम्मी के पास।'

'मैं अमरीका जा रहा हूं और तुमको अपने साथ ले चलूंगा।'

महेश छोटों का प्रवक्ता बन गया। वह बोला, यह उसने चैक दिखाते हुए कहा, 'मम्मी को दे आयें।'

"तो अमरीका कैसे जाओगे ? इनसे ही तो जहाज का टिकट मिलेगा।'

इसका उत्तर महेश नहीं दे सका। महेश सात वर्ष का था। उससे छोटी लड़की का नाम था चन्द्रावती और वह पांच वर्ष की थी। राकेश तीन वर्ष का था। यह सबसे छोटा था। वह बोल उठा, 'पापा ! इस कागज से टिकट कौन देगा ?'

बुद्धिप्रकाश बच्चों को समझाने लगा, 'ये कागज नहीं हैं। इनको चैक कहते हैं। इनको बैंक में दिखाने से रुपये मिलेंगे और फिर रुपयों से जहाज का टिकट आएगा।

'बैंक में तुमको रुपये नहीं मिल सकते। तुम्हारी उम्र अभी बहुत कम है। मैं तुम्हारा सरपरस्त बन जाऊंगा तो रुपये मुझको मिल जायेंगे और तब मैं तुम्हारा टिकट खरीदकर तुमको न्यूयार्क, वाशिंगटन, फिलाडैल्फिया और नियाग्रह जल-प्रताप इत्यादि बहुत चित्र-विचित्र स्थान और दृश्य दिखाऊंगा।'

बच्चों प्रलोभन में फंस गए और बोले, 'तो मम्मी को भी साथ ले चलेंगे ?'

'पर वह साथ जाने को तैयार नहीं हो रही। देखते नहीं कि मैं साथ चलने के लिए उसे कह रहा था और वह मान नहीं रही थी।'

बच्चों को मां का व्यवहार पसन्द नहीं आया। इससे वे वहां बैठे ही विदेश जाने के लिए विस्मय में पूछने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6

नीचे कमला गार्गी के पास जा पहुंची। विश्वम्भर और सन्तराम घर से निकल रहे थे। विश्वम्भर दुकान को चला तो उसका पिता उसके साथ चलता हुआ पूछने लगा, 'बुद्धिप्रकाश दुकान में उसका लगा रुपया मांगेगा ?'

'हां। वह अमरीका जाकर वहां बसना चाहता है। वहीं किसी कालेज में पढ़ाने का काम करना चाहेगा।'

'और बाबा के भाग का भी पचास हजार निकालना होगा।'

'पिताजी ! दे दूंगा। गार्गी और योगेश आदि अपना रुपया दुकान में देंगे।'

'उधार देकर ?'

'नहीं, योगेश दुकान का भागीदार बन जाएगा। उसके दो हिस्से होंगे और मेरा एक। वह मां और बहन-भाइयों का दुकान में प्रातिनिध्य करेगा। उसे मैं बहीखाता रखना सिखा दूंगा।'

'और यह सब गार्गी मान गई है ?'

'जी। वह ही बच्चों की सरपरस्त होने की अर्जी कचहरी में करने जाएगी और तब वह बच्चों के चैक कैश करा दुकान में दे सकेगी। इस सबमें दो-तीन सप्ताह लगेंगे। तब बुद्धिप्रकाश को मैं दुकान से पृथक् करा सकूंगा।

'परन्तु पिताजी ! गार्गी का अनुमान है कि कमला और भैया में मतभेद है। कमला भारत से बाहर जाकर रहना नहीं चाहती।'

'अच्छा,' दोनों नगर-द्वार के बाहर पहुंच गए थे। इस कारण सन्तराम रेल के स्टेशन की ओर जाने से पहले विश्वम्भर को बोला, 'देखो ! यदि रुपये की अदायगी में कुछ कठिनाई हुई तो पत्र लिखना। मैं नकद रुपया दे सकूंगा।'

'पिताजी ! आशा तो है कि प्रबन्ध हो जाएगा। यदि न हो सका और बुद्धिप्रकाश ने जल्दी मचाई तो स्वयं वहां आकर आपसे सहायता मांग लूंगा।'

पिता एक तांगे में सवार होकर रेल के स्टेशन को चल पड़ा और पुत्र पैदल ही दुकान को। उस दिन बुद्धिप्रकाश निश्चित समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पर दुकान पर नहीं आया। उसकी कोई सूचना भी नहीं आई।

वह मध्याह्नोत्तर तीनों बच्चों के साथ दुकान पर आया और बताने लगा कि वह बच्चों का सरपरस्त बनने की अर्जी रजिस्ट्रार के पास दे आया है।

'और,' विश्वम्भर ने पूछ लिया, 'कमला ?'

'उसने अपने चैक पर भरपाई लिखकर मुझे दे दी है। वह मैं अपने बैंक में दे आया हूं।'

विश्वम्भर ने इसमें और अधिक पूछना उचित नहीं समझा।

बात बुद्धिप्रकाश ने ही की। उसने कहा 'गार्गी भाभी भी बच्चों के साथ कचहरी गई हुई थी। मैं समझता हूं कि अपने बच्चों की वह सरपरस्त बन जाएगी।'

'मुझे बताकर गई है।'

'मैं समझता हूं कि बच्चों का सरपरस्त तुमको बनना चाहिए था।'

'नही भैया ! नाबालिग बच्चे मां के ही 'वार्ड' होते हैं।'

'मैंने तो कमला को तैयार कर लिया है।'

'उसका अपना दृष्टिकोण है और मेरा अपना '

बुद्धिप्रकाश ने बात बदल दी और पूछ लिया, 'दुकान में मेरे भाग का रुपया कब तक मिलेगा ?'

'वैसे तो जल्दी भी कर सकता हूं, परन्तु एक महीने तक तो सुगमता से हो सकेगा।'

'मैं यहां से यूरोप घूमता हुआ अमरीका जा रहा हूं और यत्न करूंगा कि वहां ही बस जाऊं। परन्तु यह वहां जाकर पता चलेगा। बच्चे मेरे साथ जा रहे हैं।'

'और कमला ?' विश्वम्भर का प्रश्न था।

'वह अभी मान नहीं रही। इस पर भी मुझे आशा है कि एक-दो दिन ठण्डे दिल से विचार करेगी तो मेरे साथ चल पड़ेगी '

और कुछ जानने को नहीं था। इस कारण विश्वम्भर दुकान के काम को देखने लगा। बुद्धिप्रकाश बच्चों को लेकर घर को चल दिया।

रात को विश्वम्भर घर आया तो वह कमला का विचार सुन स्तब्ध रह गया।

प्रातः जब बच्चों ने पिता के साथ विदेश जाने का निश्चय किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
था तो कमला ने गार्गी से निर्णयात्मक बात कर दी थी। उसने कहा था. 'दीदी ! मैंने पति और बच्चों से सम्बन्ध तोड़ दिया है और आज ही ऊपर का कमरा छोड़ रही हूं। बताओ, तुम मुझे नीचे कोई कमरा दोगी अथवा मैं कहीं अन्यत्र प्रबन्ध करूं ?'

'कमला ! भैया से सम्बन्ध छोड़ यहां किस रूप में रहोगी ?'

'चौका-बासन करने वाली सेविका से लेकर किसी भी रूप में जिसमें तुम रख सको।'

'ठीक है। तब मुझे तुम्हारे योग्य कोई कार्य यहां विचार करना होगा। कब से पति को छोड़ रही हो ?'

'छोड़ आई हूं। वह बच्चों को लेकर कचहरी सरपरस्त बनने जा रहे हैं।'

गार्गी कमला का पति से सम्बन्ध इस अवस्था तक पहुंच गया जान उसका मुख देखती रह गई। कुछ विचारकर बोली, 'अच्छा, अभी तो मैं बच्चों के साथ कचहरी जा रही हूं। जब तक मैं घर से बाहर हूं. तुम घर की मालकिन के रूप में काम करो। मैं चार बजे से पूर्व आ जाऊंगी। तब तुम्हारे रहने का और तुम्हारे काम का विचार करूंगी।'

इतना कह गार्गी स्वयं को और बच्चों को कचहरी में जाने के लिए तैयार करने लगी।

गार्गी अपने पिता के घर गई और वहां से वे गार्गी के ताया हुक्मचन्द के घर चले गए। रजिस्ट्रार पण्डितजी का यजमान था। इस कारण उसके साथ जाने से आधे घण्टे में सब लिखत-पढत हो गई। रजिस्ट्रार ने गार्गी के बच्चों के सरपरस्ती के विषय में उसके पिता, बाबा इत्यादि को नोटिस जारी कर दिया कि यदि उनको किसी विषय में आपत्ति हो तो पन्द्रह दिन के भीतर आपत्ति उपस्थित करें।

बुद्धिप्रकाश अभी वकील से अर्जी ही लिखा रहा था कि गार्गी काम से अवकाश पा घर का चल दी। बुद्धिप्रकाश की अर्जी पर यह आज्ञा हुई कि वह बच्चों का पिता है, इसका प्रमाण उपस्थित करे। उसे एक सप्ताह की तारीख मिल गई।

यह बात बुद्धिप्रकाश ने विश्वम्भर को नहीं बताई थी। वह कोर्ट की ओर से उसे 'सम्मन' कराना चाहता था, जिससे वह सौगन्धपूर्वक उसकी बात का समर्थन कर सके कि वह ही बच्चों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पिता है।

घर पर बुद्धिप्रकाश पहुंचा तो गार्गी अपने कमरे में आराम कर रही थी और कमला रसोईघर में खड़ी सेवक से चाय तैयार करवा रही थी।

बच्चे भागकर मां के पास गए तो पिता भी रसोई के बाहर जा खड़ा हुआ। कमला ने बच्चों को सम्बोधन कर कहा, 'अभी दस मिनट में अल्पाहार भोजनालय में पहुंच जायेगा। आप सब वहां प्रतीक्षा करो।'

बुद्धिप्रकाश ने व्यंग्यात्मक भाव में कहा, 'मैं भी हूं।'

'जी! देख रही हूं। इसी कारण सबके लिए कहा है।'

'और भाभी कहां है?'

'वह कचहरी गई थी। अभी आराम कर रही है।'

'और तुम क्या कर रही हो यहां?'

'भाभी के स्थान पर काम कर रही हूं।'

'यह ठीक है। जो जिस काम के योग्य होता है परमात्मा उसे उसी स्थान पर पहुंचा देता है।'

कमला के मन में विचार आया कि वह भी कह दे कि वह भी अपने योग्य स्थान पर पहुंच रहे हैं, परन्तु इस वाक्-युद्ध से बचने के लिए वह मुस्कराकर चुप कर रही।

इस समय गार्गी अपने कमरे से निकल वहां आ गई और बोली, 'कमला बहन! भूख लग आई है।'

'सबके लिए तैयार हो रहा है।'

बुद्धिप्रकाश मुस्कराकर ऊपर चला गया। बच्चे खाना खाने के कमरे में जा बैठ। गार्गी भी अपने बच्चों के साथ वहां जा पहुंची।

नाश्ता तैयार हुआ तो वहां की घण्टी बज गई। बुद्धिप्रकाश और बुद्धिप्रकाश की अमृतसर विवाहित बहन अपने बच्चों के साथ आ गई। उसने कमला को वहां गार्गी के स्थान पर कार्य करते देख पूछ लिया, 'गार्गी, भाभी तबीयत तो ठीक है?'

'हां।'

'तुम्हारा स्थान कमला भाभी ले रही है। इसी कारण पूछ रही हूं।'

'कमला बहन घर का चार्ज ले रही है।'

'और तुम?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मुझे अब पाठ्य के लिए अधिक समय मिलेगा।

बुद्धिप्रकाश भी आया और वहां बना गुड़ का हलुआ और पूरी खाने लगा।

सब सन्तुष्ट हो जल पी चले गए तो गार्गी की प्रथा अनुसार कमला सबके अन्त में खाने लगी।

यह देख बुद्धिप्रकाश हंस पड़ा और बोला, 'गार्गी बहन को बहुत अच्छा सेवक मिला है।'

कमला ने कहा, 'हां। हलुआ स्वाद नहीं बना था क्या?'

'था तो स्वाद!'

'तो गार्गी बहन का धन्यवाद करो कि उसने उचित व्यक्ति को उचित कार्य पर लगाया है।'

'ऊपर कब आओगी?'

'उस स्थान का मैंने त्याग कर दिया है। मुझे गार्गी बहन ने अपनी बगल वाला कमरा दे दिया है।'

'पर मैं तुमसे एक विषय पर परामर्श करना चाहता हूं।'

'यहीं कर सकते हैं। ऊपर जाऊंगी नहीं और नीचे मेरे कमरे में कोई पर-पुरुष आ नहीं सकता।'

'तो मैं पुर-पुरुष हो गया हूं?'

'जी!'

'तुम्हारे वस्त्र, पुस्तकें और भूषणादि ऊपर रखे हैं।'

'मैं उन सबका त्याग कर आई हूं। जिसने ले दिए थे, उसी के पास छोड़ आई हूं।'

कमला की ननद मंजू समझ रही थी कि पति-पत्नी का झगड़ा है। इस कारण वह इसमें रुचि छोड़ अपने कमरे में बच्चों को लेकर चली गई। उसे भी बाबा की सम्पत्ति में से तेरह हजार का चैक मिला था।

इस कारण वह भैया और भाभी में किसी का पक्ष लिए बिना चल दी। गार्गी भी चल दी। जब कमला नए कमरे में जाने लगी तो बुद्धिप्रकाश ने उसकी बांह पकड़ ली।

झट से कमला ने दूसरे हाथ से मुख पर चपत लगा दी। बच्चे देख रहे थे। वे हंसने लगे तो बुद्धिप्रकाश लज्जित ऊपर कमरे में चला गया।

बच्चे मां के कमरे में जा पहुंचे। कमला ने महेश से पूछा, 'कहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गए थे ?'

'मां ! कचहरी। वहां एक व्यक्ति ने अर्जी लिखी। हमारे हस्ताक्षर कराये और फिर एक कमरे में एक ऊंचे स्थान पर बैठे एक व्यक्ति के सामने खड़ा कर दिया। हमसे पूछा गया कि पापा हमारे क्या लगते हैं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'उस व्यक्ति ने मुझसे पूछा था, मां का क्या नाम है ?'

'मैंने बताया, मम्मी, तो सब हंसने लगे। इस पर उस ऊंचे स्थान पर बठ व्यक्ति ने सामने रखे कागज पर कुछ लिखा और पापा से कहा, जाओ।

'बस, हम वहां से दुकान पर गये और वहां से घर आ गये हैं।'

'अब तुम अपने पापा के पास जाओ।'

'पर,' रमेश ने कहा, 'हम मम्मी के कमरे में सोयेंगे।'

'परन्तु चैक तो तुमने पापा को दे दिये हैं।'

'पापा कहते हैं कि हमें दुनिया की सैर करायेंगे।'

'तो जाओ। सैर करो। मैं तो सैर नहीं कराऊंगी। मैं तुम्हें पढ़ने के लिये कहूंगी।'

'वह हम कल जायेंगे। आज हमने स्कूल से छुट्टी की है।'

'मैं सदा की बात कर रही हूं।'

बच्चे स्कूल जाने से सैर को उपमा देते थे। इस कारण वह पिता के कमरे में चले गये।

रात को विश्वम्भर आया तो उसे गार्गी ने सब बता दिया।

रात का खाना बुद्धिप्रकाश ने अपने कमरे में मंगवा लिया और इस प्रकार वह विश्वम्भर की टीका-टिप्पणी से बच गया।

फिर झगड़ा हुआ उस दिन जिस दिन कचहरी में बुद्धिप्रकाश के बच्चों का सरपरस्त होने के लिए पिता का प्रमाण मांगा था।

सन्तराम को अमृतसर में 'सम्मन' भेजा गया था। सन्तराम आया तो उसने बयान दिये कि यह ठीक है कि बुद्धिप्रकाश बच्चों का बाप है, परन्तु बच्चों की मां भी है और वह उचित सरपरस्त होगी।

'परन्तु वह कहां है ? न्यायाधीश ने पूछा।

'उसे बुलाकर पूछा जाये।' सन्तराम का कहना था।

अतः कमला के नाम 'सम्मन' जारी हो गये।

कमला का अदालत में कहना था कि जो सरपरस्त बनेगा बच्चे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उसके पास रहेंगे। इस कारण अगर बच्चे मेरे पास रहना चाहतेहैं तो मैं सरपरस्त बनने का उत्तरदायित्व लेने के लिए तैयार हूं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर बच्चों को बुलाकर पूछा गया। महेश ने मां के पास रहना पसन्द किया और चन्द्रावती तथा रमेश ने पिता के साथ विदेश जाना स्वीकार कर लिया।

इस कारण कमला के बच्चों का भी बंटवारा हो गया। दो छोटों का सरपरस्त बुद्धिप्रकाश बना दिया गया और महेश मां की सरपरस्ती में हिन्दुस्तान में ही रह गया। बुद्धिप्रकाश तीन महीने में पासपोर्ट लेकर यूरोप के मार्ग से अमरीका को रवाना हो गया।

7

कमला ने महेश का धन विश्वम्भर के पास जमा करा दिया और उसने धन ब्याज पर खातों में जमा कर लिया।

समय व्यतीत होता गया। योगेश पिता की सहायता दुकान पर करता था और वह तथा अन्य बच्चे दुकान में सांझीदार बने हुए थे।

योगेश पच्चीस वर्ष का हुआ तो महेश ने एम० ए० इतिहास में उत्तीर्ण कर लिया।

योगेश की बहन शारदा का विवाह हो गया था और छोटा इण्टर में पढ़ रहा था।

सबसे विशेष बात यह थी कि दोनों की माताए उनकी पढ़ाई में रुचि ले रही थीं और इतिहास और फिलॉसफी को भारतीय रंगत दी जा रही थी।

एक दिन महेश विश्वविद्यालय के पुस्तकालय को स्वाध्याय के लिए जा रहा था कि एक प्रौढ़ावस्था का व्यक्ति एक समवयस्क अमरीकन महिला के साथ उसका मार्ग रोककर खड़ा हो गया।

महेश विश्वम्भर की दुकान से पुस्तकालय की ओर चला ही था कि ये दम्पत्ति उसका मार्ग रोक उसकी ओर ध्यान से देखने लगे। यह बुद्धिप्रकाश था। उसने अमरीका में नया विवाह कर लिया था। लड़की भी फिलाडैल्फिया विश्वविद्यालय की स्नातिका थी और एक ड्रीट्रायट फर्म में एकाउण्टेण्ट का काम करती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बुद्धिप्रकाश यहां के विद्यालय में विज्ञान पढ़ाता था।

महेश को यह सन्देह हुआ कि सामने उसका पिता खड़ा है। इस कारण उसने पूछा, 'पिताजी ?'

'हां। पहचान लिया है। यह तुम्हारी नयी मां है।'

महेश ने हाथ जोड़ नमस्ते कर दी।

इसका अर्थ समझने के लिए पत्नी ने पति की ओर देखा तो बुद्धिप्रकाश ने अंग्रेजी में बताया, 'यह तुम्हारे प्रति मां का सा आदर प्रकट कर रहा है।'

'थैंक यू।' औरत ने मुस्कराते हुए कहा। इसपर महेश ने पूछ लिया, 'पिताजी ! कहां ठहरे हैं ?'

'नीडीज होटल में।'

'आर घर नहीं चलियेगा ?'

'दादा से मिल रहा हूं। यदि वह निमंत्रण देगा तो चलूंगा।'

'तो आइये, मैं निमंत्रण दिलाता हूं।' वह पिता और विमाता को लेकर दुकान पर लौट आया। दुकान के भीतर बैठने का स्थान था। प्रायः ग्राहक भीतर जाकर कुर्सी पर बैठकर माल खरीदते थे। विश्वम्भर ने योगेश के अतिरिक्त दो सेवक बिक्री करने वाले रखे हुए थे।

महेश पिता और माता को लेकर विश्वम्भर के सामने आया तो देखते ही विश्वम्भर ने पहचान लिया। एकाएक उसके मुख से निकल गया, 'ओ भैया ! सुनाओ, कैसे हो ?'

साथ खड़ी स्त्री दोनों को देखते ही समझ गई कि भाई-भाई हैं। रूप-रंग मिलता था। शरीर से विश्वम्भर कुछ भारी था और बुद्धिप्रकाश दुबला।

गले मिलने के उपरान्त बुद्धिप्रकाश ने बताया, 'दादा ! यह तुम्हारी दूसरी भाभी है।'

'ओह ! और कोई बच्चा ?'

'कोई नहीं।'

'और चन्द्रावती तथा रमेश ?'

'दोनों अमरीका में बस गये हैं। रमेश न्यूयार्क में दुकान पर एकाउण्टेण्ट है और चन्द्रावती कैनसास के एक जमींदार के इकलौते बेटे से विवाह कर वहां रहती है।'

'यहां हम योगेश और महेश का एकदम विवाह कर रहे हैं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'एक ही घर में ?'

'हां। दोनों बहनें जाति से ब्राह्मण और ओरिएण्टल कॉलेज की स्नातिका हैं। संस्कृत की विदूषी हैं।'

विश्वम्भर ने हाथ जोड़ बुद्धिप्रकाश की पत्नी को कह दिया, 'आप हमारे घर के अन्य प्राणियों से कब मिलने चलगी ?'

बुद्धिप्रकाश ने उत्तर दिया, 'हम होटल से चले ही इसी नियत से थे। हम आपके निमंत्रण की प्रतीक्षा कर रहे थे।'

विश्वम्भर ने योगेश को कहा, 'मैं भैया और भाभी को लेकर घर जा रहा हूं। तुम समय पर दुकान बंद कर आ जाना।'

महेश पूछने लगा, 'तो मैं तांगा लाऊं ?'

'हां। घर के तांगे में योगेश दुकान बन्द कर आयेगा।'

महेश लपककर गया और नीले गुम्बद के समीप से तांगा पकड़ लाया।

बाबा की चर्च रोड वाली कोठी महन्त और बेअन्त ने मिलकर ली थी और पीछे उन्होंने इसे विश्वम्भर के पास बेच दी थी। विश्वम्भर ने दस हजार रुपये लाभ देकर ली थी और अब विश्वम्भर का परिवार उसी कोठी में रहता था।

मार्ग में बुद्धिप्रकाश ने पूछ लिया, 'तो बाबा वाली कोठी में रहते हो ?'

'हां। वह मैंने चाचाजी से एक लाख तीस हजार पर खरीद ली है।'

'तो काम खूब चलता है ?'

'हां भैया ! इन सत्रह-अठारह वर्ष में दुकान की नकद आय, जिस पर मैंने टैक्स दिया है, बीस लाख हुई है।

'इसमें से हमने यह कोठी खरीदी है। इसे पुनः निर्माण किया है और पच्चीस हजार का तो इसमें फरनीचर लगवाया है।

'और भैया, बाबा के कहे अनुसार पांच रुपये प्रतिशत दान-दक्षिणा भी दिया करता हूं।'

बुद्धिप्रकाश की अमरीकन पत्नी ऐसी बातें सुन बोली, 'तो क्या आपके घर पर सब हिन्दुस्तानी में बातें करते हैं ?'

यह संकेत था कि वह दोनों भाइयों की बातों को समझ नहीं रही। विश्वम्भर समझ गया और बोला, 'आई एम सॉरी।' और वह अंग्रेजी में बुद्धिप्रकाश से बातें करने लगा। इसपर तो ईरीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुख अनुभव करती हुई भाइयों की बातचीत में भाग लेने लगी।

४

चर्च रोड वाली कोठी में सात बैडरूम थे और प्रत्येक बैडरूम गुसलखाना-टट्टी से युक्त था। कोठी में गोल कमरा अर्थात् बैठक-घर था और बैठकघर के साथ रसोईघर के बीच में खाना खाने का कमरा था। विश्वम्भर ने जब भाई-भावज इत्यादि को लिये हुए प्रवेश किया तो ईरीन को वह एक बहुत बड़ा महल-सा दिखाई दिया।

बुद्धिप्रकाश और उसकी अमरीकन पत्नी डीट्रायट में और प्रायः अमरीकी नगरों में छोटे-छोटे कमरे, उनके साथ छोटे-छोटे बाथरूम और नाम मात्र के सिटिंग रूम में रहते रहे थे। लाहौर में भी नीडीज होटल नगर का सर्वश्रेष्ठ होटल था। इस पर भी उसका कमरों इत्यादि का आकार-विस्तार इस कोठी के कमरों से बहुत छोटा था। इस बात ने ईरीन के दिमाग में बहुत प्रभाव उत्पन्न किया। कमला और गार्गी कोठी में तांगा आने का शब्द सुन बरामदे में आ खड़ी हुई थीं। गार्गी और कमला दोनों सुन्दर स्त्रियां थीं और गौरवर्णीय, रूपरेखा अति आकर्षक थी। दोनों के मुख पर ओज और ऐश्वर्य था। इस बाहरी रूप-रंग ने विशेष प्रभाव उत्पन्न किया।

जब विश्वम्भर ने ईरीन का परिचय कराया तो कमला खिल-खिलाकर हंस पड़ी। उसके मुख से हिन्दुस्तानी में निकल गया, 'जो जिसके योग्य होता है वह वहीं पहुंच जाता है।'

ईरीन में भी एक गुण था। उसकी आंखें अम्बर के रंग की थीं और उसके सर्वथा श्वेत मुख में सुन्दर प्रतीत होती थीं।

परिचय प्राप्त होते ही गार्गी ने दोनों हाथों से ईरीन को पकड़ा और भीतर ड्राइंगरूम में जाकर एक सोफा पर बैठा दिया और पूछने लगी, 'क्या मैं आपका नाम और पूर्व परिचय जान सकती हूं?'

प्रश्न शुद्ध और स्पष्ट उच्चारित अंग्रेजी भाषा में था। इस कारण ईरीन सहज ही बताने लगी, 'नाम तो ईरीन और अब ईरीन अरोड़ा है, परन्तु पूर्व परिचय से आपको क्या मतलब है? हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसको किसी प्रकार का महत्त्व नहीं देते।'

गार्गी का कहना था, 'यह तो ठीक है, परन्तु इसमें भी सन्देह नहीं कि किसी ज्युअल की शोभा उसकी पृष्ठभूमि से निखर आती है।

'और यदि,' बात गार्गी ने जारी रखी, 'बैक ग्राउण्ड कुछ असुन्दर भी है तब भी उस असुन्दर पृष्ठभूमि पर हीरे की अपनी महिमा बढ़ती ही है।'

''वैसे,' ईरीन ने उत्तर दिया, 'मेरी बैक ग्राउण्ड किसी प्रकार असुन्दर नहीं। मैं फिलाडैल्फिया के एक बैरिस्टर की लड़की हूं। परन्तु हमारे यहां रिवाज है कि ज्यों ही सन्तान सज्ञान होती है, वह विशाल संसार में अपना मार्ग बनाने में स्वतंत्र हो जाती है।

'यह प्रोफेसर साहब विश्वविद्यालय की एक कॉन्फरेंस में आये हुए थे कि मुझे एक रेस्तरां में मिल गये। मैं वर्णन नहीं कर सकती कि मैं इनकी ओर प्रबल आकर्षण क्यों अनुभव करने लगी।

'यह तो दो दिन की कॉन्फरेन्स के उपरान्त अपने विश्व-विद्यालय को लौट गये और मैं इनके पीछे-पीछे वहां जा पहुंची।

'जब विवाह होने लगा तो इन्होंने कोर्ट में जाकर अथवा ईसाई ढंग से विवाह करने से इनकार कर दिया। मैंने कारण पूछा तो इन्होंने कहा कि यह पहले से विवाहित हैं और उसकी उपस्थिति में यह कह नहीं सकते कि उनकी पहले कोई पत्नी नहीं।

'कई दिन के विचार-विमर्श के उपरान्त मैं इनके कमरे में जा पहुंची और हम 'मैन एण्ड वाइफ' बिना किसी रस्म अथवा कानून के हो गये।

'इसे अठारह वर्ष हो गये हैं और इस लम्बे काल में हममें कभी भी मतभेद उत्पन्न नहीं हुआ। परन्तु मैं विस्मय करती हूं कि इतने सुन्दर और पढ़े-लिखे पति को इनकी सुन्दर पत्नी छोड़ क्यों बैठी है?

'मैं हमेशा सन्देह किया करती थी कि यदि इनकी पहली पत्नी आ गई तो क्या यह मुझे छोड़ देंगे?

'यह कहते हैं कि इनकी पहली पत्नी इनके जीवन में हलचल मचाने नहीं आयेगी। और हुआ भी ऐसा ही। हमारे अठारह वर्ष के विवाहित जीवन में यह वहां नहीं आयीं।'

'तो आपको मेरा भय इन अठारह वर्ष में सदा लगा रहा है?' कमला ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए पूछ लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रश्न पर ईरीन कुछ विचारने लगी। फिर बोली, 'हां, परन्तु समय व्यतीत होने के साथ-साथ मैं आश्वस्त भी होती जाती थी और अब हम इस मुल्क को आने लगे तो मैं आपसे मिलने के लिए मन में उत्सुकता अनुभव करने लगी थी।'

'तो अब आपको मुझसे भय अनुभव नहीं होता?'

'चलने के समय मैंने विचार किया था और मैं अब अपने को आर्थिक दृष्टि से और जीवन की आवश्यकता से इन प्रोफेसर साहब से स्वतंत्र पाती हूं। मुझे किसी प्रकार का भय प्रतीत नहीं होता।'

गार्गी हंस पड़ी। ईरीन उसके हंसने का अभिप्राय न समझ उसके मुख पर प्रश्नभरी दृष्टि से देखने लगी। गार्गी उसका समाधान करना चाहती थी, परन्तु इस समय घर की सेविका सबके लिये चाय ले आई।

कमला सबके लिये प्याले, सासर और प्लेटें लगाने लगी।

गार्गी ने अपने हंसने का अर्थ समझाते हुए कहा, 'तो ईरीन बहन पति से बांधने वाले ये दो ही कारण मानती हैं। एक धन और दूसरी शारीरिक आवश्यकताएं?'

ईरीन ने कहा, 'मुझे तो इनसे अपना अन्य किसी प्रकार का सम्बन्ध समझ आता नहीं। इनसे सम्बन्ध बनाने से पूर्व मैं अभी निर्वाह योग्य उत्पन्न नहीं कर सकती थी, साथ ही मैं उस समय पचीस वर्ष की युवती पुरुष संगत की तृष्णा अनुभव करती थी।

'हमारे समाज में युवक तो बहुत थे, परन्तु इच्छाओं की पूर्ति योग्य कोई दिखाई नहीं देता था। अकस्मात् यह मिले तो मुझे समझ आने लगा कि मेरी दोनों आवश्यकताएं इनसे पूरी हो सकेंगी। मैं इनके पीछे भाग खड़ी हुई।'

इस समय तक कमला ने सबके लिए चाय बना दी थी और सब सरूकियां लगा लेने लगे थे।

चाय लेते हुए गार्गी ने कमला के अन्तरात्मा की भावना का दर्शन करा दिया। उसने कहा, 'परन्तु कमला बहन को ये दोनों वस्तुएं प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थीं और इनको प्राप्त करते हुए भी इन्होंने अमरीका जाने से इस देश में रहना पसन्द किया और इन दोनों वस्तुओं का त्याग कर दिया।

'कमला उस समय यदि अपने पति के साथ विदेश को चल देती तो अर्थ और वासना की तृप्ति भली-भांति होने की 'गारण्टी'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
थी, परन्तु इसने इन दोनों के अतिरिक्त यहां इस देश और समाज में रहने को सब पर उपमा दी और सब कुछ त्याग दिया। सर्वथा अकिंचन हो यहां इसी घर में रह गई।'

ईरीन विस्मय में गार्गी और कमला का मुख देखने लगी। गार्गी की बात की व्याख्या कमला ने कर दी। उसने कहा, 'इन प्रोफेसर साहब ने बहुत मिन्नत की थी कि मैं इनके साथ चलूं। उस समय ये यहां लाखों रुपयों के स्वामी थे। साथ ही चलते, लाभ दे रहे, व्यापार में साझीदार थे। वैसे यौवन में थे। साथ ही मुझे इनके धन-वैभव और फिर इनके अमरीका जाकर भारी वेतन पाने का मुझे विश्वास भी था। इस पर भी यहां गार्गी बहन की संगत तथा ज्ञान-ध्यान की बातें और सज्जनता के व्यवहार को मैं पति के धन-वैभव और शारीरिक सुख से अधिक मूल्यवान समझी थी।'

'ओह!' ईरीन मुख को प्याला लगाते-लगाते रुककर बोल उठी और फिर गार्गी का मुख देखने लगी।

एकाएक वह विश्वम्भर से पूछने लगी, 'क्या आप भी अपनी पत्नी को इसी प्रकार समझते हैं? मेरा अभिप्राय है कि धन और शारीरिक भोग से ऊपर?'

विश्वम्भर ने हंसकर कहा, 'मैं इन देवीजी के लिए विवाह के पूर्व क्या अनुभव करता था और अब भी जो कुछ करता हूं, उसका वर्णन नहीं कर करता। विवाह से पूर्व यह अभी ग्यारह-बारह वर्ष की कन्या ही थीं कि मैं इनकी लालसा करने लगा था। यह अभी शारीरिक सुख देने के योग्य नहीं थीं और इनके पिता पैंतीस रुपये मासिक वेतन पर एक स्कूल में अध्यापक थे। उनसे भी कुछ आशा नहीं थी।

'घर पर बाबा, पिता तथा माता और सम्बन्धियों को पता चला तो वे मेरा विरोध करने लगे और एक समय तो मुझे एक पैसा दिये बिना घर से निकाल देने की धमकी भी दे डाली।

'बाबा उस समय पूर्ण पारिवारिक सम्पत्ति के संरक्षक थे। वे भी घर से धक्के मार-मारकर निकालने पर तैयार हो गए। परन्तु मुझे इस देवी से जीवन-भर का सम्बन्ध बनाना अपने घर की सम्पन्नता से अधिक सुखकर समझ आया था।

'सबसे पहले मेरे बाबा को मेरी अन्तर्भावना समझ आई। वह इस देवी के पिता से मिले और मेरे मन के भावों में सार समझ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा पक्ष लेने लगे। तदनन्तर मेरे पिता मेरे अनुकूल हुए और मां तो अन्त में इस देवी को इस घर में लाने में राजी हुई। इसके यहां आने के उपरान्त घर के सब प्राणी इसके गुणों को जान गये और अब तो यह अपने घर में एक गौडस समझी और पूजी जाती है।'

दो घंटा-भर बातें होती रहीं और रात के भोजन से पूर्व ही बुद्धिप्रकाश अपनी पत्नी को लेकर होटल को चल दिया।

किसी ने उनका भारत में आने का कारण नहीं पूछा।

बुद्धिप्रकाश और ईरीन बीच-बीच में विश्वम्भर और उसके घर के प्राणियों से मिलते रहे। कमला के लड़के महेश से उनका विशेष मेलजोल रहा।

लगभग एक महीने के लाहौर में प्रवास के उपरान्त एक दिन ईरीन चर्च रोड वाली कोठी में आयी और गार्गी तथा कमला से कहने लगी, 'महेश के फादर आज रात वापस अपने काम पर जा रहे हैं। मैं यहां हिन्दुस्तान में ही रह जाना चाहती हूं। क्या मैं आपकी इस बड़ी कोठी में एक कमरा पा सकूंगी? मैं जो भी किराया आप मांगेंगी, दे दूंगी।'

गार्गी हंस पड़ी और बोली, 'तो आप होटल का खर्च बचाने के लिए यहां आकर रहना चाहती हैं?'

'नहीं, मेरे अपने पास तीन-चार वर्ष तक इस होटल में रहने के लिए पर्याप्त है, परन्तु मैं तो गार्गी बहन की संगत के लिए रहना चाहती हूं। मैं देखना चाहती हूं कि आप लोग किस कारण इनका इतना मान करते हैं।'

'तब,' कमला ने कह दिया, 'आप हमारी एक तीसरी बहन बन बिना कुछ लिए-दिए रह सकती हैं।'

'ओह! वैरी गुड आफ यू।'

अगले दिन वह अपना सूटकेस और ब्रीफकेस लिए हुए चर्च रोड वाली कोठी पर आ गयी और उसे कोठी के एक सुसज्जित कमरे में ठहरा दिया गया।

कमला समझ रही थी कि गार्गी का सही आकर्षण है जो उसके पति तथा इस घरवालों को और फिर उसे वहां बांध कर रखे हुए है। यही इसी को पति की संगत से पृथक् कर लाहौर में रोक रहा है।

वह इस आकर्षण को बुद्धि से अनुभव करती थी, यद्यपि शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती थी। यह अवश्य ही आकर्षण ही था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

• • •

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की रचनाएं

विवेचना साहित्य
अद्वैत मीमांसा[1]
गांधी और स्वराज्य
धर्म तथा समाजवाद
भारत गांधी नेहरू की छाया में[1]
भाग्य-चक्र (संस्मरण)
भाव और भावना (संस्मरण)
मैं हिन्दू हूं (संस्मरण)
ब्रह्मसूत्र सरल भाषा-भाष्य[1]
भारत के राष्ट्र[1]
वेश्वे देवा[1]
विज्ञान और विज्ञान[1]
श्रीमद्भगवद्गीता (अध्ययन)
समाजवाद एक विवेचन
समाजवाद और पूंजीवाद
सृष्टि रचना[1]
हिन्दू धर्म
सांख्य दशन (भाष्य)[1]
न्याय दर्शन (भाष्य)[1]
वेद और वैदिक काल[1]
[illegible] और वेद
बुद्धि बनाम बहुमत[1]

इबलीस
उल्टी बही गंगा
उन्मुक्त प्रेम[1]
उमड़ती घटाएं

उपन्यास

अन्धकार[1]
अन्धे की लाठी
अग्नि परीक्षा[1]
अनदेखे बन्धन
अन्धेर नगरी
अपने पराये[1]
अमानत[1]
अमृत मंथन[1]
अवतरण
असमंजस
आकाश पाताल
आवरण
आशा-निराशा[1]
आह्वान
ऊंचे मकान[1]
एक और अनेक
एक मुंह दो हाथ (दो हाथ)
कला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामना
काल चक्र[1]
कुँकुम
कौमुदी
खण्डहर बोल रहे हैं[1] ३
खेल और खिलौने
गगन के पार
गंगा की धारा[1]
गिरते महल
गुण्ठन
गोरखधंधा
गृह संसद
घर की बात[1]
चंचरीक
चितेरे
चौराहा[1]
छलना
छोटी-सी बात[1] (लाड़-प्यार)
जनम-जनम तुम
जमाना बदल गया ९ भाग
जग इक सपना[1]
जनप्रवाह (दो भाग)
जयदमन
जागृति
जात न पूछ कोय (परिग्रह)
जीवन ज्वार
डाल डाल के पंछी[1]
ढकोसला (संस्कार)
डूबती नौका[1]
तब और अब[1]
तबेला
दस साल बान
दायरे
दिग्विजय
दीन दुनिया
दो भद्र पुरुष
दो लहरों की टक्कर[1] २ खंड
दासता के नये रूप
देश की हत्या
द्रष्टा
धरती और धन[1]
धूप छांह[1]
नगर परिमोहन
नई दृष्टि
नवरंग
नदी तीरे
नारी नटेश्वर
नास्तिक[1]
नये विचार नयी बातें[1]
निर्मल
निर्लेप
निष्णात (जंजाल)
न्यायाधिकरण
पड़ौसी[1]
पतन का मार्ग
पथिक[1]
पंकज[1]
परदे के पीछे[1]
परम्परा
परिभव
परिमल[1]
पाणिग्रहण
परित्याग
परिवर्तन
पत्रलता
पाप और पुण्य[1]
पुष्यमित्र
पूर्वग्रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रगति के पथ पर (मंजिल)
प्रगतिशील
प्रवृत्ति
प्रवंचना[1]
प्रभात वेला[1]
प्रारब्ध और पुरुषार्थ[1]
प्रेरणा
प्रेयसी
फैलती छाया
बहती रेता
बनवासी
बाहर और भीतर
बसन्त राग
बीती बात
भग्नाश
भाग्य रेखा
भैरवी चक्र
भगवान भरोसे
भाग्य का सम्बल
भावुकता का मूल्य[1]
भूल
मधु[1]
मनीषा
ममता
महानगर
मानव[1]
मायाजाल
मेघवाहन
मैं न मानूं
मौजमेला
मृगतृष्णा
यह क्यों है (पुकार)
यह सब झूठ है (झूठ है)
यह संसार

माला का अंत
युद्ध और शांति[1] (२ भाग)
रानी साहिबा
रीति रिवाज
लकीर के फकीर
लालसा
लुढ़कते पत्थर
लोक परलोक
वसुन्धरा
वाम मार्ग
विकार[1]
विकृत छाया
विडम्बना
विधुर
विवेक
विद्यादान[1]
विश्वास
विगाशाय च दुष्कृताम्[1]
विलोम गति[1]
विश्वासघात
वीर पूजा
शादी[1]
विक्रमादित्य साहसांक
सदा वत्सले मातृभूमे !
सफर
सफलता के चरण
सभ्यता की ओर
सम्पदा
सम्भवामि युगे-युगे
सहज सगाई
सीमाबद्ध
सर्वमंगला (मंगला)
सहस्रबाहु
साधना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सागर और सरोवर
सागर तरंग
साहित्यकार
मुख की खोज
सुमति
संगम
संस्खलन
स्नेह का मूल्य
स्वराज्यदान
षड्यन्त्र
हम और तुम
क्षितिज

नाटक
वन्दे मातरम
मेरी पसन्द
कहानी-संग्रह
बिखरे चित्र
किशोरोपयोगी साहित्य
जगत् की रचना
द्वितीय विश्वयुद्ध
महर्षि दयानन्द
युगपुरुष राम
विविध
अन्तिम यात्रा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

081
168012

—::o::—

Central Library
168012
Gurukula Kangri (Deemed to be University)

भारती साहित्य सदन सेल्स
३०, ९०, कनाट सरकस, (मद्रास होटल के नीचे) नई दिल्ली—१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

R 089.9143

वर्ग संख्या.....G.U.R.-S

आगत संख्या.....16801

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सं
30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहि
अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त

(1894 & 1989)

शिक्षा : एम. एस–सी.

प्रथम उपन्यास "स्वाधीनता के पथ पर" से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।

विज्ञान की पृष्ठभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये।

वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नहीं जा सकता।

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली - 110 001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar